शौर्य और पराक्रम

साहस और बलिदान की शौर्य गाथा

जनरल विपिन रावत, रक्षा प्रमुख

पी वी एस एम, यू वाई एस एम, ए वी एस एम, वाई एस एम, एस एम, वी एस एम, ए डी सी

जन्म : 16 मार्च 1958 गढ़वाल (उत्तर प्रदेश), (वर्तमान में पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड)
सेवा काल : 16 दिसम्बर 1978 –08 दिसम्बर 2021
देहान्त : 08 दिसम्बर 2021 (उम्र 63 वर्ष)

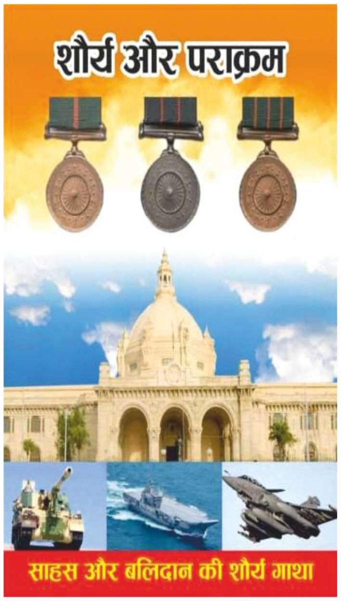

26 जुलाई 2022 को कारगिल विजय दिवस के अवसर पर
माननीया राज्यपाल महोदया द्वारा पुस्तक 'शौर्य और पराक्रम' का विमोचन

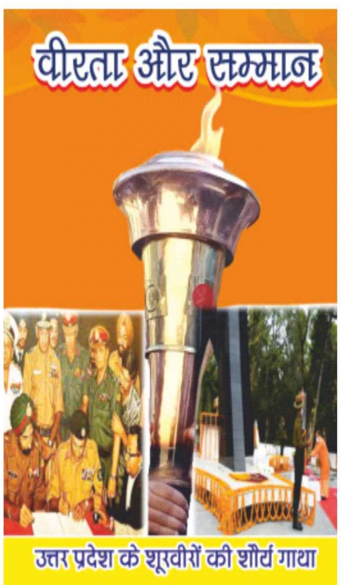

26 जुलाई 2021 को कारगिल विजय दिवस के अवसर पर
माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा पुस्तक 'वीरता और सम्मान' का विमोचन

उत्तर प्रदेश के सैन्य सेवा के शूरवीर
अशोक चक्र
नाविक बेचन सिंह
कैप्टन जसराम सिंह
मेजर भूकांत मिश्रा
ले० कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर
मेजर मोहित शर्मा
नायक नीरज कुमार सिंह
कीर्ति चक्र
मेजर पुष्पेन्द्र सिंह
नायक नवाब सिंह तोमर
लेफ्टीनेंट पंकज कुमार
मेजर सुशील कुमार सिंह
सिपाही ब्रह्म पाल सिंह
सिपाही दया शंकर
मेजर अनुराग नौरियाल
लेफ्टीनेंट कर्नल आई आर खान
कैप्टन दविन्द्र सिंह जस
हवलदार शिव नारायन सिंह
मेजर अविनाश सिंह भदौरिया
मेजर अशोक कुमार सिंह
मेजर दीपक तिवारी
मेजर तुषार गवाबा
नायक जगवीर सिंह
लेफ्टीनेंट कर्नल सुनील कुमार राजदान
कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर
सैपर अजमेर अली
लांसनायक सोहन वीर
कैप्टन विनोद कुमार नाइक

शौर्य चक्र

मेजर
चन्द्र शेखर मिश्रा

हवलदार
भमेर सिंह

सेकेण्ड लेफ्टीनेंट
ललित कुमार शर्मा

लेफ्टीनेंट
राहुल शर्मा

लांसनायक
रीत राम

मेजर
स्वपनील परिहार

पैराट्रूपर
चेतन कुमार राणा

मेजर
दीपक यादव

राइफलमैन
लक्ष्मण सिंह

मेजर
मानवेन्द्र सिंह

सार्जेंट
जय प्रकाश शुक्ला

हवलदार
हनुमान प्रसाद सिंह

मेजर
राजेश कुमार सिंह

कार्पोरल
जयराज बिन्द

सिपाही
ओम शिव शर्मा

सिपाही
सन्नी तोमर

पेटी अफसर
चन्द्र शेखर

राइफलमैन
बेद प्रकाश

मेजर
रत्नेश कुमार सिंह

लेफ्टीनेंट
विक्रम बहादुर सिंह

हवलदार
गंगा सहाय

मेजर
तनवीर अहमद
सिद्दीकी

स्कवाड्रन लीडर
शिवचरन सिंह तोमर

सिपाही
रघु नाथ सिंह

नायक
आदर्श कुमार अरोड़ा

हवलदार
गोपी सिंह

लांस हवलदार
रण पाल सिंह

सवार
धीरज सिंह

शौर्य चक्र

लांसनायक
ज्योतिष प्रकाश

विंग कमांडर
वरूण सिंह

नायक
राम सिंह

हवलदार
वीरेन्द्र सिंह

हवलदार
जसकरन सिंह

कैप्टन
अमितेन्द्र कुमार सिंह

लेफ्टीनेंट
मनीष सिंह

हवलदार
रक्षपाल सिंह

हवलदार
राजवीर सिंह

नायब सूबेदार
विजय कुमार यादव

सेकेन्ड लेफ्टीनेंट
विपिन भाटिया

कैप्टन
गनेश सिंह भण्डारी

सूबेदार
जय सिंह

कैप्टन
शकुल त्यागी

विंग कमान्डर
निखिल नायडू

सेकेन्ड लेफ्टीनेंट
यशवन्त कुमार सिंह

मेजर
हितेष भल्ला

मेजर
गौरव शर्मा

मेजर
विजयन्त चौहान

नायक
राजेश मिश्रा

कैप्टन
अनूप पाण्डेय

सैपर
अमरजीत सिंह

कैप्टन
अभिनव शुक्ला

ग्रेनेडियर
रण जीत

गनर
सुरेश चन्द

नायक
गिरधारी लाल

कंपनी हवलदार मेजर
रघुराज सिंह

लेफ्टीनेंट कर्नल
समीर कुमार चक्रवर्ती

शौर्य चक्र

कैप्टन अजी एन्थोनी | मेजर संदीप यादव | मेजर बाबू राम कुशवाहा | ली ए क्रा अमर कुमार बाजपेई | मेजर सलमान अहमद खान | कैप्टन सुनील यादव | लेफ्टीनेंट अभिनव त्रिपाठी

विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह | हवलदार रूद्र नारायण दूबे | राइफलमैन अनिरुध्द यादव | स्क्वाड्रन लीडर संजीव मिश्रा | कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह | मेजर कमल कालिया | लेफ्टीनेंट कर्नल मुकेश चन्द्र शर्मा

मेजर सैय्यद अली उस्मान | कैप्टन तपन कुमार पन्त | लेफ्टीनेंट हरी सिंह विष्ट | मेजर समीर उल इस्लाम | कैप्टन तुषार घस्माना | मेजर अमित मोहिन्द्रा | कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय

कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी | मेजर भरत सिंह | सूबेदार सत्य प्रकाश | कैप्टन राकेश शर्मा | राइफलमैन रविन्द्रा सिंह | ग्रेनेडियर यशपाल सिंह | मेजर पवन कुमार गौतम

शौर्य चक्र

सिपाही
देवेन्द्र कुमार

लेफ्टिनेंट
गौरव सिंह

नायक
अनिल कुमार

कैप्टन
राहुल सिंह

कैप्टन
ललित कंसल

मेजर
सौरभ दत्त खोलिया

मेजर
आदित्य कुमार

लांसनायक
देशपाल सिंह

कैप्टन
संजीव सिरोही

कैप्टन
वरुण कुमार सिंह

सैपर
शहजाद खान

सार्जेंट
रमेश चंद

मेजर
सुनीत सिंह

मेजर
विजित कुमार सिंह

पायनियर
महाबीर यादव

गनर
रंजीत सिंह

कैप्टन
सुनील कुमार

लांसनायक
अय्यूब अली

कैप्टन
सौरभ धमीजा

विंग कमांडर
वत्सल कुमार सिंह

मेजर
आशुतोष कुमार पाण्डेय

मेजर
अनुराग कुमार

संरक्षक की कलम से

एक सैनिक भूतकाल में घटित हुई सैन्य घटनाओं से शिक्षा लेकर वर्तमान में भविष्य के लिए योजना बनाता है, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर आने वाली चुनौतियों से निपटा जा सके। सैन्य जीवन एक ऐसा क्षेत्र हैं जहां आने वाली चुनौतियां कभी भी खुद को नहीं दोहराती। वह हमेशा नये रूप में आती हैं। एक सैनिक को तत्काल निर्णय लेना पड़ता है, सेकेण्ड के सौंवे हिस्से की देरी भी उसके लिए बहुत बड़ी चुनौती खड़ी कर सकती है। ऐसी ही विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए हमारे वीरों ने बिना थके और बिना रूके हुए, उन पर विजय प्राप्त करते हुए अपने शौर्य, वीरता और बलिदान से कहानियां लिखी हैं, जो कि अमिट हैं।

हमने अपने प्रदेश के वीरों के शौर्य, वीरता और बलिदान को जनमानस तक पहुंचाने के लिए "**वीरता और सम्मान**" नाम की पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प लिया था ताकि आने वाली पीढियां प्रदेश के उन वीरों को याद रख सकें, जिन्होंने हमारे आज के लिए अपने कल को देश पर न्यौछावर कर दिया, आने वाली पीढियां इन वीरता और बलिदान की गाथाओं को पढ़कर इस रास्ते पर चलने के लिए उत्प्रेरित हों। इस पुस्तक मे प्रदेश के 01 विक्टोरिया क्रास, 04 परमवीर चक्र, 19 महावीर चक्र और 91 वीर चक्र विजेताओं की शौर्य गाथाओं को संजोया गया था। **26** जुलाई **2021** को "कारगिल दिवस" के अवसर पर इस पुस्तक का विमोचन प्रदेश के **मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ** ने किया था।

इसी क्रम में हमने अशोक चक्र श्रृंखला के पदकों से सम्मानित वीरों की शौर्य गाथा को "**शौर्य और पराक्रम**" पुस्तक के माध्यम से आप के समक्ष लाने का निश्चय किया है। युध्द काल में प्रदर्शित पराक्रम अनेकों माध्यमों से लोगों तक पहुंच जाता है लेकिन शांतिकाल में सैनिकों द्वारा प्रदर्शित किया गया शौर्य, पराक्रम तथा वीरता केवल पदक प्राप्त करने तक ही सीमित रह जाती है, जिसके लिए उन्हें शांतिकाल के पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। युध्द काल के अलावा भी हमारे प्रदेश के सैनिकों को शांति काल में भी सैन्य सेवा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट सेवाओं के लिए 06 अशोक चक्र, 20 कीर्ति चक्र और 106 शौर्य चक्र प्रदान किया गया है।

हमारे सैनिकों ने हमें एक राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक सुरक्षा और स्वतंत्रता को संरक्षित किया है। वर्तमान अंक में प्रदेश के उन वीरों की शौर्य गाथाओं को आप लोगों तक पहुंचाने का छोटा सा प्रयास भर है जिन्होंने अपने "शौर्य और पराक्रम" से देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने में सराहनीय योगदान दिया है।

ब्रिगेडियर रवि (अ. प्रा.)
निदेशक
सैनिक कल्याण एंव पुर्नवास

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राज भवन
लखनऊ - 226 027

21 फरवरी, 2022

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि निदेशालय सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास द्वारा 'शौर्य और पराक्रम' पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

देश की आजादी के संघर्ष में उत्तर प्रदेश के वीरों, क्रांतिकारियों, शहीदों का सर्वाधिक योगदान रहा है। इस आजादी को अक्षुण्ण बनाए रखने में आज भी प्रदेश सर्वाधिक सैन्य शक्ति के योगदान के साथ–साथ अपने वीर जवानों की अप्रतिम शौर्य गाथाओं का वाहक भी है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक कर्तव्य की वेदी पर शहीद हुए और वीरता का पर्याय बन गए प्रदेश के जवानों की कहानियों को देशवासियों तक पहुँचाकर उनकी स्मृति सुधा को अभिसिंचित करती रहेगी।

पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिये मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन
(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522-2236497 फैक्स : 0522-2239488 ईमेल : hgovup@gov.in वेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

ब्रिगेडियर रवि (अ0प्रा0)
निदेशक

Brigadier Ravi (Retd)
Director

निदेशालय सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास, उ०प्र०
करियप्पा भवन, कैसरबाग, लखनऊ–226001
दूरभाष : 0522-2625354, 0522-2623909
Dte Sainik Kalyan Evam Punarvas, UP
Cariappa Bhawan, Kaiserbagh,
Lucknow-226001
Phone/Fax: 0522-2625354, 0522-2623909
Email: dirskpnlu-up@nic.in

21 [illegible] 2022

संदेश

देश की एकता अखण्डता और स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए हमारे देश के वीर जवानों ने अपने प्राणों की अमूल्य आहुति दी है। हमारे देश का झंडा आसमान में फहराता रहे इसके लिए हमारे जवानों ने अपनी बेशकीमती सांसें देश पर न्यौछावर कर दीं। इसी कड़ी में अपना योगदान देते हुए हमारे प्रदेश के जवानों ने इस आहुति में सर्वोपरि बलिदान दिया है। विभिन्न शांति मिशनों तथा देश में अब तक लड़े गये युद्धों में हमारे प्रदेश के वीरों ने अपनी वीरता, शौर्य और पराक्रम का परिचय देते हुए देश और प्रदेश को गौरवान्वित किया है। हमारे सैनिकों ने कठिन से कठिन परिस्थितियों तथा दुर्गम स्थानों पर रहकर देश की एकता, अखंडता और सम्प्रभुता की रक्षा की है। हमारे प्रदेश के सैनिकों ने अपने शौर्य, पराक्रम और बलिदान के बल पर 01 विक्टोरिया क्रास, 04 परमवीर चक्र, 19 महावीर चक्र, 91 वीर चक्र, 06 अशोक चक्र, 20 कीर्ति चक्र, 106 शौर्य चक्र प्राप्त कर प्रदेश के गौरव को बढाया है।

अपने प्रदेश के रणबांकुरों के शौर्य और पराक्रम को याद करने के लिए हमने यह निश्चय किया है कि इन वीर रणबांकुरों की शौर्य गाथा को जन - जन तक पहुंचाया जाये ताकि आने वाली पीढियां इन वीरता और बलिदान की गाथाओं को पढ़कर इस रास्ते पर चलने के लिए उत्प्रेरित हों।

हमने इससे पूर्व "वीरता और सम्मान" नाम की पुस्तक का प्रकाशन किया था जिसमें हमारे प्रदेश के 01 विक्टोरिया क्रास, 04 परमवीर चक्र, 19 महावीर चक्र और 91 वीर चक्र विजेताओं की शौर्य गाथाओं का वर्णन था। अशोक चक्र श्रृंखला के अंतर्गत देश की एकता और अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने में प्रदर्शित शौर्य और पराक्रम के लिए सैन्य सेवा के क्षेत्र में अब तक प्रदेश के वीरों को 06 अशोक चक्र, 20 कीर्ति चक्र और 106 शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया है। "शौर्य और पराक्रम" नाम के इस अंक में हमने इन्हीं वीरों की वीर गाथाओं को एक पुस्तक का रूप देने का प्रयास किया है।

(ब्रिगेडियर रवि)
निदेशक

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पर जाएं वीर अनेक।।

निदेशालय सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास, उत्तर प्रदेश

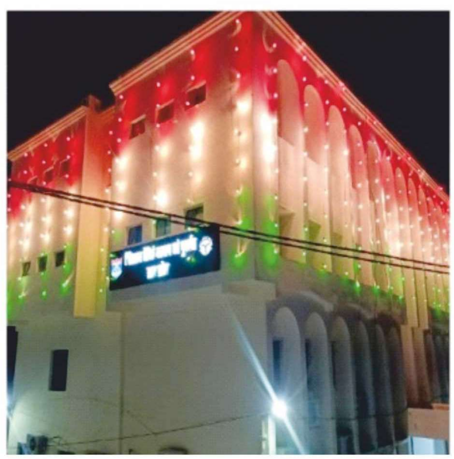

आजादी का अमृत महोत्सव

प्राक्कथन

"देश सर्वोपरि है", की भावना से परिपूर्ण हमारी सेनाएं विश्व में अद्वितीय हैं। जब भी देश को उनकी जरूरत पड़ी, वह हर मौके पर खरी उतरी हैं। उन्होंने युध्द और शांतिकाल दोनों में अपने साहस, वीरता, कर्तव्यपरायणता और बलिदान से यह सिध्द कर दिखाया है कि देश के आगे कुछ भी नहीं है। हमारी सेनाओं ने युध्द काल के अलावा देश से बाहर विभिन्न शांति मिशनों में काम किया है। कोसोवो, सूडान, साइप्रस, तिमूर, कांगो, सियरा लियोन, लाइबेरिया, हैती आदि देशों में भारतीय सैनिकों की प्रशंसा न केवल संयुक्त राष्ट्र संघ करता रहा है, बल्कि स्थानीय नागरिकों द्वारा भी उनके काम को सराहा गया है। हमारे देश ने अब तक विभिन्न शांति अभियानों के तहत 1,80,000 से अधिक सैनिकों को भेजा है।

देश की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए हमारी सेनाएं कृत संकल्प हैं। वे अहर्निश अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रतिबध्द खड़ी हैं। शांतिकाल में देश के अंदर जब भी आवश्यकता महसूस हुई है और सेना को बुलाया गया है, उसने सदा उद्देश्य को प्राप्त करके ही दम लिया है। चाहे 2001 में गुजरात के भुज में आया विनाशकारी भूकम्प हो या केदार घाटी में बादल फटने के बाद मची तबाही हो, हमारी सेनाओं ने सिविल प्रशासन के कंधे से कंधा मिलाकर मानवता की मिसाल पेश की है।

हमारे सैनिकों की भावना " पहले राष्ट्र, फिर हम" होती है। वह इसी भावना को लिए हुए जीते हैं और इसी भावना के लिए अपनी मातृभूमि की रक्षा करते - करते शहीद हो जाते हैं। हमारे प्रदेश के सैनिकों ने अब तक लड़े गये युध्दों के अलावा देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता की रक्षा में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। उन्होंने बीरता, शौर्य और पराक्रम का परचम लहराया है जिसके लिए अब तक हमारे प्रदेश के वीरों को सैन्य सेवा के क्षेत्र में 06 अशोक चक्र, 20 कीर्ति चक्र और 106 शौर्य चक्र प्रदान किया गया है। इस पुस्तक में हमने उन्हीं वीरों के शौर्य और पराक्रम को बताने का प्रयास किया है जिन्हें अशोक चक्र श्रृंखला के चक्रों सें सम्मानित किया गया है।

हरी राम यादव
सूबेदार मेजर (आनरेरी)
सेना वायु रक्षा कोर

आभार

ब्रिगेडियर रवि (अवकाश प्राप्त) निदेशक, सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास का मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने "वीरता और सम्मान" पुस्तक लिखने के पश्चात मुझे इस पुस्तक को लिखने के लिए उत्प्रेरित किया। इस पुस्तक के लेखन में सहयोग देने के लिए कैप्टन विजय मोहन शर्मा, जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास अधिकारी सम्भल, कैप्टन अनिल कुमार गुप्ता, जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास अधिकारी बिजनौर, कर्नल ओम प्रकाश मिश्रा, जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास अधिकारी हरदोई, कर्नल शैलेन्द्र उत्तम (अतिरिक्त निदेशक, प्रशासन) , विंग कमांडर जितेन्द्र कुमार चौहान (अतिरिक्त निदेशक, पुनर्वास), कमाण्डर नवीन कटियार, जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास अधिकारी मैनपुरी, लेफ्टीनेंट कर्नल अनिल कुमार, जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास अधिकारी सोनभद्र, लेफ्टीनेंट कर्नल बलराम तिवारी (अतिरिक्त निदेशक, कल्याण), स्कवाड्रन लीडर मधु मिश्रा, जिला सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास अधिकारी उन्नाव, डाटा आटोमेशन टीम के सूबेदार मेजर (आनरेरी कैप्टन) पी एल शाक्य, सूबेदार राजीव कुमार पाण्डेय, सूबेदार हरिकृष्ण शुक्ला, हवलदार मनोज कुमार भट्ट तथा नायक हरी सिंह मनराल, निदेशालय सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास में सेवारत श्रीमती जहीरून निसां (उर्दू अनुवादक सह प्रधान सहायक), श्रीमती तारा देवी (कनिष्ठ सहायक), श्रीमती भारती तिवारी (कनिष्ठ सहायक), श्री रामशंकर यादव (कनिष्ठ सहायक), श्रीमती नीरू कपूर (कनिष्ठ सहायक), श्रीमती रेखा राय (वैयक्तिक सहायक ग्रेड 2), श्रीमती शिखा अब्रोल (आशुलिपिक), श्री देवनारायण, श्री विनोद कुमार सेन, श्री प्रदीप कुमार मिश्रा, श्री समीर कुमार श्रीवास्तव (कनिष्ठ सहायक), शुचिता पांडेय (सहायक लेखाकार) तथा निदेशालय में सेवारत अन्य सहकर्मियों का मैं आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पुस्तक को इस रूप में लाने के लिए अपना बहुमूल्य समय दिया।

इसमें दी गयी सूचनाओं के संकलन के लिए भारतीय सेना की बेबसाइट गैलेन्ट्री अवार्ड्स डाट जीओवी डाट इन, हानरप्वाइंट, भारत रक्षक डाट काम और विभिन्न जिलों से प्रकाशित समाचार पत्रों का मैं आभारी हूँ जिन्होंने अपने जिलों के वीरों की वीर गाथाओं को उनके शौर्य दिवस पर सचित्र प्रकाशित किया था। साथ ही साथ जिलों के सैनिक कल्याण एंव पुनर्वास कार्यालयों का मैं विशेष आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के लिए वीर जवानों की जानकारी तथा सम्पर्क नम्बर उपलब्ध करवाये जिससे मै उन वीरों / वीर शहीदों के घर वालों से सम्पर्क कर पाया।

मैं उन शहीदों के परिवारों का चिर ऋणी रहूंगा जिन्होंने देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता की रक्षा के लिए अपने वीर सपूत को देश पर न्यौछावर कर दिया और उनके "शौर्य और पराक्रम" की गाथा तथा अमूल्य चित्रों को पुस्तक के लिए उपलब्ध करवाया।

विषय सूची

1	एक अप्रतिम यौध्दा ः रक्षा प्रमुख जनरल बिपिन रावत	01-02
2	स्वर्णिम विजय वर्ष	03-05
3	आजादी का अमृत महोत्सव	06-07
4	उत्तर प्रदेश	08-09
5	वीरता पदक	10-16
6	सेना द्वारा चलाए गये विभिन्न आपरेशन	17-33
7	अशोक चक्र विजेता	34-49
8	कीर्ति चक्र विजेता	50-106
9	शौर्य चक्र विजेता	107-373
10	वीरता पदक विजेताओं की जिलेवार सूची	374-376

एक अप्रतिम यौध्दा

जनरल बिपिन रावत, रक्षा प्रमुख

पी वी एस एम, यू वाई एस एम, ए वी एस एम, वाई एस एम, एस एम, वी एस एम, ए डी सी

जीवन परिचय आई सी-35471 एम, जनरल बिपिन रावत का जन्म 16 मार्च 1958 को गढ़वाल, उत्तर प्रदेश (वर्तमान में पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड) के सैंज गांव में लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत के यहां हुआ था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा देहरादून के कैम्ब्रियन हॉल स्कूल और शिमला के सेंट एडवर्ड स्कूल से पूरी की। इसके पश्चात वह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला और भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून में शामिल हो गए, जहां से उन्होंने स्नातक किया और उन्हें 'स्वॉर्ड ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया। वह डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज से भी स्नातक थे। उन्होंने रक्षा अध्ययन में एम फिल डिग्री के साथ - साथ मद्रास विश्वविद्यालय से प्रबंधन और कंप्यूटर अध्ययन में डिप्लोमा भी किया। उन्हें सैन्य मीडिया रणनीतिक अध्ययन पर उनके शोध के लिए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा डॉक्टरेट ऑफ फिलॉसफी की उपाधि प्रदान की गयी । 14 अप्रैल 1986 को इनका विवाह श्रीमती मधुलिका रावत के साथ हुआ। इनके परिवार में इनकी दो बेटियां कृतिका और तारिणी हैं।

सैन्य जीवन 16 दिसंबर 1978 को सी डी एस जनरल बिपिन रावत ने 11 गोरखा राइफल्स की 5वीं बटालियन में कमीशन लिया। उनके पिता लेफ्टिनेंट जनरल लक्ष्मण सिंह रावत भी इसी बटालियन के अधिकारी थे। वे 31 जुलाई 1984 को कैप्टन तथा 16 दिसम्बर 1989 को मेजर के पद पर पदोन्नत हुए तथा आतंकवाद रोधी अभियानों का संचालन करते हुए 10 साल बिताए। मेजर के पद पर रहते हुए सी डी एस जनरल बिपिन रावत ने जम्मू कश्मीर के उरी में एक कंपनी की कमान संभाली। वह 01 अगस्त 2003 को कर्नल बने और किबिथू में अपनी बटालियन की कमान संभाली। 01 अक्टूबर 2007 को ब्रिगेडियर के पद पर पदोन्नत होने के बाद, उन्होंने सोपोर में 5 सेक्टर राष्ट्रीय राइफल्स की कमान संभाली। इसके पश्चात उन्हें कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में बहुराष्ट्रीय ब्रिगेड की कमान संभालने का अवसर मिला और उनकी उल्लेखनीय सेवाओं को देखते हुए उन्हें दो बार फोर्स कमांडर के प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

20 अक्टूबर 2011 को उन्हें मेजर जनरल के पद पर पदोन्नत किया गया और उन्होंने 19वीं इन्फैंट्री डिवीजन के जनरल ऑफिसर कमांडिंग के रूप में पदभार संभाला। 01 जून 2014 को उन्होंने लेफ्टिनेंट जनरल के रूप में 3 कोर की कमान संभाली और बाद में दक्षिणी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ का पद ग्रहण किया। थोड़े समय के कार्यकाल के बाद उन्हें वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ के पद पर पदोन्नत किया गया।

उन्हें 17 दिसंबर 2016 को भारत सरकार द्वारा 27 वें सेनाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था और उन्होंने 31 दिसंबर 2016 को पद भार ग्रहण किया। उन्होंने भारतीय सेना के चीफ ऑफ स्टाफ कमेटी के 57वें अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। उन्हें 30 दिसंबर 2021 को पहले सी डी एस के रूप में नियुक्त किया गया और उन्होंने 01 जनवरी 2020 को पदभार ग्रहण किया।

अलंकरण और सम्मान 43 वर्षों की उल्लेखनीय सेवा के दौरान उन्हें विभिन्न अलंकरणो से विभूषित किया गया जिनमें कुछ प्रमुख हैं - परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युध्द सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, युध्द सेवा मेडल, सेना मेडल, विशिष्ट सेवा मेडल।

योगदान जनरल बिपिन रावत सैन्य सुधार की दिशा में अपने कामों के लिए हमेशा जाने जाएंगे। सेना प्रमुख से लेकर चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ तक वह लगातार भारतीय सेना को आधुनिक और नई जरूरतों के अनुरूप तैयार करने पर जोर देते रहे। हथियारों के आधुनिकीकरण के साथ ही डिजिटल टेक्नॉलजी पर वह सरकार को लगातार योजनाएं सुझाते रहे। सैन्य चुनौतियों से निपटने के लिए वे थियेटर कमान और इंटीग्रेटेड बैटल ग्रुप के पक्षधर थे। सेना में 5 जी लाना हो या स्वार्म ड्रोन टेक्नोलॉजी़ असॉल्ट राइफल हो या अर्जुन टैंक अथवा हल्का लड़ाकू विमान तेजस़ सब जनरल बिपिन रावत की देन है।

निधन 08 दिसम्बर 2021 को जनरल बिपिन रावत उनकी पत्नी और उनके निजी स्टाफ़ के अन्य सदस्यों समेत कुल 10 यात्री और चालक दल के 04 सदस्य, भारतीय वायुसेना के एम आई 17 हैलिकॉप्टर पर सवार थे, जो सुलुरु वायुसेना हवाई अड्डे से वेलिंगटन स्थित रक्षा सेवा स्टाफ़ कॉलेज जा रहा था, जहाँ जनरल बिपिन रावत को व्याख्यान देना था। अपराहन 12ः10 बजे के आसपास नीलगिरि जिले के कुन्नूर तहसील के बांदीशोला ग्राम पंचायत के समीप दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना स्थल उस जगह से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर था जहाँ हेलिकॉप्टर को उतरना था। इस हादसे में जनरल बिपिन रावत और उनकी पत्नी समेत अन्य 13 लोगों की मृत्यु हो गयी। 10 दिसम्बर 2021 को जनरल बिपिन रावत का अंतिम संस्कार पूरे सैन्य सम्मान के साथ बरार चौक पर संपन्न हुआ। अंतिम संस्कार की रस्म उनकी बेटियों द्वारा पूर्ण की गयी।

स्वर्णिम विजय वर्ष

देश ने वर्ष 2021 को "स्वर्णिम विजय वर्ष" के रूप में मनाया। यह वर्ष देश के लिए गर्व का वर्ष था। ठीक 50 वर्ष पहले हमारे देश और हमारी सेना ने एक इतिहास लिखा था जो कि अपने आप में अभूतपूर्व है। यह युध्द विश्व में अब तक लड़े गये युध्दों में सबसे कम समय में जीता गया निर्णायक युध्द है। इतनी बडी संख्या में कभी भी सैनिकों ने आत्मसमर्पण नहीं किया है। इस युध्द में पाकिस्तान के लगभग 8,000 सैनिक मारे गये 25,000 घायल हुए थे और 93,000 सैनिकों ने आत्म समर्पण कर दिया था।

हमारे वीरों की वीरता की मशाल प्रज्ज्वलित रहे, लोगों के मस्तिष्क में वीरों का बलिदान अपना स्थान बनाए रखे, इसी ध्येय को ध्यान में रखकर 16 दिसम्बर 2020 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वर्णिम विजय मशाल को प्रज्ज्वलित कर 'विजय ज्योति यात्रा' को रवाना किया। इस यात्रा के तहत चार विजय मशाल एक साल तक पूरे देश के सैन्य छावनी क्षेत्र से होते हुए 1971 के युध्द के परमवीर चक्र और महावीर चक्र विजेता सैनिकों के गांवों से होते हुए नई दिल्ली वापस आयीं। "स्वर्णिम विजय वर्ष" की पटकथा कैसे लिखी गयी इसके लिए हमें 50 वर्ष अतीत में लौटना होगा और उस समय के राजनीतिक और सामरिक परिदृश्य को समझना होगा।

दिसम्बर का महीना था, भारत पाकिस्तान के सम्बन्धों में खटास काफी बढ़ चुकी थी। यह खटास पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में पाकिस्तानी सेना की ओर से आम जनता पर की जा रही हिंसा और उत्पीड़न को लेकर बढ़ी थी।

भारत पर दिन प्रतिदिन पूर्वी पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों का दबाव बढ़ता जा रहा था। पश्चिम बंगाल, असम, बिहार, मेघालय और त्रिपुरा में आये लगभग 10 लाख शरणार्थियों के कारण कानून व्यवस्था की स्थिति खराब होती जा रही थी। इससे दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध खराब होने लगे थे।

पाकिस्तान इसे अपना अंदरुनी मामला बताकर पल्ला झाड़ रहा था। श्रीमती इंदिरा गांधी ने पूर्वी पाकिस्तान में जो कुछ हो रहा था उसको पाकिस्तान का अंदरूनी मामला मानने से इंकार कर दिया क्योंकि देश इसका परिणाम भुगत रहा था। उस समय अमेरिका, पाकिस्तान की तरफ आंखें बंद किए हुए था। वह पाकिस्तान को मूक समर्थन दे रहा था। इसे देखते हुए श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने 9 अगस्त 1971 को तत्कालीन सोवियत संघ के साथ एक समझौता किया जिसमें दोनों देशों ने एक दूसरे की सुरक्षा का भरोसा दिया था।

पाकिस्तान में 1970 में आम चुनाव हुए थे। इस चुनाव में आवामी लीग को बहुमत मिला। लीग ने सरकार बनाने का दावा किया, परन्तु पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के नेता जुल्फिकार अली भुट्टो इससे सहमत नहीं थे। उन्होंने इस चुनाव का विरोध करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान में हालात इतने खराब हो गए कि सेना का प्रयोग करना पड़ा। अवामी लीग के नेता शेख मुजीबुर्रहमान को गिरफ्तार कर लिया गया। शेख मुजीबुर्रहमान की लोकप्रियता पूर्वी पाकिस्तान में बहुत ज्यादा थी। अपने नेता की गिरफ्तारी से जनता आंदोलित हो उठी। जगह-जगह जनता ने तत्कालीन पाकिस्तान सरकार के खिलाफ विद्रोह कर दिया। पूर्वी पाकिस्तान में हालात खराब होते जा रहे थे। ईस्ट बंगाल रेजिमेंट, ईस्ट पाकिस्तान राइफल्स, पुलिस तथा अर्धसैनिक बलों के बंगाली जवानों ने पाकिस्तानी सेना के खिलाफ बगावत करके खुद को आजाद घोषित कर दिया। पूर्वी पाकिस्तान के लोगों ने पाकिस्तान से पलायन करना शुरू कर दिया। इसी समय मुक्तिवाहिनी अस्तित्व में आयी।

उस समय श्रीमती इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री थीं। पाकिस्तान से आये शरणार्थियों को शरण देने से पाकिस्तान ने भारत पर हमले करने की धमकियां देना शुरू कर दिया था। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कोशिश करनी शुरू की जिससे युध्द जैसे हालात को टाला जा सके। पाकिस्तान की मंशा को भांपते हुए प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने सेना को युध्द के लिए तैयार रहने के लिए कहा।

03 दिसम्बर 1971 को शाम 05 बजकर 40 मिनट पर पाकिस्तानी वायु सेना ने भारतीय वायुसेना के 11 वायुसेना अड्डों पर हमला कर दिया। श्रीमती इंदिरा गांधी ने उसी समय रात को ही ऑल इंडिया रेडियो पर देश की जनता को संबोधित किया और हवाई हमलों की जानकारी देते हुए बताया कि "कुछ समय पहले पाकिस्तानी हवाई जहाजों ने हमारे वायुसेना के अड्डों श्रीनगर, अमृतसर, पठानकोट, हलवारा, अम्बाला, फरीदकोट, आगरा, जोधपुर, जामनगर, सिरसा पर आक्रमण किया है"।

सरकार ने 04 दिसम्बर 1971 को युध्द की घोषणा कर दी और सेना को ढाका की तरफ कूच करने का आदेश दे दिया। भारतीय वायुसेना ने पश्चिमी पाकिस्तान के आयुध भंडारों और वायु सेना अड्डों पर बम बरसाना शुरू कर दिया। भारतीय नौसेना के जांबाज सैनिकों ने बंगाल की खाड़ी की तरफ से पाकिस्तानी नौसेना को टक्कर देना शुरू कर दिया।

भारतीय नौसेना ने 04 दिसंबर 1971 को कराची बंदरगाह पर स्थित पाकिस्तानी नौसेना के हेडक्वार्टर को नेस्तनाबूद कर दिया। हमारे नौसैनिकों ने पाकिस्तान की गाजी, खायबर, मुहाफिज जैसे युध्द पोतों को बर्बाद कर दिया।

इधर भारतीय वायुसेना के हंटर और मिग - 21 फाइटर जहाजों ने राजस्थान के लोंगेवाला में एक पूरी आर्मर्ड रेजिमेंट को खत्म कर दिया। इसके साथ ही साथ भारतीय वायुसेना ने पश्चिमी पाकिस्तान में दुश्मन के रेल संचार को भी पूरी तरह बर्बाद कर दिया। इसके बाद दुश्मन के हमले पर विराम लग गया। भारतीय सेना के जांबाज सिपाही पाकिस्तानी सेना को रौंदते हुए उसकी 13,000 वर्ग मील भूमि पर कब्जा जमा लिया। इस युध्द में सेना वायु रक्षा कोर (तब आर्टिलरी) ने भारतीय वायुसेना के साथ मिलकर बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कोर के बहादुर तोपचियों ने दुश्मन के कई युध्दक जहाजों को मार गिराया तथा महत्त्वपूर्ण पुलों, आयुध डिपो, हवाई अड्डों आदि की हवाई हमलों से सुरक्षा कर सेना को आगे बढ़ने में अपनी अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

पाक सेना का नेतृत्व कर रहे लेफ्टिनेंट जनरल ए ए के नियाजी ने अपने 93 हजार सैनिकों के साथ भारतीय सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया और अपनी हार स्वीकार कर ली। 13 दिनों तक चले युध्द के पश्चात् बांग्लादेश अस्तित्व में आया।

इस युध्द को आखिरी अंजाम तक पहुंचाने में फील्ड मार्शल सैम मानेकशॉ की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। उनकी सूझबूझ, रणनीति कौशल और रण योजना के सामने पाकिस्तानी सेना को मुंह की खानी पड़ी। इस युध्द में साहस, पहल, दूरदर्शिता, कूटनीति और निर्णय लेने की क्षमता के कारण तब संसद में विपक्ष के नेता रहे स्व० प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने श्रीमती इंदिरा गांधी को 'दुर्गा' कहा था। यह युध्द भारतीय सेना के अदम्य साहस, सूझ बूझ, रणनीतिक कौशल के लिए विश्व के इतिहास में दर्ज हो गया। वैसे तो अब तक पाकिस्तान हमारे देश से चार युध्द लड़ चुका है। किन्तु 1971 का यह युध्द उसे स्वप्न में भी भारतीय सेना की याद दिलाता रहेगा।

<u>आजादी का अमृत महोत्सव</u>

पक्षी हो पिंजड़े में बंद,हों सुख सुविधा के साधन सारे।
फिर भी वह उन्मुक्त गगन में, उड़ने को पंख पसारे ।।

स्वतंत्रता क्या होती है ? यह उस पक्षी से ज्यादा अच्छा कोई नहीं जानता जो कि पिंजड़े में बंद होता है। चाहे वह पिंजड़ा सोने से ही बना हुआ क्यों न हो और उस पक्षी के लिए हर सुविधा उपलब्ध हो। वह बेबस होकर पंख फड़फड़ाता है, लेकिन पिंजड़े में बंद होने के कारण वह उड़ नहीं पाता। वह अनबोला प्राणी है, वह अपने दुःख को व्यक्त नहीं कर सकता। इसलिए हमें उसकी वेदना पता नहीं चलती। हम स्वतंत्रता के मूल्य को दूसरे उदाहरण से समझते हैं। हम अपने मन से चाहे दिन भर कमरे में ताला बंद कर बैठे रहें, हमें कुछ महसूस नहीं होता। लेकिन उसी कमरे को कोई बाहर से बंद कर दें और हमें पता चल जाय कि कमरा बंद कर दिया गया है। हमारी स्थिति देखने लायक होती है। हम क्या - क्या प्रयास नहीं करते। हमें स्वतंत्रता का मूल्य तब कमरे में बंद हुए आदमी से पता चलता है।

हमारे देश भारत का स्वतंत्रता संग्राम आधुनिक दुनिया के अब तक के सबसे महान और गौरवशाली संघर्षों में से एक रहा है। इस वर्ष देश, आजादी के 75वें साल का जश्न मना रहा है। इस आजादी को पाने के लिए हमारे पूर्वजों ने बहुत बड़ी कीमत चुकायी है। इसके लिए बहुत सी मुसीबतों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हम जानते हैं कि हम सब को आजादी मिली किन्तु उसी समय हमें देश के विभाजन का सामना भी करना पड़ा। विभाजन के दौरान बहुत से ऐसे लोग थे जिन्हें अपना घर, जमीन और जायदाद छोड़ना पड़ा। यहां तक कि अपने परिवार को भी छोड़ना पड़ा।

अंग्रेजी शासन के दौरान देश की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब हो चुकी थी। अंग्रेज देश को एकदम खोखला कर चुके थे। जब अंग्रेज हमारे देश में व्यापार करने के लिए आए थे तब उस समय पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था में हमारी भागीदारी 23 से 25 प्रतिशत थी। लेकिन जब हमें आजादी प्राप्त हुई तब हमारी हिस्सेदारी मात्र 03 प्रतिशत रह गयी । अंग्रेज भारत से कच्चा माल ले जाते थे और तैयार माल लाकर यहां पर बेचते थे। जिससे वह दोहरा फायदा उठाकर मालामाल हो गये और हम दोहरा घाटा उठाकर कंगाल हो गये।

15 अगस्त 2022 को देश की आजादी के 75 साल पूरे होने जा रहे हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए 75वीं वर्षगांठ से एक साल पहले अर्थात 15 अगस्त 2021 से आजादी से जुडे कार्यक्रमों की शुरुआत की गयी। जिसमें देश की वीरता, साहस और बलिदान दिखाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जा रहे हैं।

इनमें संगीत, नृत्य, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, स्लोगन लेखन आदि का आयोजन किया जा रहा है। युवा शक्ति को भारत के भविष्य के रूप में दिखाते हुए इन कार्यक्रमों का आयोजन 15 अगस्त 2023 तक किया जाएगा।

अमृत महोत्सव की शुरुआत दांडी मार्च की 91वीं वर्षगांठ पर की गयी। इस दिन अमृत महोत्सव की शुरुआत इसलिए की गयी क्योंकि नमक भारत की आत्मनिर्भरता का प्रतीक था। अंग्रेजों ने भारत के मूल्यों के साथ- साथ इसकी आत्मनिर्भरता पर भी चोट की थी। महात्मा गांधी ने देश के लोगों के दर्द को महसूस किया और नमक सत्याग्रह शुरू किया। नमक देश के हर वर्ग से जुड़ा था इसलिए यह आंदोलन जन - जन का आंदोलन बन गया ।

गांधी जी के दांडी मार्च को नमक सत्याग्रह के नाम से भी जाना जाता है। सन् 1930 में अंग्रेजी शासन में भारतीयों को नमक बनाने का अधिकार नहीं था, उन्हें इंग्लैंड से आने वाले नमक को ही खाने में इस्तेमाल करना पड़ता था। इसकी आवश्यक आवश्यकता को देखते हुए अंग्रेजों ने इस नमक पर कई गुना कर लगा दिया था। वह जानते थे कि यह चाहे जितना महंगा क्यों न हो, लेकिन हर देशवासी को इसे खरीदना ही पड़ेगा। नमक दैनिक काम में आने वाली आवश्यक वस्तु है इसलिए नमक पर लगाये गये भारी कर को हटाने के लिए गांधीजी ने यह सत्याग्रह चलाया था।

एक लंबे संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को हमें आजादी मिली। हमारे देश के अगणित वीरों ने इसे पाने के लिए अपना बलिदान दिया। यह आजादी अमोल है। हमारा परम कर्तव्य है कि हम हर हाल में इसकी रक्षा करें और अपने उन पूर्वजों का धन्यवाद ज्ञापित करें, जिन्होंने हमें यह विरासत में दिया है।

मिले खुश्क रोटी जो आजाद रहकर।
तो वह भी गुलामी के हलवे से बेहतर।।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश जनसंख्या के आधार पर, 75 जनपदों के साथ देश का सबसे बड़ा राज्य है। इसका कुल क्षेत्रफल 2,43,286 वर्ग किमी है तथा 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 19,95,81,447 है। इसके उत्तर में उत्तराखण्ड तथा हिमाचल प्रदेश, पश्चिम में हरियाणा, दिल्ली तथा राजस्थान, दक्षिण में मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ और पूर्व में बिहार तथा झारखंड राज्य स्थित हैं। इनके अतिरिक्त राज्य की पूर्वोत्तर दिशा में नेपाल स्थित है।

इतिहास 01 अप्रैल 1937 को ब्रिटिश शासन के दौरान संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध के रूप में इसकी स्थापना की गयी थी। ब्रिटिश शासनकाल में इसे यूनाइटेड प्रोविंस कहा जाता था। सन् 1950 में इसे बदलकर उत्तर प्रदेश तथा सामान्य बोलचाल में यू.पी. कहा जाने लगा। इसे आज भी नाम बदलने के बाद भी संक्षिप्त रूप में यू.पी. ही कहा जाता है। इस प्रदेश का इतिहास लगभग 4000 वर्ष पुराना है। आर्यों ने दो-आब (गंगा और यमुना का मैदानी भाग) और घाघरा नदी के क्षेत्र को अपना ठिकाना बनाया। इन्हीं आर्यों के नाम पर देश का नाम आर्यावर्त पड़ा। समय के साथ - साथ आर्य भारत के अन्य क्षेत्रों में फ़ैल गये। उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तथा राज्य की आधिकारिक भाषा हिंदी है। उत्तर प्रदेश बोलियों की खान है। यहां पर मुख्य रूप से अवधी, ब्रज भाषा, बुन्देलखण्डी बोली जाती है।

धर्म का केन्द्र उत्तर प्रदेश हिन्दू धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है। त्रेता युग में भगवान राम तथा द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म इसी प्रदेश की धरती पर हुआ था। प्रयाग राज उत्तर प्रदेश का ही एक जनपद है जिसका वर्णन पुराणों में वर्णित है। विश्व का सबसे पुराना शहर बनारस (वाराणसी) इसी प्रदेश का एक जिला है। रामायण और रामचरित मानस जैसे ग्रंथ इसी प्रदेश की धरती पर लिखे गए। महात्मा बुध्द ने अपना पहला उपदेश वाराणसी के निकट सारनाथ में दिया था।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का उदघोषक उत्तर प्रदेश प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का केन्द्र रहा है। 10 मई 1857 ई. को मेरठ में सैनिकों के बीच भड़का विद्रोह जिसका नेतृत्व मंगल पांडे ने किया था, इसी प्रदेश में है। 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तलवार की गतिशीलता की कहानियां आज भी जीवंत है। आजादी के दीवाने चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह खान, अवध की बेगम हज़रत महल, बख्त खान, नाना साहेब, मौल्वी अहमदुल्ला शाह्, राजा बेनी माधव सिंह, गंगाबख्श रावत, वीरांगना उदादेवी, अजीमुल्लाह खान, बहादुर शाह जफर जैसे न जाने कितने और वीर इसी प्रदेश की मिट्टी में जन्मे, पले और बढ़े हैं जिन्होंने अंग्रेजी राज के कभी न डूबने वाले सूरज को डुबो दिया।

सम्पन्न राजनीति विरासत उत्तर प्रदेश ने देश को पहला प्रधानमंत्री, पहली महिला प्रधानमंत्री, पहली महिला मुख्यमंत्री दिया है। देश में अब तक हुए 15 प्रधानमंत्रियों में से 07 प्रधानमंत्री इसी प्रदेश ने दिए हैं।

सैन्य विरासत उत्तर प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से जहां देश का सबसे बड़ा प्रदेश है वहीं देश को सबसे ज्यादा सैनिक देने वाला प्रदेश भी है। इस समय तीनों सेनाओं में दो लाख से ज्यादा लोग अपनी सेवाएं दे रहे हैं। तीनों सेनाओं से सेवानिवृत्त हो चुके सैनिकों की संख्या लगभग साढे चार लाख है। अब तक लड़े गये युद्धों में हमारे प्रदेश के सैनिकों ने 01 विक्टोरिया क्रास, 04 परमवीर चक्र, 19 महावीर चक्र, 91 वीर चक्र, 06 अशोक चक्र, 20 कीर्ति चक्र, 106 शौर्य चक्र, 503 सेना मेडल तथा 97 मेंशन इन डिस्पैच प्रदान किया गया है। उत्तर प्रदेश के जनपद गाजीपुर के गांव गहमर को एशिया का सबसे बड़ा सैनिकों का गांव होने का गौरव प्राप्त है।

वीरता पुरस्कार

सेना में दो प्रकार के वीरता पदक दिए जाते हैं। युध्द के दौरान वीरता दिखाने पर और शांतिकाल के दौरान वीरता दिखाने पर। पहली श्रेणी के पुरस्कारों में परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र आते हैं तथा दूसरी श्रेणी में अशोक चक्र, कीर्ति चक्र और शौर्य चक्र आते हैं।

प्रथम तीन वीरता पुरस्कार परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र 26 जनवरी 1950 को भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए जिन्हें 15 अगस्त, 1947 से प्रभावी माना गया था। इसके पश्चात दिनांक 04 जनवरी 1952 को अन्य तीन वीरता पुरस्कार अशोक चक्र श्रेणी - I, अशोक चक्र श्रेणी-II और अशोक चक्र श्रेणी-III प्रारंभ किए गए जिन्हें 15 अगस्त 1947 से प्रभावी माना गया। इन पुरस्कारों को जनवरी 1967 में क्रमशः अशोक चक्र, कीर्ति चक्र और शौर्य चक्र के रूप में पुनः नाम दिया गया।

यह वीरता पुरस्कार वर्ष में दो बार घोषित किए जाते हैं – गणतंत्र दिवस के अवसर पर और फिर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर। इन पुरस्कारों का वरीयता क्रम परमवीर चक्र, अशोक चक्र, महावीर चक्र, कीर्ति चक्र, वीर चक्र और शौर्य चक्र है।

शांतिकाल के दौरान दिए जाने वाले वीरता पदक

अशोक चक्र (ए सी)

यह शांतिकाल में वीरता, साहस और त्याग के लिए दिया जाने वाला सैन्य सम्मान है। यह चक्र परमवीर चक्र के समान है। यह दुश्मन के मुकाबले से अलग विशिष्ट शौर्य, अपूर्व वीरता या आत्मत्याग के लिए दिया जाता है। यह सम्मान सैनिक या असैनिक किसी को भी दिया जा सकता है। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुहास बिश्वास पहले भारतीय वायुसेना के अफसर थे जिन्हें अशोक चक्र दिया गया।

यह गोलाकार, दोनों तरफ रिमों के साथ 1.38 इंच का व्यास और स्वर्ण कलई का होगा। इसके अग्रभाग पर, इसके केन्द्र में अशोक चक्र की प्रतिकृति उत्कीर्ण होगी जिसके चारों ओर कमल माला है। इसके पश्च भाग पर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में “अशोक चक्र” शब्द उत्कीर्ण किया गया है। दोनों रूपान्तरण दो कमल के फूलों से अलग-अलग हो रहे हैं।

<u>कीर्ति चक्र (के सी)</u>

कीर्ति चक्र भारतीय सैन्य पदक है। यह युध्द के मैदान में वीरता, साहस और त्याग के लिए दिया जाता है। यह शांति के समय दिया जाने वाले महावीर चक्र के समकक्ष होता है। शांति के समय में बहादुरी के सम्मानों में यह दूसरे नम्बर पर है। अशोक चक्र के बाद और शौर्य चक्र से पहले इसका स्थान आता है।

यह आकार में वृताकार होता है और यह चांदी से निर्मित होता है। इसका व्यास 1 और 3/8 इंच होता है जो 30 मिमी के रिबन से बंधा होता है जो गहरा हरा होता है। उस पर 2 मिमी भगवे रंग की धारियां होती हैं। पदक के मध्य में अशोक चक्र की अनुकृति उभरी हुई होती है। जिसके चारों ओर कमल की माला होती है। इसके पीछे की ओर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में "कीर्ति चक्र" उकेरा गया होता है। जिसके दोनों ओर दो कमल के फूल होते हैं।

<u>शौर्य चक्र (एस सी)</u>

शौर्य चक्र दुश्मन से सीधे टकराव से अलग समय में उन कार्यों के लिए दिया जाता है जिसमें वीरता, साहस और त्याग का प्रदर्शन होता है। वीर चक्र के समकक्ष यह शांति काल का पदक है। यह सामान्य तौर पर शांति के समय में दुश्मन के विरूद्ध की गयी आपात कार्रवाई के लिए दिया जाता है। यह नागरिकों के साथ साथ सेना के जवानों को भी दिया जाता है।

शांतिकाल में दिए जाने वाले वीरता पुरस्कार में यह पदक तीसरे नम्बर पर आता है। यह सेना मेडल से पहले और अशोक चक्र, कीर्ति चक्र के बाद आता है। यह गोलाकार और कांस्य निर्मित, जिस का व्यास 1.38 इंच का है। इस मेडल के अग्र भाग पर केन्द्र में अशोक चक्र की प्रतिकृति उत्कीर्ण है जो कमल माला से घिरी हुई है। इसके पश्च भाग पर हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में शौर्य चक्र उत्कीर्ण है और ये रूपान्तरण कमल के दो फूलों द्वारा अलग- अलग हो रहे हैं।

सेना मेडल

सेना मेडल जिसे संक्षेप में “एस एम” कहा जाता है। इसे भारत सरकार द्वारा भारतीय सेना के आग्रह पर सैनिकों को ऐसी असाधारण कर्तव्य निष्ठा या साहस का परिचय देने वाले विशिष्ट कार्यों के लिए दिया जाता है जो कि सेना के लिए विशेष महत्व रखते हों। इसे 17 जून 1960 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्थापित किया गया।

यह एक गोलाकार रजत पदक है। इसमें आगे की ओर जिसमें एक संगीन ऊपर की ओर इंगित है तथा पीछे की तरफ एक खड़ा हुआ सिपाही बना हुआ है। इसके ऊपर हिन्दी में "सेना मेडल" लिखा हुआ होता है। इसका रिबन लाल रंग का होता है इसके बीच में सफेद रंग की पट्टी होती है। इसमें पहले 15 मिमी की लाल रंग की पट्टी फिर 2 मिमी की सफेद पट्टी फिर 15 मिमी की लाल रंग की पट्टी बनी होती है।

वायु सेना मेडल

वायु सेना मेडल एक भारतीय सैन्य सम्मान है जिसे सामान्यतः शांति काल में उल्लेखनीय सेवा के लिए दिया जाता है। हालांकि, यह युध्द काल में भी दिया गया है। यह सम्मान मरणोपरांत भी दिया जाता है।

इसे 17 जून 1960 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्थापित किया गया और 1961 से दिया जाने लगा।

इसमें आगे की ओर एक चतुर्भुज सशस्त्र रजत सितारा जो कमल के फूलों के आकार का है। इसके केंद्र में राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह अशोक स्तंभ बना है। एक सीधी बार झूलती पट्टिका जिसके किनारे पर सामान्यतया नाम और तारीख लिखी होती है। पीछे की ओर हिंदी में "वायु सेना मेडल" या "वायु सेना पदक"लिखा होता है। पंख फैलाए हुए एक हिमालय ईगल बनी हुई है। इसके रिबन की लम्बाई 30 मिमी होती है। बारी बारी से भूरे और संतरा रंग की विकर्ण पट्टिका बनी होती हैं। देखने पर रिबन बुना हुआ सा लगता है।

<u>नौसेना मेडल</u>

यह भारतीय नौसेना के सैनिकों को दिया जाने वाला वीरता पुरस्कार है। यह **17** जून **1960** को भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्थापित किया गया था।

यह चांदी का बना आकार में पांच कोणों वाला होता है। अशोक के पत्तों के साथ सजे हुए धातु के धारी को **3** मिमी चौड़े हुक से जोड़ दिया जाता है। आगे नौसेना क्रेस्ट उभरा होता है। इसके पीछे एक वृत्त और रस्सी के भीतर एक त्रिशूल उकेरा गया है और ऊपरी रिम के साथ हिंदी में "नौसेना मेडल" लिखा होता है। रिबन आसमानी नीले रंग का होता है। जिसमें सफेद पतली चांदी के रंग की पट्टी बनी होती है।

<u>मेंसंड इन डिस्पैचिज</u>

मेंसंड इन डिस्पैचिज एक प्रकार का सैन्य अभिलेख है जो दुश्मन का सामना करने वाले वीर सैनिक के बारे में उल्लेखित होता है और उनके शौर्य तथा पराक्रम की गाथा वर्णित होती है। यह अभिलेख आलाकमान को एक वरिष्ठ सैन्य अधिकारी के द्वारा प्रेषित किया जाता है जो भेजे गए एक आधिकारिक रिपोर्ट में वर्णित होता है।

इसे **1947** के बाद से शुरू किया गया है। इसे युध्द क्षेत्र में वीरता पुरस्कारों से कम प्रतिष्ठित वीरता के लिए दिया जाता है। यह सेना, नौसेना, और वायु सेना के जवानों रिजर्व फोर्सेस, टेरिटोरियल आर्मी, मिलिशिया के कर्मी और अन्य विधिपूर्वक गठित सशस्त्र बल, नर्सिंग सेवा के सदस्य और सशस्त्र बलों के अधीन या साथ काम करने वाले नागरिकों को दिया जाता है। इसे मरणोपरान्त भी दिया जाता है। यह कई बार भी दिया जा सकता है। इसको प्राप्त करने वाले व्यक्ति को पदक के रिबन पर कमल के पत्ते के रूप में एक प्रतीक पहनने का अधिकार है। उन्हें रक्षा मंत्रालय से एक आधिकारिक प्रमाण पत्र भी जारी किया जाता है।

सर्वोत्तम युध्द सेवा पदक

सर्वोत्तम युध्द सेवा पदक एस वाई एस एम के नाम से प्रसिध्द है। यह देश का युध्दकाल में सबसे प्रतिष्ठित सैन्य सम्मान है।

युध्द के प्रसंग में अथवा युध्द, संघर्ष या शत्रुता के समय असाधारण शौर्य के लिए दिया जाता हैं। यह पुरस्कार युध्दकाल में शांतिकाल के सर्वोच्च सेवा सम्मान परम विशिष्ट सेवा पदक के समकक्ष है। मरणोपरांत भी सर्वोतम युध्द सेवा पदक से सम्मानित किया जा सकता है। इससे युध्द, संघर्ष, शत्रुता के दौरान सबसे असाधारण शौर्य, सेवा के लिए सम्मानित किया जाता है। यह सेना, नौसेना और प्रादेशिक सेना, सहायक और रिजर्व बल और अन्य सशस्त्र बलों सहित वायु सेना के सभी रैंकों, नर्सिंग अधिकारी और सशस्त्र बलों में नर्सिंग सर्विसेज के अन्य सदस्यों तथा मरणोपरांत भी सम्मानित किया जा सकता है।

अगर पदक के प्राप्तकर्ता को एक बार से अधिक सम्मानित किया जाता है तो प्रत्येक ऐसे अतिरिक्त पुरस्कार को एक “बार” द्वारा रिबन से जोड़ा जाता है। प्रत्येक “बार” के लिए सरकार द्वारा अनुमोदित एक पैटर्न का एक छोटा प्रतीक चिन्ह उस रिबन में जोड़ा जाता है।

उत्तम युध्द सेवा पदक

उत्तम युध्द सेवा पदक यू वाई एस एम के नाम से प्रसिध्द है। इसे राष्ट्रपति द्वारा **26** जनवरी **1980** को शुरू किया गया था। यह युध्द काल में उल्लेखनीय सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सैन्य सम्मान है। इसे उच्च स्तर की विशिष्ट सेवाओं के लिए दिया जाता है। "उच्च स्तर संदर्भ" में युध्द, संघर्ष या शत्रुता का समय शामिल हैं। यह युध्दकालीन सम्मान “अति विशिष्ट सेवा पदक” के समकक्ष है जो एक शांतिकालीन विशिष्ट सेवा सम्मान है। उत्तम युध्द सेवा पदक मरणोपरांत भी प्रदान किया जा सकता है।

युध्द सेवा पदक

यह आमतौर पर यू एस एम के नाम से प्रसिध्द है। युध्द सेवा पदक युध्दकालीन समय में उल्लेखनीय सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा स्थापित सैन्य सम्मान है। इसे युध्द, संघर्ष या शत्रुता के समय विशिष्ट सेवा के लिए प्रदान किया जाता है। इस सम्मान के प्राप्तकर्ता को मरणोपरांत भी सम्मानित किया जा सकता है। यह सम्मान युध्दकालीन विशिष्ट सेवा पदक के समानांतर है, जो शांतिकाल का प्रतिष्ठित सेवा सम्मान है।

परम विशिष्ट सेवा पदक

इस पदक की शुरुआत 26 जनवरी 1960 को वीएसएम श्रेणी के रूप में की गई। यह पदक असाधारण कोटि की विशिष्ट सेवा को सम्मानित करने के लिए दिया जाता है। 27 जनवरी 1967 को इसका नाम 'परम विशिष्ट सेवा मेडल' कर दिया गया।

यह पदक गोलाकार होता है और इसका व्यास 35 मिमी है। यह सादी आड़ी पट्टी पर लगा होता है और इसकी फिटिंग स्टैंडर्ड होती है। यह सुनहरे रंग का होता है। इस पदक के सामने के हिस्से पर पांच नोकों वाला सितारा बना होता है और इसके पीछे की ओर राज्य चिन्ह बना होता है तथा ऊपरी घेरे के पास इसका नाम खुदा होता है। इसका फीता सुनहरे रंग का होता है और बीच में गहरे नीले रंग की सीधी रेखा होती है जो इसे दो बराबर हिस्सों में विभाजित करती है।

यदि पदक विजेता को पुनः पदक प्रदान किया जाता है तो बहादुरी के इस कारनामे को सम्मानित करने के लिए पदक जिस फीते से लटका होता है. उसके साथ एक बार लगा दिया जाता है। यदि केवल फीता पहनना हो तो यह पदक जितनी बार प्रदान किया जाता है. उतनी बार के लिए फीते के साथ सरकार द्वारा अनुमोदित पैटर्न के अनुसार बनी इसकी लघु प्रतिकृति लगाई जाती है।

अति विशिष्ट सेवा पदक

अति विशिष्ट सेवा पदक मूलतः विशिष्ट सेवा पदक वर्ग द्वितीय के रूप में स्थापित किया गया था। इसे 27 जनवरी 1967 को यह नाम दिया गया और बैज को दोबारा बदल दिया गया। 1980 से यह पदक मात्र गैर परिचालन की सेवा के लिए दिया जाता है क्योंकि परिचालन में विशिष्ट सेवाओं को पहचानने के लिए उत्तम युध्द सेवा मेडल का प्रावधान किया गया था।

यह पदक गोलाकार होता है और इसका व्यास 35 मिमी है। यह सादी आड़ी पट्टी पर लगा होता है। इसकी फिटिंग स्टैंडर्ड होती है। यह पदक उत्तम चांदी का बना हुआ है। इस पदक के सामने के हिस्से पर पांच नोकों वाला सितारा बना होता है और इसके पीछे की ओर राज्य चिह्न बना होता है तथा ऊपरी घेरे के पास इसका नाम खुदा होता है। इसका फीता सुनहरे रंग का होता है और इस पर गहरे नीले रंग की दो सीधी रेखाएं होती हैं जो इसे तीन बराबर हिस्सों में विभाजित करती है।

यदि पदक विजेता को फिर से पदक प्रदान किया जाता है तो बहादुरी के इस कारनामे को सम्मानित करने के लिए पदक जिस फीते से लटका होता है, उसके साथ एक बार लगा दिया जाता है। यदि केवल फीता पहनना हो तो यह पदक जितनी बार प्रदान किया जाता है, उतनी बार के लिए फीते के साथ सरकार द्वारा अनुमोदित पैटर्न के अनुसार बनी इसकी लघु प्रतिकृति लगाई जाती है।

विशिष्ट सेवा पदक

भारत सरकार द्वारा सशस्त्र बलों के सभी रैंकों के कर्मियों के लिए विशिष्ट आदेश पर की जाने वाली असाधारण सेवा हेतु दिया जाने वाला सम्मान है। यह सम्मान मरणोपरांत भी प्रदान किया जा सकता है और एक से अधिक बार सम्मान प्राप्त करने पर रिबन पर एक 'बार' द्वारा अंकित किया जाता है। सम्मान के साथ "वीएसएम" का उपयोग करने का अधिकार नामपत्र के रूप में दिया जाता है। पदक मूलतः "विशिष्ट सेवा पदक वर्ग **III**" के रूप में स्थापित किया गया था। इसका नाम **27** जनवरी **1967** को अपने वर्तमान नाम पर रखा गया था। **1980** से युध्द सेवा पदक सैन्य परिचालन में असाधारण सेवाओं के लिए दिया जाने लगा। तब से वीएसएम को गैर परिचालन सेवा तक सीमित कर दिया गया है।

सेना द्वारा चलाए गये विभिन्न ऑपरेशन

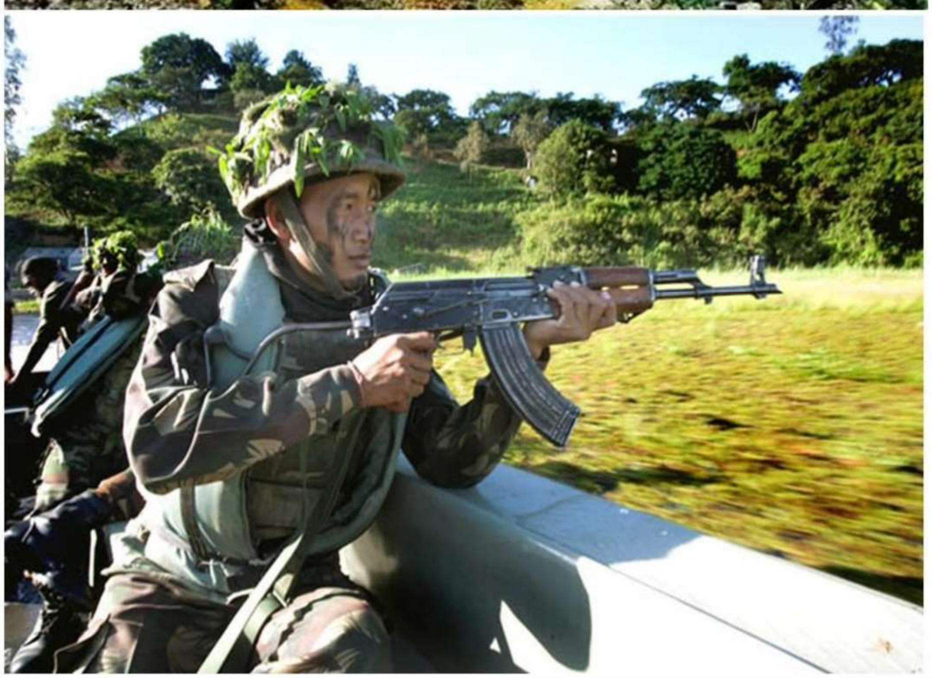

<u>ऑपरेशन पोलो</u>

(1948)

स्वतंत्रता के बाद जब भारतीय संघ का गठन हो रहा था, तब हैदराबाद के निजाम ने भारत के बीच में होते हुए भी स्वतंत्र देश रहने की कवायद शुरू की थी। विभाजन के दौरान हैदराबाद भी उन शाही घरानो में से था जिन्हें पूर्ण आजादी दी गई थी। हालाँकि 1948 में उनके पास दो ही विकल्प बचे थे भारत या पाकिस्तान में शामिल होना। हैदराबाद के आखिरी निजाम ओस्मान अली खान ने आजाद रहने और अपनी सेना के बल पर राज करने का फैसला किया।

भारत सरकार उत्सुकता से हैदराबाद की तरफ देख रही थी और सोच रही थी की हैदराबाद के निजाम खुद भारत संघ में सम्मिलित हो जायेंगे। लेकिन निजाम के मंसूबे कुछ दूसरे ही थे। मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना के प्रभाव में हैदराबाद के निजाम नवाब बहादुर जंग ने लोकतंत्र को नहीं माना। नवाब ने काज़मी रज्मी के नेतृत्व में राजकारस सेना बनाई जिसकी संख्या करीब दो लाख थी। राजकारस सेना ने हैदराबाद में लूटपाट मचा दी। बलात्कार और सामूहिक हत्याकांड करने शुरू कर दिए।

हैदराबाद के निजाम को पाकिस्तान से म्यांमार के रास्ते लगातार हथियार और पैसे की मदद मिल रही थी। ऑस्ट्रेलिया की कंपनी भी उन्हें हथियार सप्लाई कर रही थी। तब सरदार पटेल ने तय किया की इस तरह हैदराबाद भारत के लिए नासूर बन जायेगा। इस समस्या का समाधान तलाशने के लिए ऑपरेशन पोलो चलाया गया। यह ऑपरेशन 13–18 सितम्बर 1948 तक चला। इसमें निजाम की सेना बुरी तरह हार गयी और हैदराबाद भारत का हिस्सा बन गया। इस आपरेशन में हैदराबाद स्टेट फोर्स के 807 और राजकारस के 1373 सैनिक मारे गये और 1911 को बंदी बना लिया गया। मेजर जनरल सैयद अहमद अल एदूर्स ने भारत के मेजर जनरल जयन्त नाथ चौधरी के सामने सिकन्दराबाद में आत्मसमर्पण कर दिया।

भारत के मेजर जनरल जयन्त नाथ चौधरी के सामने सिकन्दराबाद में आत्म समर्पण करते हुए मेजर जनरल सैयद अहमद अल एदूर्स ।

ऑपरेशन विजय
(गोवा मुक्ति संग्राम)

15 अगस्त 1947 को जब हमने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की तब भी गोवा पुर्तगाली शासन के अधीन था। पुर्तगालियों ने गोवा और अन्य भारतीय क्षेत्रों पर अपनी पकड़ छोड़ने से इनकार कर दिया। पुर्तगालियों के साथ असफल वार्ता और असंख्य कूटनीतिक प्रयासों के बाद, भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने फैसला किया कि सैन्य हस्तक्षेप एकमात्र विकल्प है।

गोवा, दमन और दीप, भारत का अभिन्न हिस्सा बना रहे इसलिए उस समय की केंद्र सरकार की तरफ से गोवा की सभी अधिकृत सीमाओं को आजाद कराने के लिए मिलिट्री एक्शन को मंजूरी दी गई। इसके बाद सेना की दक्षिणी कमान के मुखिया लेफ्टिनेंट जनरल चौधरी ने 17वीं इन्फेन्ट्री डिविजन को तैनात किया। जिसकी अगुवाई मेजर जनरल के पी कैंडेथे कर रहे थे। इसके अलावा सेना की 50वीं पैराशूट ब्रिगेड को भी भेजा गया, जिसे ब्रिगेडियर सगत सिंह कमांड कर रहे थे। दमन पर हमले की जिम्मेदारी पहली मराठा लाइट इन्फेन्ट्री को सौंपी गई जबकि द्वीव के लिए 20वीं राजपूत रेजीमेंट और 5वीं मद्रास रेजीमेंट को रवाना किया गया।

सेना के अलावा भारतीय वायुसेना की वेस्टर्न एयर कमांड जिसे एयर वाइस मार्शल एरलिक पिंटो कमांड कर रहे थे, उन्हे गोवा में हर ऑपरेशंस पर नजर रखने की जिम्मेदारी दी गयी। महाराष्ट्र के पुणे और कर्नाटक के बेलगाम के सांब्रा पर वायुसेना ने अपना बेस बनाया और हमले किए। भारतीय नौसेना ने अपनी दो जंगी युध्दपोत के साथ ही एक एंटी सबमरीन फ्रिगेट को भी गोवा के करीब तैनात किया। नौसेना ने गोवा पर हमले की जिम्मेदारी चार टास्क ग्रुप्स को सौंपी। जो एक्शन ग्रुप मौजूद था उसमें पांच जहाज थे – मैसूर, त्रिशूल, बेतवा, ब्यास और कावेरी। वहीं एक कैरियर ग्रुप था जिसमें पांच जहाज शामिल थे – दिल्ली, कुठार, कृपाण खुखरी और राजपूत। इनके अलावा एयरक्राफ्ट कैरियार विक्रांत और एक सपोर्ट ग्रुप भी था, जिसमें आई एन एस धारिणी शामिल था।

सेना द्वारा गोवा में आजादी के लिए चलाए गए अभियान को “ऑपरेशन विजय” कोड नेम दिया गया था। इस अभियान में सेना ने 36 घंटे तक लगातार हमले किए और तब कहीं जाकर 461 साल बाद गोवा को पुर्तगाली कब्जे से आजादी मिल सकी।

<u>ऑपरेशन ब्लू स्टार</u>

(1984)

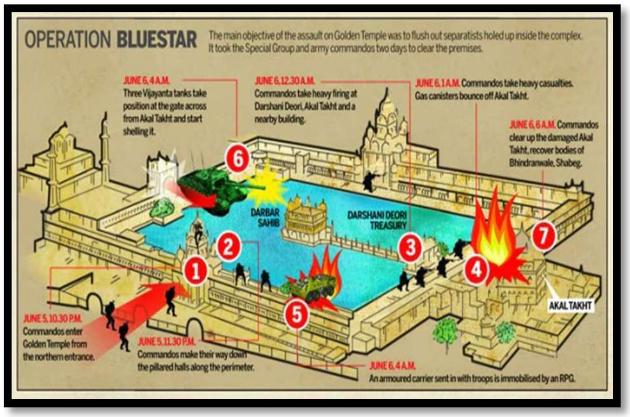

ऑपरेशन ब्लू स्टार सेना द्वारा स्वर्ण मंदिर परिसर में 05 जून 1984 को चरमपंथियों के विरूध्द चलाया गया एक सैन्य अभियान था। इस सैन्य अभियान का उद्देश्य स्वर्ण मंदिर को जरनैल सिंह भिंडरावाले और उनके समर्थकों के चंगुल से छुड़ाना था। सेना को जानकारी मिली थी कि स्वर्ण मंदिर के पास की 17 इमारतों में आतंकवादियों ने कब्जा जमा रखा है इसलिए सबसे पहले सेना ने स्वर्ण मंदिर के पास होटल टैंपल व्यू और ब्रह्म बूटा अखाड़ा पर कार्यवाही की। जहां छिपे आतंकवादियों ने बिना ज्यादा विरोध किए आत्म समर्पण कर दिया।

शुरुआती सफलता के बाद सेना इस ऑपरेशन के अंतिम चरण के लिए तैयार थी। मेजर जनरल के एस बरार ने अपने कमांडोज़ को मंदिर के अंदर घुसने का आदेश दिया। बरार के आदेश के बाद चारों तरफ से कमांडोज़ पर फायरिंग शुरू हो गई। जवानों पर अत्याधुनिक हथियारों और हैंड ग्रेनेड से हमला किया जा रहा था। इस तरह अत्याधुनिक हथियारों से किए जा रहे हमलों से स्पष्ट हो चुका था कि सेना को जो सूचना मिली थी वह आधी अधूरी थी।

सेना किसी भी तरीके से अकाल तख्त को अपने नियन्त्रण में लेना चाहती थी क्योंकि जरनैल सिंह भिंडरावाला यहीं छुपा हुआ था। आतंकवादियों के भारी प्रतिरोध के कारण एक टुकड़ी को छोड़कर कोई भी मंदिर के अंदर घुसने में कामयाब नहीं हो पाया था। अकाल तख्त पर कब्जा जमाने की कोशिश में सेना को काफी नुकसान उठाना पड़ा। आतंकवादियों की तैयारी बेहतर थी और वह किसी भी स्थिति में आत्मसमर्पण करने वाले नहीं थे। इस बीच मेजर जनरल के एस बरार के एक कमान अधिकारी ने टैंक की मांग की। मेजर जनरल के एस बरार यह समझ चुके थे कि इसके बिना कोई चारा नहीं है। सुबह होने से पहले ऑपरेशन खत्म करना था।

मेजर जनरल के एस बरार को सरकार से टैंक इस्तेमाल करने की इजाज़त मिल गयी। 05 बजकर 21 मिनट पर सेना ने टैंक से पहला गोला दागा। आतंकवादियों ने अंदर से एंटी टैंक मोर्टार से आक्रमण करना शुरू कर दिया। सेना ने भी कवर फायरिंग के साथ टैंकों से हमला शुरू किया। अब तक अकाल तख्त सेना के कब्जे से दूर था और सेना का नुकसान बढ़ता ही जा रहा था। इसी बीच अकाल तख्त में जोरदार धमाका हुआ। सेना को लगा कि यह धमाका गफलत में डालने के लिए किया गया है जिससे कि धुएं का लाभ उठाकर भागा जा सके।

अचानक बड़ी संख्या में आतंकवादी अकाल तख्त से बाहर निकले और गेट की तरफ भागने लगे। सेना ने भागने वाले आतंकवादियों को मार गिराया। उसी समय लगभग 200 लोगों ने सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। जरनैल सिंह के कुछ समर्थक सेना को अकाल तख्त के अंदर ले गए जहां पर 40 लोगों की लाश के बीच भिंडरावाले, मेजर जनरल शाहबेग सिंह और अमरीक सिंह की लाश पड़ी थी। 06 जून की शाम तक स्वर्ण मंदिर के अंदर छिपे आतंकवादियों का सेना ने सफाया कर दिया।

<u>ऑपरेशन मेघदूत</u>

(1984 - **सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण के लिए**)

आपरेशन मेघदूत सियाचिन ग्लेशियर को अधिकार में लेने के लिए भारतीय सेना द्वारा चलाए गये ऑपरेशन का कोड नाम था। यह अभियान 13 अप्रैल 1984 को शुरू किया गया था। यह सैन्य अभियान अपनी तरह का अनोखा सैन्य अभियान था । इस तरह का अभियान दुनिया की सबसे ऊंचाई पर स्थित युध्द क्षेत्र में पहली बार शुरू किया गया था। सैन्य कार्यवाही के बाद भारतीय सेना ने पूरे सियाचिन ग्लेशियर पर नियंत्रण कर लिया। वर्तमान समय में भारतीय सेना की तैनाती के स्थान को वास्तविक ग्राउंड पोजीशन लाइन (ए जी पी एल) के रूप में जाना जाता है।

1971 में भारत पाकिस्तान के बीच तीसरा युध्द हुआ और इस युध्द का अंत 1972 के शिमला समझौते के बाद हुआ। शिमला समझौते के तहत दोनों देशों के सैन्य प्रतिनिधि मंडल के बीच 9 मुलाकातें हुईं। समझौते पर दोनों पक्षों ने सुचेतगढ़ में हस्ताक्षर किया और एन जे 9842 को लाइन ऑफ़ कंट्रोल का नाम दिया गया। शिमला समझौते के पांच साल बाद दोनों देशों में सरकार बदल चुकी थी।

इसी बीच खुफिया एजेंसी रॉ को लंदन की एक कंपनी से जानकारी मिली कि पाकिस्तान आर्किटक गियर खरीद रहा है। जिस कम्पनी से यह जानकारी मिली उसी कंपनी से हमारा देश आर्कटिक गियर खरीदता था। आर्कटिक गियर उन कपड़ों को कहा जाता है जो अत्यंत बर्फीले इलाकों के लिए आवश्यक होते हैं। रॉ ने इस जानकारी से भारतीय सेना को अवगत कराया।

1977 में जर्मनी से पर्वतारोहियों का एक दल हमारे देश में आया और हमारी तरफ से साल्टोरो रेंज पर ट्रेकिंग की अनुमति मांगी। यह दल कर्नल बुल्ल कुमार से मिला। कर्नल बुल्ल कुमार हाई एल्टीट्यूड वारफेयर स्कूल के कमान अधिकारी थे। इस दल के पास जो नक्शा था उसमें एन जे 9842 से काराकोरम दर्रे तक के क्षेत्र को पाकिस्तान का हिस्सा बताया गया था। इसमें सियाचिन का क्षेत्र भी शामिल था। कर्नल बुल्ल कुमार तत्काल दिल्ली के लिए रवाना हो गये।

वहां पहुँचकर उन्होंने वह जर्मन नक्शा डायरेक्टर ऑफ़ मिलिटरी ऑपरेशंस को दिखाया। विदेशी जर्नलों में छपे कई और नक्शे दिखाए गए। डायरेक्टर ऑफ़ मिलिटरी ऑपरेशंस ने कर्नल बुल्ल कुमार को वास्तविक स्थिति की जानकारी करने के लिए कहा।

कर्नल बुल्ल कुमार ने ट्रेकिंग के लिए गये एक दल का नेतृत्व किया। जब यह दल बिलाफ़ोंड ला पहुँचा तो उस दल को कुछ जापानी लेबल वाले टिन के डिब्बे मिले और पाकिस्तानी हेलिकॉप्टर की गश्त भी नजर आयी। लेकिन कोई जमीनी हलचल नहीं दिखायी पड़ी। कर्नल बुल्ल कुमार ने लौटकर अपनी रिपोर्ट सौंप दी। इस रिपोर्ट में उनका सुझाव था कि हमारे देश को सियाचिन के क्षेत्र में अपनी गश्त बढ़ा देनी चाहिए और ऐसी चौकी का निर्माण किया जाना चाहिए जिसे हमेशा प्रयोग में लाया जा सके। चौकी के निर्माण को खारिज कर दिया गया लेकिन इस क्षेत्र में गश्त तेज कर दी गयी। सितम्बर- अक्टूबर 1983 में एक खुफिया जानकारी मिली कि पाकिस्तान सियाचिन में अपनी सेना को भेजने की तैयारी कर रहा है और उसने “ब्रुजिल फोर्स” के नाम से एक टुकड़ी बनाकर उसे उच्चतुंगता वाले क्षेत्रों में युध्द का प्रशिक्षण भी दे रहा है।

हमारे देश के लिए अब अपनी तैयारी करने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने लेफ्टिनेंट जनरल पी एन हून को सर्दियों में उच्चतुंगता वाले स्थानों में लड़ाई लड़ने वाले सामान की व्यवस्था के लिए यूरोप भेजा। वे वहां जाकर एक सप्लायर से मिले लेकिन उसने दूसरे सप्लायर का नंबर दिया क्योंकि पहले सप्लायर के पास 150 इक्विपमेंट का ऑर्डर पहले से था जो कि पाकिस्तान का था।

अब आर - पार की लड़ाई थी। ब्रिगेडियर चन्ना की रणनीति थी कि पाकिस्तान को पहल का मौका नहीं देना चाहिए और पाकिस्तान के ऊपर पहले हमला कर देना चाहिए। क्योंकि अप्रैल के महीने में वहां पर भारी बर्फबारी होती है और उस मौसम का सामना करना बहुत मुश्किल काम है। सेना ने ऑपरेशन के लिए वही वक्त चुना। 12 अप्रैल 1984 को 17:00 बजे एक एम आई 17 हेलिकॉप्टर उतरा। उस हेलिकॉप्टर में लेफ्टिनेंट जनरल पी एन हून द्वारा लाए गए इक्विपमेंट थे। सामान पहुंचते ही ऑपरेशन को हरी झंडी दे दी गयी। चार टीमें सियाचिन को अपने कब्जे में लेने के मिशन के लिए पहले से तैयार थीं।

आक्रमण के लिए बैसाखी के दिन को चुना गया ताकि पाकिस्तान भुलावे में रहे। पाकिस्तान को इस दिन भारत से ऑपरेशन की आशंका नहीं थी। 13 अप्रैल 1984 की सुबह चीता हेलिकॉप्टरों ने जवानों को ऊंचाई वाले इलाकों पर पहुंचाना शुरू कर दिया। वहां पहुँचकर 30 जवानों ने बिलाफोंड ला को कब्जे में ले लिया। उसके बाद बर्फबारी और तेज हो गई। दो दिनों के बाद जब मौसम साफ हुआ तो स्थिति बदल चुकी थी। 16 अप्रैल 1984 को सिया ला भारत का हो चुका था।

जून के महीने में पाकिस्तान ने 'ऑपरेशन अबाबील' लॉन्च किया। दुनिया की सबसे ऊंचे युध्द क्षेत्र में गोलियां और मोर्टार दागे गए। पाकिस्तान को बार- बार हार का सामना करना पड़ा। अगस्त आते-आते ग्योंग ला पर इंडियन आर्मी ने तिरंगा फहरा दिया। अब सियाचिन भारत के नियंत्रण में आ गया था।

<u>ऑपरेशन पवन</u>

(1987)

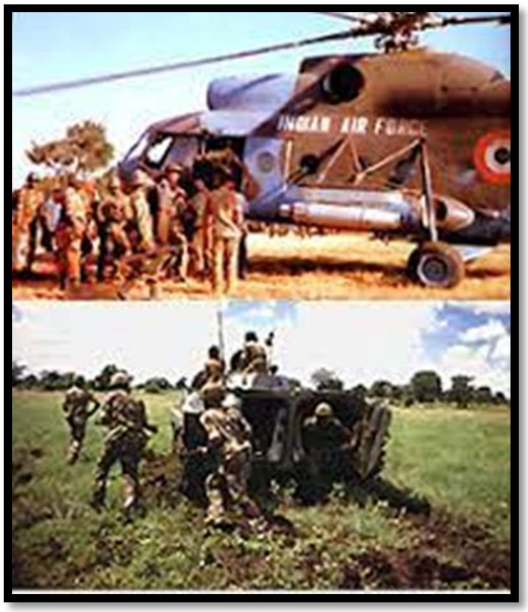

11 अक्टूबर 1987 को भारतीय शांति सेना द्वारा श्रीलंका में जाफना को लिट्टे के कब्जे से मुक्त कराने के लिए ऑपरेशन पवन शुरू किया गया था। इसकी पृष्ठभूमि में भारत और श्रीलंका के बीच 29 जुलाई 1987 को हुआ वह शांति समझौता था, जिसमें भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी और श्रीलंका के तत्कालीन राष्ट्रपति जे0 आर0 जयवर्धने ने हस्ताक्षर किया था। समझौते के अनुसार, श्रीलंका में जारी गृहयुध्द को खत्म करना था। इसके लिए श्रीलंका सरकार तमिल बहुत क्षेत्रों से सेना को बैरकों में बुलाने और नागरिक सत्ता को बहाल करने पर राजी हो गई थी। वहीं दूसरी ओर तमिल विद्रोहियों के आत्मसमर्पण की बात हुई, लेकिन इस समझौते की बैठक में तमिल विद्रोहियों को शामिल नहीं किया गया।

श्रीलंका में शांति भंग की समस्या की जड़ में वहां के निवासी सिंघली तथा तमिलों के बीच का झगड़ा था। तमिल लोग वहां पर अल्पसंख्यकों के रूप में बसे हैं। आंकड़े बताते हैं कि श्रीलंका की कुल आबादी का केवल 18 फीसद हिस्सा ही तमिल हैं। तमिल लोगों का कहना था कि श्रीलंका की सिंघली बहुल सरकार की ओर से तमिलों के हितों की अनदेखी होती रही है। इससे तमिल लोगों में असंतोष की भावना भरती गई और इस असंतोष ने विद्रोह का रूप ले लिया। वह स्वतंत्र राज्य तमिल ईलम की मांग के साथ उग्र हो गए।

श्रीलंका सरकार ने तमिल ईलम की इस मांग को न सिर्फ नजरअंदाज किया, बल्कि तमिलों के असंतोष को सेना के दम पर दबाने का प्रयास करने लगी। इस दमन चक्र का परिणाम यह हुआ कि श्रीलंका से तमिल नागरिक बतौर शरणार्थी भारत के तमिलनाडु में भागकर आने लगे। यह स्थिति भारत के लिए अनुकूल नहीं थी। इसीलिए श्रीलंका के साथ हुए समझौते में इंडियन पीस कीपिंग फोर्स का श्रीलंका जाना तय हुआ। जहां वह तमिल उग्रवादियों का सामना करते हुए वहां शांति बनाने का प्रयास करें, ताकि श्रीलंका से भारत की ओर शरणार्थियों का आना रुक जाए।

भारतीय शांति सेना ने सभी उग्रवादियों से हथियार डालने का दबाव बनाया, जिसमें वह काफी हद तक सफल भी हुई। लेकिन तमिल ईलम के उग्रवादी संगठन लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम ने धोखा किया। उसने पूरी तरह से हथियार न डालकर अपनी नीति बदल ली और उन्होंने आत्मघाती दस्तों का गठन करके गोरिल्ला युध्द की कला को अपना लिया। ऐसी स्थिति में भारत की शांति सेना की भूमिका बदल गई। खुद को टाइगर्स के हमले से बचने के लिए उन्हें भी सतर्क योध्दा का तरीका अपनाना पड़ा और वहां युध्द जैसी स्थिति बन गयी।

ऑपरेशन रक्षक

(1990)

देश के विभाजन के बाद से ही जम्मू और कश्मीर राज्य पर पाकिस्तान की बुरी नजर रही है। इस राज्य को लेकर पाकिस्तान देश से चार युध्द भी लड़ चुका है किन्तु उसे हर बार मुंह की खानी पड़ी है। आमने - सामने के युध्द में पार न पाने के कारण उसने छद्म युध्द का सहारा लिया और आंतकवादियों को प्रशिक्षित कर भेजना शुरू कर दिया। आतंकवादियों ने घाटी में अस्थिरता फैलानी शुरू कर दी । आतंकवादियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए भारतीय सेना ने जून 1990 में आपरेशन रक्षक शुरू किया। आपरेशन रक्षक के तहत आज भी हमारी सेना आतंकवादियों से निपटने में लगी हुई है।

ऑपरेशन राइनो

(1991)

असम में अलगाववादी समूहों द्वारा की जा रही देश विरोधी गतिविधियों को रोकने के लिए सन 1991 में भारतीय सेना द्वारा आपरेशन राइनो शुरू किया गया। असम में इन देश विरोधी गतिविधियों में मुख्यतः उल्फा का हाथ था। सरकार ने उल्फा को एक आतंकवादी संगठन के रूप में घोषित कर दिया और 1990 में गैर कानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम के तहत इसे प्रतिबंधित कर दिया। सेना ने सन् 1990 में आपरेशन राइनो से पहले आपरेशन बजरंग चलाया था। ऑपरेशन राइनो के बाद अलगाववादियों की गतिविधियों पर नियंत्रण करने के लिए सेना द्वारा आपरेशन राइनो 2 भी चलाया गया।

ऑपरेशन कैक्टस

(मालदीव का विद्रोह)

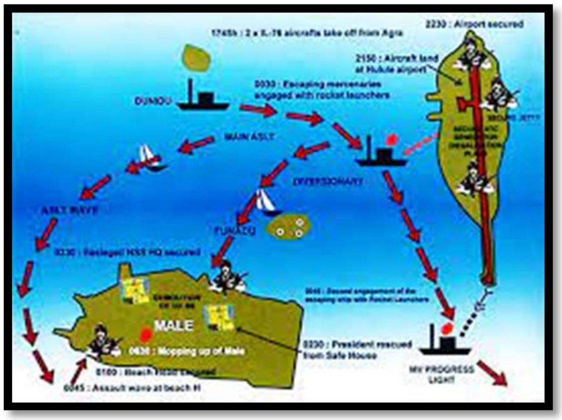

ऑपरेशन कैक्टस आजादी के बाद किसी दूसरे देश की धरती पर भारत का पहला सैन्य अभियान था। इस अभियान की अगुवाई पैराशूट ब्रिगेड के ब्रिगेड कमांडर ब्रिगेडियर फारुख बुलसारा कर रहे थे। माले में ऑपरेशन कैक्टस को आज भी दुनिया के सबसे सफल कमांडो ऑपरेशनों में गिना जाता है। दूसरे देश की धरती पर सिर्फ एक टूरिस्ट मैप के जरिये भारतीय सेना ने यह ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के बाद भारतीय सेना वापस अपनी बैरकों में वापस आ गयी। किसी अनहोनी की आशंका के चलते लगभग 150 सैनिक साल भर मालदीव में रूके रहे।

03 नवंबर 1988 को विदेश मंत्रालय को यह सूचना मिली कि मालदीव में विद्रोह हो गया है। विद्रोही बंदूकें लिए घूम रहे हैं। इसी दिन मालदीव के राष्ट्रपति गय्युम को भारत आना था लेकिन उनका दौरा तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के अचानक बने किसी कार्यक्रम के कारण टाल दिया गया था। मालदीव में विद्रोही इसी घात में बैठे थे कि राष्ट्रपति गय्युम भारत जाएं और तख्तापलट कर दिया जाए। इसके लिए उन्होंने सारे इंतजाम कर लिये थे। श्रीलंका के उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन ऑफ तमिल ईलम के उग्रवादी मालदीव पहुंच चुके थे। जब राष्ट्रपति गय्युम का भारत आना टल गया तब विद्रोहियों ने तय किया कि अब तो तख्ता पालट करके ही रहेंगे ।

03 नवंबर 1988 को मालदीव पहुंचे हथियारबंद उग्रवादियों ने राजधानी माले की सरकारी इमारतों को अपने कब्जे में लेना शुरू कर दिया। प्रमुख सरकारी भवन, एयरपोर्ट, बंदरगाह और टेलीविजन स्टेशन को उग्रवादियों ने अपने नियन्त्रण में ले लिया। उग्रवादी, राष्ट्रपति अब्दुल गय्यूम तक पहुंचना चाहते थे। इसी बीच राष्ट्रपति गय्यूम ने कई देशों समेत नई दिल्ली को भी इमरजेंसी संदेश भेजा। भारत में जो संदेश भेजा गया था वह सीधे तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी तक पहुंचा गया।

संदेश मिलने के 09 घंटे के भीतर ही भारतीय सेना की पैराशूट ब्रिगेड के करीब 300 जवान भारतीय वायुसेना के विमान इल्तुमिश से रात में ही माले के लिए सीधी उड़ान भरते हुए हुलहुले एयरपोर्ट पर पहुंच गये। तब तक हुलहुले एयरपोर्ट पर विद्रोही कब्जा नहीं कर पाये थे।

हुलहुले एयरपोर्ट से लैगूनों को पार करते हुए भारतीय सेना का यह दल राजधानी माले पहुंच गया। इसी बीच हमारे देश ने कोच्चि से भी और टुकड़ियों को रवाना कर दिया। माले के ऊपर हमारी वायुसेना के मिराज लड़ाकू विमान उड़ान भरने लगे। भारतीय सेना की उपस्थिति को देखकर विद्रोहियों के पसीने छूट गये। भारतीय सेना माले के मुख्य एयरपोर्ट को अपने नियंत्रण में ले चुकी थी।

इसी बीच भारतीय नौसेना ने भी अपनी कार्यवाही शुरू कर दी थी। आई एन एस गोदावरी और आई एन एस बेतवा सैन्य कार्यवाही के लिए मैदान में उतर चुके थे, उन्होंने माले और श्रीलंका के बीच उग्रवादियों की आपूर्ति व्यवस्था को काट दिया। भारतीय सेना विद्रोहियों पर भारी पड़ने लगी। भारतीय सेना की आक्रामकता को देखते हुए श्रीलंका से आए उग्रवादी वापस भाग खड़े हुए। लेकिन उन्होंने एक जहाज को बंधक बना लिया। बंधक जहाज को अमेरिकी नौसेना ने इंटरसेप्ट किया और उसने इसकी जानकारी भारतीय नौसेना को दी। आई एन एस गोदावरी से एक हेलिकॉप्टर ने उड़ान भरी और उसने बंधक बनाये गये जहाज पर भारत के मरीन कमांडो उतार दिये। कमांडो द्वारा की गयी कार्यवाही में 19 लोग मारे गए इनमें 17 उग्रवादी और 02 बंधक थे। यह पूरा अभियान दो दिन के भीतर समाप्त हो गया था। इस अभियान की सबसे खास बात यह थी कि इसमें हमारी कोई क्षति नहीं हुई थी।

ऑपरेशन विजय

(1999)

जम्मू कश्मीर राज्य की सीमा पर लगभग 814 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा का निर्धारण किया गया है। यह नियंत्रण रेखा जम्मू कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों राजौरी, पुंछ, उड़ी, कारगिल और लेह होते हुए सियाचिन तक जाती है। इस नियंत्रण रेखा से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग 1 है जो श्रीनगर, कारगिल, द्रास और लेह को जोड़ता है । इस राजमार्ग के बंद होते ही लेह का संबंध देश से टूट जाता है। इन क्षेत्रों में 6000 फुट से 17000 फुट तक की ऊंचाई वाले पहाड़ है। जिन पर पूरे वर्ष 20 से 30 फुट तक मोटी बर्फ जमी रहती है। इस क्षेत्र की 15000 फिट तक गहरी खाईयां, दूर - दूर तक फैली कटीली झाड़ियां तथा सकरे और दुर्गम मार्ग हैं। सितम्बर -अक्टूबर में तापमान शून्य से भी नीचे पहुंच जाता है।

भारत और पाकिस्तान के बीच 1999 में 08 मई से 26 जुलाई तक कश्मीर के कारगिल जिले में हुए सशस्त्र संघर्ष को कारगिल युध्द के नाम से जाना जाता है। कारगिल युध्द वही लड़ाई थी जिसमें पाकिस्तानी सेना ने द्रास कारगिल की पहाड़ियों पर कब्जा करने की कोशिश की थी। भारतीय सेनाओं ने इस लड़ाई में पाकिस्तानी सेना को बुरी तरह से परास्त किया। पाकिस्तान की प्रवृत्ति हमेशा धोखे की रही है। वह जानता है कि घोषणा करके युध्द लड़ना उसके बस की बात नहीं है। उसने 1947 तथा 1965 दोनों युध्दों में भी शुरू में अपने नियमित सैनिकों को कबीलाई कहता रहा है। वह इस बार भी अपने नियमित सैनिकों को मुजाहिदीन कहता रहा। कारगिल का यह युध्द पिछले बीस सालों से चले आ रहे जिहादियों की नीति के पोषक पाकिस्तान तथा उसकी दबी इच्छाओं का अभियान था। यह अनेक मामलों में पहले की दोनों लड़ाइयों से भिन्न है।

03 मई 1999 को एक चरवाहे ने बटालिक सेक्टर की पहाडियों में कुछ पाकिस्तानी लोगों को देखा। उसे पहाडियों के ऊपर कुछ गड़बड़ लगी। उसने वहां से वापस जाकर इसकी सूचना भारतीय सेना की 3 पंजाब रेजिमेंट को दी। इस सूचना की पुष्टि के लिए 3 पंजाब रेजिमेंट कुछ जवान उस चरवाहे की साथ बतायी हुई जगह पर गये। उन्होंने टेलीस्कोप से काफी छानबीन की। सैनिकों ने देखा कि पहाडियों पर कुछ लोग घूमते हुए दिखायी पड़ रहे हैं।

सैनिकों ने वापस जाकर इस घटना की खबर अपने उच्च अधिकारियों को दी। लगभग दो बजे एक हेलीकाप्टर से उन पहाड़ियों पर नजर दौडाई गयी। तब जाकर पता चला कि बहुत सारे पाकिस्तानी सैनिकों ने कारगिल की पहाड़ियों पर कब्जा कर लिया है।

घुसपैठियों के वेश में धोखेबाज पाकिस्तानी सैनिक कारगिल स्थित द्रास, मश्कोह घाटी, बटालिक आदि अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर अपना ठिकाना बनाकर पूरी सामरिक तैयारी के साथ आक्रमण के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसी क्रम में 05 मई को स्थिति का जायजा लेने के लिए एक पेट्रोलिंग पार्टी भेजी गयी। जिसे पाकिस्तानी सैनिकों ने पकड़ लिया और उनमें से 05 की निर्मम हत्या कर दी गयी। 3 पंजाब ने क्षेत्र में गश्त बढ़ा दी और 07 मई 1999 तक घुसपैठ की पुष्टि हो गयी। 3 इन्फेंट्री डिवीजन के मुख्यालय ने तत्काल कारवाई शुरू कर दी। 10 मई 1999 तक बटालिक सेक्टर में और दो बटालियनों को तैनात कर दिया गया। इस क्षेत्र में अभियान की कमान संभालने के लिए 70 इन्फेंट्री ब्रिगेड का मुख्यालय बटालिक में स्थापित कर दिया गया। 09 मई को पाकिस्तानी हमले में कारगिल में स्थित आयुध भंडार नष्ट हो गया। 10 मई को पता चला कि द्रास, मश्कोह और काकसर में भी पाकिस्तानी सेना ने घुसपैठ की है। इसके बाद अन्य क्षेत्रों में भी सतर्कता बढ़ा दी गयी। इस बात की भी पुष्टि हो गयी कि दुश्मन तुरतुक सेक्टर में नियन्त्रण रेखा और उसके दूसरी ओर भी मोर्चा संभाल चुका है। 18-31 मई के बीच चोरबाटला सेक्टर में कुछ ओर सैनिक टुकड़ियां तैनात कर दी गयीं और इस क्षेत्र में दुश्मन के घुसपैठ के प्रयासों को पूरी तरह नाकाम कर दिया गया।

कारगिल में जो कुछ देखने को मिल रहा था उससे पता चल गया कि वह अपने नियमित सेना का प्रयोग करके नियन्त्रण रेखा को बदलने की पाकिस्तान की सोची समझी योजना का हिस्सा है। यह भी स्पष्ट था कि जिन चोटियों पर दुश्मन ने कब्जा कर लिया था उन्हें खाली कराने के लिए संसाधन और अच्छी तैयारी की आवश्यकता होगी। शुरूआती दिनों में दुश्मन को भगाने के जो प्रयास किये गये, उनमें काफी संख्या में हमारे सैनिक हताहत हुए।

26 मई को भारतीय वायुसेना को भी इस अभियान में शामिल कर लिया गया। भारतीय वायु सेना ने "सफेद सागर" नाम से अपना अभियान शुरू किया। शुरूआती दौर में हमारी वायुसेना को भी क्षति उठानी पड़ी लेकिन बाद में उसने अपनी रणनीति में सुधार कर लिया। वायुसेना ने आगे के अभियान के लिए थलसेना को अत्यंत महत्वपूर्ण सहायता पहुँचाई। वायु सेना के माध्यम से दुश्मन की शक्ति और उसकी तैनाती के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त हुईं।

रैकी से पता चला कि बटालिक, कारगिल, द्रास और मश्कोह सेक्टरों में दुश्मन की एक एक - एक ब्रिगेड तैनात थी। प्रत्येक ब्रिगेड में शुरू में पाकिस्तान की नार्दन लाइट इन्फेंट्री की 02 बटालियने, स्पेशल सर्विसेज ग्रुप की 02 कम्पनियां और फ्रंटियर कोर के लगभग 600-700 सैनिक थे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक ब्रिगेड में लगभग 02 तोपखाना की यूनिटें, इंजीनियर, सिग्नल्स और प्रशासनिक इकाईयां शामिल थीं।

आरम्भ में दुश्मन से उन क्षेत्रों को खाली कराने की योजना थी, जहां से वे राष्ट्रीय राजमार्ग 1 ए पर अपना अधिकार जमाए हुए थे और उसके बाद अन्य क्षेत्रों से दुश्मन को खदेड़ने की योजना थी। राजनीतिक और कूटनीतिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए नियन्त्रण रेखा के उस पार ना जाने का निर्णय लिया गया था। प्राथमिकता के आधार पर सबसे पहले द्रास सेक्टर, मश्कोह घाटी, बटालिक सेक्टर और फिर काकसर सेक्टर को सुरक्षित करने की योजना बनाई गयी थी।

8 माऊंटेन डिवीजन को कारगिल, द्रास और मश्कोह सेक्टरों से पाकिस्तानियों को भगाने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। उसके नियन्त्रण में 56, 79 और 192 माऊंटेन ब्रिगेड थी। 3 इन्फेंट्री डिवीजन बटालिक और तुरतुक के क्षेत्रों के अभियान की जिम्मेदारी सम्भाले हुए थी। 70 माऊंटेन ब्रिगेड को बटालिक सेक्टर के अभियान की कमान सम्भालने के लिए पहले ही रवाना कर दिया गया था।

द्रास मश्कोह सेक्टर में सबसे पहले तोलोलिंग पर कब्जा करने की योजना थी। द्रास में 18 ग्रिनेडियर्स तोलोलिंग पर कब्जा करने के लिए तीन प्रयास पहले ही कर चुकी थी। 02 जून को 18 ग्रिनेडियर्स ने तोलोलिंग पर कब्जा करने के लिए अपना चौथा प्रयास किया। भारी प्रतिरोध का सामना करते हुए वह 10 जून तक ऐसे स्थान पर पहुंच गयी, जो पाकिस्तानी पोजीशन से लगभग 30 मीटर नीचे था।

2 राजपूताना राइफल्स ने 12 जून को तोलोलिंग पर कब्जा करने के लिए उस स्थान को एक मजबूत आधार के रूप में प्रयोग किया। 12 जून को रात 11 बजे उसने हमला शुरू किया और घमासान लड़ाई के बाद प्वाइंट 4590 पर कब्जा कर लिया। उसके बाद 18 ग्रिनेडियर्स ने 12 राजपूताना राइफल्स के साथ आगे बढकर प्वाइंट 4590 से 03 किमी आगे पोजीशन पर कब्जा कर लिया। बाद में प्वाइंट 5140 पर हमला करने के इसी पोजीशन प्वाइंट 4590 का प्रयोग किया गया।

प्वाइंट 5140 पर कब्जा करने के लिए 13 जम्मू कश्मीर राइफल्स ने दो बार प्रयास किये लेकिन उसे ज्यादा सफलता नही मिली थी। 19 जून को 18 गढवाल राइफल्स, 13 जम्मू कश्मीर राइफल्स और 1 नागा ने एक साथ मिलकर हमला किया ।

अंततोगत्वा 20 जून को रात 3ः35 बजे तक पोजीशन पर कब्जा कर लिया गया। 29 जून को भारतीय सेना ने टाइगर हिल के पास की दो पोस्ट 5060 व 5100 पर फिर से तिरंगा लहराया। यह पोस्ट भारतीय नजरिए से महत्वपूर्ण थी इसीलिए इसे जल्दी कब्जा किया गया।

02 जुलाई के दिन भारतीय सेना के जवानों ने कारगिल को तीनों तरफ से घेर लिया। दोनों देशों की तरफ से खूब गोलीबारी हुई। अंततः टाइगर हिल पर भारत ने तिरंगा लहराया। भारत ने धीरे-धीरे सभी पोस्टों पर कब्जा जमा लिया। 26 जुलाई को कारगिल युध्द आधिकारिक तौर पर समाप्त हो गया। भारतीय सेना ने पाकिस्तानी घुसपैठियों के पूर्ण निष्कासन की घोषणा की। इस पूरे युध्द में बोफोर्स तोप ने निर्णायक भूमिका निभायी। इस युध्द में दोनों देशों को काफी जनधन की हानि हुई।

<u>ऑपरेशन पराक्रम</u>

(2001)

13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर लश्करे तैयबा के कुछ आतंकियों ने हमला कर दिया। इस हमले के बाद भारत और पाकिस्तान में तनाव पैदा हो गया। सीमा पर सेना को शीघ्र तैनात कर दिया गया। स्थिति यह थी कि युध्द कभी भी हो सकता है। उसके बाद सीमा पर 16 अक्टूबर 2002 तक सेना तैनात रही थी। सेना की इसी तैनाती को ऑपरेशन पराक्रम कहा गया। 13 दिसंबर 2001 को संसद पर हुए हमले के बाद तीनों सेनाओं के प्रमुख जनरल एस पद्ननाभन, वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल अनिल टिपनिस और नौसेना प्रमुख एडमिरल सुशील कुमार ने प्रधानमंत्री वाजपेयी से मुलाकात की। इस हमले को लेकर पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए जंग की इजाजत मांगी गई। लेकिन इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया गया।

पूरा देश संसद पर हुए आतंकी हमले से आगबबूला था। चारों तरफ से सरकार पर दबाव बढ़ता जा रहा था। प्रधानमंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ने पाकिस्तान पर हमले के लिए सेना को प्रस्थान करने का आदेश दे दिया। सेना का प्रस्थान करने का काम 18 दिसंबर 2001 को शुरू हो गया था। देश के हर कोने से सेना की टुकड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर पहुंचने का आदेश मिला और लगभग 7 लाख सैनिक अपनी अपनी जिम्मेदारी के इलाके पर पहुंच गए। इतनी ज्यादा संख्या में सैनिकों की तैनाती में काफी समय लग गया।

इस आपरेशन में सेना के 7 लाख से ज्यादा जवान, टैंक और हथियार तैनात थे। सेना की यह तैनाती लगभग दस महीने तक रही। यह वह दौर था जब पाकिस्तान भारत के जवाब से थर थर कांप रहा था। इस ऑपरेशन का केवल यह फायदा हुआ कि लगभग 25 साल बाद पूरी सेना को युध्द का अभ्यास करने का मौका मिला। साथ ही विभिन्न रेजिमेंटों को अपनी कमियों का पता लग गया। जिससे वह इस तरह के आगामी युध्दों के लिए कारगर कदम उठा पायीं।

अशोक चक्र विजेता

<u>मेजर भूकांत मिश्रा</u>

<u>अशोक चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन ब्लू स्टार, जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी0 22479, मेजर भूकांत मिश्रा का जन्म 15 जून 1941 को जनपद आगरा के नौबस्ता तालीपोरा में श्रीमती शांति मिश्रा और श्री बी एल मिश्रा के यहां हुआ था। इन्होंने सेंट जॉन कालेज, आगरा से हाई स्कूल, फतेहचंद इन्टर कालेज, आगरा से इन्टरमीडिएट तथा बलवंत राजपूत कालेज, आगरा से स्नातक की शिक्षा पूरी की। 04 अप्रैल 1970 को इन्होंने भारतीय सेना की कुमाऊं रेजिमेन्ट में कमीशन लिया और 15 कुमाऊं रेजिमेन्ट में पदस्थ हुए।

1980 के दशक में पंजाब में आतंकवाद अपने चरम पर था। आतंकवादियों ने स्वर्ण मंदिर पर पूरी तरह से कब्जा जमा लिया था। सरकार ने स्वर्ण मंदिर को आतंकवादियों से मुक्त कराने के लिए एक अभियान शुरू किया जिसे "आपरेशन ब्लू स्टार" नाम दिया गया। इस आपरेशन में 15 कुमाऊं रेजिमेंट को स्वर्ण मंदिर परिसर खाली कराने की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

मेजर भूकांत मिश्रा 15 कुमाऊं की एक कम्पनी के कंपनी कमाण्डर थे। 06 जून 1984 को उन्हें स्वर्ण मंदिर में छुपे आतंकवादियों से परिसर को खाली कराने का आदेश मिला। आतंकवादियों ने परिसर को अभेद्य किले में परिवर्तित कर रखा था। इससे पहले रात में परिसर को खाली कराने के दौरान बहुत ज्यादा लोग घायल हो गये थे। प्रातः साढ़े चार बजे मेजर भूकांत मिश्रा के नेतृत्व में उनकी कंपनी ने बख्तरबंद गाड़ी के पीछे आड़ लेकर आगे बढ़ना शुरू किया। आतंकवादियों ने उनके ऊपर टैंकभेदी गनों और स्वचालित हथियारों से फायर करना शुरू कर दिया। इस हमले में अग्रिम प्लाटून के जूनियर कमीशन अफसर समेत आठ लोग शहीद हो गये।

जूनियर कमीशन अफसर के शहीद होते ही अग्रिम प्लाटून का नेतृत्व और नियन्त्रण समाप्त हो गया। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए मेजर भूकांत मिश्रा अपने जान की परवाह किए बिना भारी गोलीबारी के बीच कंपनी के नेतृत्व के लिए आगे बढ़े। अगले दिन साढ़े पांच बजे मेजर भूकांत मिश्रा की कंपनी की सहायता के लिए दो और कंपनियां भेजी गयीं। दोनों कंपनियों ने दिए गये समय पर आगे बढ़ना शुरू किया लेकिन आतंकवादियों ने उनके ऊपर भीषण गोलीबारी कर दी।

मेजर भूकांत मिश्रा की कंपनी को भी भारी नुकसान हुआ और कंपनी का आगे बढ़ना रूक गया। मेजर भूकांत मिश्रा अपनी कंपनी के आगे आये और अपने सैनिकों को अनुशरण करने के लिए कहा तथा परिसर के ऊपर हमला बोल दिया। मेजर भूकांत मिश्रा के इस साहसिक कदम से सैनिकों में जोश भर गया और वे दुगुने जोश से आतंकवादियों पर टूट पड़े। इसी दौरान मेजर मिश्रा ने देखा कि एक छेद के पीछे से लाइट मशीन गन से फायरिंग हो रही है जो कि उनकी कंपनी को आगे बढ़ने से रोक रही है। मेजर भूकांत मिश्रा अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उस स्थान की ओर रेंगते हुए आगे बढ़े और एक छेद के माध्यम से उस स्थान पर हैंड ग्रेनेड फेंक दिया। इस साहसिक कार्य के कारण लाइट मशीनगन और उसको चलाने वाला दोनों बर्बाद हो गये। लाइट मशीनगन को नष्ट करने के बाद मेजर भूकांत मिश्रा सीढ़ियों के रास्ते परिसर में कंपनी की ओर बढ़े। वह परिसर में घुसने ही वाले थे कि उनके ऊपर आतंकवादियों ने मीडियम मशीन गन से गोलियों की बौछार कर दी और वे शहीद हो गये।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान मेजर भूकांत मिश्रा ने अतुलनीय साहस और बहादुरी का परिचय दिया जिसके कारण वह अपने सैनिकों के आदर्श बने। इस सर्वोच्च बलिदान और प्रदर्शित वीरता के लिए मेजर भूकांत मिश्रा को 07 जून 1984 को मरणोपरान्त शांतिकाल के सबसे बड़े सम्मान "अशोक चक" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह से "अशोक चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती मीना मिश्रा

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

A Company commanded by late Major Bhukant Mishra was tasked to clear a complex during June 84. The Complex was very heavily fortified and was converted into impregnable bastion. Attempts to clear the building during the night suffered very heavy casualties. At 0440 hours one company led by Major Bhukant Mishra advanced behind an Armoured Personnel Carrier, which was soon hit by anti tank gun fire. At the same time the company came under very heavy fire and suffered eight casualties, including the JCO of the leading platoon. Realizing the loss of command and control in the leading platoon, Major Bhukant Mishra rushed forward, irrespective of the heavy fire all around and soon established command and control. Two companies were launched at 0530 hours on the next day. Both the companies advanced at the given time but soon came under very heavy fire. Major Bhukant Mishra's company once again suffered very heavy casualties and the advance of this company stalled. Major Bhukant Mishra at this stage stood in front of the company and asked them to follow him and charged at the base of the Complex. This daring act by Major Bhukant Mishra inspired the company and they rushed behind him and gained a foothold. A light machine gun firing through a pot hole in the base was interfering in the further advance.

Major Bhukant Mishra, without bothering for his safety, now crawled towards the base and destroyed the light machine gun and the crew by lobbing a grenade through the pot hole. This act was an example of cold courage. Immediately after destroying the light machine gun, Major Bhukant Mishra rushed to the steps leading into the Complex. As he was about to enter the Complex, he was shot down and killed by a burst of Medium Machine Gun.

Throughout the action late Major Bhukant Mishra displayed courage, bravery and a tremendous sense of duty towards the men he commanded and the country he served. The officer laid down his life like a gallant soldier leading his men right in front. For this supreme sacrifice and the gallantry displayed, Major Bhukant Misra was posthumously awarded "Ashok Chakra".

<u>कैप्टन जसराम सिंह</u>

<u>अशोक चक्र</u>

(ऑपरेशन मिजो हिल्स, जनपद बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश)

ई0 सी0 53763, कैप्टन जसराम सिंह का जन्म 01 मार्च 1935 को जनपद बुलन्दशहर के गांव भाभोकरा के एक किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बदन सिंह तथा मां का नाम श्रीमती चन्द्रावती था। इनकी प्राथमिक शिक्षा पड़ोस के गांव में हुई और उच्च शिक्षा खुर्जा के नथी मलराम सहाईमल एडवर्ड कोरोनेशन स्कूल से हुई। 12 अप्रैल 1953 को वे सेना की सिग्नल्स कोर में भर्ती हुए। 13 अक्टूबर 1963 को उन्हें राजपूत रेजिमेंट में आपातकालीन कमीशन दिया गया। अधिकारी में चयन होने के बाद इन्होंने अपना प्रशिक्षण आफिसर ट्रेनिंग अकादमी चेन्नई से पूरा किया।

सन् 1968 में कैप्टन जसराम सिंह 16 राजपूत रेजिमेंट में पदस्थ थे जो कि उस समय मिजोरम में तैनात थी। 30 अक्टूबर 1968 की रात में 16 राजपूत रेजिमेंट को यह खबर मिली कि लगभग 50 आतंकवादी मिजो हिल्स की पहाड़ियों के एक गांव में मौजूद हैं। बिना समय गंवाये कैप्टन जसराम सिंह ने दो प्लाटून सैनिकों के साथ उस गांव की ओर प्रस्थान कर दिया। गांव के नजदीक पहुंचने पर आतंकवादियों को इसकी भनक लग गयी और उन्होंने गश्ती दल पर फायर खोल दिया। निडर कैप्टन जसराम सिंह ने अपने सैनिकों के साथ आतंकवादियों पर धावा बोल दिया। इस भयानक हमले में आतंकवादियों को बहुत बड़ा नुकसान हुआ। दो आतंकवादी मारे गये और छः घायल हो गये। बड़ी भारी मात्रा में हथियार गोला बारूद और अपने मृत तथा घायल साथियों को छोड़कर आतंकवादी भाग खड़े हुए।

इस मुठभेड़ में कैप्टन जसराम सिंह के अद्भुत साहस और नेतृत्व क्षमता के कारण आतंकवादियों को इतना बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। इस अद्भुत साहस और नेतृत्व क्षमता के लिए कैप्टन जसराम सिंह को 30 अक्टूबर 1968 को शांतिकाल के सबसे बड़े वीरता सम्मान "अशोक चक्र" से सम्मानित किया गया। बाद में वे पदोन्नत होकर लेफ्टीनेंट कर्नल बने और 28 फरवरी 1990 को सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

गणतंत्र दिवस की परेड मे खुली जीप पर लाल रंग की पगड़ी पहने हुए, चमकते हुए चेहरे पर सफेद घुंघराली लम्बी मूंछों वाला दुबला पतला सा व्यक्ति राष्ट्रपति को सलामी देता हुआ कोई और नहीं उत्तर प्रदेश के गौरव लेफ्टीनेंट कर्नल जसराम सिंह हैं जो कि पिछले 52 सालों से गणतंत्र दिवस की परेड में देश को गौरवान्वित कर रहे हैं।

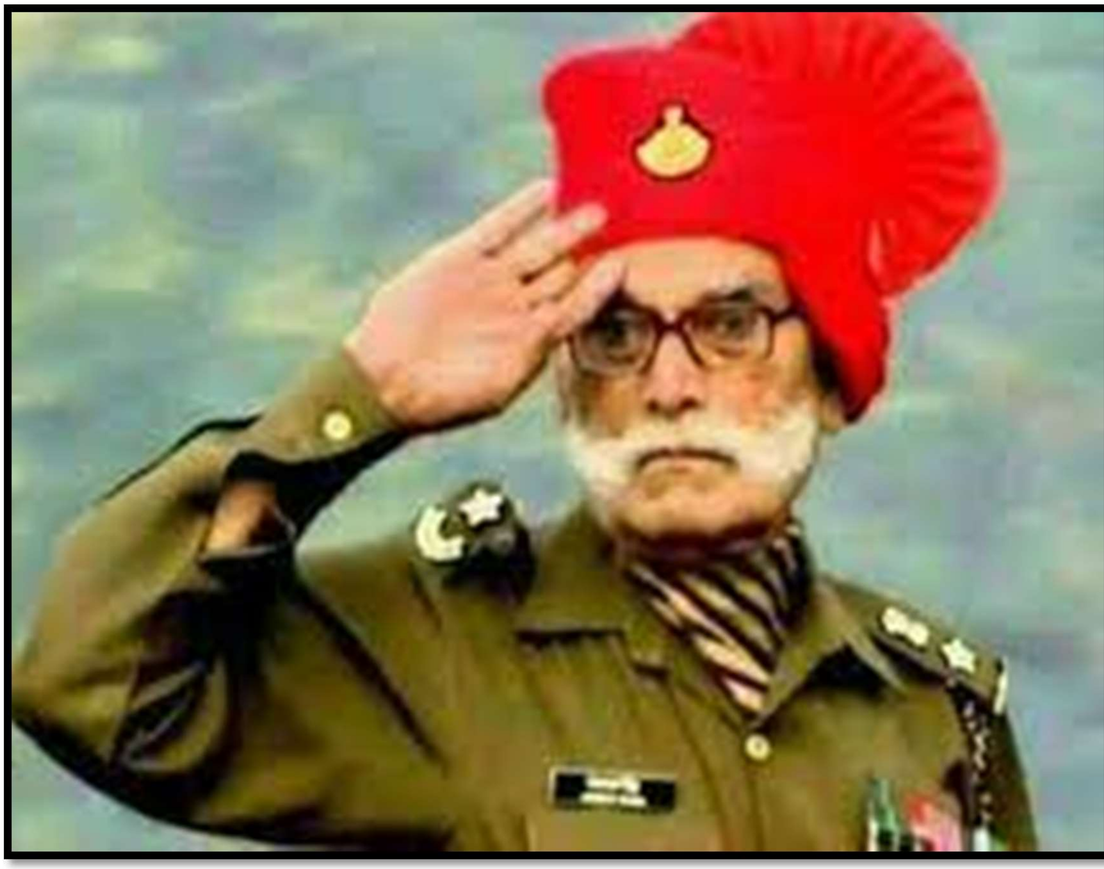

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Captain Jasram Singh was an officer with 16 Rajput deployed in Mizo Hills in 1968. He received information, about 50 hostiles being present in a village in Mizo Hills. Captain Jasram Singh alongwith two platoons immediately moved towards the village. On nearing the village, the patrol party came under intense hostile fire from a dominating feature. Undeterred Captain Jasram Singh decided to lead the assault and overran the hostile position. Hostiles abandoned the position, leaving behind two dead, six wounded and a large quantity of arms and ammunition.

In this encounter, Captain Jasram Singh displayed most conspicuous courage and leadership.

नायक नीरज कुमार सिंह

अशोक चक्र, मरणोपरान्त

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 16012114ए, नायक नीरज कुमार सिंह का जन्म 05 जून 1981 को जनपद बुलन्दशहर के गांव देवराला में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री ओमवीर सिंह और माता का नाम श्रीमती राजेश देवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला, देवराला और आगे की शिक्षा श्री गांधी इण्टर कालेज पचगई में हुई। 07 सितम्बर 2001 को यह राजपूताना राइफल्स में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के उपरान्त 13 राजपूताना राइफल्स में तैनात हुए। बाद में इनकी तैनाती 57 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

24 अगस्त 2014 को जम्मू और कश्मीर राज्य के कुपवाड़ा जिले के गुरदजी में 57 राष्ट्रीय राइफल्स द्वारा एक तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान वहां एक धोक के पास आतंकवादियों की हलचल दिखायी पड़ी। आतंकवादियों ने सेना के जवानों पर अंधाधुंध गोलियाॅ बरसाना शुरू कर दिया। इस गोलीबारी में नायक नीरज कुमार सिंह के सहयोगी घायल हो गये। अपनी जान की परवाह न करते हुए नायक नीरज कुमार सिंह रेंगते हुए अपने साथी के पास पहुंचे और उसे बाहर निकाला। इसी दौरान एक आतंकवादी ने नायक नीरज कुमार सिंह पर हैंड ग्रेनेड फेंक दिया और भीषण गोलीबारी कर दी। नायक नीरज कुमार सिंह निर्भीकता का परिचय देते हुए आगे बढ़ते रहे और नजदीक पहुंचकर एक आतंकवादी को गोली मार दी। इसी दौरान एक दूसरे आतंकवादी ने नायक नीरज सिंह पर हमला कर दिया जिससे उनकी राइफल गिर गयी।

राइफल के गिरते ही आतंकवादी ने उनके सीने में गोली मार दी। गंभीर चोटों के बावजूद अद्वितीय साहस का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने आतंकी पर हमला कर दिया। आमने - सामने की लड़ाई में उसका हथियार छीन कर उसे मौंत की नींद सुला दिया। ज्यादा घायल होने के कारण उनको वहां से उपचार के लिए ले जाना चाहा किन्तु होश में रहने तक वे मना करते रहे। बाद में उन्हें वहां से उपचार के लिए ले जाया गया लेकिन तब तक भारत माॅ का यह अमर सपूत सदा - सदा के लिए चिरनिद्रा में लीन हो गया।

नायक नीरज कुमार सिंह ने उच्चकोटि के साहस और वीरता का परिचय देते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया और भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं को कायम रखते हुए देश की रक्षा में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। नायक नीरज कुमार सिंह को उनकी वीरता और साहस के लिए 24 अगस्त 2014 को मरणोपरान्त "अशोक चक्र" से सम्मानित किया गया।

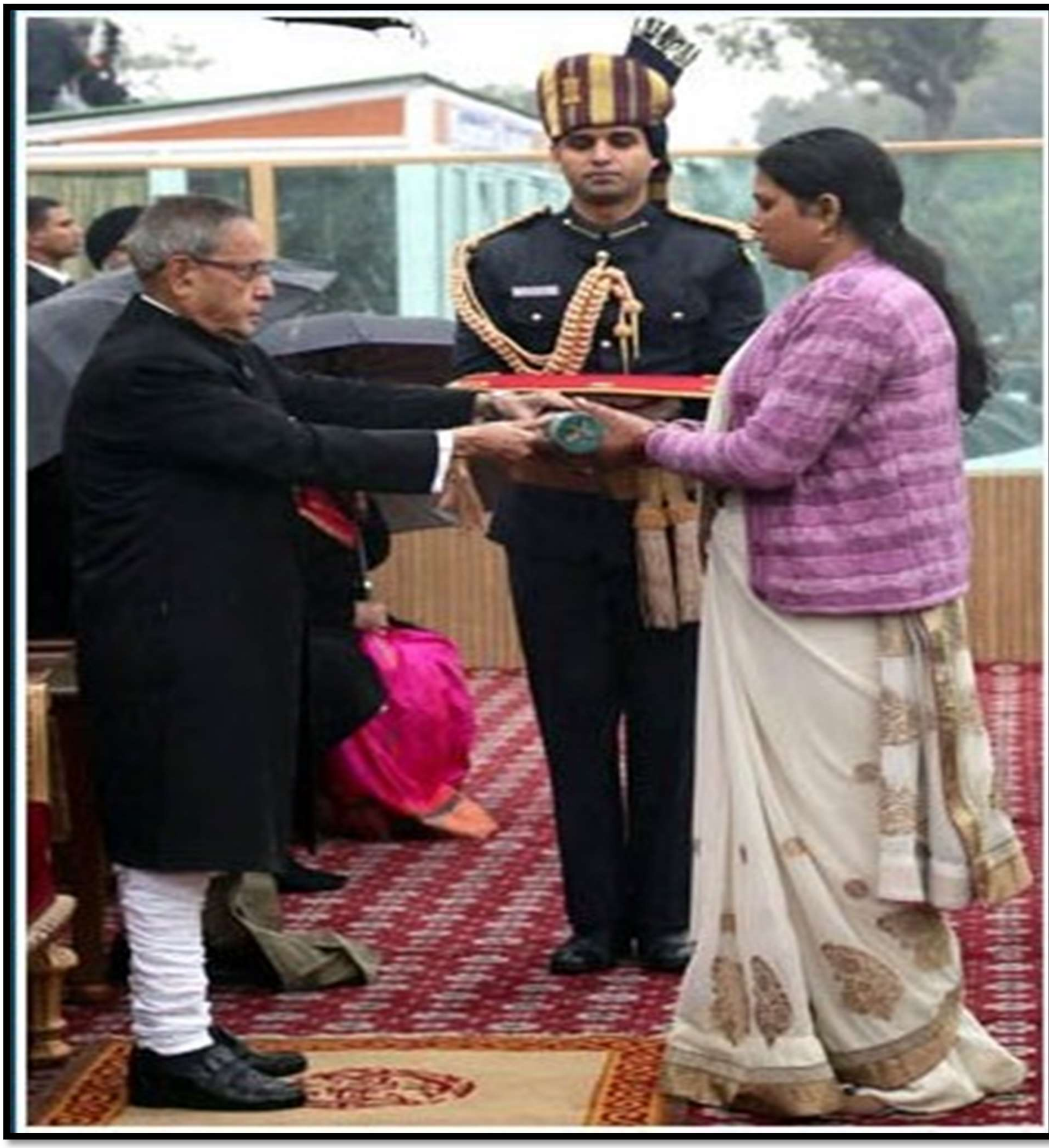

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "अशोक चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती परमेश्वरी देवी

<u>स्मृति शेष</u> : नायक नीरज कुमार सिंह के शौर्य और बलिदान की यादों को सदैव याद रखने के लिए उनकी वीरांगना श्रीमती परमेश्वरी देवी ने अपने गांव में अपने पति की प्रतिमा स्थापित की है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 24 August 2014, during a search operation in General area Gurdaji of Kupwara district of Jammu & Kashmir, movement of few terrorists close to a Dhok was noticed, who opened indiscriminate fire on own troops. In the ensuing fire fight, buddy of Naik Neeraj was hit on bullet proof jacket. With utter disregard to his personal safety, Naik Neeraj crawled and extricated his buddy. A terrorist threw grenades and brought heavy fire on Naik Neeraj. In a daring act, he inched closer to the terrorist and shot him dead. Simultaneously, the NCO was attacked by another terrorist resulting in dropping of his Rifle and the terrorist shot him in the chest. Despite grievous injuries, displaying unparallel courage, he pounced on the terrorist, snatched his weapon and killed him in hand to hand combat. He refused to be evacuated till he became unconscious and was later evacuated but he succumbed to his injuries.

Naik Neeraj Kumar Singh displayed raw courage and most conspicuous gallantry in personally eliminating two terrorists and sacrificing his own life in the highest traditions of the Indian Army.

<u>नाविक बेचन सिंह</u>

<u>अशोक चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन विजय, जनपद चन्दौली, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 67103, नाविक बेचन सिंह का जन्म 11 मार्च 1942 को जनपद चन्दौली के गांव भतीजा में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती चौधरा देवी तथा पिता का नाम श्री शिवशरण सिंह था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की और भारतीय नौसेना में भर्ती हो गये।

अंजदेव द्वीप पर पुर्तगालियों ने कब्जा जमा लिया था। 18 दिसंबर 1961 को एक नौसेना लैंडिंग दल को अंजदेव द्वीप को मुक्त कराने का कार्य सौंपा गया। यह दल दो भागों में बंटकर द्वीप पर उतरा। पहला दल बिना किसी विरोध के उतरा और दूसरा दल दिन भर पुर्तगालियों की भारी गोलाबारी और कड़े विरोध का शिकार रहा।

झाड़ियों और चट्टानों के पीछे छुपकर पुर्तगाली इस दल पर भयानक और सटीक फायरिंग कर रहे थे। जिससे इस दल का आगे बढ़ना रूक गया था। नाविक बेचन सिंह और नाविक विजेंद्र पाल सिंह तोमर को इन छिपे हुए स्थानों पर पहुंचकर हैंड ग्रेनेड फेंककर इनका सफाया करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

भारी गोलाबारी के बीच दोनों नाविक निडर होकर स्थिति की ओर रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे। हर बार जब उन्होंने हैंड ग्रेनेड फेंकने की कोशिश की, तो उन्होंने खुद को दुश्मन के फायर के आगे घिरा पाया। कई बार घायल होने के बावजूद, वे बड़े दृढ़ संकल्प के साथ दुश्मन की ओर बढ़ते रहे और अंततः पुर्तगालियों का सफाया करने में कामयाब रहे। लेकिन लगातार हो रही गोलीबारी में गम्भीर रूप से घायल होने के कारण और अपने कर्तव्य को आखिरी सांस तक पूरा करने की धुन में लीन नाविक बेचन सिंह शहीद हो गये।

नाविक बेचन सिंह ने इस पूरे अभियान में उत्कृष्ट साहस, वीरता और कर्तव्य के प्रति समर्पण का प्रदर्शन किया। उनकी इसी वीरता को सम्मानित करते हुए 18 दिसम्बर 1961 को उन्हें मरणोपरान्त शांतिकाल के सबसे बड़े सम्मान "अशोक चक्र" से सम्मानित किया गया।

स्मृति शेष : नाविक बेचन सिंह की याद में सैयदराजा हाइवे के पास ग्राम सभा भतीजा मुख्य द्वार के पास गेट का निर्माण करवाया गया है।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 18th December 1961, a Naval landing party was assigned the task of liberating Anjadev Island. The party landed in two batches. While the first batch landed without opposition, the second one came under heavy fire and stiff opposition from the Portuguese for most of the day.

At one stage the advance of the landing party was halted by heavy and accurate fire from hostile positions concealed in bushes and behind rocks. Ordinary Seamen Bechan Singh and Vijendra Pal Singh Tomar were detailed to approach these hidden positions and silence then by throwing hand-grenades.

Both the Seamen crawled fearlessly towards the positions under heavy fire. Each time they tried to throw a hand grenade, they exposed themselves to hostile fire. In spite of being wounded several times, they continued to close in on the hostile positions with great determination and finally succeeded in silencing them before being killed in action.

Seman Bechan Singh displayed outstanding courage and devotion to duty of the highest order to keeping with the highest traditions of the Navy.

<u>मेजर मोहित शर्मा, सेना मेडल</u>

<u>अशोक चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश)

आई सी 59066, मेजर मोहित शर्मा का जन्म 13 जनवरी 1978 को हरियाणा राज्य के रोहतक में श्रीमती सुशीला शर्मा तथा श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा मानव स्थली स्कूल, साउथ एक्सटेंशन, दिल्ली तथा होली एंजेल्स स्कूल, साहिबाबाद से तथा इन्टरमीडिएट की पढ़ाई डी पी एस पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद से पूरी की। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए महाराष्ट्र के संत गजानन महाराज कालेज आफ इंजीनियरिंग, सेगांव में प्रवेश लिया लेकिन सेना में जाने की उत्कट इच्छा के कारण पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर राष्ट्रीय रक्षा अकादमी का चुनाव किया। 11 दिसम्बर 1999 को भारतीय सेना की 5 मद्रास बटालियन में कमीशन लिया। बाद में जून 2003 में इनका चयन 1 पैरा स्पेशल फोर्स में हो गया।

मेजर मोहित शर्मा उत्तरी कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में ऑपरेशन में ब्रावो असॉल्ट टीम का नेतृत्व कर रहे थे। 21 मार्च 2009 को घने जंगल में घुसपैठ करने वाले कुछ आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद, उन्होंने सावधानीपूर्वक योजना बनाई और उन्हें ट्रैक करने में अपने कमांडो का नेतृत्व किया। संदिग्ध हरकत देखकर उन्होंने अपने स्काउट्स को सतर्क किया लेकिन आतंकवादियों ने तीन दिशाओं से अंधाधुंध फायरिंग करना शुरू कर दिया । इस भारी गोलीबारी में चार कमांडो घायल हो गए। मेजर मोहित शर्मा, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण अवहेलना करते हुए, रेंगते हुए आगे बढ़े और अपने दो घायल साथियों को सुरक्षित निकाल लिया। भीषण गोलाबारी की चिंता न करते हुए वह आतंकवादियों पर टूट पड़े और आतंकवादियों पर हैंड ग्रेनेड से प्रहार कर दिया। हैंड ग्रेनेड के प्रहार से दो आतंकवादियों को मार गिराया। इसी बीच उनके सीने में एक गोली आ लगी। वह गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद अपने कमांडो को निर्देश देते रहे।

अपने साथियों के लिए और खतरे को भांपते हुए उन्होंने आमने - सामने की लड़ाई में दो और आतंकवादियों को मार गिराया तथा भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपरा को कायम रखते हुए अपनी मातृभूमि के लिए लड़ते हुए शहीद हो गये।

मेजर मोहित शर्मा ने इस कार्यवाही में विशिष्ट वीरता, प्रेरक नेतृत्व और अदम्य साहस का परिचय दिया और आतंकवादियों से लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी विशिष्ट वीरता और प्रेरक नेतृत्व को सम्मानित करते हुए उन्हें 21 मार्च 2009 को शांतिकाल के सबसे बड़े सम्मान "अशोक चक्र" से सम्मानित किया गया।

स्मृति शेष : गाजियाबाद के करण गेट चौक से राजेन्द्र नगर मेट्रो स्टेशन जाने वाले मार्ग का नाम तथा राजेन्द्र नगर मेट्रो स्टेशन का नामकरण मेजर मोहित शर्मा के नाम पर किया गया है। करण गेट चौक पर मेजर मोहित शर्मा की प्रतिमा लगायी गयी है।

मेजर मोहित शर्मा मार्ग

मेजर मोहित शर्मा राजेन्द्र नगर, मेट्रो स्टेशन

करण गेट चौक पर मेजर मोहित शर्मा की प्रतिमा

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Mohit Sharma was leading Bravo Assault Team in operations in Kupwara District of North Kashmir. On 21 March 2009, after receiving information of presence of some infiltrating terrorists in dense forest, he planned meticulously and led his commandos in tracking them. On observing suspicious movement, he alerted his scouts but terrorists fired from three directions indiscriminately. In the heavy exchange of fire, four commandos were wounded. Immediately, with complete disregard to his personal safety, Major Sharma crawled and recovered two soldiers to safety. Unmindful of the overwhelming fire, he threw grenades and killed two terrorists but was shot in the chest. In the brief respite that followed, he kept directing his commandos, inspite of serious injuries. Sensing further danger to his comrades, he charged in a daring close painter quarter combat killing, two more terrorists and attained martyrdom fighting for his motherland in the highest traditions of Indian Army.

Major Mohit Sharm SM, thus displayed most conspicuous gallantry inspiring leadership and indomitable courage and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

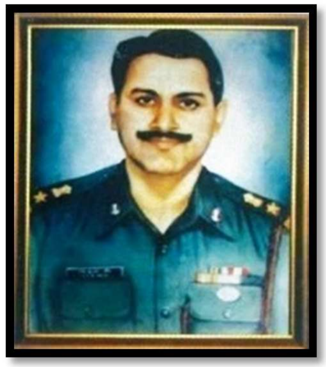

लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर
अशोक चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद हरदोई, उत्तर प्रदेश)

आई सी0 36177(पहले एस एस 27314), लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर का जन्म 01 जुलाई 1953 को जनपद हरदोई के गांव नीर में श्रीमती स्नेह लता गौर तथा श्री राजेन्द्र सिंह गौर के यहां हुआ था। उन्होंने अपनी इन्टरमीडिएट तक की स्कूली शिक्षा हरदोई से पूरी की और बाद में वहीं के सी एस नेहरू डिग्री कालेज से स्नातक की शिक्षा पूरी की। 12 मई 1974 को उन्हें भारतीय सेना में शार्ट सर्विस कमीशन मिला और बिहार रेजिमेन्ट में पदस्थ हुए। 12 मई 1979 को उन्हे स्थायी कमीशन मिला। डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कालेज में उन्हें रक्षा अध्ययन में एम एस सी की डिग्री मिली।

लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर 10 बिहार रेजिमेन्ट के कमान अधिकारी थे। 29 नवम्बर 1994 को उन्हें सूचना मिली कि बारामुला के बाजीपुरा गांव में 10 से 12 भाड़े के आतंकवादी छुपे हुए हैं। उन्होंने उन आतंकवादियों को खोज निकालने के लिए एक तलाशी अभियान चलाया। अपने त्वरित कार्यवाही बल के साथ वे तलाशी अभियान चला ही रहे थे कि 07:00 बजे आतंकवादियों ने उनकी टीम पर भारी गोलीबारी कर दी। लेफ्टीनेंट कर्नल गौर ने दो कंपनियों को फिर से समायोजित किया और भागने के सभी संभावित रास्तों को बंद कर दिया। उन्होंने आतंकवादियों से निपटने के लिए खुद राइफल संभाली। दोनों तरफ से हो रही भारी गोलीबारी के बीच उन्होंने एक तरफ से आगे बढ़ना शुरू किया और आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गये।

उनकी बहादुरी देखकर आतंकवादी चकित हो गये। उन्होंने तीन विदेशी आतंकवादियों को मार गिराया। इसके बाद उन्होंने यूनिवर्सल मशीन गन की ओर बढ़ना शुरू किया जो कि एक चट्टान के पीछे लगायी गयी थी और उस से सैनिकों पर भारी फायरिंग की जा रही थी। चारों तरफ गोलियों की बौछार हो रही थी लेकिन अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना वे रेंगते हुए आगे बढ़े और फायरिंग करने वाली यूनिवर्सल मशीन गन की ओर ग्रेनेड फेंक दिया। जिससे यूनिवर्सल मशीन गन से फायरिंग करने वाला आतंकवादी मारा गया।

इस कार्यवाही में लेफ्टीनेंट कर्नल गौर बुरी तरह से घायल हो गये और लड़ते - लड़ते वीरगति को प्राप्त हो गये। लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर ने कर्तव्य परायणता और अदभुत बहादुरी की मिसाल कायम की। उनकी इस असाधारण कर्तव्य परायणता और अद्भुत बहादुरी के लिए उन्हें मरणोपरान्त "अशोक चक्र" से सम्मानित किया गया।

स्मृति शेष : लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर की वीरता को याद करने के लिए जनपद हरदोई में "लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर पार्क" बनाया गया है और लखनऊ छावनी में एक आवासीय कालोनी का नाम "गौर एंनक्लेव" रखा गया है।

लेफ्टीनेंट कर्नल हर्ष उदय सिंह गौर पार्क जनपद हरदोई

गौर एंनक्लेव, लखनऊ

प्रशंसात्मक उल्लेख

Lt Col Harsh Uday Singh Gaur was Commanding 10 Bihar which was deployed in J&K. On 29 November 1994, he received an information that 10 to 12 foreign mercenaries were hiding in Bazipura village of Baramulla district. He immediately organised a combing operation to flush out the mercenaries. While combing the area along with his Quick Reaction Team at 0700 hours, he came under heavy gun fire of the mercenaries. Lieutenant Colonel Gaur quickly readjusted two companies so that all escape routes could be blocked while he himself got down to neutralise the gun fire. Despite heavy exchange of fire, he kept moving forward from a flank and reached close to the firing position of the mercenaries.

His bold and unexpected action completely surprised the mercenaries. In the ensuing exchange of fire, he killed three mercenaries. Later he went ahead to neutralise the Universal Machine Gun that was firing at him from behind a rock. With bullets flying all around him, he bravely crawled forward and lobbed a hand grenade at the gun position, killing yet another mercenary and silenced the gun. During the encounter, he himself was fatally wounded. The sacrifice made by him was an act of courage, beyond the call of duty that set an example of grit and dogged determination to fight the militants.

For the daredevil act Lt Col Harsh Uday Singh Gaur was posthumously awarded.

कीर्ति चक्र विजेता

<u>मेजर पुष्पेन्द्र सिंह</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(जनपद आजमगढ़, उत्तर प्रदेश)

आई सी0 65685 एक्स, मेजर पुष्पेन्द्र सिंह का जन्म 04 फरवरी 1980 को जनपद आजमगढ़ के जमुहत में श्रीमती सूर्य कुमारी सिंह और सूबेदार राजमणि सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला, जमुहत और जूनियर हाईस्कूल से लेकर इण्टर तक की शिक्षा आर्मी पब्लिक स्कूल, डगसाई, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश से पूरी की। इन्होंने 07 सितम्बर 2002 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में कमीशन लिया और 20 राजपूताना राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 28 असम राइफल्स में हुई।

06 मार्च 2009 को मेजर पुष्पेन्द्र सिंह को एक आंतकवादी समूह के शीर्ष नेतृत्व की इम्फाल के एक क्षेत्र में उपस्थिति के बारे में सूचना मिली। उन्होंने मणिपुर पुलिस के कमांडो के साथ मिलकर एक संयुक्त अभियान शुरू किया। 07 मार्च 2009 को लगभग 01:30 बजे घेराबंदी के दौरान आतंकवादियों ने अभियान दल पर भयंकर गोलीबारी कर दी। जिससे दल का आगे बढ़ना रूक गया। मेजर पुष्पेन्द्र सिंह ने स्थिति का विश्लेषण किया और भागने के सभी संभावित रास्तों को बंद कर दिया। उन्होंने दो आतंकवादियों को अंधाधुंध फायरिंग करते हुए देखा। अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय देते हुए और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वह लक्ष्य क्षेत्र की ओर बढ़ने लगे। नजदीक पहुंचकर उन्होंने आतंकवादियों पर गोलियों की बौछार कर दी, फलस्वरूप दो आतंकवादी मारे गये।

मेजर पुष्पेन्द्र सिंह रेंगते हुए आगे बढ़े। उन्होंने देखा कि एक छुपाव स्थल से दो आतंकवादी हमारे जवानों पर जबरदस्त फायरिंग कर रहे हैं। उन्होंने ग्रेनेड निकाला और धीरे से छुपाव स्थल के अंदर फेंक दिया। तभी अचानक एक आतंकवादी बाहर आया और चारों तरफ अंधाधुंध फायरिंग करने लगा।

इस मौके और अपने फायरिंग कौशल का फायदा उठाते हुए उन्होंने उसे वहीं मार गिराया। बहादुर अधिकारी ने पुनः रेंगते हुए आगे बढ़ना शुरू किया और लगभग 30 मीटर आगे जाकर छुपाव स्थल में ग्रेनेड फेंक दिया। अपनी जान की परवाह न करते हुए छुपाव स्थल में घुस गये। अंदर छिपे आतंकवादी ने उनके ऊपर गोली चला दी। उन्होंने उसे वीरतापूर्वक मार गिराया। इस प्रकार आतंकवादी समूह के चार आतंकवदियों को उन्होंने अकेले ही मार गिराया जिसमें आतंकवादियों का चेयरमैन और डिप्टी चीफ शामिल थे।

मेजर पुष्पेंद्र सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते हुए प्रेरणादायक नेतृत्व, आक्रामक उत्साह, साहस और अद्वितीय बहादुरी दिखायी। उनके इस साहस और आक्रामक उत्साह को सम्मानित करने के लिए 06 मार्च 2009 को "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर पुष्पेंद्र सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 06 March 2009, Major Pushpender Singh, based on specific inputsabout presence of top leadership of a terrorist group, launched a joint operation with Imphal Police Commandos in general area in Imphal, Manipur. In the process of establishment of inter cordon, police party was heavily fired upon and pinned down by the terrorists at about 0130 hours on 07 Mar 2009. The officer quickly analysed the situation and cut off all escape routes. Showing inspirational leadership, he started advancing towards the target area where he spotted two terrorists firing indiscriminately. The officer narrowly missed certain death and in swift retaliation, with complete disregard to his personal safety charged onto the well entrenched two terrorists and shot them dead in hail of bullets from close quarters.

The officer crawled and personally lobbed grenade inside the hide out from where two more terrorists were firing on to the own troops. Suddenly, one terrorist came out and started firing all around indiscriminately. The officer immediately grabbed the opportunity and with sharp shooting skill, killed him on the spot. The valiant officer further crawled about 30 meters and lobbed another grenade and made forced entry to the hide out inspite of momentous peril to life. The terrorist hiding inside opened fire at the officer. The officer boldly charged at the terrorist and killed him. Thus the officer single handedly killed four top leaders of a terrorist group including its Chairman and his Deputy Chief.

Major Pushpender Singh showed inspirational leadership, aggressive sprit, raw courage and unparalleled bravery while fighting the terrorist.

नायक नवाब सिंह तोमर
कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2874977, नायक नवाब सिंह का जन्म 07 जुलाई 1960 को जनपद बागपत के गांव धिकाना में श्रीमती फूलो देवी तथा श्री अलाम सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की तथा 17 अक्टूबर 1979 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के उपरान्त 11 राजपूताना राइफल्स में तैनात हुए।

09 अप्रैल 1993 को राजपूताना राइफल्स की 11वीं बटालियन को एक सटीक सूचना मिली कि जम्मू कश्मीर के बड़गांव जिले के पोहार गांव में आतंकवादी छुपे हुए हैं। राजपूताना राइफल्स की 11वीं बटालियन की सभी कंपनियों और कमांडो प्लाटून ने गांव को चारों ओर से घेर लिया। दोपहर के लगभग 02:00 बजे छुपे हुए दो आतंकवादियों ने कमांडो प्लाटून पर भयानक गोलीबारी करना शुरू कर दिया। जबाबी कार्यवाही के लिए नायक नवाब सिंह तोमर ने तत्काल निर्णय लिया और आतंकवादियों पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। नायक नवाब सिंह तोमर की जबाबी कार्यवाही से चारों तरफ से घिरे आतंकवादी घबरा गये और घेरा तोड़कर भागने का प्रयास करने लगे। नायक तोमर ने अपने दल को पुनः संयोजित करके तैनात किया। इसी बीच चल रही भीषण गोलीबारी में उन्होंने एक आतंकवादी को मार गिराया। इसी दौरान एक गोली उनके दाहिने हाथ में आ लगी। आतंकवादियों ने घेरे को तोड़कर भागने का प्रयास तेज कर दिया और अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। नायक नवाब सिंह घायल होने के बावजूद लगातार आतंकवादियों का पीछा कर रहे थे। लगातार चल रही नजदीकी लड़ाई में नायक नवाब सिंह के पेट में अब तक कई गोलियां लग चुकी थीं। उन्होंने धैर्य से काम लिया और आतंकवादियों पर काल बनकर टूट पड़े और दो आतंकवादियों को मार गिराया।

इस कार्यवाही में नायक नबाब सिंह तोमर ने अदम्य साहस, धैर्य, वीरता और कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए तीन आतंकवादियों को मार गिराया। उनकी इस वीरता के लिए 09 अप्रैल 1993 को उन्हें मरणोपरान्त “कीर्ति चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती कमलेश

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On the 09th April 1993, on receiving definite information on a terrorists hideout in village Pohar of Budgam region in Jammu and Kashmir, a search and cordon operation was under taken by the personnel of 11 Rajputana Rifles. The village was approached from four different directions by rifles companies and the commando platoon of the Battalion. At about two in the afternoon the commando platoon came under intense fire from the terrorists, which was which was immediately retaliated by Naik Nawab Singh Tomar, a team leader in the platoon. On observing that a group of terrorists were attempting to break out of the cordon, he ordered his team to take another position to prevent the break out. Unmindful of his personal safety, and under heavy fire, Naik Nawab Singh Tomar shot dead a terrorist. In the process, however, he was hit by a bullet fired by the terrorist on his right arm. The terrorists who were desperate to escape fired indiscriminately and started running. Once again the brave soldier chased the terrorists and despite being hit by a volley of bullets in the abdomen, he charged and fired at the terrorists killing two of them on the spot.

Naik Nawab Singh Tomar, thus fought with indomitable courage and dedication, and unflinching made the supreme sacrifice

<u>लेफ्टीनेंट पंकज कुमार</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(ऑपरेशन राइनो, जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश)

आई सी 67341 एक्स, लेफ्टीनेंट पंकज कुमार का जन्म 11 मार्च 1978 को जनपद बागपत के गांव ककारी पुर में श्रीमती केलावती सिंह तथा श्री सत्यपाल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, जामनगर, हाईस्कूल तथा इण्टरमीडियट की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, बेगमपेट, सिकन्दराबाद और स्नातक की शिक्षा बेस्ले ब्वायज डिग्री कालेज, सिकन्दराबाद से पूरी की। आइ टी एस गाजियाबाद से मास्टर आफ कंप्यूटर एप्लीकेशन की डिग्री हासिल किया। इन्होंने 11 जून 2005 को भारतीय सेना की सेना शिक्षा कोर में कमीशन लिया और 2 वर्षों की अस्थायी तैनाती के लिए 7/11 गोरखा राइफल्स में पदस्थ हुए।

लेफ्टिनेंट पंकज कुमार 01 जूनियर कमीशन अफसर और 15 जवानों की एक पार्टी का नेतृत्व कर रहे थे, जिसे 05 अप्रैल 2007 को 01:00 बजे हिलागुरी छपरी (एम टी 1121) क्षेत्र में एक खोज और नष्ट मिशन पर लॉन्च किया गया था।

10 अप्रैल 2007 को 05:00 बजे, 30 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय करने के बाद, जब लेफ्टिनेंट पंकज कुमार, नायक रमेश कुमार तमांग, लांस नायक फुरबा शेरिंग शेरपा और सिपाही रिंकू फुकन के साथ टिक्लिबाम क्षेत्र में तलाशी के लिए पहली झोपड़ी की ओर बढ़ रहे थे, उसी समय दो आतंकवादी बाहर निकले और फायरिंग शुरू कर दी। लेफ्टीनेंट पंकज कुमार ने तुरंत आड़ ली और उनके ऊपर फायरिंग शुरू कर दी। आतंकवादी घने जंगल में पेड़ों के पीछे छुप गये और अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी जिससे इस दल का आगे बढ़ना रूक गया। लेफ्टिनेंट पंकज कुमार ने नायक रमेश तमांग को आतंकवादियों को व्यस्त रखने का निर्देश दिया और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना घनी झाड़ियों के बीच से रेंगते हुए आतंकवादी के पीछे पहुंच गये और उन्होंने आतंकवादी के ऊपर गोलियों की बौछार कर दी।

इस हमले में एक आतंकवादी मारा गया। इसी बीच दूसरा आतंकवादी घने जंगल में छिप गया। लेफ्टीनेंट पंकज कुमार उसके पीछे लग गये। घने जंगल में छिपे आतंकवादी ने उनके ऊपर ग्रेनेड फेंक कर, सुरक्षा घेरा तोड़कर भागना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने नजदीक ग्रेनेड के फटने की चिन्ता किए बिना दूसरे आतंकवादी को मार गिराया। इसी बीच अन्य झोपड़ियों में छिपे दूसरे आतंकवादियों ने गोलियां बरसाना शुरू कर दिया और आसपास के जंगल की ओर भागने लगे। लेफ्टिनेंट पंकज कुमार ने तुरंत स्थिति को संभाला और आतंकवादियों के ऊपर भीषण गोलीबारी की। जिससे भागने वाले सभी आतंकवादी मौके पर ही ढेर हो गये।

पूरे ऑपरेशन के दौरान जिसमें आठ आतंकवादी मारे गए थे, लेफ्टिनेंट पंकज कुमार ने अपनी टीम का नेतृत्व किया। भारी गोलाबारी के बीच उनके अनुकरणीय साहस, नेतृत्व क्षमता और व्यावसायिक कुशलता के बल पर बिना किसी क्षति के आठ कट्टर आतंकवादियों को मार गिराया। उनके इस साहसिक प्रदर्शन और नेतृत्व कौशल के लिए उन्हें 05 अप्रैल 2007 को शांतिकाल के दूसरे सबसे बड़े सम्मान "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया। बाद में इन्हें सेना शिक्षा कोर से स्थायी रूप से गोरखा राइफल्स में तैनात कर दिया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए लेफ्टीनेंट पंकज कुमार

प्रशंसात्मक उल्लेख

IC-67341X Lt Pankaj Kumar of 7/11 Gorkha Rifles was leading a party of one JCO and 15 OR launched on a search and destroy mission at 0100 hours on 05 Apr 2007 in area Hilaguri Chhapri (MT-1121).

At 0500 hours on 10 Apr 2007, having covered a distance of over 30 Km, when Lt Pankaj Kumar alongwith No 9420510K Nk Ramesh Kumar Tamang, No 9422289P LNk Phurba Tshering Sherpa and No 4369136M Sep Rinku Phukan was moving towards the first hut in area Tiklibam for search, two terrorists jumped out firing. The offr immediately took cover and engaged the fleeing terrorists by fire. The terrorists had taken cover behind trees in thick jungle. The terrorist was laying down a belt of fire and had completely pinned down own troops. The offr instructed Nk Ramesh Tamang to keep the terrorists engaged, and in true tradition of the army, without regard for his own safety, crawled through the dense undergrowth and maneuvered himself to the rear of the terrorist, who, taken by surprise, quickly whirled around and unleashed a murderous volley at the offr. The offr in one blinding move charged at the terrorist and shot him dead. The other terrorist had meanwhile melted into the jungle. The offr cautiously followed his trail. The terrorist, hiding in dense vegetation lobbed a grenade at the offr, broke cover and ran. The offr unmindful of the grenade that exploded close to him, chased the second terrorist down and shot him dead. Meanwhile, other terrorists hiding in other huts had opened fire and started fleeing towards the surrounding jungle. Lt Pankaj Kumar quickly took charge of the situation prevented their escape and ensured their elimination.

During the entire operation in which eight terrorists were killed, Lt Pankaj Kumar led his team from the front. For his exemplary personal courage under heavy fire, sterling leadership qualities, motivation, dedication and dynamism, his professional acumen and tactical ability of the highest order in ensuring the killing of eight hardcore terrorists with no collateral damage.

<u>मेजर सुशील कुमार सिंह</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बिजनौर, उत्तर प्रदेश)

एस0 सी0 00134, मेजर सुशील कुमार सिंह का जन्म 05 अगस्त 1966 को जनपद बिजनौर के गांव तंगरौला में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती राजवती देवी और पिता का नाम श्री राम कुमार सिंह था। उनकी मैट्रिक और इण्टर तक की शिक्षा खालसा इन्टर कालेज, नूरपुर और कृषक इण्टर कालेज, कोठी खिदवतपुर में हुई तथा स्नातक की शिक्षा बिजनौर डिग्री कालेज से पूरी की। उन्होंने भारतीय सेना में 12 सितम्बर 1998 को कमीशन लिया और 5 बिहार रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी तैनाती 63 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

11 सितम्बर 2007 को जम्मू और कश्मीर की एक जगह पर चार कट्टर आतंकवादियों की संभावित यात्रा के संबंध में प्राप्त खुफिया जानकारी के आधार पर मेजर सुशील कुमार सिंह के नेतृत्व में एक टुकड़ी को भेजा गया। उन्होंने अपने दल को कई टुकड़ियों में बांटकर गोपनीयता को बनाए रखते हुए खराब मौसम के बावजूद 48 घंटों तक इंतजार किया। 13 सितम्बर 2007 को लगभग 19:00 बजे उन्होंने देखा कि एक धोक के पास धीरे - धीरे आतंकवादी इकट्ठे हो रहे हैं। उन्होंने तत्काल अपनी सभी टुकड़ियों को इकट्ठा किया और भागने के सभी रास्तों को बंद कर दिया। आतंकवादियों ने स्वयं को चारों तरफ से घिरा हुआ देखकर फायरिंग करना शुरू कर दिया और मुठभेड़ शुरू हो गयी। मेजर सुशील कुमार सिंह ने अपने युध्द कौशल का परिचय देते हुए अपने सहयोगी को कवरिंग फायर देने के लिए कहा।

अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना नजदीक जाकर दो खूंखार आतंकवादियों को मौके पर ही मार गिराया। इसी दौरान दो अन्य आतंकवादियों ने अंधेरे का फायदा उठाकर भागने की कोशिश की। मेजर सुशील कुमार सिंह ने बड़ी बहादुरी से भागे हुए आतंकवादियों का पीछा किया और दोनों आतंकवादियों को मार गिराया।

मेजर सुशील कुमार सिंह ने आतंकवादियों के खिलाफ इस लड़ाई में साहसी नेतृत्व और अदम्य साहस का परिचय दिया। इसके लिए उन्हें शांतिकाल के दूसरे सबसे बड़े सम्मान "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर सुशील कुमार सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

Based on intelligence received regarding likely visit of four hardcore terrorists in a general area of J&K, a column under Maj Sushil Kumar Singh was launched on 11 Sep 07, and deployed itself in sub teams in the target area for nearly 48 hours under inclement weather conditions maintaining complete secrecy. At about 1900 hours on 13 Sep 2007, the officer observed terrorists gradually congregating a at a Dhok. He immediately re-organised his sub teams cutting off all escape routes. The terrorists finding themselves besieged started firing indiscriminately, and fire fight ensued. The officer, exhibiting combat intellect, directed his buddy to provide him covering fire while he, with total disregard to personal safety, closed-in and shot dead two dreaded terrorists on the spot. In the meantime another two terrorists tried to escape using thick foliage. The officer, with utmost bravery, chased the fleeing terrorists and eliminated both the terrorists in the process.

Major Sushil Kumar Singh displayed daring leadership and indomitable courage in the fight against terrorists.

<u>सिपाही ब्रहम पाल सिंह</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 3007678 वाई, सिपाही ब्रहम पाल सिंह का जन्म 10 जुलाई 1987 को जनपद बुलन्दशहर के ग्राम सुजानारानी में श्रीमती बल वीरी देवी और श्री सुख पाल सिंह के यहां हुआ था । इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा जनता आदर्श हाईस्कूल, कंचनपुर, अलीगढ़ से पूरी की। 26 अप्रैल 2004 को यह भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात् 22 राजपूत रेजिमेंट में तैनात हुए तथा बाद में 44 राष्ट्रीय राइफल्स में पदस्थ हुए।

नवम्बर 2017 में जम्मू और कश्मीर के एक गांव में तीन आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली। इन आतंकवादियों को खोजने के लिए एक खोजी और घेराव अभियान शुरू किया गया। इस अभियान का नेतृत्व कैप्टन कनिंदर पाल सिंह कर रहे थे। सिपाही ब्रहम पाल सिंह इस दल के आंतरिक घेरे में कम्बैट एक्शन टीम के सदस्य थे।

जिस गांव में आतंकवादी छुपे हुए थे उस गांव के घरों की सही पहचान करने के बाद फिर से उस खोजी और घेरा दल को पुर्नसंगठित किया गया। सिपाही ब्रहम पाल सिंह की सामरिक और पेशेवर उत्कृष्टता को देखते हुए उन्हें एंट्री टीम का हिस्सा बनाया गया। दो घरों की तलाशी लेने के बाद सिपाही ब्रहम पाल सिंह अपने सहयोगी के साथ बगल में स्थित गौशाला की तलाशी लेने के लिए आगे बढ़े। घुप्प अंधेरे वाली गौशाला मे घुसने वाले वह पहले व्यक्ति थे। आतंकवादियों ने उनके ऊपर तीन तरफ से भारी फायरिंग करनी शुरू कर दी। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए तुरंत जवाबी कार्रवाई की। तीनों आतंकवादियों ने सिपाही ब्रहमपाल सिंह को काबू में करने के लिए उन पर फायरिंग शुरू कर दी। सिपाही ब्रहम पाल सिंह ने अकेले वीरतापूर्ण कार्यवाही में अपने सहयोगी सिपाही औरंगजेब को कवर फायर प्रदान करते हुए बाहर निकलने में मदद किया और तीनों आतंकवादियों को गौशाला से भागने से रोका। इसके परिणामस्वरूप कैप्टन कनिंदर पाल सिंह को घेरे को फिर से समायोजित करने का समय मिल गया। आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी में उनके सीने और पैर में गोली लगने से वह घायल हो गये।

गंभीर रूप से घायल होने और संख्यात्मक रूप से आतंकवादियों के ज्यादा होने के बावजूद सिपाही ब्रहम पाल सिंह ने आतंकवादियों पर फायरिंग जारी रखा, जिससे एक आतंकवादी मारा गया और दूसरा घायल हो गया।

सिपाही ब्रहम पाल सिंह ने वीरतापूर्ण कार्रवाई, अदम्य साहस, असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन किया जिससे उनके सहयोगी की जान बच गई और एक कट्टर आतंकवादी को मार गिराया और दूसरे आतंकवादी को घायल कर दिया। भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप राष्ट्र के लिए उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके इस अभूतपूर्व साहस के लिए उन्हें 06 नवम्बर 2017 को मरणोपरान्त "कीर्ति चक्र"से सम्मानित किया गया ।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई
वीरांगना श्रीमती संगीता रानी

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

In November 2017, a cordon & search operation was launched in a village in Jammu and Kashmir on input of presence of three terrorists. Sepoy Vrahma Pal Singh was deployed in inner cordon as part of Combat Action Team under Captain Kaninder Paul Singh.

On positive identification of complex of target houses, and having readjusted the cordon, a search team including Sepoy Vrahma Pal Singh was formulated. Considering his tactical & professional excellence he was made part of entry team. Having cleared two houses Sepoy Vrahma Pal Singh alongwith his buddy moved ahead to clear the adjacent cowshed. Upon entering the completely dark cowshed as Entry man Number 1, he came under heavy effective fire from the cowshed from three different directions. Unmindful of his personal safety, he retaliated immediately.

All three terrorists started aimed firing at Sepoy Vrahma Pal Singh in a bid to overpower him. In a single handed gallant action displayed by Sepoy Vrahma Pal Singh, he provided cover fire and afforded opportunity to his buddy Rifleman Aurangzab to extricate himself not only out of cowshed, but also kept the three terrorists engaged thus prevented their escape out of cowshed. This also resulted in gaining of time to readjust the cordon by Captain Kaninder Paul Singh. In the ensuing firefight, he sustained bullet injuries on his chest and legs. Despite being grievously wounded and numerically overwhelmed by terrorists Sepoy Vrahma Pal Singh continued dominating and engaging the terrorists, which led to neutralization of one terrorist and injuring of another.

Sepoy Vrahma Pal Singh displayed heroic action, indomitable spirit, exceptional bravery, camaraderie, espirit-de-corps, leading to saving the life of his buddy and neutralization of one hard core terrorist and injuring of another terrorist and made supreme sacrifice for the nation in line with highest traditions of Indian Army.

<u>सिपाही दया शंकर</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद फतेहपुर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 14917753 पी, सिपाही दया शंकर का जन्म 20 जुलाई 1971 को जनपद फतेहपुर के ग्राम लालपुर में श्रीमती कांति देवी शुक्ला और श्री बलवन्त प्रसाद शुक्ला के यहां हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा प्राथमिक विद्यालय, पवारनपुर तथा महात्मा गांधी इण्टर कालेज, सिधांव में हुई। 24 अक्टूबर 1991 को यह भारतीय सेना की मैकेनाइज्ड इंफेंट्री में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात् 10 मैकेनाइज्ड बटालियन में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 14 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

05 अगस्त 1996 को सिपाही दया शंकर जम्मू और कश्मीर के जिला बारामूला के गांव लहरवालपुरा में एक घेरा और तलाशी अभियान का हिस्सा थे। जैसे ही उनका गश्ती दल गाँव के पास पहुँचा, आतंकवादियों ने लगभग 50 मीटर दूर स्थित एक घर से सिपाही दया शंकर के ऊपर फायर कर दिया। इस स्थिति में इस दल के पास घर में छुपे हुए आतंकवादियों पर फायरिंग करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। सिपाही दया शंकर अपनी चोटों की परवाह न करते हुए आगे बढ़े और आमने - सामने की लड़ाई में एक आतंकवादी को मार गिराया।

एक अन्य छिपे हुए आतंकवादी ने सिपाही दया शंकर पर फिर से गोली चला दी। गंभीर रूप से घायल सिपाही दया शंकर ने यह देखा कि केवल वह ही इस स्थिति से प्रभावी रूप से निपट सकते हैं, उस आतंकवादी की ओर रेंगते हुए आगे बढ़े और एक लम्बे ब्रस्ट फायर से दूसरे आतंकवादी को भी ढेर कर दिया। अनुकरणीय साहस और आक्रामक कार्रवाई के बल पर सिपाही दया शंकर ने अकेले ही दो आतंकवादियों को मार गिराया। बाद में तलाशी लेने पर आतंकवादियों के पास से दो राइफल और एक पिस्टल बरामद की गयी ।

सिपाही दया शंकर ने इस पूरी कार्यवाही में अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय देते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 05 अगस्त 1996 को मरणोपरान्त शांतिकाल के दूसरे सबसे बड़े सम्मान "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती निर्मला देवी

स्मृति शेष : सिपाही दया शंकर की याद में मैकेनाइज्ड इंफेन्ट्री रेजिमेंटल सेन्टर में एक पुस्तकालय की स्थापना की गयी है तथा उनके गांव में उनकी वीरांगना श्रीमती निर्मला देवी द्वारा शहीद स्मारक का निर्माण करवाया गया है, जिसमें सिपाही दयाशंकर की प्रतिमा लगायी गयी है।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 05 Aug 1996, Sep Days Shankar was taking part in a cordon & search in a Vill Laharwalpura, Distt Baramullah. As his patrol closed in towards the village, Sep Daya Shankar was hit by militant fire from house just 50 mtr away. Realizing the precarious situation in which he & his comrade were, Daya Shankar left with option but to fire back at the militants holed up in the house. Unmindful of his own injuries, Sep Daya Shankar charged firing his weapon & killed the militant in a close fight.

Another militant, also holed up, opened fire at this brave soldier again and him the second time. Grievously injured Sepoy Daya Shankar seeing that only he could influence the situation crawled towards the militant and killed him by a long burst. By showing exemplary courage and offensive action. Sepoy Days Shankar single handedly killed two militants. Two rifles and one pistol were recovered from the militants.

Sepoy Days Shankar Was killed in this fighting on the spot on 05 August 1906 at 1700 hours. For this conspicuous act bravery, with his personal disregard to safety and devotion to duty.

<u>मेजर अनुराग नौरियाल</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी0 30005 एन, मेजर अनुराग नौरियाल का जन्म 05 जुलाई 1954 को सहारनपुर में श्रीमती प्रतिभा नौरियाल और श्री जे0 पी0 नौरियाल के यहां हुआ था। पंजाब के लुधियाना से हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के बाद उनका चयन एन डी ए में हो गया। 23 दिसम्बर 1973 को उन्होंने भारतीय सेना में कमीशन लिया और प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात 10 पैरा कमांडो में पदस्थ हुए। लगभग 14 वर्षों तक 10 पैरा में रहने के बाद 4/1 गोरखा राइफल्स में पदस्थ हुए।

23 अक्टूबर 1990 को आपरेशन रक्षक के दौरान 48 इन्फेन्ट्री ब्रिगेड के ब्रिगेड मेजर, मेजर अनुराग नौरियाल एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए ब्रिगेड कमाण्डर के साथ पट्टी (पंजाब) गये हुए थे। सम्मेलन के बाद मेजर अनुराग नौरियाल अपने ब्रिगेड कमाण्डर और 10 बिहार रेजिमेंट के कमान अधिकारी के साथ आतंकवाद ग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने के लिए चले गये। रास्ते में उन्हें मेजर जी एस के राव का एक रेडियो संदेश मिला कि भूरा करीमपुर गांव के उत्तर - पश्चिम में स्थित एक फार्म हाउस के पास आतंकवादियों से सामना हुआ है।

उनमें से एक आतंकवादी संखतार गांव की ओर भाग निकला है, जिसे पकड़ने के लिए उन्होंने सूबेदार उमाचरण प्रसाद को एक सेक्शन के साथ भेज दिया है और स्वयं दो सेक्शन के साथ भूरा करीमपुर के पास छिपे दूसरे आतंकवादी का पीछा किया। मेजर नौरियाल, उनके ब्रिगेड कमाण्डर और 14 बिहार के कमान अधिकारी तुरन्त संखतार गांव पहुंच गये जहां सूबेदार उमा चरन प्रसाद छुपे हुए आतंकवादी का सामना कर रहे थे।

एक छोटी सी ब्रीफिंग के बाद एक सेक्शन को सूबेदार उमा चरन प्रसाद और दो एस्कार्ट दल के साथ स्वयं उस आतंकवादी से निपटने के लिए योजना को कार्यरूप में बदलने और एक एस्कार्ट दल का नेतृत्व स्वयं करने का फैसला किया।

फार्म हाउस पहुंचकर उन्होंने कर्नल ओमप्रकाश देशवाल की बायीं तरफ मोर्चा संभाला जिससे कि आतंकवादी भाग न पाये। सूबेदार उमा चरन प्रसाद आतंकवादी की ओर आगे बढ़े। दोनों ओर से हो रही गोलीबारी के बीच एक ब्रस्ट फायर सूबेदार उमा चरन प्रसाद की जांघ में लगा। मेजर नौरियाल ने यह महसूस किया कि आतंकवादी को मारना आवश्यक है, नहीं तो सूबेदार उमा चरन प्रसाद को यहां से निकालना मुश्किल है। उन्होंने हवलदार मनोज कुमार के साथ मिलकर आतंकवादी पर घातक हमला किया। गोलीबारी के दौरान उनकी बायीं बाजू में गोली लग गयी। वे घायल होने के बाद भी आतंकवादी पर प्रहार करते रहे। इसी बीच आतंकवादी ने समझा कि उसकी राइफल की मैगजीन टूट गयी है। उसने अपनी पिस्तौल निकालने की कोशिश की। उसके पिस्तौल निकालने और गोली चलाने से पहले ही मेजर नौरियाल ने अपनी कार्बाइन से उसके ऊपर फायर खोल दिया, वह वहीं पर ढेर हो गया। मेजर नौरियाल को इलाज के लिए एडवांस ड्रेसिंग स्टेशन, हरिके ले जाया जा रहा था। ज्यादा रक्तस्राव हो जाने के कारण भारत मां का यह अमर सपूत अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए शहीद हो गया।

मेजर अनुराग नौरियाल ने अदम्य साहस, वीरता और अप्रतिम कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया। उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें 23 अक्टूबर 1990 को शांतिकाल के दूसरे सबसे बड़े सम्मान “कीर्ति चक्र” से सम्मानित किया गया।

“कीर्ति चक्र” ग्रहण करने के लिए जाती हुई वीरांगना श्रीमती उमा नौरियाल

<u>**स्मृति शेष**</u>: 48 इन्फेन्ट्री ब्रिगेड में उनके नाम पर एक स्मारक बनाया गया है तथा 10 पैरा रेजिमेंट में उनके नाम पर एक रास्ते का नाम " अनुराग पथ" रखा गया है। नोएडा में शहीद मेमोरियल पार्क में भी उनका नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

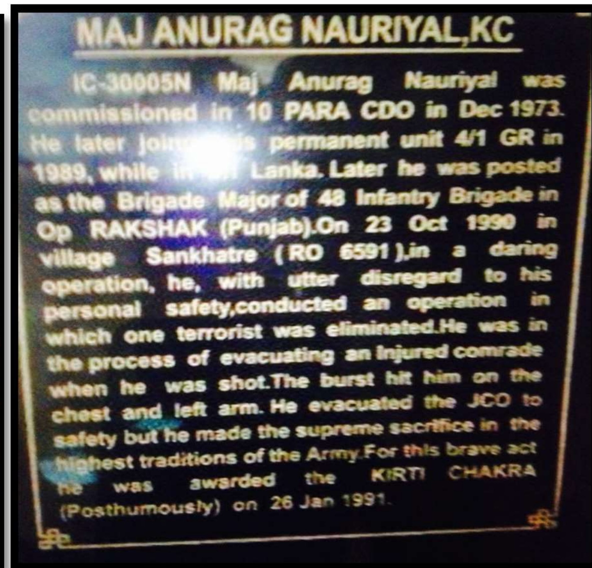

8 इन्फेन्ट्री ब्रिगेड में मेजर अनुराग नौरियाल का स्मारक

शहीद मेमोरियल सेक्टर- 37 नोएडा

10 पैरा रेजिमेंट मे मेजर अनुराग नौरियाल के नाम पर " अनुराग पथ"

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 23rd October, 1990, during Operation Rakshak, Major Anurag Nauriyal, Brigade Major of an Infantry Brigade accompanied the Commander of the Brigade for an official conference at Patti (Punjab). After the conference, both the them alongwith the Commanding Officer of 14 BIHAR were going to visit terrorist infested area. On the way they received radio message Major GSK Rao that a contact with terrorists had been made near a farm house situated north west of village Bhura Karimpur and that he had sent a section of armed force with Subedar Uma Charan Prasad to apprehend a terrorist who had run away towards village Sankhatra while he himself with the remaining two sections was pursuing the other terrorist hiding near village Bhura Karimpur. Major Nauriyal, his Brigade Commander and Commanding Office, 14 Bihar immediately rushed to the village Sankhatar where Subedar Uma Charan Prasad or 14 Bihar was engaging the terrorist who had taken shelter in the area.

After a quick briefing, one section of Subedar Uma Charen Prasad and the two escort parties decided to execute a plan to tackle the terrorist. Major Nauriyal led one of the escort groups. Having reached the farm house, he positioned himself left of Col Om Prakash Deswal, thereby, tracing the terrorist. Subedar Uma Charan Prasad advanced towards the terrorist and in the exchange of fire, received a burst in his thigh. Major Nauriyal realised that the terrorist must be killed immediately so that the Junior Commissioned Officer could be evacuated. He alongwith Havildar Manoj Kumar led a full blooded charge on the terrorist.

In the exchange of fire, Major Nauriyal was hit on the left arm. Inspite of his injury he kept on firing at the terrorist. The terrorist knowing that his rifle magzine had been hit, pulled out his pistol. But before he could take out his pistol and fire, Major Nauriyal fired and killed him with a burst of his carbine. Major Nauriyal, however, succumbed to his injuries during evacuation to Advance Dressing Station, Harike.

Major Anurag Nauriyal, thus, displayed conspicuous gallantry and made the supreme sacrifice of his life in the best tradition of Army.

<u>लेफ्टीनेंट कर्नल इसरार रहीम खान</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(ऑपरेशन ब्लू स्टार, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी0 22068 एफ, लेफ्टीनेंट कर्नल इसरार रहीम खान का जन्म 08 जनवरी 1942 को जनपद गौतमबुध्द नगर के नोएडा में श्रीमती फातिमा खान और प्रोफेसर ए आर खान के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हरकोर्ट बटलर हायर सेकेण्डरी स्कूल, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली से पूरी की और 10 मई 1964 को भारतीय सेना की ब्रिगेड ऑफ द गार्ड्स रेजिमेंट में कमीशन लिया और 10 गार्ड्स में पदस्थ हुए।

ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल इसरार रहीम खान 10 गार्ड्स की कमान संभाल रहे थे। 05 व 06 जून 1984 की रात को उनकी बटालियन को एक भारी किलेबंद धार्मिक स्थान के एक हिस्से पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। लेफ्टिनेंट कर्नल इसरार रहीम खान ने अपनी बटालियन के ऑपरेशन का नेतृत्व किया। आतंकवादियों के गढ़ वाले ठिकानों से स्वचालित हथियारों की तीव्र गोलाबारी के कारण प्रारंभिक चरण में ऑपरेशन धीमा हो गया, जिसमें बटालियन को भारी नुकसान हुआ। लेफ्टिनेंट कर्नल इसरार रहीम खान जोखिम से निडर होकर आगे बढ़े और अपने जवानों को प्रेरित किया। अपने सैनिकों का नेतृत्व करते हुए, वह उन्हें सौंपी गयी जिम्मेदारी की तरफ ले गये। लेफ्टिनेंट कर्नल इसरार रहीम खान ने आतंकवादियों की भीषण गोलाबारी का सामना करने के लिए दृढ़ निश्चय और अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए, इस ऑपरेशन में अपने सैनिकों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। लेफ्टिनेंट कर्नल इसरार रहीम खान की कार्रवाई, उनके अधिकारियों और जवानों के लिए प्रेरणा का एक निरंतर स्रोत थी जिसके परिणामस्वरूप ऑपरेशन का सफल समापन हुआ।

इस पूरे ऑपरेशन के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल इसरार रहीम खान ने दृढ़ निश्चय, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व के त्रुटिहीन गुण, व्यक्तिगत बहादुरी और कर्तव्य की पुकार से परे एक असाधारण उच्च क्रम के कर्तव्य के प्रति समर्पण दिखाया। प्रदर्शित साहस, कर्तव्यनिष्ठा और कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें 05 जून 1984 को “कीर्ति चक्र” प्रदान किया गया। वह बाद में पदोन्नत होकर कर्नल तथा ब्रिगेडियर बने और सेना की सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हो गये।।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए
लेफ्टीनेंट कर्नल इसरार रहीम खान

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Lieutenant Colonel Israr Rahim Khan was commanding 10 Guards during operation Blue Star. On night 5th 6th June 1984, his Battalion was tasked to capture a portion of a heavily fortified and strongly held religious place. Lieutenant Colonel Israr Rahim Khan led the operation of his Battalion. The operation got slowed down at an early stage because of the intense fire of automatic weapons from fortified positions of terrorists, in which the Battalion suffered heavy casualties. Undaunted by the risk to his Lieutenant Colonel Israr Rahim Khan went forward inspired his men and personally led them towards the objective. By exhibiting resolute determination and exemplary courage in the face of intense fire of the terrorists, Lieutenant Colonel Israr Rahim Khan successfully led his troops in this operation. Lieutenant Colonel Israr Rahim Khan's action were a constant source of inspiration to his officers and men which resulted in the successful conclusion of the operation.

Throughout this operation Lieutenant Colonel Israr Rahim Khan showed resolute determination, exemplary courage, impeccable qualities of leadership, personal bravery and devotion to duty of an exceptionally high order much beyond the call of duty.

<u>कैप्टन दविन्द्र सिंह जस</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश)

आई सी 70151, कैप्टन दविन्द्र सिंह जस का जन्म 29 सितम्बर 1983 को जनपद गाजियाबाद में श्रीमती दलबीर कौर जस तथा श्री भूपन्द्रि सिंह जस के यहां हुआ था। उन्होंने इण्टरमीडिएट की परीक्षा गुरू हरिकृष्न पब्लिक स्कूल, इण्डिया गेट, नई दिल्ली से उत्तीर्ण किया। बी0 टेक0 की शिक्षा जी0 एल0 ए0 यूनिवर्सिटी मथुरा और आई0 आई0 टी0 इलाहाबाद से एम0 बी0 ए0 की शिक्षा पूरी की। साहसी प्रवृत्ति का होने के कारण एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में मिली हुई नौकरी को छोड़कर उन्होंने सेना को चुना। उन्होंने भारतीय सेना की सिग्नल्स कोर में 10 दिसम्बर 2007 को कमीशन लिया और जनवरी 2009 में वह 1 पैराशूट रेजिमेंट के लिए चुने गये।

22 फरवरी 2010 को सुरक्षा बलों को जम्मू कश्मीर में सोपोर जिले के चिंकीपोरा गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया सूत्रों से सूचना मिली। कट्टर उग्रवादियों को पकड़ने के लिए एक तलाशी अभियान शुरू करने और आतंकवादियों का सफाया करने का निर्णय लिया गया और यह कार्य 1 पैरा एस एफ को सौंपा गया। उनकी यूनिट द्वारा इस अभियान के नेतृत्व की जिम्मेदारी कैप्टन दविन्द्र सिंह जस को सौंपी गई। कैप्टन दविन्द्र सिंह ने तुरन्त इस अभियान की जिम्मेदारी संभाल ली और 23 फरवरी 2010 को एकदम तड़के ही आपरेशन शुरू कर दिया। आतंकवादी संदिग्ध इलाके में एक रिहायशी इमारत में छिपे हुए थे, जिसे सुनियोजित तरीके से घेर लिया गया था।

चुनौती दिए जाने पर आतंकवादियों ने अभियान दल पर फायर करना शुरू कर दिया और भीषण गोलाबारी शुरू हो गई। 04:45 बजे कैप्टन जस के नेतृत्व में हमला करने वाली टीम ने संदिग्ध इमारत पर धावा बोलने का फैसला किया। आतंकवादियों को इस तरह के हमले की पहले से ही आशंका थी, इसलिए उन्होंने घर के अन्दर पोजीशन ले लिया। आतंकवादी काफी संख्या में थे और भारी हथियारों से लैस थे।

जब कैप्टन जस और उनके सैनिकों ने इमारत पर धावा बोल दिया और दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़े, तो उन पर विभिन्न दिशाओं से हमला किया गया, जिसमें आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों और हैंड ग्रेनेड का इस्तेमाल किया। दोनों तरफ से भीषण गोलीबारी हुई जिसमें दो आतंकवादियों को कैप्टन जस ने मार गिराया।

इस साहसिक कार्यवाही के दौरान कैप्टन जस गंभीर रूप से घायल हो गये और चोटें गहरी होने के कारण वह शहीद हो गये। कैप्टन दविन्द्र सिंह जस ने इस ऑपरेशन में उत्कृष्ट साहस और कुशल नेतृत्व का परिचय दिया। उनके उत्कृष्ट साहस और कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें 23 फरवरी 2010 को मरणोपरान्त “कीर्ति चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “कीर्ति चक्र” ग्रहण करती हुई कैप्टन दविन्द्र सिंह जस की मां श्रीमती दलबीर कौर जस

<u>स्मृति शेष</u> : गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने कैप्टन दविन्द्र सिंह जस के सम्मान में इंदिरापुरम योजना में महागुन मेंशन से शिप्रा माल तक जाने वाली सड़क का नामकरण “शहीद कैप्टन दविन्द्र सिंह जस” के नाम पर किया है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 22 Feb 2010, the security forces had received information from the intelligence sources about the presence of militants in Chinkipora village in Sopore district in J & K. It was decided to launch a search and destroy operation to nab the hardcore militants and the task was assigned to 1 Para (SF) unit. Capt Davinder Singh Jass was chosen to lead the operation along with his troops. Capt Jass swung into action and launched the operation in the wee hours of 23 Feb 2010. The militants were hiding in a residential building in the suspected area, which was cordoned off in a well-planned move.

On being challenged the militants opened fire at the troops and a fierce gun battle ensued. At 4.45 AM the assault team led by Capt Jass decided to storm the suspected building. The militants had anticipated this action and had positioned themselves at vantage points inside the building. They were heavily armed and were sizable in numbers. When Capt Jass and his troops stormed the building and moved forward to open the door, they were attacked from various directions, with militants using automatic weapons and hand grenades. A heavy exchange of fire followed and Capt Jass managed to kill two militants in a daring action.

However, during the gun battle, Capt Jass got seriously injured and later succumbed to his injuries. Capt Jass displayed outstanding courage and leadership during the operation and laid down his life in the service of the nation.

<u>हवलदार शिव नारायण सिंह</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद हमीरपुर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2975200 ए, हवलदार शिव नारायण सिंह का जन्म 30 जुलाई 1960 को जनपद हमीरपुर के गांव गिमुंहा में श्रीमती विन्दी और श्री शीतल प्रसाद के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की और 04 अक्टूबर 1978 को भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के उपरान्त 27 राजपूत रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

22 मई 1994 को 04:00 बजे विशिष्ट सूचना के आधार पर, कैंप कमांडर की त्वरित प्रतिक्रिया टीम को लेफ्टिनेंट कर्नल हरविंदर सिंह, कैंप कमांडेंट, मुख्यालय 19 माउंटेन ब्रिगेड कैंप की कमान के तहत विद्दीपुरा गांव में लॉन्च किया गया था। कमांडर की क्यू आर टी में 27 राजपूत के जवान थे। राष्ट्र विरोधी तत्वों के संदिग्ध घरों को घेर लिया गया और सुबह 05 :15 बजे तलाशी शुरू हुई। एक संदिग्ध घर की तलाशी के दौरान एक ठिकाना मिला। घर में कुछ नहीं मिला। जबकि उसी घर के अन्य कमरों की तलाशी ली जा रही थी, तब छत पर छिपे दो राष्ट्र विरोधी तत्वों ने सैनिकों पर गोलियां चलाना शुरू कर दीं। इस गोलीबारी में नंबर 2975200 ए हवलदार शिव नारायण सिंह की बांईं पिंडली में बंदूक की गोली लगी। इसके बाद एक आतंकवादी ने छत से छलांग लगा दी और हवलदार शिव नारायण सिंह पर पूरी मैगजीन फायरिंग कर दी। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद हवलदार शिव नारायण सिंह ने अनुकरणीय साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए आतंकवादियों पर गोलीबारी जारी रखी और दोनों आतंकवादियों को मार गिराया।

हवलदार शिव नारायण सिंह को तुरंत एडवांस ड्रेसिंग स्टेशन ले जाया गया। ज्यादा गहरे घाव और अधिक मात्रा में रक्तस्राव के कारण वे शहीद हो गये। बाद में मारे गए आतंकवादियों की पहचान हिजबुल मुजाहिदीन समूह के गुलाम मोहम्मद यातू और मोहम्मद अकबर यातू के रूप में हुई।

इस कार्यवाही में हवलदार शिव नारायण सिंह ने सर्वोच्च बलिदान देने की प्रक्रियाओं में संगठन के बड़े लक्ष्य के लिए अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूरी तरह से अवहेलना की। उन्होंने विशिष्ट बहादुरी, असाधारण वीरता, साहस और निर्भीकता का परिचय देते हुए मातृभूमि पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। उनकी इस असाधारण वीरता और साहस के लिए उन्हें 22 मई 1994 को मरणोपरान्त "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती बिमला देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

At 0400 hours on 22 May 94, based on specific information, Commander's Quick Reaction Team under command of Lieutenant Colonel Harvinder Singh, Camp Commandant Headquarters 19 Mountain Brigade Camp was launched at village Widdipura personnel in the Commander's QRT were from 27 RAJPUT. Suspected houses of the Anti National Elements were cordoned and search began at 0515hours. During the search of a suspected house, a hideout was found. Nothing was found in the house. While other Rooms of the same house were being searched two anti national elements hiding on the roof opened fire at own troops and No 2975200A Havildar Shiv Narayan Singh received Gun shot wound in his left shin. Thereafter, one of the militants jumped from the roof and fired on full magazine on Havildar Shiv Narayan Singh. Despite being critically injured Havildar Shiv Narayan Singh displaying courage, exemplary presence of mind, extremely quick reflex despite serious injuries and bravery of an exceptional order continued firing on the militants and killed both the militants.

Havildar Shiv Narayan Singh was immediately evacuated to Advance Dressing Station where he succumbed to his injuries. The killed militants were later identified as Gulam Mohammad Yatoo and Mohammad Akbar Yatoo of Hizbul Mujahideen group.

In this action Havildar Shiv Narayan Singh displayed utter contempt for danger and tota disregard to his personal safety for the large goal of the organization, in the processes making the supreme sacrifice. In this action, he displayed conspicuous bravery, exceptional during and boldness and dauntless courage. For the grit and fortitude disp by the Non Commissioned Officer, for his unflinching loyalty to the oraganisation and for his exceptional devotion to service far beyond the normal call of duty.

<u>मेजर अविनाश सिंह भदौरिया</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 52777 एल, मेजर अविनाश सिंह भदौरिया का जन्म 14 सितम्बर 1971 को जनपद कानपुर नगर के गोविन्दपुरी में श्रीमती अरूणा भदौरिया और श्री गंगा सिंह भदौरिया के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी हाईस्कूल की शिक्षा सेठ आनंद राव जयपुरिया पब्लिक स्कूल, कानपुर तथा इन्टरमीडिएट की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, अर्मापुर, कानपुर से पूरी की। 14 जून 1994 को भारतीय सेना की मद्रास रेजिमेंट में कमीशन लिया और 18 मद्रास रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 8 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

मेजर अविनाश सिंह भदौरिया ने खुफिया जानकारी करने, योजना बनाने और संचालन के समन्वय के लिए खुद को समर्पित किया और कई सफल सर्जिकल ऑपरेशन किए, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में आतंकवादियों का सफाया हुआ।

28 सितंबर 2001 को सुबह मेजर अविनाश सिंह भदौरिया जम्मू और कश्मीर के डोडा जिले में हंच के घने जंगलों,ऊबड़ - खाबड़ इलाकों में तलाशी और मुठभेड़ गश्ती दल का नेतृत्व कर रहे थे। लगभग 09 : 30 बजे जंगल में पत्थरों के पीछे से उनके दल पर भारी फायरिंग होने लगी। उन्होंने तुरंत अपने एक कॉलम को आतंकवादियों पर जबाबी कार्यवाही के लिए तैनात किया और साथ ही दूसरे कॉलम का नेतृत्व करते हुए दूसरी ओर से बोल्डर की ओर ले गए । भारी गोलीबारी के बीच उन्होंने अपने साथी सैनिक को कवर करने के लिए कहा, और स्वयं चुपके से एक किनारे से रेंगते हुए आगे बढ़े और नजदीक पहुँचकर एक आतंकवादी को मार गिराया। जब वह पहले आतंकवादी को निशाने पर ले रहे थे तब पास में छिपे एक अन्य आतंकवादी ने उन्हें पीछे से गोली मार दी, जिससे उनके दाहिने कंधे में चोट लग गई। घायल होने के बावजूद उन्होंने पलट कर फायरिंग करने वाले आतंकवादी को आमने - सामने मुठभेड़ में मार गिराया।

मेजर अविनाश सिंह भदौरिया की साहसिक कार्यवाही के परिणामस्वरूप दो खूंखार आतंकवादी मारे गए और बड़ी मात्रा में हथियार, गोला बारूद और अन्य भंडार बरामद किया गया। हालांकि घाव गहरा होने और ज्यादा रक्तस्राव होने के कारण अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही भारतमाता का यह अमर सपूत चिर निद्रा में लीन हो गया।

मेजर अविनाश सिंह भदौरिया ने आतंकवादियों से लड़ने में असाधारण वीरता, अनुकरणीय पहल और नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन किया और सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी इस असाधारण वीरता और साहस के लिए उन्हें 28 सितम्बर 2001 को मरणोपरान्त "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना कैप्टन शालिनी भदौरिया

<u>स्मृति शेष</u> : मेजर अविनाश सिंह भदौरिया की याद में कानपुर के नंद लाल चौराहे पर नगर निगम कानपुर द्‌वारा उनकी प्रतिमा स्थापित की गयी है तथा गोविन्द नगर के एच ब्लाक में उनके नाम पर एक पार्क का निर्माण किया गया है।

नंद लाल चौराहे पर स्थापित प्रतिमा **गोविन्द नगर के एच ब्लाक में पार्क एंव प्रतिमा**

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Major Avinash Singh Bhadauria devoted himself to gaining intelligence, planning and coordination of operations and conducted a number of successful surgical operations, which resulted in elimination of a large number of terrorists.

On 28 September 2001 in early hours he was leading a search and seek encounter patrol in thickly forested, rugged terrain with steep gradients in general area Hanch in district Doda (Jammu and Kashmir) At about 0930 hours his column came under heavy volume of fire from behind the boulders in the forest. He immediately deployed one of his columns to lay stops and simultaneously led the second column from upfront and moved towards the boulders. Despite being under heavy fire, he asked his buddy to cover his movement while he himself crawled stealthily towards a flank and shot dead a terrorist from close range. While the officer was engaging the first terrorist, he was fired upon from the rear by another terrorist hiding nearby and got injured in his right shoulder. Despite being injured, the officer turned around and charged on the firing terrorist and killed him in a face to face encounter.

The daring action of the officer resulted in killing of two dreaded terrorists and recovery of large quantity of arms, ammunition and other stores. The officer however, succumbed to his own injuries enroute hospital.

Major Avinash Singh Bhadauria displayed extraordinary gallantry, exemplary initiative and qualities of leadership in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

<u>मेजर अशोक कुमार सिंह, सेना मेडल</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 27941, मेजर अशोक कुमार सिंह का जन्म 11 अगस्त 1954 को जनपद बस्ती के पछवास गांव में श्रीमती ललिता रानी और कर्नल केसरी सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा प्रिंस आफ वेल्स रॉयल मिलिट्री कालेज, देहरादून से पूरी की और 23 दिसम्बर 1973 को भारतीय सेना में कमीशन लिया। अपने सैन्य प्रशिक्षण के दौरान, अपने बैच का सर्वश्रेष्ठ कैडेट चुने जाने पर इन्हें “स्वार्ड आफ आनर” और सर्वश्रेष्ठ आकदमिक प्रदर्शन करने के लिए राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के पश्चात 57 इंजीनियर रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

मेजर अशोक कुमार सिंह को भारतीय सेना द्वारा चलाये जा रहे साहसिक अभियान "तृष्णा" के स्थायी चालक दल के सदस्य के रूप में चुना गया था। इस अभियान के माध्यम से सैतींस फुट के फाइबर ग्लास से बने यॉट "तृष्णा" से दुनिया भर का चक्कर लगाना था जो कि एक साहसिक कदम के रूप में भारत के नौकायन के इतिहास में दर्ज होने जा रहा था।

“तृष्णा” को यूनाइटेड किंगडम से बॉम्बे जाना था। 28 सितंबर 1985 को इस अभियान को झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। यूनाइटेड किंगडम से बॉम्बे के रास्ते में, “तृष्णा” ने बिस्के की खाड़ी, भूमध्य सागर फिर लाल सागर में भयंकर तूफानों और खराब मौसम का सामना किया । एक समय में मुख्य कीलों को थपेड़ों ने उखाड़ दिया। बड़े खतरों के बीच चालक दल “तृष्णा” को सुरक्षित रूप से बॉम्बे ले जाने में कामयाब रहा।

केप ऑफ गुड होप के आसपास मॉरीशस से सेंट हेलेना द्वीप तक की उनकी यात्रा अनगिनत तूफानों के खिलाफ वीरतापूर्ण लड़ाई की कहानी थी, जब हवा की तीव्रता पैंसठ समुद्री मील तक बढ़ गई और लहरों को चालीस-पचास फीट की ऊंचाई तक पहुंचा दिया।

टनों भारी पानी के दबाव ने उस छोटी नाव को तोड़ कर रख दिया। उसकी जीवन रक्षक प्रणाली बरबाद हो गयी। उन्होंने “तृष्णा” को सही दिशा में बहुत कठिन परिश्रम के साथ आगे बढ़ाया।

यात्रा का सबसे खराब हिस्सा तस्मान सागर के बाद ऑकलैंड से सिडनी तक था, जहां चालक दल ने 100 वर्षों में सबसे खराब तूफानों में से एक का सामना किया। खतरों से जूझते हुए चालक दल पूरी तरह से थकावट और मिट चुकी भूख के साथ सिडनी पहुंचा। सिडनी से ब्रिसबेन तक और केर्न्स से आगे थर्सडे द्वीप तक की यात्रा उतनी ही कठिन थी। जब उन्हें ग्रेट बैरियर रीफ से आगे बढ़ना पड़ा तो वह एक बड़ा नौवहन खतरा था।

मेजर अशोक कुमार सिंह ने एक कृत्रिम पैर होने के बाद भी भारतीय सेना की सर्वश्रेष्ठ परंपराओं को कायम रखते हुए इस अभियान में अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। उनके अदम्य साहस के कारण ही यह अभियान सफलतापूर्वक पूरा हो पाया। इस साहसिक अभियान में उनके साहस के लिए उन्हें 28 सितम्बर 1985 को “कीर्ति चक्र” से सम्मानित किया गया। इसके पूर्व 1976 में मेजर अशोक कुमार सिंह को “सेना मेडल” से सम्मानित किया जा चुका है। सन् 1994 में देश के सबसे बड़े साहसिक खेल पुरस्कार “तेनजिंग नोर्गे नेशनल एडवेंचर अवार्ड” और सन् 2015 में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के सबसे बड़े सम्मान “यश भारती” से इन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह से “कीर्ति चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर ए के सिंह

सेना मेडल ग्रहण करते हुए मेजर ए के सिंह

तत्कालीन चीफ आफ आर्मी स्टाफ जनरल जी जी बेओर से "स्वार्ड आफ आनर" ग्रहण करते हुए मेजर अशोक कुमार सिंह

तत्कालीन खेल मंत्री श्री माधव राव सिंधिया से "नेशनल एडवेंचर अवार्ड" ग्रहण करते हुए मेजर अशोक कुमार सिंह

उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव से "यश भारती सम्मान" ग्रहण करते हुए मेजर अशोक कुमार सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Ashok Kumar Singh was selected as a permanent crew member of the Indian Army expedition around the world in a thirty seven footer fibre glass yacht "Trishna" which will go down in the annols of sailing history in India as a daring foot of great enterprise.

Trishna had to sail from the United Kingdom to Bombay, the part from where the expedition was flagged off on the 28th September, 1985. Enroute the United Kingdom to Bombay, Trishna ran in to fierce storms in the Bay of Biscay, rough weather in the Mediterranean and then again in the Red Sea. At one stage the main nails were blown off in the goles. At great peril, the crew managed to put up fresh soils and safely steer Trishna to Bombay.

Their journey from Mauritius to St. Helena Island around the Cape of Good Hope, was/story of heroic fight against countless storms when wind intensity increased to sixty five knots whipping up waves to forty-fifty feet height. Tons of water broke over the small boat, washing away the life saving gear and packing of the wireless. They steered Trishna with steel nerves, keeping it on course.

The worst part of the journey was from Auckland to Sydney across the Tasman see where the crew faced one of the worst storms in 100 years. Graving through the dangers the crew reached Sydney with complete exhaustion and loss of appetite. The sail from Sydney to Brisbans.

<u>मेजर दीपक तिवारी</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 61379 एल, मेजर दीपक तिवारी का जन्म 22 जनवरी 1980 को महाराष्ट्र के देवलाली में श्रीमती नीरू तिवारी तथा लेफ्टीनेंट कर्नल बी सी तिवारी के यहां हुआ था। इनका परिवार मूल रूप से लखनऊ का रहने वाला है। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री अकादमी से पूरी की। 08 दिसम्बर 2001 को इन्होंने भारतीय सेना की ई एम ई कोर में कमीशन लिया और 8 बिहार रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद मे इनकी तैनाती 14 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

27 नवंबर 2008 को मेजर दीपक तिवारी को बिग्रेड से खबर मिली कि जम्मू एवं कश्मीर के एक गांव के किसी घर में पांच आतंकवादी छुपे हुए हैं। घनघोर अंधेरी रात में वे तत्परता से निकल पड़े । उन्होंने अपनी त्वरित गति से आतंकवादियों को आश्चर्य में डाल दिया। 28 नवंबर 2008 को 00:15 बजे बतायी हुई जगह के पास पहुंचने पर अफसर ने सुना कि आतंकवादी घर से निकलकर उनकी ओर आ रहे हैं। आतंकवादियों ने मेजर दीपक की टुकड़ी को देखकर भारी गोलाबारी शुरू कर दी। अफसर ने गोलाबारी के बावजूद अपने साहस और सूझ बूझ का परिचय देते हुए जवाबी कार्रवाई की। उन्होंने चार आतंकवादियों का पीछा किया। आतंकवादी एक चट्टान के पीछे कूद गए। आतंकवादियों की गोलाबारी का मुकाबला करते हुए मेजर दीपक तिवारी बिजली की तेजी से आगे बढ़े और लगभग तीन मीटर के करीब आमने-सामने की लड़ाई में अकेले ही तीन आतंकवादियों को मार गिराया और चौथे को गंभीर रूप से घायल कर दिया। मेजर दीपक तिवारी ने इसके बाद अपने दल को कुशल नेतृत्व प्रदान किया जिसके परिणाम स्वरूप पांच दुर्दांत आतंकवादियों को मार गिराया गया।

मेजर दीपक तिवारी ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट नेतृत्व और पेशेवर कौशल का परिचय दिया जिसके लिए उन्हें 28 नवम्बर 2008 को शांतिकाल का दूसरा सबसे बड़ा सम्मान "कीर्ति चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर दीपक तिवारी

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 27 November 2008, Major Deepak Tewari received specific information from the Brigade regarding presence of five terrorists in one of the houses in a village in Jammu & Kashmir. He rapidly moved in pitchdark night, thus surprising the terrorists with the speed of movement. At 0015 hrs on 28 Nov 2008 while closing in on to the target, the officer heard the terrorists coming out of the house towards them. On seeing own troops, terrorists opened heavy volume of fire, the officer, despite the barrage of fire, displaying nerves of steel and quick reflexes retaliated and chased four terrorists who jumped behind a rock. In the face of terrorist fire the officer moved forward with lightning speed and in extremely close-range gun-battle of approximately three meters single handedly eliminated three terrorists and critically injuring the fourth. The brave office then provided personal leadership to the team, which resulted in elimination of five hardcore terrorists.

Major Deepak Tewari exhibited conspicuous gallantry, leadership and processional acumen, under extreme danger while fighting the terrorists.

<u>मेजर तुषार गवाबा</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

एस एस 46936एफ, मेजर तुषार गवाबा का जन्म 10 जून 1987 को नबाबों के शहर लखनऊ के नेहरू नगर में श्रीमती विनीता गवाबा और श्रीकृष्ण कुमार गवाबा के यहां हुआ। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा लॉ मार्टिनियर कालेज, लखनऊ से पूरी की और 2010 में इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्यूनिकेशन में बी0 टेक0 किया। 14 सितम्बर 2013 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में कमीशन लिया और 20 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

23 मई 2018 की रात को आठ आतंकवादियों ने जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में नियंत्रण रेखा के पार घुसपैठ का प्रयास किया। 24 मई 2018 को 04:00 बजे मेजर तुषार गवाबा ने इस घुसपैठ को विफल करने के लिए अम्बुश लगाया। 25 मई की रात को आतंकवादियों ने घुसपैठ करने की कोशिश की। मेजर तुषार गवाबा ने एम्बुश पार्टी को सतर्क किया और फिर से आवश्यकतानुसार एम्बुश पार्टी को तैनात किया। 26 मई को 05:30 बजे आतंकवादी समूह ने मेजर तुषार के नेतृत्व में एम्बुश लगाकर हमला करने की जगह को भांप लिया और स्वचालित राइफलों और हैंड ग्रेनेड का उपयोग करके अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसमें सिपाही सुनील कुमार स्पिलिंडर लगने से घायल हो गये।

अपनी अम्बुश पार्टी के लिए खतरे को भांपते हुए, मेजर तुषार गवाबा आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बीच 20 मीटर तक रेंगते हुए आतंकवादियों के करीब तक पहुँच गये। उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए आतंकवादियों की ओर एक हैंड ग्रेनेड फेंका और अपनी ए के - 47 राइफल से फायरिंग करने लगे। नजदीकी लड़ाई में उन्होंने तीन आतंकवादियों को मार गिराया।

मेजर तुषार ने आतंकवादियों द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के बीच वीरता और युध्दकौशल का परिचय देते हुए तीन आतंकवादियों को मार गिराया तथा साथ में अपने साथी सैनिकों का भी नुकसान होने से बचाया। उनकी सूझ बूझ, रणकौशल और वीरता के लिए उन्हें 26 मई 2018 को "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर तुषार गवाबा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the night of 23 May, 2018, eight militants attempted infiltration across Line of Control in Kupwara district of Jammu and Kashmir. At 0400 hours on 24 May 2018. Major Tushar Gauba laid an ambush to deny exfiltration to the terrorists. On night of 25 May, terrorists tried to exfiltrate. Party led by Major Tushar was alerted, and accordingly he redeployed his ambush. At 0530 hours on 26 May, terrorist group sensed the location of ambush led by Major Tushar and started indiscriminatory fire using automatic rifles and hand grenades in which Sepoy Sunil Kumar sustained splinter injuries. Sensing the danger to own party, Major Tushar Gauba crawled upto 20 meter close to the terrorists under heavy firing by terrorists. He lobbed a hand grenade and with utter disregard to his personal safety charged on the terrorists with his AK 47. In close combat he killed three militants with personal weapon.

Major Tushar Gauba displayed unparalled bravery, conspicuous gallantry under heavy terrorist fire, tactical acumen and swift action to save his party which resulted in elimination of three hardcore terrorists and no further casualty to own troops.

नायक जगबीर सिंह
कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मैनपुरी, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2949472 के, नायक जगबीर सिंह का जन्म 02 अगस्त 1942 को जनपद मैनपुरी के गांव औरन्ध में श्रीमती राम बेटी और श्री फूल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की और 27 जुलाई 1961 को भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के उपरान्त 20 राजपूत रेजिमेंट में तैनात हुए।

नायक जगबीर सिंह उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले के अपने गांव औरंध में वार्षिक अवकाश पर थे। 15 /16 मार्च 1970 की रात लगभग 23:00 बजे,15 से 16 हथियारबंद डकैतों के गिरोह ने उनके एक पड़ोसी के घर पर डकैती करने के लिए धावा बोल दिया। गोलियों की आवाज सुनकर 12 बोर की बंदूक रखने वाले नायक जगबीर सिंह ने तुरंत ग्रामीणों को इकट्ठा किया और डकैतों को पकड़ने की योजना बनाई। इस कार्य को अंजाम देने के लिए तीन दलों का गठन किया, मुख्य समूह का नेतृत्व स्वयं नायक जगबीर सिंह ने किया। नायक जगबीर सिंह और डकैतों के बीच संघर्ष शुरू हो गया। नायक जगबीर सिंह ने भाग रहे डकैतों पर धावा बोल दिया और उनमें से एक को पकड़ लिया। यह देखकर कि उनके एक सदस्य को पकड़ लिया गया है, गिरोह के बाकी सदस्य भाग खड़े हुए लेकिन उनमें से एक ने नायक जगबीर सिंह पर पॉइंट ब्लैंक रेंज से गोली चला दी जिसके परिणाम स्वरूप उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में नायक जगबीर सिंह ने उच्च कोटि की वीरता का परिचय दिया। उनकी इस सूझ बूझ और वीरता के लिए उन्हें 15 मार्च 1970 को मरणोपरान्त "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

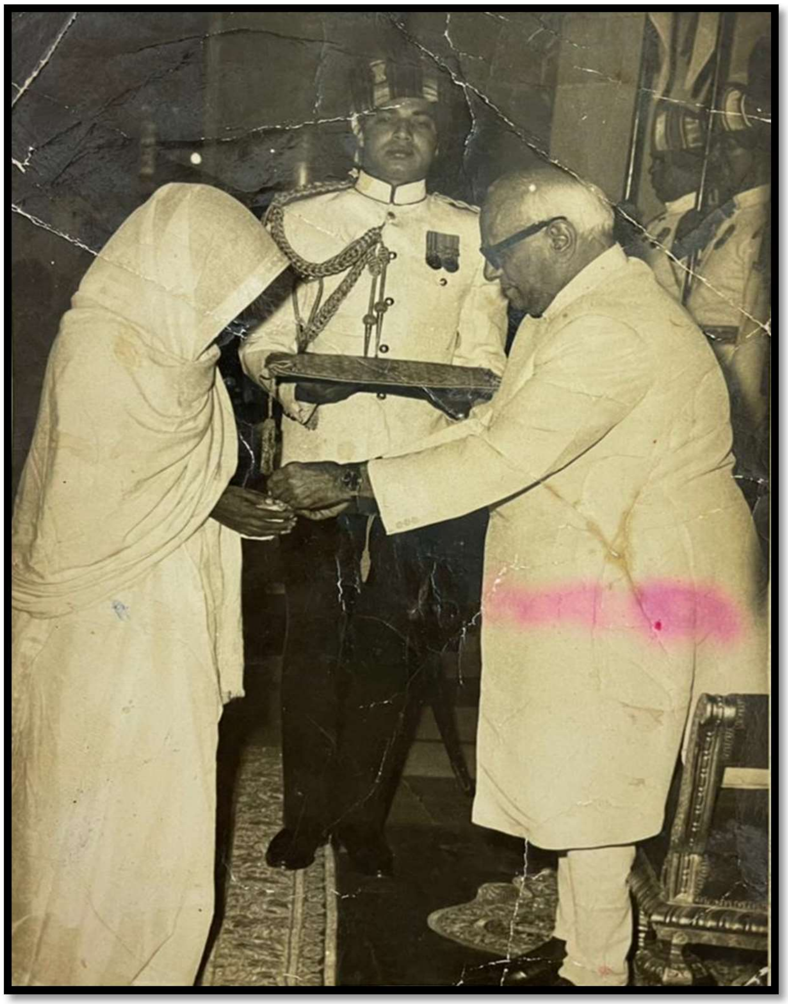

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी वी गिरि से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती शकुन्तला देवी

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Naik Jagbir Singh was on annual leave at his village Aurandh in district in District Mainpuri in Uttar Pradesh. On the night of 15th/16th March 1970 at about 2300 hours, gang of 15 to 16 armed dacoits raided the house of one of his neighbours. On hearing gun shots, Naik Jagbir Singh, who possessed a 12 bore gun, promptly organised a party from among the villagers and chalked out a plan to capture the dacoits. Three parties were formed to carry out this task, the main group was led by Naik Jagbir Sigh himself. A pitched gun battle took place between the rescue party led by the NCO and the dacoit. Naik Jagbir Singh charged the escaping dacoits and caught hold of one of them. On seeing that one of their members had been captured, the rest of the gang took to their heels but one of them fired at Naik Jagbir Singh from point blank range as a result of which he died.

In this action, Naik Jagbir Singh displayed gallantry of a very high order.

लेफ्टीनेंट कर्नल सुनील कुमार राजदान
कीर्ति चक्र
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 36909 के, लेफ्टीनेंट कर्नल सुनील कुमार राजदान का जन्म 08 अक्टूबर 1954 को जनपद मथुरा के ग्राम धोबीपाड़ा में श्रीमती मंजू राजदान और श्री रामचन्द राजदान के यहां हुआ था। 19 मार्च 1977 को भारतीय सेना मे कमीशन लिया और पैरा रेजिमेन्ट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 6 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

08 अक्टूबर 1994 को बटालियन के कार्यवाहक कमांडिंग ऑफिसर के रूप में लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील कुमार राजदान दो कंपनियों के साथ अनंतनाग जिले के दमहल हांजपुर के क्षेत्र में एक तलाशी मिशन पर 06:00 बजे रवाना हुए। वापस जाते समय लगभग 17:00 बजे उन्हें सूचना मिली कि ग्राम नंदमर्ग के एक घर में कुछ हथियार/ गोलाबारूद छिपे होने की संभावना है। जंगलों और पहाड़ों में एक दिन के आपरेशन के बाद थके हुए जवानों को स्वेच्छा और खुशी से अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया। करीब दो घंटे तक चलने के बाद वे संदिग्ध घर के पास पहुंचे और चारों ओर से घेराबंदी कर ली। लेफ्टिनेंट कर्नल राजदान ने घर के लोगों से पूछताछ करने के लिए घर में प्रवेश किया। तब अचानक तीन से चार हथियारों से लैस उग्रवादियों के एक समूह से उनका सामना हुआ, जिन्होंने पॉइंट ब्लैंक रेंज से सभी दिशाओं में गोलीबारी शुरू कर दी।

लेफ्टिनेंट कर्नल राजदान के पास फायरिंग का जबाब फायरिंग से देने का समय नहीं था, इसलिए उग्रवादियों से भिड़ गये और शारीरिक रूप से लड़ाई शुरू हो गई। लेफ्टिनेंट कर्नल राजदान आतंकियों के हथियार छीनने की कोशिश कर रहे थे और उन्होंने उन आतंकियों को मार गिराया। उन्होंने एक और आतंकवादी को मार गिराया जो उन पर फायरिंग कर रहा था। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद लेफ्टिनेंट कर्नल राजदान ने वहां से उपचार के लिए जाने से इनकार कर दिया। पूरी रात ऑपरेशन का निर्देशन जारी रखा जब तक कि अंतिम उग्रवादी का सफाया नहीं हो गया।

उनके अदम्य उत्साह और साहस ने उनके लोगों को बहादुरी की बुलंदियों को छूने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणाम स्वरूप हिजबुल मुजाहिदीन के नौ कट्टर पाक प्रशिक्षित आतंकवादी मारे गए, जिनमें एक कंपनी कमांडर और तीन पाकिस्तानी नागरिक शामिल थे। इसके अलावा यू एम जी, पांच ए के - 47/56 राइफलें और बड़ी मात्रा में गोला बारूद और अन्य सैन्य सामान बरामद हुआ। सेना का ठिकाना रहे दमहल हांजपुर इलाके में इस बड़े नुकसान ने आतंकियों की कमर तोड़ दी।

लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील कुमार राजदान ने पूर्ण समर्पण, दृढ़ संकल्प, कर्तव्य के प्रति समर्पण, असाधारण वीरता और सर्वोच्च कोटि की बहादुरी का परिचय दिया। उन्होंने भारतीय सेना की सबसे शानदार परंपराओं में कर्तव्य की पुकार से परे और व्यक्तिगत उदाहरण से अपने लोगों का नेतृत्व किया। लेफ्टिनेंट कर्नल सुनील कुमार राजदान की इस असाधारण वीरता के लिए उन्हें 08 अक्टूबर 1994 को “कीर्ति चक्र” प्रदान किया गया। बाद में वह पदोन्न्त होकर कर्नल, ब्रिगेडियर और फिर मेजर जनरल बने तथा सेना की सराहनीय सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हो गये।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 08 October 1994, as the officiating Commanding Officer of the battalion, Lieutenant Colonel Sunil Kumar Razden alongwith two companies, left at 0600 hours on a seek encounter mission in the area of Damhal Hanzpur in Anantnag District. On his way back, at about 1700 hours, he received intelligence that there was a likelihood of some arms/ammunition hidden in a house in Village Nandmarg. Though tired and weary after a day operations in the Jungles and mountains, his determination, dedication, sense of duty and exemplary leadership motivated his men to follow him willingly and cheerfully. After marching for over rive hours, they reached the suspected house and laid cordon around it. Lieutenant Colonel Razdan entered the house to question the inmates. When he was suddenly confronted by a group of three to four well armed militants who started firing in all directions from point blank range.

Lieutenant colonel Razdan had no time to return the fire, so he physically charged at the militants and a hand to hand fight ensued. Lieutenant Colonel Razdan was trying to snatching the weapon of the militants and shot him dead. He also shot dead one more militant who was firing at him. Though severely wound, Lieutenant Colonel Razdan refused to be evacuated and continued to direct the operation throughout the night till the last of the militants was eliminated. His indomitable sprit and undaunting courage inspired his men to dizzy height of bravery which resulted in the killing of nine hardcore Pak trained militants of the Hizibul Mujahidden, including one Company Commander and three Pakistani nationals, besides the recovery of UMG, five AK-47 /56 rifles and large quantities of ammunition and other military hardware. These major losses have broken the back of the militants in the area of Damhal Hanzpur, which has been a hot bed of military.

Lieutenant Colonel Sunil Kumar Razdan displayed total dedication, firm determination, devotion to duty, exceptional gallantry and bravery of the highest order. He led his men from the front and by personal example far beyond the call of duty in the most glorious traditions of the Indian Army.

कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर

कीर्ति चक्र

(जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

ई सी 55123 (आई सी 21004), कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर का जन्म 26 जुलाई 1942 को जनपद मेरठ में श्रीमती अंबिका देवी और जस्टिस बी पी माथुर के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूरी की। 02 फरवरी 1964 को भारतीय सेना की ब्रिगेड ऑफ़ द गार्ड्स रेजिमेन्ट में कमीशन लिया और 1 गार्ड्स रेजिमेन्ट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 6 असम राइफल्स में हुई।

10 जुलाई 1968 को मिजो हिल्स के एक गांव में शत्रुओं के एक हथियारबंद गिरोह के बारे में सूचना प्राप्त होने पर दो प्लाटून के एक कॉलम के साथ कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर को रिपोर्ट की जांच के लिए जिम्मेदारी सौंपी गयी। बेहद खराब मौसम में पूरी रात मार्च करने के बाद वह अगली सुबह गांव पहुंचे। तलाशी लेने के दौरान देश विरोधी लोगों ने दल पर फायरिंग करना शुरू कर दिया। उन्होंने तुरंत एक प्लाटून को बाईं ओर से आगे बढ़ने का आदेश दिया और खुद एक पार्टी का नेतृत्व करते हुए हमला कर दिया और तीन शत्रुओं को मार डाला। इस हमले में बड़ी मात्रा में हथियार, गोला बारूद और उपकरणों को छोड़कर शत्रु घबरा कर भाग खड़ा हुआ।

इस कार्यवाही में कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर ने विशिष्ट वीरता और नेतृत्व का परिचय दिया। उनकी वीरता, साहस और नेतृत्व क्षमता के लिए उन्हें 11 जुलाई 1968 को "कीर्ति चक्र" प्रदान किया गया। कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर बाद में पदोन्नत होकर लेफ्टीनेंट कर्नल बने और 31 जुलाई 1993 सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

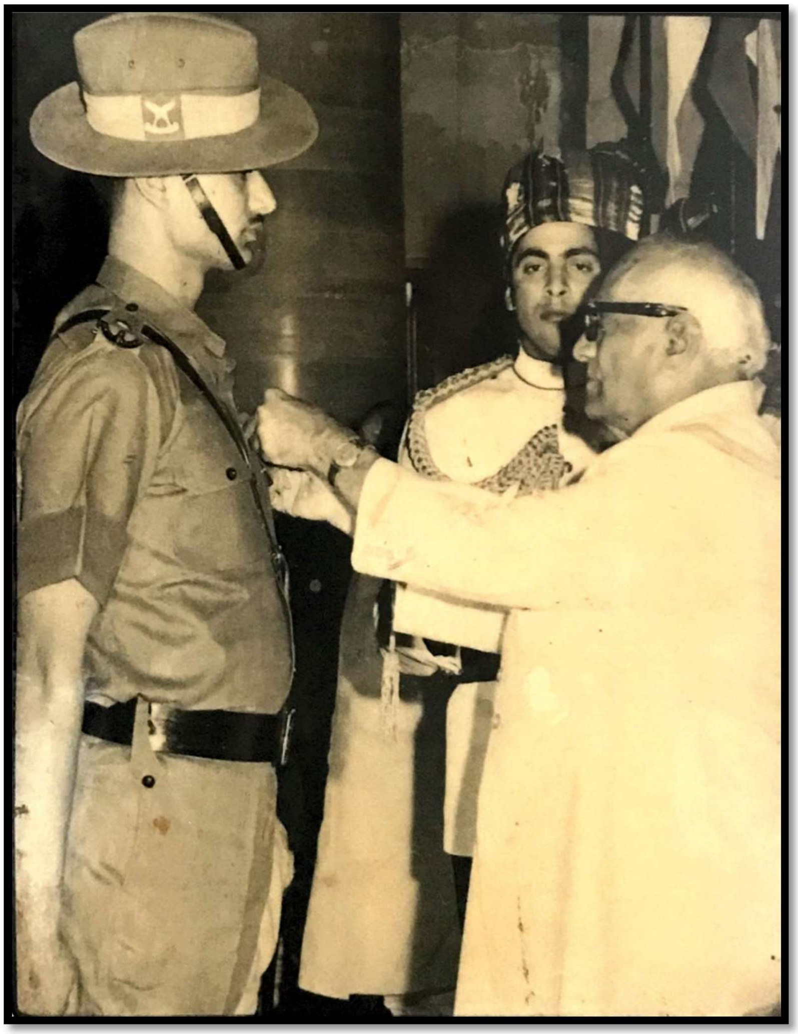

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी वी गिरि से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए
कैप्टन दिनेश प्रसाद माथुर

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 10th Jul 1968 on receipt of information about an armd gang of hostiles in a village in Mizo Hills. Captain Dinesh Prasad Mathur was detailed to take out a column of two platoon s to investigate the report. After marching the whole night is extremely inclement weather, they reached the village the next morning. And while making a search the party was engaged by hostile fire. He immediately ordered one platoon to advance from the left and himself led a party and put up a frontal attack and killed three hostiles. Despite repealed hostile fire, he rallied his men and charged the hostile position which unnerved the hostile who fed leaving behind a large quantity of Arms, Ammunition and equipments.

In this action captain Dinesh Prasad Mathur displayed conspicuous gallantry and leadership.

<u>सैपर अजमेर अली</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 1553695 एन, सैपर अजमेर अली का जन्म 15 फरवरी 1961 को जनपद मेरठ के शोभापुर में श्रीमती सदिकान तथा श्री शरीफ अहमद के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा फेजाम इण्टर कालेज, मेरठ से पूरी की। 09 मई 1980 को भारतीय सेना की इंजीनियर्स कोर में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 104 इंजीनियर रेजिमेंट में तैनात हुए।

15 से 17 मार्च 1987 के बीच हुए लगातार भारी हिमपात के फलस्वरूप लद्दाख से लेह चालुंका मार्ग पर 18000 फुट की ऊंचाई पर स्थित खरदुंगला पास बन्द हो गया था। 22 मार्च 1987 को सैपर अजमेर अली 168 एफ सी पी केयर 113 आर सी सी, सीमा सड़क संगठन को बर्फ हटाने का काम सौंपा गया। 22 मार्च 1987 को आसमान बादलों से घिरा था और बर्फ लगातार गिर रही थी। शून्य से भी कम तापमान और लगातार बिगड़ते मौसम तथा बर्फीली हवाओं वाली बेहद कठोर स्थिति का सामना करते हुए सैपर अजमेर अली ग्लेशियर पुल के आर पार मुख्य संचार मार्ग को साफ करने के महत्वपूर्ण कार्य को पूरा करने में अत्यधिक लगन से लगातार जुटे रहे। ताकि उत्तर की ओर के सैनिकों को आवश्यक मदद और परिवहन सहायता मिल सके। लगातार हिमपात होने से उनके साथ काम कर रहे मजदूर अपनी जान का खतरा समझ कर उस स्थान को छोड़ कर चले गए। किन्तु सैपर अजमेर अली इस पर भी विचलित नहीं हुए। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अत्यंत उत्साह और धैर्य से काम करते रहे। इस तरह उन्होंने अतुलनीय कर्तव्यनिष्ठा और अनुकरणीय कर्मशीलता का प्रदर्शन किया। उनके इस काम करने के दौरान ही अचानक हिमस्खलन हुआ और भारत मां का यह अमर सपूत अपने डोजर के साथ ही सदा - सदा के लिए चिर निद्रा में सो गया।

सैपर अजमेर अली ने प्रतिकूल और अत्यंत कठिन परिस्थितियों में प्रशंसनीयता और उच्च कोटि के शौर्य का परिचय दिया। जिसके लिए इन्हें मरणोपरान्त "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

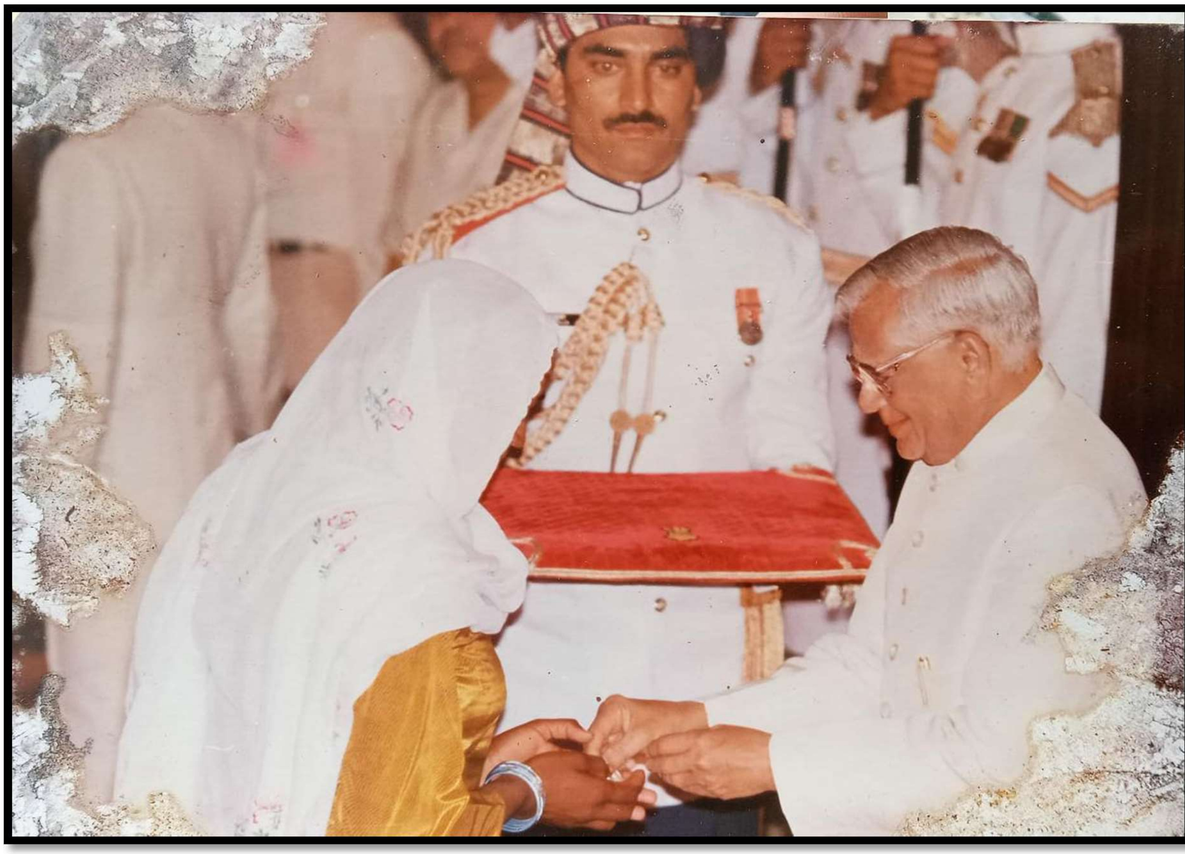

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामास्वामी वेंकटरमन से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती अबरीशा खातून

प्रशंसात्मक उल्लेख

Khardungla Pass at an altitude of 18,000 feet on Len-Chalunka Road in Ladakh got blocked due to continuous and heavy snow fall from 15 to 17 Mar 1987. On 22nd Mar 1987, Spr/OEM Ajmer All, 168 FCP Care 113 RCC, BRO was detailed for snow clearance. The weather was extremely cloudy and it was snowing continuously. Braving harsh climatic conditions in sub-zero temperature in rarified atmosphere and icy winds, Spr/OEM Ajmer All worked relentlessly with great dedication in execution of the vital task to clear the main line of communication across the glacier bridge so that troops on the northern side could get the required assistance and logistic support. Due to continuous snow fall, the labourers working along with him, apprehending danger to their lives, abandoned the site. Undeterred and working in utter disregard to his personal safety, this brave operator, however continued to work with great zeal and fortitude exhibiting undaunted devotion to duty and exemplary sense of pride in his work. He was buried in an avalanche alongwith the dozer while engaged in the operation. Spr/OEM Ajmer Ali displayed commendable perseverance and exceptional courage in the face of heavy odds and difficult circumstances. For this act of conspicuous gallantry, he was awarded Kirti Chakra on 26 Jan 1989.

<u>लांसनायक सोहन वीर</u>

<u>कीर्ति चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 3185783 डब्ल्यू, लांसनायक सोहन वीर का जन्म 10 जून 1972 को जनपद मेरठ के ग्राम दबथुवा में श्रीमती प्रेमवती देवी और श्री हरिकिशन के यहां हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा इनके गांव की प्राथमिक पाठशाला तथा आगे की पढ़ाई गांधी स्मारक इण्टर कालेज, दबथुवा में हुई। 27 अप्रैल 1992 को यह भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात् 7 जाट रेजिमेंट में तैनात हुए।

26 - 27 अगस्त 2002 को जम्मू कश्मीर में घुसपैठ की कोशिश कर रहे आतंकवादियों को खत्म करने के लिए एक अम्बुश लगाया गया। लांसनायक सोहन वीर इसी अम्बुश पार्टी के सदस्यों में से एक थे।

लगभग 04:00 बजे, आतंकवादी जैसे ही अम्बुश एरिया में पहुंचे लांसनायक सोहन वीर ने पीछे से घात लगाकर हमला किया और एक आतंकवादी को मार गिराया। उजाला होते ही आड़ के पीछे छुपा एक आतंकवादी अम्बुश पार्टी पर गोलियों की बौछार कर दी। कुछ ही देर की गोलीबारी में लांसनायक सोहन वीर ने इस आतंकवादी को मार गिराया। इसी बीच भागकर छुपे हुए दो आतंकवादियों ने खोजी दल पर भीषण गोलीबारी करते हुए हमला कर दिया।

आतंकवादियों पर कारगर फायर करते हुए लांसनायक सोहन वीर रेंगते हुए आगे बढ़े और नजदीक पहुंचकर उनके छुपाव स्थल में एक हैंड ग्रेनेड डाल दिया जिससे एक और आतंकवादी मारा गया। इस कार्यवाही में लांसनायक सोहन वीर गंभीर रूप से घायल हो गये। दूसरे आतंकवादी ने भागने की कोशिश की लेकिन अपनी घातक घावों के बावजूद लांसनायक सोहन वीर ने उसे मार गिराया। सेना की उच्च परम्परा को बनाए रखते हुए और अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए लांसनायक सोहन वीर शहीद हो गये।

लांसनायक सोहन वीर के साहस, सूझबूझ और कर्तव्यपरायणता के लिए उन्हें 27 अगस्त 2002 को मरणोपरान्त "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती प्रभा देवी

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Lance Naik Sohanvir was part of an ambush placed to eliminate terrorists trying to infiltrate in Jammu and Kashmir on 26-27 August 2002.

At about 0400 hours when the terrorists reached the killing area, Lance Naik Sohanvir being the scout sprung the ambush from the rear killing one terrorist. At first light his party came under perilous fire from a terrorist hiding behind a boulder. In the ensuing fight he killed the terrorist. Meanwhile own troops in the search party came under intense fire from two escaped terrorist hiding in the undergrowth. Lance Nalk Sohanvir crawled forward, braving affective fire, lobbed a grenade and killed one terrorist but was grievously wounded in the process. The other terrorist tried to escape but Lance Naik Sohanvir despite his fatal wounds closed onto him and eliminated him before making the supreme sacrifice.

<u>कैप्टन विनोद कुमार नाइक</u>

<u>कीर्ति चक्र</u>

(जनपद वाराणसी, उत्तर प्रदेश)

आई सी0 31011 एन, कैप्टन विनोद कुमार नाइक का जन्म 24 अगस्त 1953 को जनपद वाराणसी के सिध्दिगिरि बाग में श्रीमती तारामती नाइक और श्री बंशीधर सोनू नाइक के यहां हुआ था। 15 जून 1975 को उन्हें भारतीय सेना में कमीशन मिला और प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात 9वीं गढ़वाल राइफल्स में पदस्थ हुए।

05 – 06 जून 1984 की रात में आतंकवादियों के खिलाफ चलाए जा रहे आपरेशन में कैप्टन विनोद कुमार नाइक एक प्लाटून के प्लाटून कमांडर थे। उन्हें आतंकवादियों द्वारा कब्जा की गयी एक इमारत पर पुनः कब्जा करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। उन्होंने रिक्वायललेस गन से इमारत के दरवाजे को तोड़ने की कोशिश की जो कि जीप पर माऊंटेड थी। लेकिन इसी बीच आतंकवादियों द्वारा फेंके गये फास्फोरस बम से उनकी जीप में आग लग गयी। कैप्टन विनोद कुमार नाइक ने तुरन्त उस इमारत के दूसरे दरवाजे को अपना निशान बनाया। लेकिन उनकी प्लाटून आतंकवादियों के हथियारों की रेंज में आ गयी। उन्होंने दरवाजे की बगल में दीवार में एक छेद बनाया और उस संकरे छेद के माध्यम से अपने सैनिकों के साथ इमारत में घुस गये। आतंकवादी भयंकर गोलीबारी कर रहे थे। इस विषम परिस्थिति में भी कैप्टन विनोद कुमार नाइक अपने सैनिकों को उत्साहित करते रहे। आगे बढ़ने में उत्पन्न खतरे की परवाह किए बिना कैप्टन विनोद कुमार नाइक अपनी प्लाटून के साथ एक कमरे से दूसरे कमरे में आतंकवादियों का सफाया करने के लिए आगे बढ़ते गये।

इस जोखिमपूर्ण कार्य को पूरा करने के लिए कैप्टन विनोद कुमार नाइक द्वारा प्रदर्शित अनुकरणीय साहस, वीरता और उत्कृष्ट नेतृत्व के कारण ही उनकी यूनिट दिए गये टास्क को पूरा करने में सक्षम हुई।

इस कार्यवाही में कैप्टन विनोद कुमार नाइक ने असाधारण वीरता, उत्कृष्ट पहल, दृढ़ निश्चय, साहस, प्रेरक नेतृत्व और कर्तव्य समर्पण का परिचय दिया। उनकी इसी असाधारण वीरता के कारण उन्हें 05 जून 1985 को "कीर्ति चक्र" से सम्मानित किया गया। कैप्टन विनोद कुमार नाइक बाद में पदोन्नत होकर मेजर जनरल बने और 31 अगस्त 2011 को सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

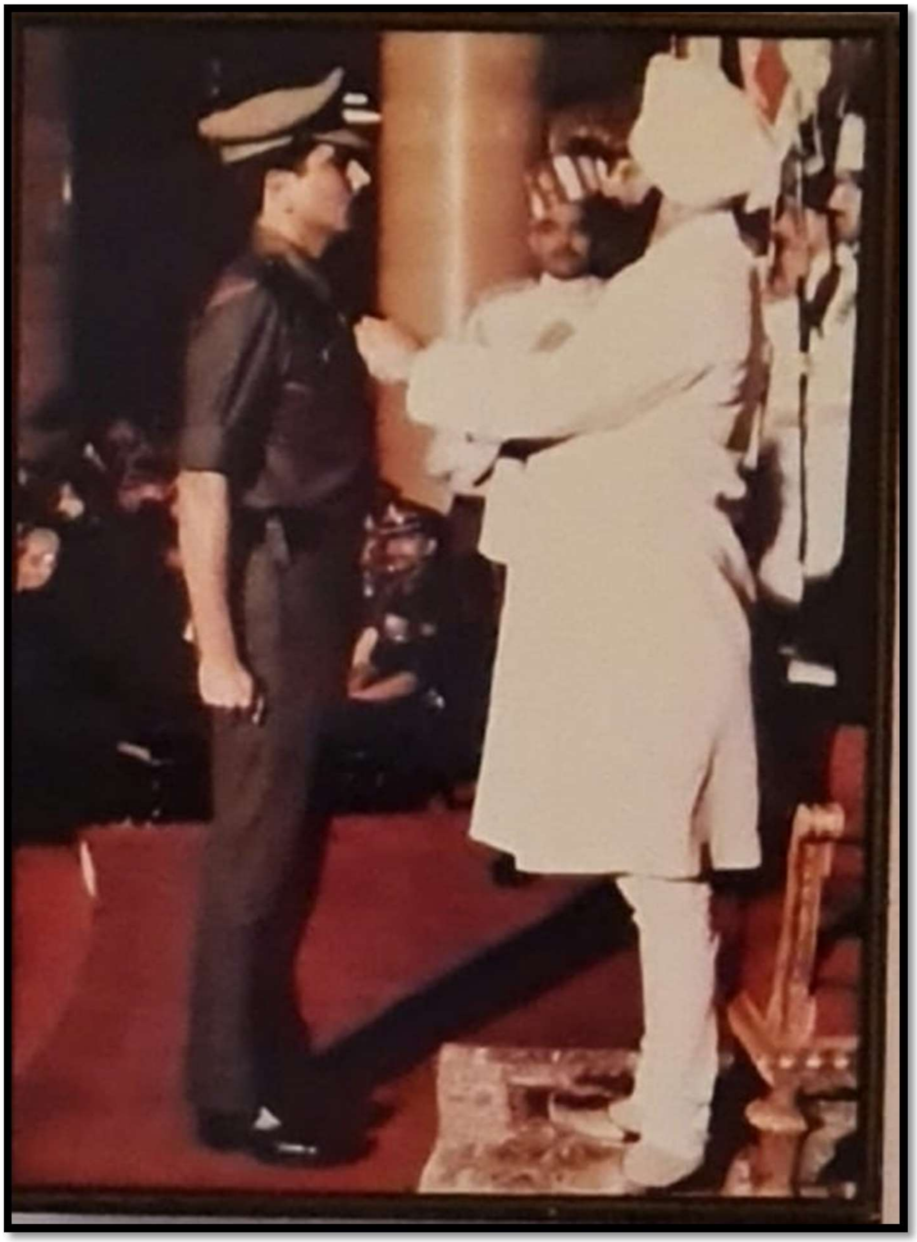

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह से "कीर्ति चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन विनोद कुमार नाइक

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On the night of the 5th/6th June, 1984, during anti terrorist operation, Captain Vinod Kumar Naik was carrying out the duties of a platoon commander. He was assign the task of capturing a portion of strongly held complex. Captain, Vinod Kumar Naik tried to blast the gate with the help of an RCL gun but the jeep caught fire due to the bursting of a phosphorous bomb lobbed at it by the terrorists. Captain Vinod Kumar Naik quickly shifted the point of action to another gate where too his platoon came under effective small arms fire of the terrorists. He was able to make a hole in the gate and in the wall of the complex and there after personally led his men through the narrow gap. He kept inspiring and encouraging his men in spite of heavy fire from the terrorists. Unmindful of the danger involved, Captain Vinod Kumar Naik led his men in clearing terrorists from room after room of the building. Because of the exemplary courage, valour and outstanding leadership displayed by Captain Vinod Kumar Naik in carrying out the dangerous task, his unit was able to attain its objective.

In this action Captain Vinod Kumar Naik displayed conspicuous bravery, tremendous initiative, dogged determination, cool courage, inspiring leadership and devotion to duty of an exceptionally high order.

शौर्य चक्र विजेता

<u>मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 43848ए, मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा का जन्म 02 जुलाई 1963 को जनपद नैनीताल (उत्तराखंड) में श्रीमती कमला मिश्रा और श्री हरिदत्त मिश्रा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सैनिक स्कूल, घोड़ाखाल, नैनीताल से पूरी की। 14 जून 1986 को इन्होंने भारतीय सेना की जाट रेजिमेन्ट में कमीशन लिया और 14 जाट रेजिमेन्ट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 34 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

06 दिसंबर 1996 को मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा, अपनी कंपनी के एक पेट्रोल में पहुंचे, जो कि गांव डैटसन में विदेशी भाड़े के आतंकवादियों के साथ एक भीषण मुठभेड़ में शामिल थी। अपनी सुरक्षा की पूर्ण रूप से उपेक्षा करते हुए, भारी गोलाबारी के बीच वह आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गये। वह हर महत्वपूर्ण समय और हर महत्वपूर्ण बिंदु पर सर्वव्यापी थे, और उनका शांत व्यवहार और व्यक्तिगत बहादुरी उनके लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत थी। उनकी पेशेवर क्षमता, दृढ़ नेतृत्व और सामरिक कौशल के कारण, उनकी कंपनी ने तीन विदेशी आतंकवादियों को मार गिराया। चौथा आतंकवादी एक नाले में घुस गया और सैनिकों पर सटीकता से गोलीबारी की जिससे कई लोग हताहत हुए। मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा, स्थिति की गंभीरता को समझते हुए आगे बढ़े और आतंकवादी पर गोलियां चलाईं। उस आतंकवादी ने गोली चलाकर उन्हें घायल कर दिया। अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए और अपनी चोट की परवाह किए बिना वह अपने घुटनों के बल खड़े हो गये और आतंकवादी पर गोली चला दी जिससे वह मारा गया। आतंकवादी की गोली का आखिरी फायर मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा के सिर में लगा और वह अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए शहीद हो गये।

इस मुठभेड़ के दौरान मेजर चन्द्र शेखर मिश्रा ने अनुकरणीय साहस, उच्च स्तर की पेशेवर क्षमता, सामरिक कौशल, नेतृत्व, साहस और विशिष्ट वीरता का परिचय दिया। उनकी इस वीरता और साहस के लिए उन्हें 06 दिसम्बर 1996 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती राजश्री मिश्रा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 06 December 96, IC-43848A Major Chander Shekhar Mishra, rushed to the one petrol of his Company which was involved in a fierce encounter with foreign mercenaries at village Datsun. With utter disregard for his own safety, under heavy militant fire the officer quickly closed in with the militants. He was omnipresent at every critical point at every critical time and his cool demean our and personal bravery was a source of inspiration for his men. Due to his professional competence, resolute leadership and tactical acumen, his Company killed three foreign mercenaries. The fourth mercenary got into a nallah and fired accuracy at the troops causing serious casualties. Major Chander Shekher Mishra, understanding the gravity of the situation, responding to the call, rose to the occasion and moving close fired at the militant, who fired back injuring him. Displaying exemplary courage, without caring for his injury, he got up to his knees and fired at the militant killing him. However the last fusillade of bullet from the militant hit Major Chander Shekher Mishra in the head and be succumbed to his injuries.

Throughout the encounter, Major Chander Shekhet Mishra displayed exemplary courage, high degree of professional competence, tactical acumen, personal example, courage of leadership and conspicuous gallantry.

<u>नायक भामेर सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13617164 के, नायक भामेर सिंह का जन्म 15 जुलाई 1966 को जनपद आगरा में श्रीमती राम देवी और श्री हरि प्रसाद सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला पचावरी, जूनियर हाई स्कूल की शिक्षा जूनियर हाईस्कूल, बिसावर तथा इन्टरमीडिएट की शिक्षा सादाबाद इन्टर कालेज, सादाबाद से पूरी की। 03 मार्च 1987 को सेना में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 9 पैरा विशेष बल में तैनात हो गये। बाद में इनकी स्थायी तैनाती 21 पैरा विशेष बल में हो गयी।

15 फरवरी 1998 को 13:30 बजे असम के बोंगाईगांव जिले के रासीगांव गांव में एक अभियान के दौरान जब खोजी दल लक्ष्य के करीब पहुंचा तब एक महिला प्रहरी ने अलार्म बजा दिया। शीघ्र उग्रवादी समूह पर कार्यवाही की आवश्यकता को महसूस करते हुए नायक भामेर सिंह ने व्यक्तिगत रूप से अपने दस्ते का नेतृत्व किया।

शीर्ष यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट असम (उल्फा) के उग्रवादी नेता की मौजूदगी के कारण उग्रवादियों ने भारी प्रतिरोध किया और छापेमारी दल पर करीब से भारी मात्रा में गोलाबारी की। अपने दस्ते को सटीक गोलाबारी के तहत बेहद कम कवर में देखते हुए, नायक भामेर सिंह, भारी गोलाबारी के बीच उग्रवादियों से भिड़ गये और एक को गंभीर रूप से घायल कर दिया तथा दूसरों को भागने के लिए मजबूर कर दिया। उनके दाहिने हाथ और दोनों पैरों में चार गोलियां लगीं जिससे नायक भामेर सिंह को रूकना पड़ा। इस तीव्र कार्यवाही में उल्फा के कुल चार शीर्ष नेता मारे गए, दो घायल हो गए और चार हथियार बरामद किए गए।

इस प्रकार नायक भामेर सिंह ने अपने जीवन के जोखिम के बावजूद और कड़े विरोध के सामने दृढ़ संकल्प तथा असाधारण बहादुरी का प्रदर्शन किया। इसके लिए उन्हें 15 फरवरी 1998 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

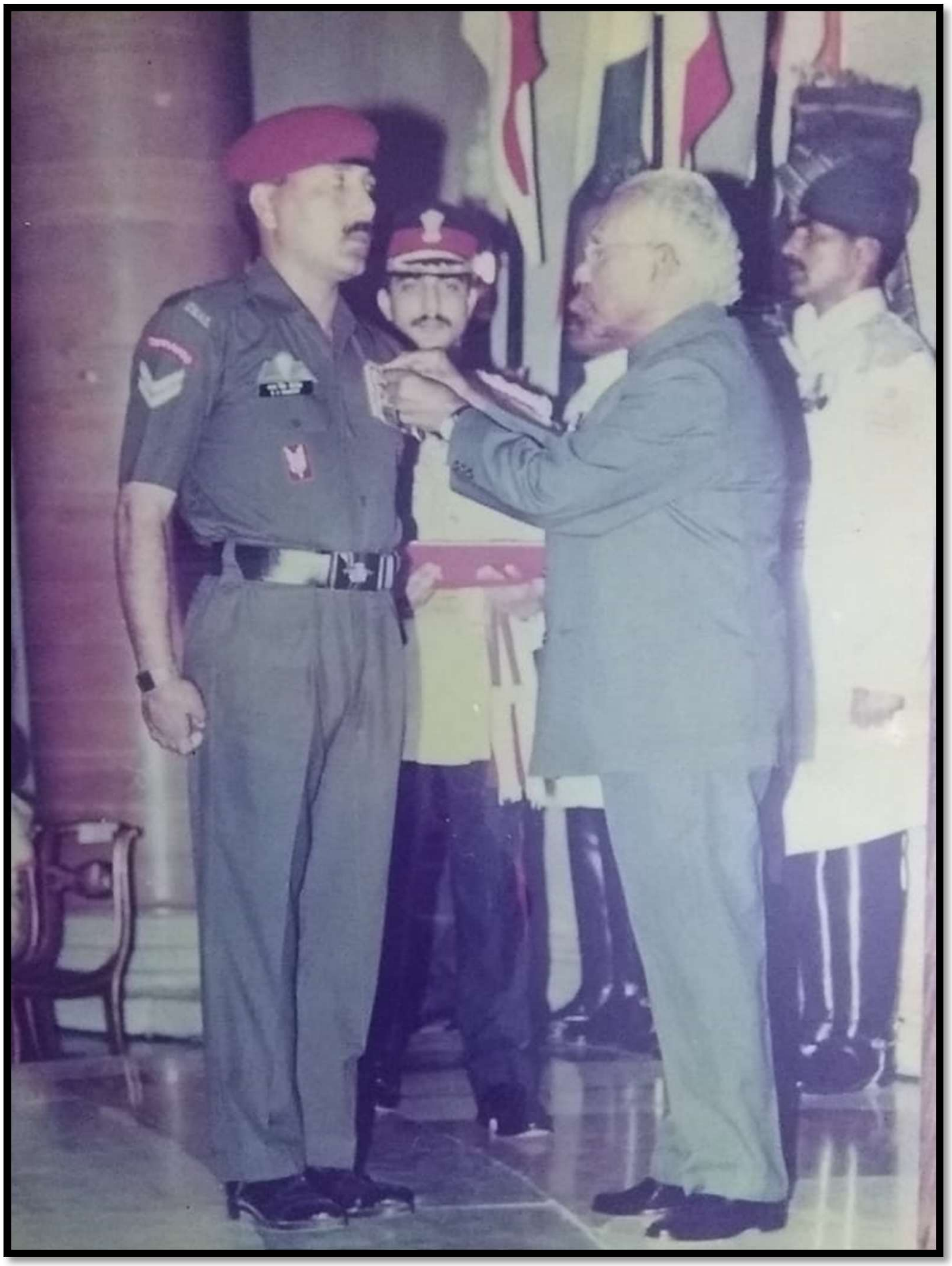

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए नायक भामेर सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 15 February 1998 at 1330 hours during an operation in village Rasigaon, Bongaigaon District in Assam when the raiding party was approaching its target, a female sentinel raised an alarm. Realising the need for swift action, Naik Bhamer Singh personally led his squad a quick assault on the militant group.

Due to the presence of top United Liberation Front Assam (ULFA) militant leader, the militant put up resistance and brought down heavy volume of fire at close range on the raiding party. Seeing his squad pinned down in extremely scarce cover under accurate fire, Naik Bhamer Singh, charged at the militants at close quarter under heavy fire, severely wounded one and forcing others to flee in disarray. Four bullet injuries in his right hand and both legs forced this brave soldier to a halt. In a swift and intense action a total of four top ULFA leaders were killed two wounded and four weapons recovered.

Nk Bhamer Singh thus, displayed exceptional bravery in the face of stiff opposition and strong determination to succeed despite risk to his own life.

<u>लेफ्टीनेंट ललित कुमार शर्मा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

एस एस 37816 एफ (आई सी 56300 एन), लेफ्टीनेंट ललित कुमार शर्मा का जन्म 04 जुलाई 1976 को जनपद आगरा में श्रीमती रूक्मिणी शर्मा और श्री हरि ओम शर्मा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी हाईस्कूल की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, सिकन्दराबाद, इन्टरमीडिएट की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय नं 2, आगरा कैंट तथा स्नातक की शिक्षा सेंट जोसेफ कालेज, आगरा से पूरी की। 06 मार्च 1999 को इन्होंने भारतीय सेना की आर्डिनेन्स कोर में कमीशन लिया और 18 सिख रेजिमेंट में कुछ दिनों के लिए सम्बद्ध हुए।

21 मार्च 2000 को एक पक्की सूचना मिलने पर लेफ्टीनेंट ललित कुमार शर्मा अपने दल के साथ तुरंत असम के बानमोजा नामक गांव में तलाशी के लिए निकल पड़े। लेफ्टीनेंट शर्मा के नेतृत्व में यह दल जैसे ही आवासीय परिसर की तरफ बढ़ा तभी आतंकवादियों ने निकट से स्वचालित हथियारों से गोलीबारी आरंभ कर दी। दोनों तरफ से हो रही भीषण गोलीबारी में लेफ्टीनेंट शर्मा ने एक आतंकवादी को ढ़ेर कर दिया। एक ए के - 36 राइफल बरामद की गयी। आतंकवादियों से हो रही गोलीबारी में इनके दायें घुटने में गोली लग गयी। घायल होने के बावजूद, अपने जीवन को खतरे में डालते हुए उन्होंने बाकी बचे हुए आतंकवादियों का पीछा किया। अत्यंत नजदीक से हुई भीषण गोलीबारी में एक दुर्दांत आतंकवादी को ढेर कर दिया। लेफ्टीनेंट शर्मा ने पानी से भरे खेतों और घनी झाड़ियों के बीच बचे हुए आतंकवादियों का पीछा किया। इसी बीच उनका रेडियो आपरेटर भी उनके पास आ पहुंचा। दोनों ने एक साथ मिलकर भीषण गोलीबारी में तीसरे आतंकवादी को घायल कर दिया जो कि बाद में मरा हुआ पाया गया। लेफ्टीनेंट शर्मा को काफी रक्तस्राव हो रहा था किंतु उन्होंने सुरक्षित स्थान पर जाने से मना कर दिया। वह तब तक अपने जवानों को निर्देशित और प्रेरित करते रहे जब तक कि उन्हें जबरदस्ती वहां से नहीं ले जाया गया।

इस पूरी मुठभेड़ में लेफ्टीनेंट ललित शर्मा ने अदम्य साहस, नेतृत्व क्षमता और दृढ़ संकल्प शक्ति का परिचय दिया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 21 मार्च 2000 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए लेफ्टीनेंट ललित कुमार शर्मा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 21 Mar 2000, based on specific information Lt Lalit Kumar Sharma alongwith his team immediately set out to carry out search operation in village – Bon Moja, Assam. As the search party led by the officer approached the house complex the militants opened up with automatic weapons from very close quarters. In the ensuing fire fight, the officers shot dead one dreaded militant. One Ak 36 rifle was recovered. The officer also received gun shot wound from militant fire in right knee. Unmindful of his injury and put his life into danger he chased the remaining militants. After a fierce gun battle at close quarters he shot dead hardcore militant. He chased the remainder lot through water logged fields and thick vegitation and on rejoining by radio operator together they fired and injured the third militant who was later found dead with his AK - 56 Rifle. Though bleeding profusely, the officer refused evacuation and continued directing operations and exhorting his men till he was forcibly removed to a safer place and was evacuated.

Lt Lalit Kumar Sharma displayed indomitable courage, strong determination and leadership of high order in the face of the Militants.

<u>लेफ्टीनेंट राहुल शर्मा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 60395 डब्ल्यू, लेफ्टीनेंट राहुल शर्मा का जन्म 15 जून 1977 को जनपद आगरा में श्रीमती मधु शर्मा और कर्नल शम्भू शर्मा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय डोगरा लाइन्स, मेरठ और कैम्ब्रेन हॉल स्कूल, देहरादून से पूरी की। 24 जून 2000 को इन्होंने भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में कमीशन लिया और 7 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

17 मई 2001 को लेफ्टिनेंट राहुल शर्मा जम्मू और कश्मीर के ग्राम लंजोत में एक एम्बुश पार्टी के कमांडर थे। 10 मई 2001 को लगभग 00:05 बजे यूनिट सर्विलांस डिटेचमेंट ने आतंकवादियों द्वारा घुसपैठ के प्रयास की सूचना दी थी, जिस पर लेफ्टिनेंट राहुल शर्मा के नेतृत्व में एम्बुश पार्टी को मदर रिज के आगे स्थित किया गया, जिससे नियंत्रण रेखा की ओर आतंकवादियों के भागने का मार्ग बंद हो गया। 00:30 बजे घुसपैठियों पर घात लगाकर हमला किया गया। आतंकवादियों ने वापस भागने का प्रयास किया। उनके प्रयासों को लेफ्टिनेंट राहुल शर्मा ने बहुत प्रभावी ढंग से विफल कर दिया।

जैसे ही उनके नेतृत्व में पार्टी आगे बढ़ी, पत्थरों के बीच छिपे आतंकवादियों ने भारी गोलाबारी की। अपने सैनिकों के लिए खतरे को भांपते हुए लेफ्टिनेंट राहुल शर्मा अपनी पार्टी से कवर फायर की आड़ लेकर आगे बढ़े और एक आतंकवादी को मार गिराया।

आगे बढ़ते समय वह गंभीर रूप से घायल हो गये क्योंकि एक छुपी हुई माइन ने उनका दाहिना पैर उड़ा दिया। अपनी चोट की चिन्ता न करते हुए उन्होंने दूसरे आतंकवादी पर लगातार गोलीबारी करके उसे भी मौत के घाट उतार दिया।

लेफ्टिनेंट राहुल शर्मा ने आतंकवादियों से लड़ते हुए असाधारण वीरता और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। उनकी इस वीरता और साहस के लिए उन्हें 17 मई 2001 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए लेफ्टिनेंट राहुल शर्मा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 17 May 2001, Lieutenant Rahul Sharma was Commander of ambush party sited at Village Lanjot in Jammu and Kashmir. At about 0005 hours on 10 May 2001, Unit surveillance detachment reported an attempt of infiltration by terrorists upon which the ambush party led by Lieutenant Rahul Sharma was re sited ahead of the mother ridge thereby calling off the escape route of terrorist towards the Line of Control. At 0030 hours, the ambush sprung on the infiltrators, upon which the terrorists made an attempt to escape back. Their attempts were thwarted very effectively by Lieutenant Rahul Sharma who was tasked to search the area.

As the party led by his moved ahead, they drew heavy fire from terrorists holed up amidst stones. Sensing danger to his troops. Lieutenant Rahul Sharma moved up under covering fire from his party, closed on to one of the terrorists and shot him dead.

While moving forward he got gravely injured as a drifted mine blew off his right foot. Unmindful of his injury to continued firing onto the second terrorist killing him also.

Lieutenant Rahul Sharma displayed extraordinary gallantry and a deep sense of camaraderie towards his troops while fighting the terrorists.

<u>नायक रीत राम</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 3183763 (जे सी 490756 एम), नायक रीत राम का जन्म 01 अप्रैल 1972 को जनपद आगरा के गांव गहर्रा खुर्द में श्रीमती रामवती और श्री नौबत सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला, गहर्रा खुर्द और जूनियर हाईस्कूल से इन्टर तक की शिक्षा चाहरवटी इन्टर कालेज, अकोला से पूरी की। 16 मई 1989 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात 7 जाट रेजिमेंट में तैनात हुए।

18 सितंबर 2001 को लगभग 21:30 बजे पांच आतंकवादियों के घुसपैठ की सूचना मिलने पर नायक रीत राम ने जम्मू और कश्मीर के क्षेत्र गोल्ड में घेरा डाल दिया।

नायक रीत राम का ठहराव उस घर के पश्चिम में स्थित था जिसमें आतंकवादियों ने शरण ली थी। 19 सितंबर 2001 को लगभग 07:00 बजे, आतंकवादियों को यह पता चल गया कि वह घेर लिए गये है। आतंकवादियों ने भारी गोलाबारी की। हालांकि सैनिकों ने आतंकवादियों पर गोलियां चलाईं, लेकिन वह अप्रभावी साबित हुई। मक्के की लंबी फसल ने उन्हें बचने के सभी मौके दिए। नायक रीत राम घर की ओर बढ़े, आतंकवादियों ने उन पर भारी गोलियां चलाईं। लेकिन नायक रीत राम साहस का परिचय देते हुए घर की छत पर चढ़ गए। जहां उन्होंने डेमोलेशन चार्जेज लगाये जिससे कि कोई भी आतंकवादी बच न सके। उन्होंने अपने काम को बेहद पेशेवर तरीके से किया। जबकि इसी बीच आतंकवादियों में से एक ने ग्रेनेड फेंका और उन पर फायरिंग भी की। वह चतुराई से पीछे हट गये और जिला कमांडर सहित चार खूंखार विदेशी आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

नायक रीत राम ने आतंकवादियों से लड़ने में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया। 19 सितम्बर 2001 को नायक रीत राम के साहस और वीरता को सम्मानित करने के लिए उन्हें “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया। नायक रीत राम बाद में पदोन्नत होकर सूबेदार बने और आनरेरी कैप्टन के रूप में 31 मई 2019 को सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
नायक रीत राम

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 18 Sep 2001 Naik Rit Ram was in the cordon party sited in general area Goldh in J&K on receiving information about five terrorists having infiltrated at about 2130 hours.

Naik Rit Ram's stop was positioned to the west of the house in which the terrorists had taken shelter. On 19 September 2001 at about 0700 hours, realising that they were surrounded, the terrorists opened heavy fire. Although the troops fired at the terrorists, it proved ineffective and the tall maize crop provided them with all the chances of escape. Realising this Naik Rit Ram, inched towards the house even as the terrorists brought down heavy fire on him and climbed onto the roof of the house where he calmly, placed demolition charges to ensure that none of the terrorists could escape. He went about his task in the utmost professional manner even though one of the terrorists lobbed a grenade and fired at him. He then tactically withdraw and set off the charges eliminating four dreaded foreign terrorists including District Commander.

Naik Rit Ram displayed extraordinary courage and gallantry in fighting the terrorists.

<u>पैरा ट्रुपर चेतन कुमार राणा</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13622724 पी, पैरा ट्रुपर चेतन कुमार राणा का जन्म 10 अक्टूबर 1980 को जनपद आगरा के गांव प्रतापपुर में श्रीमती दिलू राणा और श्री आर बी राणा के यहां हुआ था। 15 दिसम्बर 1997 को भारतीय सेना की पैरा विशेष बल में भर्ती हुए और प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात 4 पैरा विशेष बल में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 31 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

06 अक्टूबर 2003 को उत्तरी सेक्टर के एक स्थान पर राष्ट्रीय राइफल्स यूनिट ने 15:00 बजे तलाशी और नष्ट अभियान शुरू किया। पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा उसी अभियान दल के सदस्य थे । टीम को एक घर में आतंकियों की मौजूदगी का शक था। स्काउट और प्वाइंट दस्ते ने तुरंत घर को घेर लिया। जब सैनिक घर की जांच कर रहे थे तब दो आतंकवादी अचानक एक साथ फायरिंग करते हुए और ग्रेनेड फेंकते हुए बाहर आए। निकास के बाहर खड़े पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा और अन्य सैनिकों को घायल कर दिया। गंभीर खतरे को भांपते हुए और सीने पर लगी बंदूक की गोली के घाव और ग्रेनेड के टुकड़ों की चोटों के बावजूद, पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा अडिग रहे। पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपूर्व साहस का प्रदर्शन किया और अपने हथियार से आगे बढ़ रहे आतंकवादियों पर लगातार फायरिंग किया। इस वीरतापूर्ण कार्यवाही में उन्होंने दोनों आतंकवादियों को मार गिराया। इस बीच ज्यादा रक्तस्राव हो जाने और गहरी चोटों के कारण वह शहीद हो गये।

पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा को उनके साहस और वीरता के लिए 06 अक्टूबर 2003 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई पैरा ट्रुपर चेतन कुमार राणा की मां श्रीमती दिलू राणा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 06 October 2003, a Team of a Rashtriya Rifles Unit of which Paratrooper Chetan Kumar Rana was member launched seek and destroy mission in a general area in Northern Sector by 1500 hours. The team suspected presence of terrorists in a house. The scouts and point squad immediately cordoned the house. While troops were clearing the house two terrorists suddenly came out charging, lobbing grenades and firing simultaneously and caused injuries to Paratrooper Chetan Kumar Rana and other troops covering the exits. Sensing the grave danger to which own troops were exposed and remaining undeterred, despite gun shot wound by the chest and splinter injuries. Paratrooper Cheten Kumar Rana unmindful of his personal safety displayed raw courage and charged at the advancing terrorists firing simultaneously from his weapon and in a valiant action gunned down both of them at close quarters before succumbing to his injuries.

<u>मेजर स्वपनीष परिहार</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 57912 एक्स, मेजर स्वपनीष परिहार का जन्म 18 अगस्त 1975 को आगरा में श्रीमती सुमन परिहार और श्री सुरेन्द्र सिंह परिहार के यहां हुआ था। इन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा सेंट पीटर कालेज, आगरा, इन्टर की शिक्षा एयर फोर्स स्कूल, आगरा तथा स्नातक की शिक्षा दयालबाग एजूकेशनल इंस्टीट्यूट डीम्ड यूनीवर्सिटी से पूरी की। 13 जून 1988 को भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेंट कमीशन लिया और 174 फील्ड रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

31 मार्च 2007 को असम के शिवसागर जिले के एक गाँव में चार आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना के आधार पर मेजर स्वपनीष परिहार अपने त्वरित कार्रवाई दल के साथ शीघ्र ही उस स्थान पर पहुंचे। उन्होंने उपलब्ध जवानों के साथ शीघ्र संदिग्ध घर को घेर लिया और व्यक्तिगत रूप से तलाशी अभियान का नेतृत्व किया। घर में प्रवेश करते ही एक आतंकवादी ने काफी निकट से उन पर गोली चलाई जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए और उनका हथियार नीचे गिर गया। मेजर स्वपनीष परिहार ने निडरता का परिचय देते हुए आतंकवादी को दबोच लिया और उसके हथियार को छीनकर उसे मार गिराया। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद इन्होंने अतिरिक्त सैन्य बल के आने तक अपने दल को निर्देशन देना जारी रखा।

मेजर स्वपनीष परिहार ने आतंकवादियों के विरुद्ध इस ऑपरेशन में उत्कृष्ट वीरता और साहस का प्रदर्शन किया। उनकी इस वीरता और साहस के लिए उन्हें 31 मार्च 2007 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर स्वपनीष परिहार

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 31 March 2007, based on information about four terrorists hiding in a village in district Sibsagar of Assam, Major Swapneesh Parihar rushed to the location with his Quick Reaction Team. This officer laid a quick cordon around the suspect house with the available strength and personally led the search team. On entering, one of the terrorists fired on the officer from close range grievously injuring him causing his personal weapon to fall off. Undaunted, this officer pounced on the terrorist, snatched his weapon and killed him. Despite being critically wounded, the officer continued to direct his team till arrival of reinforcements.

Major Swapneesh Parihar displayed conspicuous bravery and unmatched courage in carrying out the operation against the terrorists

<u>मेजर दीपक यादव</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(काबुल हमला, जनपद आगरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 61307, मेजर दीपक यादव का जन्म 09 नवम्बर 1974 को जनपद मैनपुरी के ग्राम गनेशपुर में श्रीमती रामा यादव और सूबेदार सत्य राम यादव के यहां हुआ था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय नं 2, आगरा तथा सेन्ट जॉन कालेज, आगरा से पूरी की और 09 जून 2001 को भारतीय सेना की सेना शिक्षा कोर में कमीशन लिया। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती काबुल में हुई।

मेजर दीपक यादव को भारतीय अंग्रेजी भाषा टीम के हिस्से के रूप में काबुल में तैनात किया गया था। 26 फरवरी 2010 की सुबह एक अच्छी तरह से संरक्षित आवासीय परिसर में भारी हथियारों से लैस आत्मघाती आतंकवादी हमलावरों ने हमला किया। इस आवासीय परिसर में सेना के छह चिकित्सा अधिकारी, चार पैरामेडिक्स और सेना के दो अन्य अधिकारी रहते थे। हमले की शुरुआत आवासीय परिसर की दीवार पर एक आत्मघाती वाहन के आई ई डी के विस्फोट से हुई। जिसके परिणामस्वरूप तीन सुरक्षा गार्डो की तत्काल मृत्यु हो गई और चारदीवारी और आवासीय परिसर पूरी तरह से ढह गया। एक भारी हथियारों से लैस आतंकवादी आत्मघाती हमलावर ने हथगोले फेंकते हुए परिसर में प्रवेश किया और कलाश्निकोव राइफल से भीषण गोलीबारी कर रहा था जिससे लोग पूरी तरह से आश्चर्यचकित हो गये। इसके बाद आतंकवादी ने कमरे में जीवित बचे लोगों की तलाश शुरू कर दी। मौत की चुनौती का सामना करने के लिए, निहत्थे मेजर दीपक यादव अपने साथी के साथ अपने कमरे के मलबे से बाहर निकले और गेस्ट हाउस की तरफ जहां तीन अधिकारी रहते थे उस तरफ दौड़ पड़े। उन्हें गेस्ट हाउस के सबसे भीतरी कोने में बने एक बाथरूम की ओर निर्देशित किया। तब तक उनके छिपने की जगह ग्रेनेड हमले के कारण नष्ट हो चुकी थी और उनके कपड़ों में आग लग चुकी थी।

जब एक अन्य अधिकारी के वीरतापूर्ण कृत्य के परिणामस्वरूप आतंकवादी ने अंततः अपनी आत्मघाती जैकेट उड़ा दी। मेजर दीपक यादव ने अन्य चार अधिकारियों को आग से धधकते कमरे से बाहर निकलने के लिए कहा। ऐसा करने में वह खुद जलते हुए कमरे में फंस गये और विस्फोट से लगी इस आग के तांडव में अपने साथियों की जान बचाते हुए वह शहीद हो गये।

मेजर दीपक यादव ने कर्तव्य की पुकार से परे अनुकरणीय साहस, धैर्य, दृढ़ संकल्प और वीरता का परिचय दिया और एक आत्मघाती आतंकवादी हमले के सामने सर्वोच्च बलिदान दिया। मेजर दीपक यादव को उनकी कर्तव्य परायणता, साहस और वीरता के लिए 26 फरवरी 2010 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती ज्योति यादव

<u>स्मृति शेष</u>: मैनपुरी कलेक्ट्रेट परिसर के पास मेजर दीपक यादव की प्रतिमा स्थापित की गयी है।

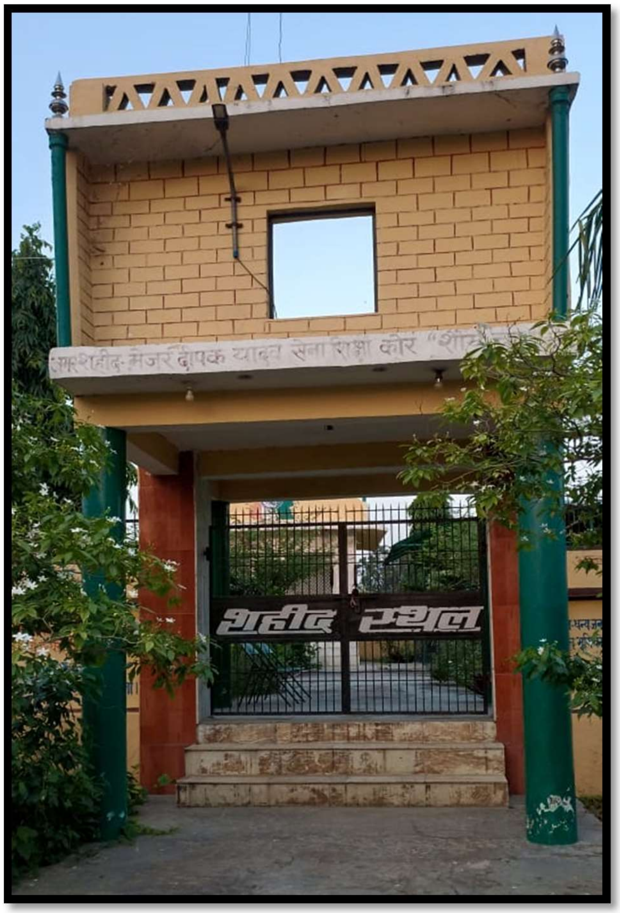

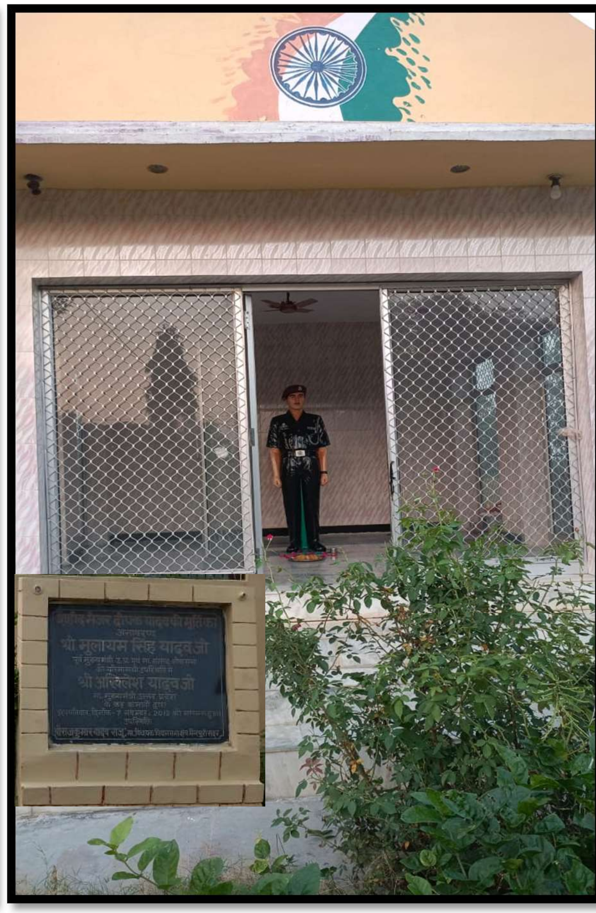

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Major Deepak Yadav was deployed to Kabul as part of the Indian English Language Team. In the early morning hours of 26 February 2010, a well guarded residential compound housing six Army medical officers, four paramedics and two other Army officers were attacked by heavily armed terrorist suicide bombers. The attack was initiated by the detonation of a suicidal vehicle borne IED at the boundary wall resulting in the instantaneous death of three security guards and total collapse of the boundary wall and the residential compound. A heavily armed terrorist suicide bomber then entered the compound throwing hand grenades and subjecting it to volleys of Kalashnikov fire, thereby catching the unarmed occupants by total surprise. The terrorist then started room to room search for any sign of survivors. Standing up to the challenge in the face of certain death, unarmed Major Deepak Yadav alongwith his buddy crawled out of the debris of their respective rooms and rushed towards those of the three officers on one side of the guesthouse and directed them towards a bathroom located in the inner most corner of the guesthouse.

Their hiding place was by then ablaze because of grenade attacks and their clothing was on fire. When the terrorist finally blew up his suicide vest as a result of heroic act of another officer. Maj Deepak Yadav exhorted other four officers to move out of the burning room. In doing so he himself got trapped in the burning room and unfortunately got charred to death.

Major Deepak Yadav displayed exemplary courage, grit, determination and valour beyond the call of duty and made supreme sacrifice in the face of a terrorist suicide attack.

<u>राइफल मैन लक्ष्मण सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2896094 एल, राइफल मैन लक्ष्मण सिंह का जन्म 28 जनवरी 1980 को जनपद अलीगढ़ के गांव नगोला में श्रीमती कलावती देवी तथा श्री धर्मवीर सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की। 09 जुलाई 1999 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में भर्ती हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 9 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

राइफल मैन लक्ष्मण सिंह जम्मू और कश्मीर के एक गांव में 9 राष्ट्रीय राइफल्स बटालियन द्वारा शुरू किए गए एक घेरा और तलाशी अभियान का हिस्सा थे।

07 दिसंबर 2003 को 15:30 बजे तक गांव को 9 राष्ट्रीय राइफल्स बटालियन द्वारा घेर लिया गया। 16:20 बजे आतंकवादियों द्वारा तलाशी दल पर गोलियां चलाई गईं और दोनों ओर से भीषण गोलाबारी शुरू हो गई। इसी बीच 16:30 बजे एक आतंकी ने घर की खिड़की से कूदकर भागने का प्रयास किया। राइफल मैन लक्ष्मण सिंह ने आतंकवादी के नजदीक तक पहुंचने का इंतजार किया और फिर कारगर फायर कर उसे मार गिराया। इसी बीच उन्होंने एक और आतंकवादी को देखा जो कि उनकी ओर आ रहा था। राइफल मैन लक्ष्मण सिंह ने सभी सावधानी को दरकिनार करते हुए, एक गंभीर व्यक्तिगत जोखिम के साथ खड़े हो गये और आतंकवादी के भागने के रास्ते को बंद कर दिया। दोनों ओर से भयानक गोलीबारी होने लगी। इसी बीच गोलाबारी में राइफल मैन लक्ष्मण सिंह को एक गोली आ लगी लेकिन उन्होंने आतंकवादी पर गोलियां चलाना जारी रखा और अचेत होने से पहले आतंकवादी को मार गिराया। उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाया जाने लगा लेकिन रास्ते में ही भारत मां का यह लाल चिर निद्रा में लीन हो गया।

राइफल मैन लक्ष्मण सिंह ने अदम्य साहस, व्यक्तिगत वीरता का प्रदर्शन किया और देश के लिए आतंकवादियों से लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके साहस और बलिदान के लिए उन्हें 07 दिसम्बर 2003 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती बिमलेश देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

Riflemen Lakshman Singh was part of a cordon and search operation launched by a Rashtriya Rifles Battalion at a Village in J&K.

The village was effectively cordoned off by 1530 hours on 7th December 2003. At 1620 hours, the search party was fired upon by terrorists and a fierce firefight ensued. At 1630 hours, one terrorist made a desperate attempt to escape by jumping from the window of the house and running away. Rifleman Lakshman Singh waited for the terrorist to close in and then using his personal weapon shot him dead. Meanwhile he saw another terrorist and approaching towards him. Rifleman Lakshman Singh throwing all caution to the wind, with a grave personal risk stood up and blocked his path. In the firefight, Rifleman Lakshman Singh was hit by a bullet but he continued to fire at the terrorist and killed him before falling unconscious. He breathed his last while being evacuated to the hospital.

Rifleman Lakshaman Singh displayed conspicuous gallantry, personal valour and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists for the country.

<u>मेजर मानवेन्द्र सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद अलीगढ़, उत्तर प्रदेश)

आई सी 63128 ए, मेजर मानवेन्द्र सिंह का जन्म 07 जुलाई 1981 को जनपद अलीगढ़ के गुरू रामदास नगर में हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती शाकला सिंह तथा पिता का नाम श्री राजेन्द्र सिंह है। इन्होंने हाईस्कूल तक की शिक्षा ए पी एस, अलीगढ़ तथा इण्टरमीडिएट की शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ से ग्रहण किया। सेना में जाने के बाद एन डी ए, खड़कवासला से स्नातक की शिक्षा प्राप्त किया। इन्होंने 14 जून 2003 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 20 जम्मू एण्ड कश्मीर राइफल्स में पदस्थ हुए।

05 - 06 जून 2006 की रात में जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में मेजर मानवेंद्र सिंह को उनकी यूनिट के घातक प्लाटून के साथ घुसपैठ के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए एक स्थान पर तैनात किया गया था। कुछ देर में मौसम बहुत खराब हो गया, इसी बीच उन्होंने कुछ संदिग्ध हरकत देखी और उसी के अनुसार अपने अम्बुश को समायोजित किया।

रात के 01:30 बजे अम्बुश पार्टी का सामना घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों के साथ हो गया। आतंकवादियों ने एम्बुश पार्टी पर गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। मेजर मानवेन्द्र सिंह ने आतंकवादियों की गतिविधियों पर नज़र रखी और घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों पर कारगर फायर कर एक आतंकवादी को मार गिराया। अन्य दो आतंकवादियों ने बहुत करीब से भारी मात्रा में गोलाबारी करना शुरू कर दिया। मेजर मानवेन्द्र सिंह ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना रेंगते हुए एक बड़े पत्थर की आड़ में गये और सटीक गोलीबारी कर दो आतंकवादियों को मार गिराया।

मेजर मानवेंद्र सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में अदम्य साहस, उत्कृष्ट क्षेत्र शिल्प और उच्चतम स्तर की पेशेवर क्षमता का प्रदर्शन किया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 05 जून 2006 को “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर मानवेन्द्र सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

In the night of 5/6 June 2006, Major Manvendra Singh was deployed with his Ghatak platoon at a place in Kupwara District of Jammu & Kashmir for blocking the infiltration route. When the weather turned very bad, he noticed some suspicious movement and readjusted his ambush accordingly.

At 0130 hours, his ambush party established contact with infiltrating terrorists and was fired upon. The officer tracked the movement of terrorists and fired on the infiltrating terrorists and eliminated one of them. The other two terrorists brought heavy volume of fire from very close quarter. With utter disregard to his personal safety, he further crawled behind a boulder and fired thereby eliminating the two terrorists.

Major Manvendra Singh displayed dauntless courage excellent field craft and professional competence of highest order beyond the call of duty in fighting the terrorists.

<u>सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला</u>
<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>
(जनपद अमेठी, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 737836, सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला का जन्म जनपद सुल्तानपुर (अब अमेठी) के गांव खेमपुर सरैया में 15 सितम्बर 1971 को श्रीमती शिवपती शुक्ला और श्री रघुनाथ प्रसाद शुक्ला के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय, गोसाईंगंज और माध्यमिक शिक्षा जूनियर हाईस्कूल, गोसाईंगंज तथा इण्टर तक की शिक्षा रणवीर इन्टर कालेज, रामनगर से पूरी की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री पूरी करने के पश्चात 02 अप्रैल 1991 को भारतीय वायुसेना में लिपिक के पद पर भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के उपरान्त 2217 स्कवाड्रन एयरफोर्स में तैनात हुए।

सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला, वायु सेना स्टेशन, उत्तरलाई (बाड़मेर) में पिचोरा स्क्वाड्रन में तैनात थे। बाड़मेर जिले में अचानक लगातार बरसात होने के कारण बाढ़ आ गयी। 23 अगस्त 2006 को सार्जेंट शुक्ला यूनिट के अन्य वायु सेना सैनिकों के साथ वायु सेना स्टेशन पर काम कर रहे कुछ नागरिकों के परिवारों की सहायता के लिए आसपास के गांवों के लिए रवाना हुए।

गांव से वापस लौटते समय कुछ ग्रामीणों ने वायु सैनिकों से बाढ़ में जीवन के लिए संघर्ष कर रहे ऊंचाई पर बैठे चार लोगों को बचाने का अनुरोध किया। गहरे और तेज बहाव के बाढ़ के पानी से लोगों को बचाने का कार्य अत्यंत चुनौतीपूर्ण और खतरनाक था। टीम के अन्य सदस्यों ने बाढ़ के पानी के तेज बहाव में प्रवेश करने की हिम्मत नहीं की। सार्जेंट शुक्ला अपने सैनिक धर्म के अनुरूप इन चार व्यक्तियों के जीवन को बचाने के लिए स्वेच्छा से तैयार हो गये। असहाय व्यक्तियों को बचाने के एकमात्र उद्देश्य के साथ वह 20 फीट गहरे तेज बहाव वाले पानी में तैर कर उस स्थान पर जाने लगे जहां वह लोग बचाव की आशा में राह देख रहे थे। लगभग 100 मीटर तैरने के बाद, वह भंवर में फंस गये और खुद को उस भंवर से बाहर नहीं निकाल सके। दो दिन के पश्चात सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला का पार्थिव शरीर मिल सका।

सार्जेंट जय प्रकाश शुक्ला ने विषम परिस्थितियों में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया और नागरिकों को बचाने के प्रयास में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके इस असाधारण साहस और वीरता को सम्मानित करने के लिए 23 अगस्त 2006 को उन्हें मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती नीलम शुक्ला

प्रशंसात्मक उल्लेख

Sergeant Jai Praksah Shukla was on posted strength of Pechora Squadron at Air Force Station, Utterlai (Barmer). Barmer district experienced incessant rains and flash floods. On 23rd August, 2006, Sergeant Shukla along with others Air Warriors of the unit proceeded to surrounding villages to assist the families of some civilians working at the Station.

While returning, some villagers requested Air Warrior to rescue four persons perched on top and struggling for life in the flood. The task of rescuing the persons from dangerously high levels of the turbulent flood waters was extremely challenging and evidently hazardous.

While other members of the team did not dare to enter torrential current of flood waters, Sergeant Shukla in true tradition of a soldier, readily volunteered to rescue these four persons. He swam in the strong current in 20 feet deep flood waters, with the single minded purpose of rescuing the helpless persons, who were under the threat of being washed away. However, after swimming for about 100 meters, he got sucked down in the swirling water and could not extricate himself. His body was recovered after two days.

Sergeant Jai Prakash Shukla displayed extraordinary courage and valour in extreme circumstances and made the supreme sacrifice while trying to save fellow citizens.

<u>हवलदार हनुमान प्रसाद सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद अयोध्या, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2974070, हवलदार हनुमान प्रसाद सिंह का जन्म 01 दिसम्बर 1950 को जनपद बस्ती के गांव हुणरा कुंवर में हुआ था। उनकी माता का नाम श्रीमती कल्पा देवी और पिता का नाम श्री दौलत सिंह था। वे भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में 01 सितम्बर 1977 को भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 27 राजपूत रेजिमेंट में तैनात हुए। बाद में इनका परिवार फैजाबाद में आकर बस गया।

04 अक्टूबर 1994 को 27 राजपूत रेजिमेंट को एक सटीक सूचना मिली कि जम्मू और कश्मीर के बारामूला जिले के एक गांव में आतंकवादी छुपे हुए हैं। इन्हीं आतंकवादियों को खोजने के लिए 27 राजपूत रेजिमेंट द्वारा एक खोजी अभियान चलाया गया।

लगभग 15:30 बजे पता चला कि दो आतंकवादी लकड़ी से बने एक घर में छुपे हुए हैं। उस घर को घेर लिया गया। आतंकवादी घेरे गये घर की छत की खिड़की से कूदकर उत्तर पश्चिम की ओर स्थित नाले की तरफ भाग निकले। हवलदार हनुमान प्रसाद सिंह के साथी सैनिकों ने उनके ऊपर फायरिंग की लेकिन घना जंगल होने के कारण वह बच गये।

हवलदार हनुमान प्रसाद सिंह के दल ने आतंकवादियों का पीछा किया। इसी दौरान इनमें से एक आतंकवादी पीछे मुड़ा और पीछा कर रहे सैनिकों पर ग्रेनेड फेंक दिया और स्वचालित हथियार से अंधाधुंध फायर करने लगा। इस अचानक हुए हमले में हवलदार हनुमान प्रसाद सिंह गंभीर रूप से घायल हो गये। छाती में गहरा घाव हो गया। गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी हवलदार हनुमान प्रसाद सिंह ने आतंकवादियों का पीछा करना जारी रखा। साहस, वीरता और दृढ़ निश्चय के बल पर हवलदार हनुमान प्रसाद ने दोनों आतंकवादियों को मार गिराया। बाद में उनकी पहचान हुई तो पता चला कि उनमें से एक हिजबुल मुजाहिदीन का प्लाटून कमाण्डर था।

घाव गहरा होने के कारण काफी खून बह चुका था। इलाज के लिए ले जाते समय हैलीपैड पर ही भारत मां का यह सपूत सदा-सदा के लिए चिर निद्रा में लीन हो गया। हवलदार हनुमान प्रसाद ने आतंकवादियों के खिलाफ इस लड़ाई में अदम्य साहस का परिचय दिया। इसके लिए उन्हें 04 अक्टूबर 1994 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

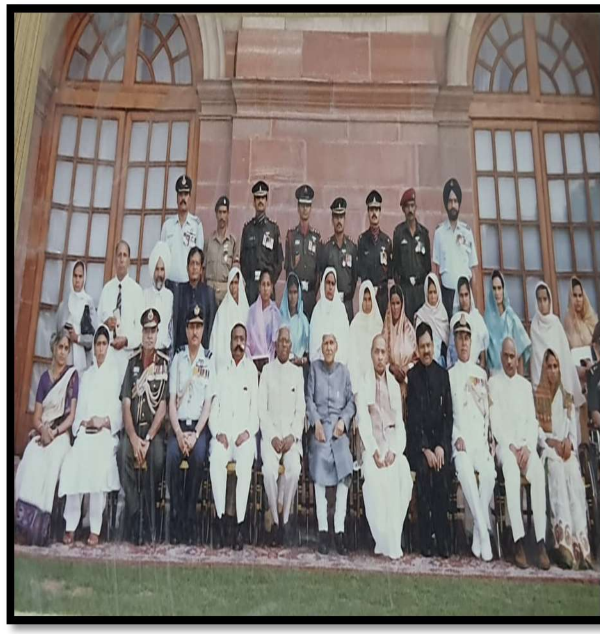

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती प्रतिमा देवी

<u>स्मृति शेष</u> : हवलदार हनुमान प्रसाद के गांव हुणरा कुंवर में उनकी वीरता के सम्मान में एक द्वार का निर्माण कराया गया है।

हवलदार हनुमान प्रसाद के गांव में उनकी स्मृति में बनाया गया द्वार

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 04 October, 1994 based on specific information 27 Rajput conducted search operation in a village in HLL (HT-19) of Baramulla district in Jammu and Kashmir.

At about 1530 hrs two militants trapped inside thatched roof wooden house jumped out of a window and moved into the nallah South West of the house. The stops fired at the fleeing militants but due to dense foliage could not shoot at the accurately.

One of the fleeing militants suddenly turned around, threw a hand grenade and fired a long burst at the stops who were chasing them. Due to the militants firing Havildar Hanuman Prasad Singh received a gun shot wound in his chest. Though critically wounded and bleeding profusely. Havildar Singh, undeterred by has injury and in total disregard to his personal safety, chased and killed both the dreaded militants, thus preventing further casualties. One of the dead militants was later identified as platoon commander of Hizbul mujahideen group. Havildar Hanuman Prasad Singh, however, succumbed to his injuries at the helipad before he could be evacuated.

Havildar Hanuman Prasad Singh, thus, displayed conspicuous gallantry, extreme devotion to duty and patriotism of the most superlative order.

<u>मेजर राजेश कुमार सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद अयोध्या, उत्तर प्रदेश)

आई सी 61523, मेजर राजेश कुमार सिंह का जन्म 27 जुलाई 1979 को जनपद फैजाबाद (अब अयोध्या) के सहादतगंज मोहल्ले में श्रीमती कलावती सिंह और कर्नल जे बी सिंह के यहां हुआ। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय से पूरी की। सैनिक पृष्ठभूमि का होने के कारण बचपन से ही मन में देश सेवा की भावना हिलोरें मार रही थी। मेजर राजेश कुमार सिंह ने भारतीय सेना की डोगरा रेजिमेंट में 08 दिसम्बर 2001 को कमीशन लिया और 9 डोगरा रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी तैनाती 11 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

सन् 2017 में 11 राष्ट्रीय राइफल्स की तैनाती जम्मू और कश्मीर के डोडा जिले में थी। डोडा जिले में आतंकवादियों के छिपे होने की पुष्ट सूचना मिली। मेजर राजेश कुमार सिंह को एक छोटी टुकड़ी के साथ उस क्षेत्र में भेजा गया जहां पर आतंकवदियों के छिपे होने की सूचना मिली थी। मेजर राजेश कुमार सिंह ने गोपनीयता को बनाए रखते हुए 12 अप्रैल 2017 को 01:00 बजे तक आतंकवादियों पर नजर रखने के लिए एक निगरानी चौकी बना लिया। उन्होंने देखा कि उस क्षेत्र मे धीरे - धीरे 7 - 8 आतंकवादी इकट्ठा हो रहे हैं। उन्होंने आतंकवादियों के भागने के सभी संभावित रास्तों को बंद कर दिया। फिर सही समय का इंतजार करने लगे। उचित समय देखते ही उन्होंने 84 एम एम राकेट लांचर, एल एम जी और ए के - 47 से फायर खोल दिया। इस भीषण मुठभेड़ के दौरान उन्होंने तीन आतंकवादियों को मार गिराया।

इस पूरी कार्यवाही के दौरान मेजर राजेश कुमार सिंह ने प्रभावी कमान और नियन्त्रण बनाए रखा। 84 एम एम राकेट लांचर का दूसरा फायर करते ही दो और आतंकवादी ढेर हो गये। जब उस जगह की तलाशी ली गई तो वहां पर छुपे हुए और तीन रिक्रूट आतंकवादी पकड़े गये।

आतंकवादियों से लड़ने की इस पूरी कार्यवाही में मेजर राजेश कुमार सिंह ने कुशल नेतृत्व और अद्‌भुत वीरता का परिचय दिया। जिसके लिए उन्हें 12 अप्रैल 2017 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
मेजर राजेश कुमार सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On own source confirming presence of terrorist in an area in Doda district, J&K, a small team under Major Rajesh Kumar Singh inducted into target area and occupied a covert observation post by 0100 hours on 12 Apr 07 maintaining complete secrecy. Thereafter he observed 7-8 terrorists gradually congregate at the area. He readjusted stops to cut off all escape routes. Then with perfect timing opened accurate fire of 84 MM RL, LMG and AK-47. During the intense encounter he himself killed three terrorists. Through out he maintained effective command and control. Two more terrorists were killed by the fire of second 84 MM RL round. The officer further undertook search wherein three terrorist recruits were apprehended.

Major Rajesh Kumar Singh displayed daring leadership, killer instinct and conspicuous gallantry in fighting the terrorists.

<u>कार्पोरल जयराज बिन्द</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(भारत पाक युध्द 1971, जनपद आजमगढ़, उत्तर प्रदेश)

सैन्य सं 245354, कार्पोरल जयराज बिन्द का जन्म 04 जनवरी 1944 को जनपद आजमगढ़ के गांव बाग बहार में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती धनराजी बिन्द तथा पिता का नाम श्री दुर्बली बिन्द था। इनकी प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला बस्ती तथा हाईस्कूल की शिक्षा एस पी इण्टर कालेज शाहगंज, जौनपुर में हुई। यह 23 जून 1963 को भारतीय वायु सेना में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के बाद एयरफोर्स स्टेशन अमृतसर में तैनात हुए।

04 दिसम्बर 1971 को हथियारों से लदा हुआ एक वायुयान वायुसेना के एक अग्रिम अड्डे पर उतरते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया। वायुयान के पहिये का नॉक टूट गया और वायुयान में आग लग गयी। वायुयान पर मिसाइल और हथियार लदा हुआ था। कार्पोरल जयराज बिन्द ने हथियारों के फट जाने की आशंका के बावजूद आग को बुझाने का जोखिम भरा काम करने का फैसला लिया और आग को बुझाने में लग गये। वह अपनी जान की परवाह किए बिना जलते हुए वायुयान के बहुत समीप रहकर वायुयान में लगी आग को बुझाने में सफल रहे। इस प्रकार उन्होंने न केवल पायलट की जान बचायी बल्कि वायुयान को भी जलने से बचा लिया।

कार्पोरल जयराज बिन्द ने अपनी जान को जोखिम में डालकर, उत्कृष्ट साहस और सूझबूझ का परिचय देते हुए, बहुत बड़ी जनधन की हानि होने से बचा लिया। उनके इस उत्कृष्ट साहस और सूझबूझ के लिए उन्हें 05 अप्रैल 1973 को “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया। 30 जून 1978 को वह भारतीय वायु सेना में अपनी सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी वी गिरि से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
कार्पोरल जयराज बिन्द

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 4th December, 1971, an aircraft fully loaded with armament stores met with an accident on landing at a forward Air Force Base. The nose wheel of the aircraft had collapsed and the aircraft caught fire. In spite of the inherent danger of an explosion due to missiles and other armament stores being loaded on the aircraft, Corporal Jai Raj Vind undertook the hazardous task of putting out the fire. He did this successfully despite being in the close vicinity of the burning aircraft, with complete disregard to his personal safety. It was through his determined efforts that he succeeded in putting out the fire; he thereby saved the life of the pilot and also avoided the aircraft becoming a complete wreck.

The conspicuous courage, presence of mind and complete disregard for personal safety displayed by Corporal Jai Raj Vind, were in the highest traditions of gallantry in the Indian Air Force.

<u>सिपाही ओम शिव शर्मा</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बदायूं, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 7431151 पी, सिपाही ओम शिव शर्मा का जन्म 26 जून 1968 को जनपद बदायूं के ग्राम गूरा बरेला में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती रामसनेही शर्मा तथा पिता का नाम श्री मातादीन शर्मा था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की और 21 मार्च 1988 को भारतीय सेना की इंटलीजेंस कोर में भर्ती हो गये। बाद में इनकी तैनाती मुख्यालय 4 सेक्टर राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

जम्मू और कश्मीर के कुंथल क्षेत्र के एक गांव में आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना मिली थी। इसी सूचना के आधार पर आतंकवादियों को खोजने के लिए उस गांव की घेराबंदी करने की योजना बनायी गयी। घेराबंदी का यह कार्य 05 सितंबर 1994 को किया गया। सिपाही ओम शिव शर्मा कमांडर के प्रतिरक्षा दल के सदस्य थे। जिस समय घरों मे खोजबीन की जा रही थी उस समय वह इसी दल के साथ थे। घर में छिपे आतंकवादियों ने इस दल पर भीषण गोलीबारी शुरू कर दी। दोनों ओर से हो रही भीषण गोलीबारी में एक गोली सिपाही ओम शिव शर्मा की जांघ में आ लगी। अपनी चोट की परवाह न करते हुए, अदम्य साहस एवं दृढ़ निश्चय का परिचय देते हुए सिपाही ओम शिव शर्मा लगातार आतंकवादियों पर गोलियां बरसा रहे थे। उन्हें अपने कमांडर पर आसन्न खतरे का अनुमान था। कुछ ही देर में उन्होंने आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया। चोट के गंभीर होने तथा ज्यादा रक्तस्राव के कारण सिपाही ओम शिव शर्मा अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए शहीद हो गये।

इस पूरी कार्यवाही में सिपाही ओम शिव शर्मा ने अदम्य साहस और वीरता का परिचय देते हुए छुपे हुए आतंकवादी को मार गिराया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हे 05 सितम्बर 1994 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती नीलम शर्मा

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On specific information regarding anti national elements hideout in area Kunthal in Jammu and Kashmir a cordon and search operation was organised. The cordon was established by 0530 hours on 05 September 94 by a composite force led by a Brigadier. Sepoy Om Shiv Sharma as the Intelligence OR was part of the Commander's protection party and was thus moving alongwith him when the search of the first house commenced. The militant's who had been surprised by the effective cordon sensed the approach of the security forces and opened up with murderous hail of fire on to the Commander's protection party. In this fulliside of fire, Sepoy Om Shiv Sharma was hit in his groin and fell down. Displaying indomitable courage, grim determination and paying scant attention to his personal injury, Sepoy Om Shiv Sharma sensing grave danger to the life of the Commander fired at the ANE who had charged outside the house and was spraying bullets all around. Sepoy Om Shiv Sharma killed the ANE with his effective fire. Inspite of his life ebbing away, he carried on exhorting his colleagues in search operations and was a source of inspiration to all. Due to the critical wound sustained, he succumbed to hisinjuries later.

Sepoy Om Shiv Sharma thus, displayed indomitable courage and spirit of self sacrifice.

<u>सिपाही सन्नी तोमर</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश)

सैन्य सं 3199037 वाई, सिपाही सन्नी तोमर का जन्म 11 नवम्बर 1985 को जनपद बागपत के गांव किशनपुर बिराल में श्रीमती कमलेश देवी तथा श्री सतेन्द्र सिंह के यहां हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा डी ए बी इण्टर कालेज,किशनपुर बिराल में हुई। यह 26 दिसम्बर 2002 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के उपरान्त 14 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 45 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

22 अगस्त 2008 को 03:30 बजे जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में आतंकियों के साथ मुठभेड़ की सूचना मिलने पर सिपाही सन्नी तोमर क्विक रिएक्शन टीम के साथ चले गए। सुबह साढ़े छह बजे जब आतंकवादियों से सामना हुआ तब सिपाही सन्नी तोमर अपने दल के आगे चल रहे थे। आतंकवादियों से हुई इस मुठभेड़ में यूनिट के कमांडिंग ऑफिसर ने तीन आतंकवादियों को मार गिराया लेकिन प्राणघातक चोट लगने के कारण वह शहीद हो गये ।

एक आतंकवादी जिसने गुफा में एक अभेद्य आड़ ले रखा था, उसने सभी प्रयासों पर विराम लगा दिया। किसी कार्यवाही को करने और घायलों को निकालने में राह का रोड़ा बन गया था। 23 अगस्त 2008 को 05:00 बजे, सिपाही सन्नी तोमर दांतेदार चट्टानों के माध्यम से खुद को छिपाते हुए आतंकवादी के ठीक ऊपर एक स्थान पर पहुँचे और उसे मार गिराया।

सिपाही सन्नी तोमर ने अपने से लगभग 75 मीटर की दूरी पर एक और आतंकवादी को देखा। वह निडर होकर अकेले आगे बढ़े और नजदीक पहुँचकर उस दूसरे आतंकवादी को भी मार गिराया।

सिपाही सन्नी तोमर ने दो विदेशी आतंकवादियों को खत्म करने में असाधारण साहस, पेशेवर कौशल और प्रतिबद्धता का परिचय दिया। उनकी सूझबूझ, साहस और रण कौशल को देखते हुए 22 अगस्त 2008 को उन्हें "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया। बाद में वह पदोन्नत होकर नायक बने और 30 सितम्बर 2019 को अपनी 17 वर्षों की सम्मानित सैन्य सेवा पूरी कर सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए सिपाही सन्नी तोमर

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 22 August 2008 at 0330 hours, Sepoy Sanny Tomar moved with the Quick Reaction Team. on being informed of encounter with the terrorists in Kupwara district of Jammu and Kashmir. Sepoy Sanny Tomar was the leading man when the team came in contact at 0630 hours. In the ensuing close combat the Commanding Officer lost his life while killing three terrorists.

Throughout the day, one terrorist who had taken up an impregnable cover in cave, prevented any further move or evacuation of the fatal casualties despite all efforts. On 23 August, 2008 at 0500 hours, Sepoy Sanny Tomar having move himself through the jagged rocks to a spot just above the holed up terrorist, eliminated him.

The physical manoeuvre of Sepoy Sanny Tomar brought him is sight of another terrorist at a distance of about 75 meters above him. Though alone, undeterred, he moved up and eliminated the second terrorist single handedly in a close quarter combat.

Sepoy Sanny Tomar displayed exceptional courage professional acumen and extraordinary commitment in eliminating two foreign terrorists.

<u>पेटी अफसर चन्द्र शेखर</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश)

120351 ए, पेटी अफसर चन्द्र शेखर का का जन्म 05 जुलाई 1979 को जनपद मुजफ्फर नगर के ग्राम अलीपुर अटेरना में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती मुन्नी देवी तथा पिता का नाम श्री राजपाल शर्मा था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा राजकीय इण्टर कालेज मुजफ्फर नगर से पूरी की और 05 अगस्त 1996 को भारतीय नौसेना में भर्ती हो गये ।

पेटी अफसर चन्द्र शेखर उस मार्कोस दल के सदस्य थे जिसे जम्मू कश्मीर में काउंटर टेररिस्ट ऑपरेशन के लिए तैनात किया गया था।

21 सितंबर 2009 को मार्कोस की एक टीम को उत्तरी कश्मीर में लाडुआ गांव के पास तंगमुल्ला जंगल के सामान्य क्षेत्र में 04 कट्टर एल ई टी तंजीम आतंकवादी को खोजने और नष्ट करने के लिए एक अत्यधिक संवेदनशील कार्य में तैनात किया गया था। पूरा क्षेत्र घनी वनस्पति से युक्त था, जिसमें जमीन पर दृश्यता बमुश्किल 10 - 12 फीट तक थी।

दल ने वहां की वस्तुस्थिति से खुद को अवगत किया। वहां के बारे में तथा आतंकवादियों के अन्तिम स्थिति के बारे में जानकारी दी गयी। घनी वनस्पति के कारण टीम ने एक दूसरे के साथ संचार बनाए रखते हुए जोड़े में खोज शुरू की। टीम को खून के निशान मिले, जिससे संकेत मिलता है कि आतंकवादी पास में था और संभवतः घायल हो गया था। दल जल्द ही आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गया और भारी गोलाबारी शुरू हो गई। हालांकि, घायल आतंकी ने साथी जोड़ी पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। चंद्रशेखर के साथी सैनिक ने जवाबी कार्रवाई की और गोलाबारी में साथी सैनिक की गर्दन पर गोली लगी और वह गिर गया। चंद्रशेखर ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना सुरक्षित रूप से रेंगते हुए आगे बढ़े। आतंकवादियों की गोलीबारी का दूसरे हाथ से जबाब देते हुए आतंकवादी को मार गिराया और अपने घायल साथी सैनिक को सुरक्षित निकाल लिया। इस वीरतापूर्ण कार्रवाई ने न केवल आतंकवादियों को चौंका दिया बल्कि उनमें से एक को घातक चोट भी पहुंचाई।

निकासी के दौरान पेटी अफसर चंद्रशेखर को आतंकवादी ने गोली मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गये। ज्यादा घायल होने के कारण पेटी अफसर चंद्रशेखर वहीं पर शहीद हो गये।

पेटी अफसर चंद्रशेखर ने बड़े खतरे का सामना करने के लिए असाधारण साहस और पहल का प्रदर्शन किया और अपने साथी सैनिक के जीवन को बचाने में सर्वोच्च बलिदान दिया। पेटी अफसर चंद्रशेखर के इस साहस और बलिदान के लिए उन्हें 21 सितम्बर 2009 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती आशा शर्मा

<u>स्मृति शेष</u> : शौर्य चक्र विजेता पेटी अफसर चंद्रशेखर की याद में बुढ़ाना से खतौली जाने वाली सड़क पर एक भव्य द्वार का निर्माण कराया गया है।

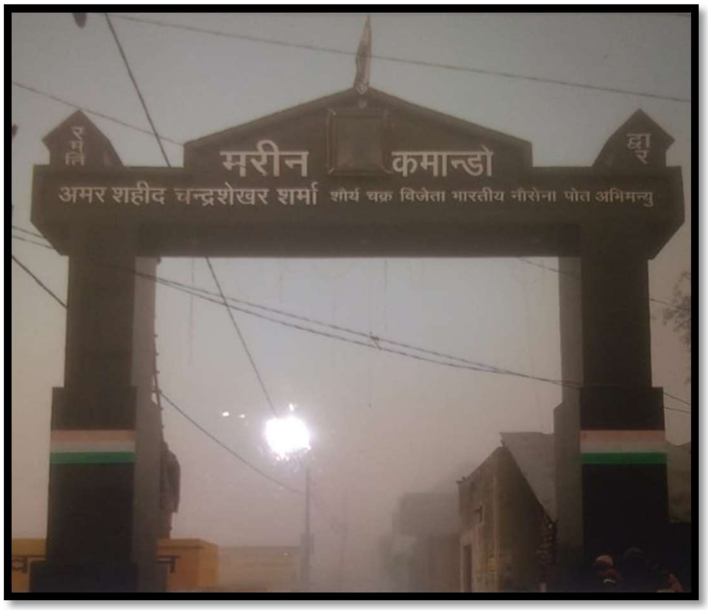

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Chandra Shekhar, POWTR CD III was part of the MARCOS team was deployed in Jammu & Kashmir for counter terrorist operations.

On 21 September 2009 a team of MARCOS were deployed in a highly vulnerable task to search and destroy 04 hardcore LET tanzeem terrorist in general area of Tangmulla forest near Ladua village in north Kashmir. The entire area is thickly vegetated with heavy undergrowth restricting visibility to barely 10-12 feet.

The team familiarised itself and carried out a deliberate briefing of the contact area, position of the other cordons and the last known movement of the terrorists. Due to the dense vegetation, the team carried out the search in buddy pairs maintaining surprise and positive communication with each other. The team found blood trails indicating that the terrorist was in close vicinity and likely wounded. Soon the terrorists position was zeroed in and heavy firefight ensued. However, the pinned down terrorist fired indiscriminately at the buddy pair. The buddy pair of Chandra Shekhar retaliated and in the ensuing fire fight, the buddy was shot on the neck and collapsed. Chandra Shekhar with total disregard to his personal safely crawled and evacuated him to relative safety simultaneously pinning down the terrorist through retaliatory fire with the other hand. This gallant action to selflessness not only surprised the terrorists but also inflicted fatal injury to one of them. During the evacuation Chandra Sekhar was shot by the terrorist and was seriously injured. Late Chandra Shekhar succumbed to his injuries.

Chandra Shekhar, POWTR CD III displayed, exceptional courage and initiative in the face of great danger and made supreme sacrifice in saving the life of his buddy.

<u>राइफल मैन बेद प्रकाश</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2866865 ए, राइफल मैन बेद प्रकाश का जन्म 02 जुलाई 1952 को जनपद मेरठ (अब बागपत) के ग्राम खामपुर में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती रती कौर तथा पिता का नाम श्री बलजोर सिंह था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की। 05 जुलाई 1972 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 2 राजपूताना राइफल्स में हुई।

04 अप्रैल 1975 को एक सूचना मिली कि अपने आप को कप्तान बतलाने वाला और उसके दो सहायक एक गांव से लगभग एक किलोमीटर दूर एक गुप्त स्थान पर छुपे हुए हैं। राजपूताना राइफल्स के एक दल को इस गुप्त स्थान पर छापा मारने के लिए भेजा गया। राइफल मैन बेद प्रकाश इसी दल के सदस्य थे। इस दल में एक अफसर, एक जूनियर कमीशन अफसर और तीन अन्य रैंक के लोग थे। उस गुप्त स्थान के पास पहुंचकर इस दल ने अपना आधार बनाया। गुप्त स्थान का सही पता लगाने के लिए दल के कमांडर, अपने साथ तीन अन्य लोगों को लेकर आगे बढ़े। राइफलमैन बेद प्रकाश भी इस दल में थे। अँधेरी रात थी और विद्रोहियों का वह ठिकाना गहरी दरार में था। अचानक शत्रुओं ने स्वचालित हथियारों से गोलियां चलानी शुरू कर दीं। उनके और शत्रुओं के बीच की दूरी इतनी कम थी कि पार्टी के कमांडर के पास आदेश जारी करने का समय नहीं था। अन्य दो सैनिकों ने अपने अपने मोर्चे को संभाल लिया तब राइफल मैन बेद प्रकाश ने अकेले ही गुप्त ठिकाने की ओर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। इनके चारों ओर से नागा विद्राहियों द्वारा भीषण गोलीबारी की जा रही थी, फिर भी यह दृढ़ता और साहस से आगे बढ़े और एक विद्रोही को मार गिराया। बाद में उसकी पहचान विद्रोही संगठन के स्वयंभू कप्तान के रूप में हुई।

इस कार्रवाई में राइफल मैन बेद प्रकाश ने अनुकरणीय साहस, दृढ़ संकल्प और उच्च कोटि के कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया। इनके इस साहसिक प्रदर्शन के लिए इन्हें 04 अप्रैल 1975 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 4th April, 1975, information was received that a self styled Captain with two self-styled privates war taking shelter in a hide-out. A party of Rajputana Rifles reached and established a base in the vicinity of the hide-out. The Commander, with a small party of three went forward to ascertain the exact location of the hide-out. Rifleman Bed Parkash formed part of this party of three. It was a pitch dark night and the hide-out was in a deep crevasse. Suddenly hostiles opened fire with automatic weapons. The distance between them and the hostiles was so small that there was no time for the party leader to issue orders. While two Other Rank took position to return the hostile fire, Rifleman Bed Parkash charged on the hide-out single handed. Although bullets were flying all around him, undaunted and with grit, he moved on and killed one hostile, who later was identified as the self-styled Captain of the hostile set up.

In this action, Rifleman Bed Parkash showed exemplary courage, determination and devotion to duty of a high order.

<u>मेजर रत्नेश कुमार सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बहराइच, उत्तर प्रदेश)

आई सी 62272 एच, मेजर रत्नेश कुमार सिंह का जन्म 16 सितम्बर 1979 को जनपद बहराइच के सूफीपुरा में श्रीमती वीना सिंह तथा श्री सुरेन्द्र विक्रम सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा डी ए वी जवाहर विद्‌या मंदिर, रांची तथा नेशनल डिफेंस अकादमी से पूरी की। 08 जून 2002 को भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में कमीशन लिया और 16 राजपूत रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 58 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

21 सितंबर 2008 को मेजर रत्नेश कुमार सिंह जम्मू और कश्मीर के रामबन जिले के एक क्षेत्र में घेरा और तलाशी अभियान का हिस्सा थे। 15:30 बजे मेजर रत्नेश कुमार सिंह की पार्टी के पास मक्का के खेतों में छिपे आतंकवादियों ने उनकी पार्टी पर सटीक निशाना लगाकर हमला कर दिया, जिसमें एक जवान घायल हो गया। मेजर सिंह ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की, एक आतंकवादी को गंभीर रूप से घायल कर दिया और दूसरे को करीब से मार गिराया। इस साहसिक कार्यवाही ने आतंकवादियों को डरा दिया, जिससे समय मिल गया और इसी बीच घायल जवान का प्राथमिक उपचार कर दिया गया। तीसरा आतंकवादी इस बीच फायरिंग करता रहा। मक्के के खेत में छुपे आतंकवादी से अपने सैनिकों के लिए खतरा महसूस करते हुए मेजर रत्नेश कुमार सिंह मक्के के खेत में रेंगते हुए गये और तीसरे आतंकवादी को पास से मार गिराया।

मेजर रत्नेश कुमार सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में असाधारण बहादुरी, नेतृत्व और सूझबूझ का परिचय दिया। उनकी इस असाधारण बहादुरी और साहस के लिए इन्हें 21 सितम्बर 2008 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर रत्नेश कुमार सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 21 September 2008, Major Ratnesh Kumar Singh was part of a cordon and search operation in general area in district Ramban, Jammu & Kashmir. At 1530 hours, terrorists hiding in the maize fields close to the officer's party opened accurate fire on his party injuring a jawan. The officer immediately retaliated, grievously injuring one terrorist and killing another from close quarters. This brave act unnerved the terrorists enabling evacuation and provision of first aid to the injured jawan. The third terrorist meanwhile continued to give a pitched battle. The officer realising danger to own troops in the maize field and deteriorating light conditions, crawled into the maize field and shot dead the third terrorist from close quarters.

Major Ratnesh Kumar Singh showed exceptional bravery, camaraderie and presence of mind in fighting the terrorists.

लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह

शौर्य चक्र

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बाराबंकी, उत्तर प्रदेश)

आई सी 72002 एफ, लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह का जन्म 15 दिसम्बर 1981 को जनपद बाराबंकी के ग्राम बीरापुर में श्रीमती धर्मा सिंह और श्री रामेश्वर सिंह के यहां हुआ। इन्होनें अपनी स्कूली शिक्षा राष्ट्रीय इण्टर कालेज हैदरगढ़, सिटी इण्टर कालेज, बाराबंकी तथा कामता प्रसाद सुन्दरलाल साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फैजाबाद से पूरी की। 12 दिसम्बर 2009 को भारतीय सेना की सेना सप्लाई कोर में कमीशन लिया और 3 मद्रास रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

जम्मू कश्मीर के बांदीपुर जिले में घुसपैठ के नये रास्ते के बारे में एक खुफिया जानकारी मिली। इसी जानकारी के आधार पर यहां के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में रिज के किनारे घने जंगलों में एक निगरानी और घात लगायी गयी।

11 सितम्बर 2010 को 17:30 बजे लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह ने नाले के पास दो आतंकवादियों को घूमते हुए देखा। उन्होंने अपनी स्थिति को तेजी से समायोजित करते हुए आतंकवादियों को उलझा लिया और एक आतंकवादी को शुरूआत में ही घायल कर दिया। आतंकवादियों ने बड़े पत्थरों की आड़ ले ली और भारी गोलीबारी करने लगे। लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह ने देखा कि अंधेरा बढ़ रहा है और आतंकवादी इसका फायदा उठाकर भाग सकते हैं। दोनों तरफ से हो रही भयानक गोलीबारी के बीच लेफ्टीनेंट सिंह बिजली की गति से आगे बढ़े और एक आतंकवादी को मार गिराया। दूसरा आतंकवादी छुपाव में रहकर जवानों पर हैंड ग्रेनेड फेंकता रहा ताकि लोग उलझे रहें और नजदीक न आ सकें।

अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, अद्वितीय युध्द कौशल दिखाते हुए लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह 30 मीटर रेंगते हुए आगे बढ़े और आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गये। नजदीक पहुंचकर उन्होंने दो हैंड ग्रेनेड फेंका जिससे छुपा हुआ आतंकवादी मारा गया।

लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह नें आतंकवादियों से हुई इस लड़ाई में अदम्य साहस, असाधारण वीरता, पहल और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया। उनकी इस असाधारण वीरता के लिए उन्हें 11 सितम्बर 2010 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए लेफ्टीनेंट विक्रम बहादुर सिंह

<u>स्मृति शेष</u>: मद्रास रेजिमेंटल सेंटर के ड्रिल ग्राउन्ड के मोटीवेशनल हाल में इनका एक आदमकद चित्र लगाया गया है। ए एस सी सेन्टर एंव कालेज के पोलो स्टैंड में भी इनका चित्र लगाया गयाहै। इसके अलावा सभी कैंटोनमेंट में पेन्सिल स्केच के द्वारा बनाया गया इनका चित्र लगाया जा रहा है।

514 ए एस सी बटालियन में चित्र

गंगटोक कैंट में चित्र

पोलो स्टैंड ए एस सी सेन्टर एंव कालेज में चित्र

प्रशंसात्मक उल्लेख

Based on intelligence of newly infiltrated track, surveillance-cum-ambushes were launched in the thickly forested, mountainous area astride the Ridge in Bandipore district of Jammu & Kashmir.

On 11 September 2010 at 1730 hours, Lieutenant Vikram Bahadur Singh sited two terrorists moving along the Nala. Quickly readjusting his position, he effectively engaged the terrorists injuring one with initial volley. The terrorists took cover behind boulders and a fierce fire-fight ensued. Sensing that terrorists would escape in fading light. Lt Vikram moved with lightening speed in the face of heavy fire and in a daring act neutralised one terrorist with his fire. The second terrorist took cover under a natural hide and effectively engaged own troops, lobbing grenades to dissuade troops from closing in. Unmindful of personal safety, displaying exemplary field-craft, Lieutenant Vikram Bahadur Singh crawled to within 30 meters of the terrorist and lobbed two grenades thereby effectively silencing him.

Lieutenant Vikram Bahadur Singh displayed unparallel act of gallantry, raw courage, initiative and determination in fighting the terrorists.

<u>हवलदार गंगा सहाय</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बरेली, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13857736 एम, हवलदार गंगा सहाय का जन्म 01 अक्टूबर 1957 को जनपद बरेली के गांव सरदार नगर घाट में श्रीमती राम कली देवी तथा श्री भीमसेन यादव के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हवलदार अब्दुल हमीद हायर सेकेन्डरी स्कूल, बाहनपुर बरेली से पूरी की और 17 अक्टूबर 1974 को भारतीय सेना की कुमाऊं रेजिमेंट में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 20 कुमाऊं रेजिमेंट में हुई।

12 अप्रैल 1992 को 06:00 बजे 20 कुमाऊं की `ए` कंपनी के हवलदार गंगा सहाय को 9 अन्य रैंकों और पंजाब पुलिस के दो सिपाहियों सहित कपूरथला जिले में एक व्हीकल चेक पोस्ट का एन सी ओ इंचार्ज बनाया गया था। 20 कुमाऊं के कैप्टन एस एस राठौर इस टुकड़ी के अफसर इंचार्ज थे। लगभग 09:20 बजे चेक पोस्ट के उत्तर की ओर की सड़क से एक सफेद मारुति कार आयी। कार की तलाशी लेने के लिए कार में बैठे लोगों को जब बाहर आने के लिए कहा गया तो कार चालक, कार से बाहर आ गया। जब उसे हाथ ऊपर करने के लिए कहा गया तो उसने तेजी से पिस्तौल निकाल लिया और हवलदार गंगा सहाय पर गोली चलाने की कोशिश करने लगा। इसके जवाब में लांस नायक किशन चन्द ने अपनी राइफल के बट से उस पर एकाएक प्रहार किया और उसकी पिस्तौल छीनने की कोशिश की। परन्तु आतंकवादी तेजी से दूर हट गया और एकदम निकट से लांस नायक किशन चन्द्र के सिर पर गोली चला दी। इसी बीच कार की पिछली सीट पर बैठे दूसरे व्यक्ति ने पिछली खिड़की के शीशे से सिपाही रामप्यारे यादव पर गोली चलाई और दोनों आतंकवादी पास के गेहूं के खेत में भागने लगे। हवलदार गंगा सहाय ने रेडियो आपरेटर से और सहायता बल मंगवाने के लिए कहा और पांच अन्य सैनिकों और पंजाब पुलिस के दो सिपाहियों को घायलों की देखभाल के लिए शीघ्र तैनात कर दो अन्य सैनिकों को साथ लेकर भागते हुए आतंकवादियों का पीछा करने लगे। शीघ्र ही उत्तर पश्चिम दिशा की ओर से कैप्टन राठी भी पहुंच गये और मोर्चे से आतंकवादियों पर गोलियां चलाने लगे। दोनों दल मिल गए और उस तरफ बढ़ने लगे जहां आतंकवादी छुपे हुए थे।

हवलदार गंगासहाय इन दोनों दलों को आड़ देने के लिए कवरिंग फायर करने लगे ताकि उनका दल सही जगह पर पहुंच जाए। दल के सही जगह पर पहुंचते ही वह दल में आ मिले और फायर करने लगे। दूसरी तरफ से फायर बंद होने पर मिले शवों की पहचान खालिस्तान कमांडो के लेफ्टिनेंट जनरल सुरेंद्रजीत सिंह उर्फ छिंदा भाई और सुरेंद्र जीत सिंह मल्लेवाल के रूप में हुई, जो क्रमशः 500 और 300 हत्याओं में शामिल थे और उनके सिर पर क्रमशः दस और चार लाख रुपये का नकद पुरस्कार था।

हवलदार गंगा सहाय ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट वीरता, साहस और कर्तव्य के प्रति समर्पण की भावना का परिचय दिया। उनके इस साहस के लिए उन्हें 12 अप्रैल 1992 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

At 0600 hours on the 12th April 1992, Havildar Ganga Sahay of A Coy, 20 KUMAON was deployed as the NCO Incharge of Vehicle Check Point (VCP) in Kapurthala District, alongwith 9 ORs and two constables of Punjab Police. Captain SS Rathore of 20 KUMAON was the OIC of this contingent. At about 0920 hours, one white maruti car came to the check point on the road leading from the North. On being ask to come out for a search, the person driving the car came out, but on being asked to raise his hand, swiftly took out a pistol and tried to shoot at Havildar Ganga Sahay. LNk Kishan Chand promptly reacted, hit him with his rifle butt and tried to snatch his pistol but the militant moved away swiftly and fired a shot at point blank range, hitting LNk Kishan Chand in the head. Simultaneously, the second person sitting on the rear seat of the car fired from another pistol at Sepoy Ram Pyare Yadav through the rear windows glass and both started running into the adjoining wheat field. Havildar Ganga Sahay asked the Radio Operator to call for reinforcement, quickly detailed Five ORs and the Two Police Constable to look after the casualties and thereafter started chasing the fleeing militants with the remaining two ORs. Soon Captain Rathore also reached the site from the North West and started bringing down fire on the militants from that flank also. Both the parties joined and moved towards the place where militants were hiding. Havildar Ganga Sahay covered their move for their correct positioning, and the joined for the final assault on the militants. Their bodies were later identified as that of lieutenant Generals of Khalistan Commando Surenderjit Singh alies Chhinda Bhai and Surender Jit Singh Mallewal, involved in 500 and 300 killings respectively and carrying cash awards of Rs Ten and Four Lac respectively on their heads.

<u>मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बरेली, उत्तर प्रदेश)

आई सी 42448 एफ, मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी का जन्म 05 जुलाई 1958 को जनपद बरेली के वार्ड नं 5 में श्री रफीक अहमद सिद्द्की के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा आदर्श निकेतन इण्टर कालेज, आटामांडा, बरेली से पूरी की और 15 दिसम्बर 1984 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में कमीशन लिया तथा 7 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

07 जनवरी 2002 को मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी को जम्मू और कश्मीर के गांव गोल्ड में आतंकवादियों के एक समूह के बारे में सूचना प्राप्त हुई थी। उन्होंने सूचना के आधार पर गांव में घेरा डाल दिया।

रात 00:10 बजे अँधेरे में आतंकवादियों से आमना - सामना हो गया और रात भर फायरिंग जारी रही। भागने का प्रयास कर रहे तीन आतंकवादियों ने नाले में बोल्डर के बीच पोजीशन ली और घेरा दल पर भारी गोलाबारी की। सैनिकों के लिए गंभीर खतरे को महसूस करते हुए और खुद के फायर को अप्रभावी पाते हुए, मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी 10:30 बजे आगे बढ़े। लेकिन नाले में छिपे आतंकवादियों द्वारा भारी गोलीबारी की गई। निडर होकर भारी गोलीबारी के बीच से रेंगकर वे दो आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गये। इससे आतंकवादी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंन उन्हें करीबी मुकाबले में समाप्त कर दिया। तीसरे आतंकवादी ने उन पर भारी गोलीबारी की और हैंड ग्रेनेड फेंके लेकिन मेजर सिद्दीकी ने उसे मार गिराया। इसके बाद वे एक अन्य साथी सैनिक के साथ दो अन्य आतंकवादियों के नजदीक तक पहुंचे। मेजर सिद्दीकी रेंगते हुए एक आतंकवादी की ओर बढ़े और आमने - सामने की लड़ाई में उसे मार गिराया। इस कार्यवाही ने उनके दल के अन्य सैनिकों को शेष तीन आतंकवादियों को खत्म करने के लिए प्रेरित किया।

मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी ने आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरता, दृढ़ संकल्प और असाधारण पेशेवर कौशल का परिचय दिया। उनकी इस वीरता, साहस और रण कौशल के लिए उन्हें 07 जनवरी 2002 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

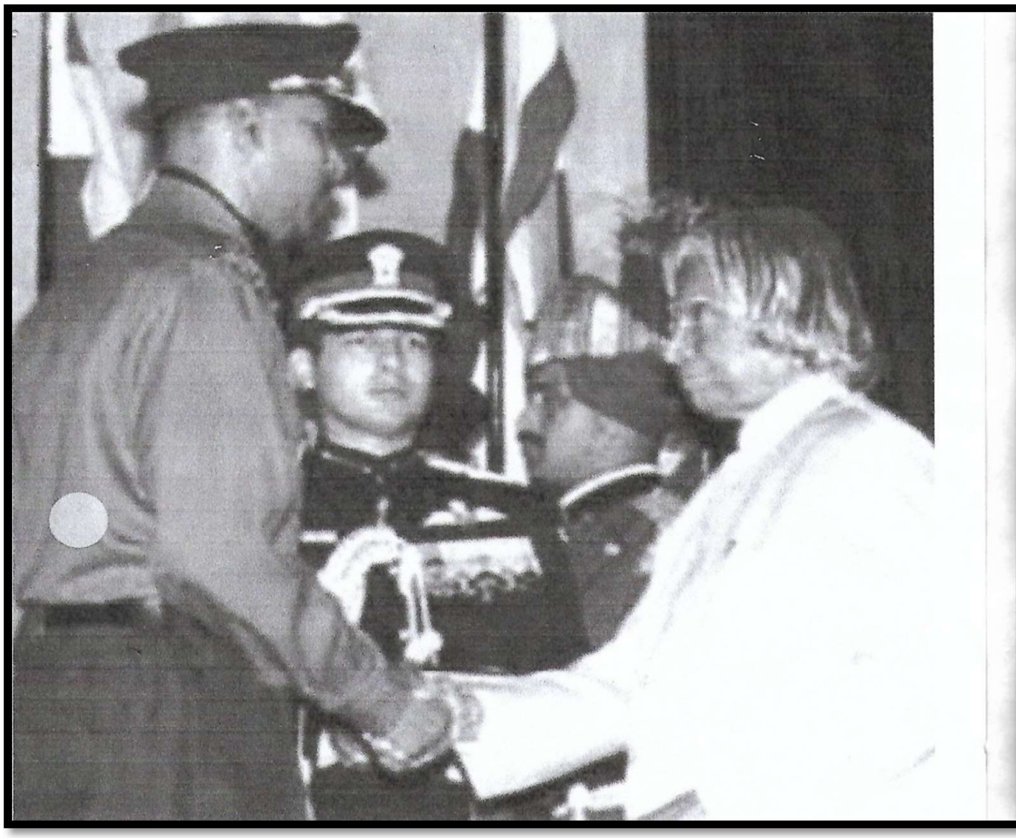

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Tanvir Ahmed Siddiqui, received information about a group of terrorists in Village Goldh in J&K and placed a cordon on 07 January 2002.

Contact was established in pitch darkness at 0010 hours and firing continued through the night. Three terrorists attempting escape, took positions amongst boulders in the nala and brought down heavy fire o own troops. Realising grave danger to the troops and finding own fire ineffective, Major Tanvir Ahmed Siddiqui at 1030 hours moved forward but was fired upon heavily by terrorists holed up in the nala. Undeterred, the officer, crawling amidst a hall of bullets, surprised two of the terrorists and eliminated them in close combat. Upon this the third terrorist charged onto him firing heavily and throwing grenades but was calmly killed by Major Siddiqui. Thereafter, he alongwith an other rank closed onto two other terrorists. Major Siddiqui crawled towards one terrorist and in a fierce hand-to-hand fight killed him. This act inspired the other rank to eliminate the remaining three terrorists.

Major Tanvir Ahmed Siddiqui displayed gallantry, resolute determination and exceptional professional acumen while facing the terrorists.

<u>सिपाही रघु नाथ सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन ब्लू स्टार, जनपद बस्ती, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 4172990 ए, सिपाही रघु नाथ सिंह का जन्म 01 जनवरी 1962 को जनपद बस्ती के ग्राम कुसमी में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती मनुहावती देवी तथा पिता का नाम श्री हवलदार सिंह था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की। 07 जून 1979 को भारतीय सेना की कुमाऊं रेजिमेंट में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 15 कुमाऊं रेजिमेंट में हुई।

06 जून 1984 को सिपाही रघु नाथ सिंह एक आतंकवाद विरोधी अभियान के दौरान मेजर भूकांत मिश्रा के साथ रेडियो ऑपरेटर थे। कार्रवाई के दौरान मेजर भूकांत मिश्रा लड़ते हुए गिर पड़े। सिपाही रघु नाथ सिंह अपने कंपनी कमांडर से लगभग 25 मीटर पीछे थे। सिपाही रघुनाथ सिंह अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपने कंपनी कमांडर को बचाने के लिए दौड़ पड़े। मौके पर पहुंचने पर महसूस किया कि उनके कंपनी कमांडर अब जीवित नहीं है। उन्होंने तुरंत मेजर भूकांत मिश्रा की कार्बाइन उठाई और आतंकवादियों की तरफ दौड़ पड़े, लेकिन आतंकवादियों ने उनके ऊपर भयंकर गोलीबारी कर दी जिससें वे मौके पर ही शहीद हो गये।

इस प्रकार सिपाही रघु नाथ सिंह ने साहस, बहादुरी, दृढ़ संकल्प, उच्च कोटि के कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया और सेना की सर्वोच्च परंपराओं में अपना जीवन लगा दिया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 06 जून 1984 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 6th June, 1984, Sepoy Raghu Nath Singh was the Radio Operator with Major BK Mishra, during anti-terrorist operations. During the course of action, Major BK Mishra fell fighting when Sepoy Raghu Nath Singh was some 25 metres behind his Company Commander. Sepoy Raghu Nath Singh rushed to rescue his Company Commander in utter disregard of his own safety. On reaching the spot/realised that his Company Commander was no more. He immediately picked up the carbine of Major BK Mishra and rushed forwards the towards the terrorist position but was hit by a heavy volume of fire and died on the spot.

Sepoy Raghu Nath Singh thus displayed courage, bravery, determination, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest traditions of the Army.

नायक आदर्श कुमार अरोड़ा
शौर्य चक्र
(भारत पाक युध्द 1971, जनपद बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 1515434 एक्स, नायक आदर्श कुमार अरोड़ा का जन्म 15 मार्च 1943 को अविभाजित भारत के जनपद लायलपुर (अब जनपद फैसलाबाद) के गांव कमलिया में श्रीमती लक्ष्मी देवी तथा श्री शांति स्वरूप अरोड़ा के यहां हुआ था। देश के विभाजन के बाद इनका परिवार बुलन्द शहर में आकर बस गया। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा कन्या शिक्षा सदन स्कूल, बुलन्द शहर तथा गवर्नमेंट इण्टरमीडिएट स्कूल, बुलन्द शहर से पूरी की तथा 25 मार्च 1961 को भारतीय सेना की इंजीनियर्स कोर में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के उपरान्त 107 इंजीनियर रेजिमेंट में तैनात हुए।

1971 के भारत पाक युध्द के समय फील्ड कंपनी की एक प्लाटून को पश्चिमी क्षेत्र में शत्रु द्वारा बिछाई गयी सुरंगों को तलाश करने का काम सौंपा गया था। काम पूरा हो जाने पर उन बारूदी सुरंगों को 3 टन गाड़ी में लाद दिया गया। गाड़ी हटायी गयी सुरंगों को लेकर सेन्ट्रल लाइन के साथ वापस जा रही थी। एक स्थान पर मोड़ लेते समय गाड़ी एक बच गयी टैंक रोधी सुरंग के ऊपर जा पहुंची। इससे गाड़ी के ईंधन की टंकी में आग लग गयी। एक अन्य सैनिक जो वाहन में बैठा था, वह गिर गया। वाहन के लगभग 100 गज पीछे पैदल चल रहे नायक आदर्श कुमार अरोड़ा घटनास्थल की ओर तेजी से दौड़ पड़े और आग को बुझाने का प्रयास करने लगे। इस समय तक आग नियंत्रण से बाहर हो चुकी थी और लगभग 6000 पौंड विस्फोटक सामग्री वाले वाहन के उड़ने का प्रत्यक्ष खतरा था। अपनी जान की परवाह न करते हुए नायक आदर्श कुमार अरोड़ा ने उस अचेत हो चुके सैनिक को अपने कंधों पर उठाया और लगभग 50 गज दूर एक सुरक्षित स्थिति तक पहुंचने में सफल रहे। इसके तुरंत बाद सुरंगों से लदी हुई गाड़ी में विस्फोट हो गया और गाड़ी के परखच्चे उड़ गये।

इस कार्रवाई में नायक आदर्श कुमार अरोड़ा ने उच्च कोटि के साहस और वीरता का परिचय दिया। उनकी इस साहसिक और वीरतापूर्ण कार्यवाही के लिए उन्हें “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

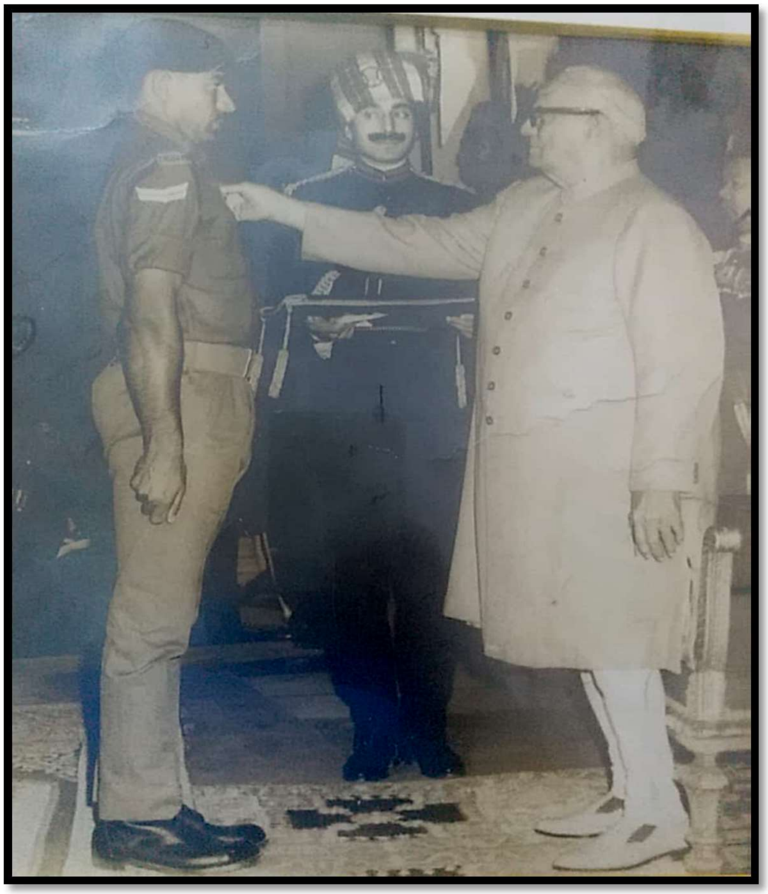

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी वी गिरि से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
नायक आदर्श कुमार अरोड़ा

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

A platoon of a Field Company was assigned the task of recovering enemy-laid mines in an area in the Western Sector. After completing the tasks, the mines were loaded into a 3 tonner vehicle. The vehicle was moving back along the central line of the cleared minefield when, while negotiating a turn, it went over an undetected anti-tank mine and its fuel tank caught fire. An Other Rank who was sitting in the vehicle fell out. Naik Adarsh Kumar Arora who was following on foot about 100 yards behind the vehicle rushed forward and tried to put out the fire. By this time, however, the fire had gone beyond control and there was imminent danger of the vehicle containing nearly 6000 lbs of explosive material being blown up. In utter disregard of the danger to his own life. Naik Adarsh Kumar Arora lifted the unconcious Other Rank and managed to move to a safe position in a depression about 50 yards away. Soon after, the vehicle with all the mines blew up into pieces.

In this action Naik Adarsh Kumar Arora displayed gallantry of a high order.

<u>हवलदार गोपी सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13655243 (जे सी 72940 एफ), हवलदार गोपी सिंह का जन्म 22 जून 1944 को जनपद बुलन्द शहर के गांव सौझना में श्रीमती खयानी देवी तथा श्री गंगा प्रसाद के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा एस एल इंटर कालेज खानपुर से पूरी की और 22 जून 1962 को भारतीय सेना कि गार्डस रेजिमेंट में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के पश्चात 9 गार्डस रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

11 सितंबर 1971 को अनुमंडल पदाधिकारी, करीमगंज से सूचना प्राप्त हुई कि 212 अप पैसेंजर ट्रेन के एक महिला डिब्बे में दो टाइम बम मिले हैं, जो सुपर कांडी और नीलम बाजार रेलवे स्टेशनों (करीमगंज सब डिवीजन उत्तर कछार, असम, उत्तर पूर्व सीमांत रेलवे) के बीच रुकी हुई थी। हवलदार गोपी सिंह छह अन्य रैंकों की एक पार्टी के साथ मौके पर गए और पाया कि यात्रियों द्वारा पूरी ट्रेन खाली कर दी गई थी। उन्होंने डिब्बे में प्रवेश किया और दो अत्यधिक जटिल आयातित टाइम बम पाए। उन्होंने अकेले ही उनको निष्क्रिय करके सुरक्षित कर दिया और उन्हें ट्रेन से हटा कर नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में हवलदार गोपी सिंह ने अनुकरणीय साहस और उच्च कोटि के दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। उनके अनुकरणीय साहस के लिए उन्हें 11 सितम्बर 1971 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया। बाद में यह पदोन्नत होकर सूबेदार बने और आनरेरी कैप्टन के रूप में अपनी सैन्य सेवा पूरी कर 01 अक्टूबर 1992 को सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी वी गिरि से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
हवलदार गोपी सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On the 11th September, 1971, information was received from Sub-Divisional Officer, Karimganj that two time-bomb had been found in a ladies compartment in 212 UP Passenger Train which had been halted between SUPER KANDI and NILAM BAZAR railway stations (KARIMGANJ Sub-Division of North CACHAR, ASSAM), on North East Frontier Railway.

Havildar Gopi Singh with a party of six other Ranks went to the spot and found that the whole train had been vacated by the passengers. He entered the compartment and found two highly complicated imported time-bombs. He single handed disarmed the charges, made them safe, removed them from the train and destroyed them.

In thin action, Havildar Gopi Singh displayed exemplary courage and determination of a high order.

<u>लांस हवलदार रण पाल सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2671799 एच, लांस हवलदार रण पाल सिंह का जन्म 08 फरवरी 1959 को जनपद बुलन्द शहर के ग्राम प्रानगढ़ में श्रीमती चरन कौर देवी तथा श्री कृपाल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा एम एस इंटर कालेज सिकन्दराबाद, बुलन्द शहर से पूरी की। 18 अगस्त 1979 को भारतीय सेना की ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 3 ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट में हुई।

23 फरवरी 1994 को 3 ग्रेनेडियर्स के लांस हवलदार रणपाल सिंह जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के बटनार गांव में एक घात दल का नेतृत्व कर रहे थे।

10:20 बजे लांस हवलदार रण पाल सिंह ने देखा कि तीन आतंकवादी आ रहे हैं। उन्होंने उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। हालांकि जवाब में आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की और सामरिक लाभ हासिल करने के लिए पास के एक घर के अंदर छुपाव लेने की कोशिश की। लांस हवलदार रणपाल सिंह भाग रहे उग्रवादियों को घर के अन्दर पहुंचने से रोकने के लिए फौरन दौड़ पड़े। इस प्रक्रिया में वह एक अन्य आतंकवादी समूह द्वारा जो कि एक अन्य झोपड़ी में छिपे हुए थे उनकी ए के राइफल के फायर की चपेट में आ गये। इस दौरान उनके कंधे और पीठ में गंभीर चोट आई। अपनी गंभीर चोटों के बावजूद, वह तीन उग्रवादियों पर टूट पड़े, जो तब तक अकेले घर में प्रवेश कर चुके थे। उन्होंने एक खिड़की को लात मारकर खोला और झोपड़ी के अंदर कूद गए। झोपड़ी के अन्दर भीषण फायरिंग हुई और अचानक घर के अंदर सब कुछ खामोश हो गया। मेजर जोध सिंह, कंपनी कमांडर, इसके तुरंत बाद स्थिति को जानने के लिए घर के अंदर गये तो उन्होंने देखा कि लांस हवलदार रणपाल सिंह एक आतंकवादी के ऊपर खून से लथपथ पड़े थे, जबकि उसके अलावा दो अन्य मारे गए आतंकवादियों के शव पड़े थे।

इस प्रकार लांस हवलदार रणपाल सिंह ने आतंकवादियों का सामना करने के लिए दृढ़ संकल्प, अदम्य इच्छा शक्ति और साहस का परिचय दिया। इस साहसिक और वीरतापूर्ण कार्यवाही के लिए उन्हें 23 फरवरी 1995 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

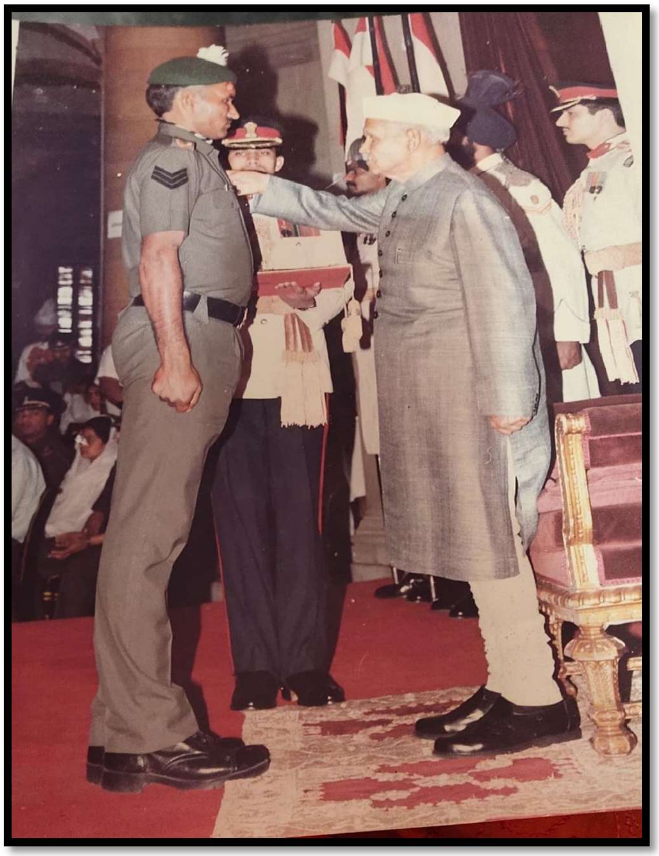

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए लांस हवलदार रण पाल सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 23 February 1995, Lance Havildar Ranpal Singh of 3 Grenadiers was leading an ambush party in Batnar Village in Kupwara District of Jammu and Kashmir.

At 1020 hours he noticed three militants approaching. He challenged them to surrender. However, in response, the militants opened a heavy bursts of automatic fire and tried to take cover inside a close by house to gain tactical advantage. Lance Havildar Ranpal Singh Immediately rushed out of his position to interdict the fleeing militants from reaching the house. In the process, he was hit by a burst of AK fire from behind by another militant group, hiding in another hut. Severely injuring his shoulders and back. Inspite of his grievous injuries, the valiant soldier charged towards the three militants who had by then entered the lone house, kicked open a window, and Jumped inside the hut to neutralise them.

There was an intense fire fight and suddenly everything went silent inside the lone house. Major Jodh Singh, his company commander. Who had rushed immediately thereafter to reinforce the position found Lance Havildar Ranpal Singh sprawled over one of the militants in a pool of blood, while bodies of two other killed militants were lying besides him.

Lance Havildar Ranpal Singh, thus, displayed dogged determination, indomitable will and rare courage in the face of very heavy odds.

<u>सवार धीरज सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद चन्दौली, उत्तर प्रदेश)

सैन्य सं 15484670 के, सवार धीरज सिंह का जन्म 25 सितम्बर 1984 को जनपद चन्दौली के गांव हिंगुतरगढ़ में श्रीमती ललिता देवी तथा श्री मधुकर सिंह के यहां हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा सनरेज पब्लिक स्कूल, हिंगुतरगढ़ में हुई। यह 30 जनवरी 2002 को भारतीय सेना की आर्मर्ड कोर में भर्ती हुए। बाद में इनकी तैनाती 24 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में एक घर में तीन आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना 24 राष्ट्रीय राइफल्स को मिली। 24 राष्ट्रीय राइफल्स ने इस घर के चारों ओर घेरा डाल दिया। सवार धीरज सिंह इसी घेराबंदी दल के सदस्य थे। 2 मई 2006 को 23:15 बजे, एक आतंकवादी ने दूसरे आतंकवादी की भारी कवरिंग फायर के तहत घेरा पार्टी के कब्जे वाले घर में घुसने का प्रयास करके आत्मघाती हमले को अंजाम देने की कोशिश की।

प्रभावी गोलाबारी की जद में आने के बावजूद, सवार धीरज सिंह ने मोर्चा संभाला और अपनी पार्टी को आतंकवादी के प्रयास के बारे में सचेत किया। इसके तुरंत बाद एक और आतंकवादी ने उसके घर में प्रवेश करने में मदद करने के लिए बाहर निकलने का प्रयास किया। सवार धीरज सिंह ने अपनी पार्टी के लिए आसन्न खतरे को भांपते हुए आ रहे आतंकवादी को निशाने पर लिया, अपनी फायरिंग लाइन में आगे बढ़े और उसे गोली मार दी। इस कार्यवाही के दौरान वह घायल हो गये। काफी मात्रा में खून बह रहा था फिर भी उन्होंने अपनी चोट की परवाह न करते हुए, बिना किसी डर के दूसरे आतंकवादी द्वारा चलायी जा रही गोलियों का जबाब दे रहे थे। आतंकवादी पूरी तरह से हतप्रभ रह गया और इससे पहले कि वह कुछ कर पाता सवार धीरज सिंह ने उसे गोली मार दी। इस पूरी कार्यवाही के दौरान लगातार बह रहे खून के कारण, अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए वह शहीद हो गये।

सवार धीरज सिंह ने अपूर्व साहस और वीरता का परिचय देते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया। उनकी वीरता को सम्मानित करते हुए उन्हें 02 मई 2006 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

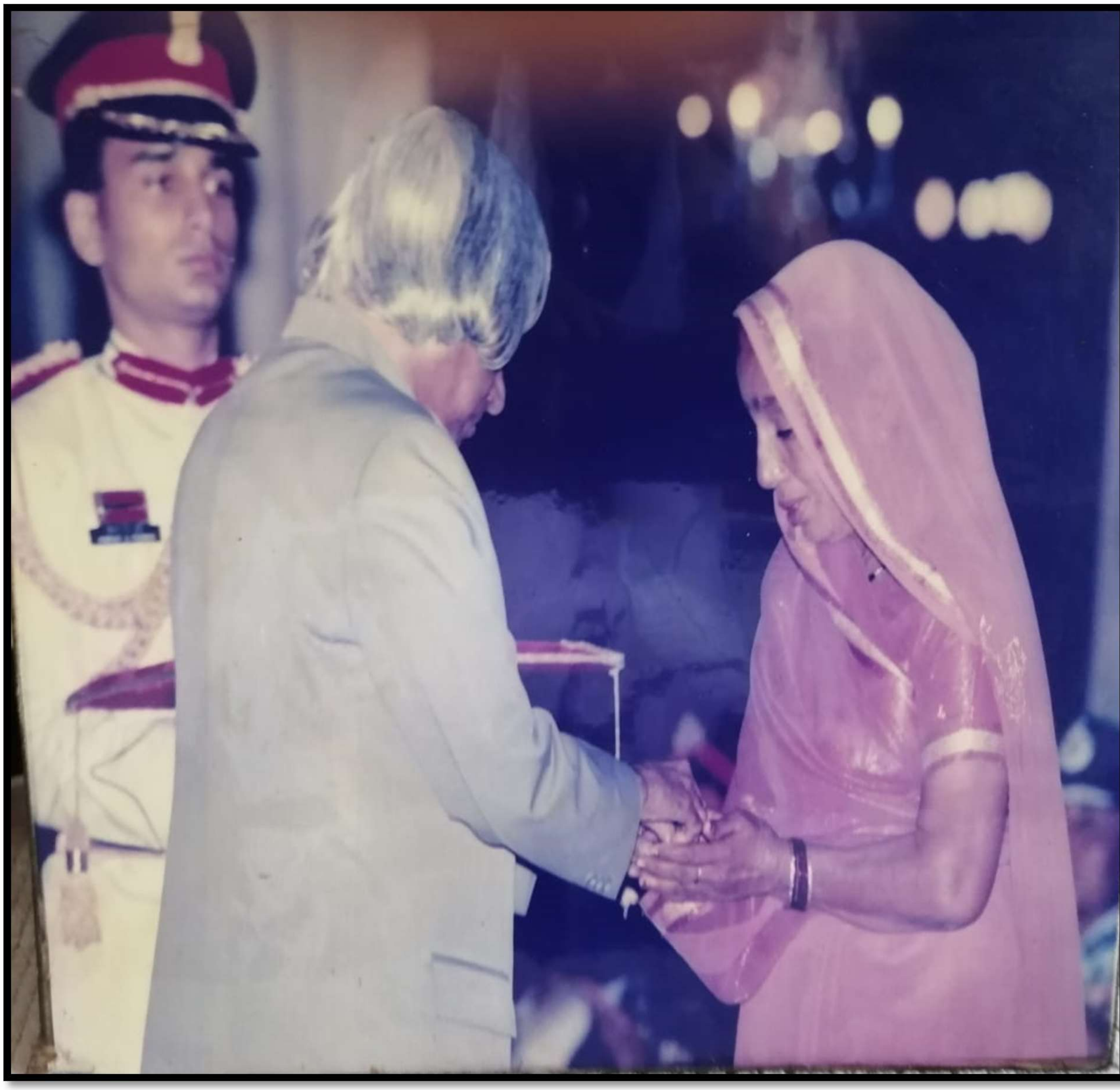

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई सवार धीरज सिंह की मां श्रीमती ललिता देवी

<u>स्मृति शेष</u> : सवार धीरज सिंह के गांव में विधायक निधि से एक स्मारक स्थल का निर्माण करवाया गया है जहां पर उनकी प्रतिमा लगायी गयी है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Sowar Dhiraj Singh was part of close cordon laid around a house in Srinagar in Jammu & Kashmir where three terrorists were hiding. At 2315 hours on 2nd May 2006, one terrorist tried to carry out suicidal attack by attempting to enter house occupied by the cordon party under heavy covering fire of other terrorist.

Despite coming under effective fire, Sowar Dhiraj Singh held his position and alerted his party of the terrorist attempt. Immediately after this, another terrorist attempted to break out to assist his entry. Sowar Dhiraj Singh, sensing the imminent danger to his party, charged at the approaching terrorist, advancing in his line of fire and shot him dead. However, he was injured in the process. Despite bleeding profusely and completely disregarding his own injury, he again faced the hail of bullets fired from the second terrorist without any fear and engaged him. The terrorist was totally taken aback and before he could react Sowar Dhiraj Singh shot him dead. However, he later succumbed to his injuries.

Sowar Dhiraj Singh displayed conspicuous bravery, pre-eminent valour and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

<u>लांसनायक ज्योतिष प्रकाश</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद देवरिया, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2693628 डब्ल्यू, लांसनायक ज्योतिष प्रकाश का जन्म 01 जुलाई 1979 को जनपद देवरिया के गांव गनियारी में श्रीमती गायत्री सिंह तथा डॉ राम प्रशान सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा श्री हनुमान विद्या मंदिर इंटर कालेज, बरौन से पूरी की। 05 जुलाई 1999 को भारतीय सेना की ग्रेनेडियर्स रेजिमेन्ट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 14 ग्रेनेडियर्स रेजिमेन्ट में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी पदस्थापना 39 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

26 अक्टूबर से 29 अक्टूबर 2006 तक जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले के एक गांव में चलाए गये एक ऑपरेशन के दौरान लांस नायक ज्योतिष प्रकाश कंपनी कमांडर के "क्लोज ग्रुप" का हिस्सा थे।

तलाशी के दौरान लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने दो आतंकवादियों को नाले में पत्थरों के पीछे भागने और छिपने की कोशिश करते देखा, उन्होंने तुरंत आतंकवादियों को घेर लिया और उनमें से एक को मार गिराया। घनी झाडियों और पत्थरों में छिपे अन्य आतंकवादियों की तलाशी शुरू की गयी। तलाशी के दौरान लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने तलाशी दल से मुश्किल से दो से तीन मीटर की दूरी पर एक आतंकवादी को देखा। अपने साथियों के लिए स्पष्ट खतरे को भांपते हुए, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने अंधाधुंध गोलाबारी करते हुए आतंकवादी पर हमला कर दिया और उसे नजदीकी लड़ाई में मार गिराया। इस लड़ाई के दौरान लांस नायक ज्योतिष प्रकाश गंभीर रूप से घायल हो गये। आतंकवादियों से आखिरी सांस तक लड़ते हुए वह मां भारती की गोद में सो गये।

लांस नायक ज्योतिष प्रकाश ने आतंकवादियों से लड़ते हुए और अपने साथियों को बचाने के लिए अदम्य साहस, विशिष्ट बहादुरी और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए सेना कि सर्वोच्च परंपराओं को कायम रखते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया।

उनके इस अदम्य साहस और वीरता के लिए उन्हें 26 अक्टूबर 2006 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती सीमा सिंह

<u>स्मृति शेष</u> : लांसनायक ज्योतिष प्रकाश के गांव में उनके परिवार द्वारा उनकी वीरता की यादों को संजोए रखने के लिए प्रतिमा लगायी गयी है तथा मोहरा समोगर मार्ग पर एक विशाल तोरण द्वार बनवाया गया है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Lance Naik Jyotish Prakash was part of Company Commander's close group during an operation in a village in Poonch district (J&K) conducted from 26 October 2006 to 29 October 2006.

During the search Lance Naik Jyotish Prakash spotted two terrorists trying to run and hide behind boulders in the nullah, he immediately closed on to the terrorists, killed the first one on the move. A search was commenced to track balance of the terrorists hidden in thick foliage and boulders and eliminate them. During the search Lance Naik Jyotish spotted a terrorist barely two to three meters from the search party. Sensing apparent danger to his comrades, with total disregard to his personal safely, Lance Naik Jyotish pounced on the terrorist under his indiscriminate fire and eliminated him at point blank range later he succumbed to his injuries.

Lance Naik Jyotish Prakash dlisplayed indomitable courage, conspicuous bravery and total disregard to personal safety to save his comrades and sacrificed his life in keeping with the highest traditions the Indian Army while killing the terrorists.

<u>विंग कमाण्डर वरूण सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद देवरिया, उत्तर प्रदेश)

27987ए, फ्लाइंग (पायलट), विंग कमाण्डर वरूण सिंह का जन्म 09 अक्टूबर 1982 को जनपद देवरिया में श्रीमती उमा सिंह और कर्नल कृष्ण प्रताप सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा आर्मी स्कूल, चण्डी मंदिर कैण्ट से पूरी की। 19 जून 2004 को भारतीय वायु सेना में कमीशन लिया और 45 स्क्वाड्रन में पदस्थ हुए।

विंग कमांडर वरुण सिंह, 10 सितंबर 2018 से हल्के लड़ाकू विमान (एल सी ए) स्क्वाड्रन में तैनात थे और स्क्वाड्रन पायलट के कर्तव्यों का पालन कर रहे थे।

12 अक्टूबर 2020 को उन्हें वायु सेना स्टेशन हिंडन से जांच प्रणाली उड़ान के लिए अधिकृत किया गया था। यह उड़ान नियंत्रण तथा हवा के दबाव प्रणाली में बड़े सुधार के बाद जांच के लिए थी। तेजस में एक परिष्कृत डिजिटल उड़ान नियंत्रण प्रणाली है जिसमें 20 लाख बिफलताओं के खिलाफ लड़ने की क्षमता है।

इस उड़ान के दौरान विमान काफी ऊंचाई पर उड़ रहा था कि अचानक बिना कोई चेतावनी दिए काकपिट में हवा का दबाव विफल हो गया। विमान चालक ने विफलता की सही पहचान की और विमान को जमीन पर लाने के लिए कम ऊंचाई पर लाने की पहल शुरू की। ऐसा करते समय 17000 फीट की ऊंचाई पर उड़ान नियंत्रण प्रणाली के चार में से तीन चैनल विफल हो गये। इससे विमान पूरी तरह अनियंत्रित हो गया। यह एक आपदाजनक गुरूत्वाकर्षण से सम्बंधित विफलता थी जो कि इससे पहले कभी घटित नहीं हुई थी। विमान की ऊंचाई में तेजी से कमी आ रही थी तथा विमान खतरनाक तरीके से ऊपर और नीचे होते हुए गुरूत्वाकर्षण की सीमा के चरम पर जा रहा था। ऐसे में विमान ने गुरूत्वाकर्षण की 3.5 सीमा को पार किया जो कि आंखों के लिए पूर्णतः नुकसानदायक तथा जीवन के लिए खतरा है।

ऐसी खतरनाक स्थिति में शारीरिक और मानसिक तनाव के बावजूद, उन्होंने अनुकरणीय संयम बनाए रखा, विमान को संभाला तथा असाधारण उड़ान कौशल का प्रदर्शन किया। इसके तुरंत बाद 10,000 फीट की ऊंचाई पर विमान पूर्णतः अनियंत्रित हो गया। ऐसे हालात में विमान चालक विमान को छोडने के लिए स्वतंत्र था लेकिन उन्होंने ऐसा करना उचित नहीं समझा। उन्होंने स्थिति की गंभीरता का मूल्यांकन किया और विमान को सुरक्षित रूप से जमीन पर लाने का फैसला किया ताकि विफलता की जांच हो सके तथा आगे के लिए रोकथाम हो सके। इन्होंने अपने जीवन को खतरे में डालते हुए, उस लड़ाकू विमान को नियंत्रित किया और देश के करोडों रूपये की बचत की। उन्होने तेजस विमान को जमीन पर उतारने के लिए असाधारण साहस और कौशल का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने कर्तव्य की भावना से ऊपर उठकर और जान की जोखिम का सामना करते हुए तेजस विमान को जमीन पर उतारा। उनके इस साहसिक कार्य से स्वदेशी रूप से बनाए गये लड़ाकू विमान में गलती का सही एंव सटीक विश्लेषण हो सका और उसकी पुनरावृत्ति के खिलाफ निवारक उपायों की प्रक्रिया भी हो सकी।

अपने उच्च व्यावसायिकता, संयम और अपने जीवन के लिए जोखिम में त्वरित निर्णय लेने के कारण, उन्होंने न केवल एक हल्के लड़ाकू विमान के नुकसान को टाला बल्कि नागरिक संपत्ति और जमीन पर आबादी की रक्षा भी की। विंग कमांडर वरुण सिंह को उनकी व्यावसायिक कुशलता, साहस और कर्तव्यपरायणता के लिए 12 अक्टूबर 2020 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तमिलनाडु के कुन्नूर के पास 8 दिसंबर 2021 को वायुसेना का एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत, उनकी पत्नी और अन्य 11 लोग शहीद हो गये । दुर्घटना में ग्रुप कैप्टन वरूण सिंह अकेले बचे थे। ज्यादा घायल होने के कारण एक सपताह के इलाज के पश्चात ग्रूप कैप्टन वरूण् सिंह 15 दिसम्बर 2021 को शहीद हो गये ।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती वंदना सिंह तथा उनकी मां श्रीमती उमा सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

Wing Commander Varun Singh (27987A) Flying (Pilot) is on posted strength of Light Combat Aircraft (LCA) Squadron since 10 Sep 18 and has been performing the duties of a Squadron Pilot.

On 12th October 2020, he was authorized to fly a system check sortie In LCA at Air Force Station Hindon, after major rectification of Flight Control System (FCS) and pressurisation system (life support environment control system). LCA has a sophisticated digital flight control system with one in a million redundancies against failures.

During the sortie, the cockpit pressurisation failed at high altitude, without any associated failure warning. He correctly identified the failure and initiated a descent to lower altitude for landing. While descending, passing 17,000 feet, three out of four channels of the Flight Control System failed and led to total loss of control of the aircraft. This was a unprecedented catastrophic failure that had never occurred. There was a rapid loss of altitude while in usual attitude, the aircraft pitched up and down viciously going to the extremities of G limits. He encountered G upto -3.5, which in itself is life endangering with the threat of permanent eye damage.

Despite being in extreme physical and mental stress in an extreme life threatening situation, he maintained exemplary calm composure and recovered the aircraft, thereby exhibiting exceptional flying skill. Soon thereafter, at 10,000 feet, the aircraft experienced total loss of control with vicious manoeuvring and pitching uncontrollably.

Under such scenario, the pilot was at liberty to abandon aircraft. He evaluated the gravity of situation and decided to bring back the aircraft safely so to able to analyse the fault on ground, for prevention in future. Faced with a potential hazard to his own life, he displayed extraordinary courage and skill to control and safely land the fighter aircraft saving hundreds of crore.

The pilot went beyond the call of duty and landed the aircraft taking calculated risks. This allowed an accurate analysis of fault on the indigenously designed fighter and further institution of preventive measures against recurrence. Due to his high order of professionalism, composure and quick decision making even at the peril to his life, he not only averted the loss of a LCA, but also safeguarded civilian property and population on ground.

<u>नायक राम सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(जनपद एटा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 8026254, नायक राम सिंह का जन्म जनपद 15 मार्च 1960 को जनपद एटा के गांव जीसुखपुर सानी में श्रीमती गंगा देवी और श्री पति राम के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा नेशनल इण्टर कालेज कंदोली तथा भारतीय इन्टर कालेज न्यौराई से पूरी की। 29 मार्च 1979 को भारतीय सेना की पायनियर कोर में भर्ती हो गये।

04 मार्च 1998 को नायक राम सिंह अस्थायी ड्यूटी पूरी कर ब्रहमपुत्र मेल से लौट रहे थे। ट्रेन मालदा रेलवे स्टेशन पर पहुंची तो कुछ बदमाश ट्रेन में सवार हो गए और बंदूक की नोंक पर यात्रियों से लूटपाट करने लगे।

एक सच्चे सिपाही नायक राम सिंह ने इसे बर्दाश्त नहीं किया और इन पांच /छह व्यक्तियों को यात्रियों से लूट पाट न करने की चुनौती दी । अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वह डकैतों से बहादुरी से भिड़ गये।

डाकुओं के अधिक संख्या में होने के बावजूद उन्होंने अकेले ही लड़ाई लड़ी जबकि अन्य सह यात्री बिना किसी विरोध के मूकदर्शक बने रहे। उन्हें दो बार बदमाशों ने गोली मारी और वह गंभीर रूप से घायल होने के बाद भी वे लड़ते रहे। उनके इस साहसिक कार्य को देखकर टिकट परीक्षक ने हिम्मत जुटाई और डकैतों से लड़ने का भी प्रयास किया। दोनों ने मिलकर एकलाखी रेलवे स्टेशन पर डकैतों को ट्रेन से बाहर निकाल दिया। नायक राम सिंह को अस्पताल ले जाया गया जहां 16 मार्च 1998 को वे शहीद हो गये।

नायक राम सिंह ने साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए सह यात्रियों के जीवन की रक्षा के लिए अपने जीवन को कर्तव्यों के पालन में न्यौछावर कर दिया। उनके इस साहसिक कार्य के लिए उन्हें 04 मार्च 1998 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 04 March 1998 Naik Ram Singh was returning by Brahmputra Mail after completion of temporary duty. When the train reached Malda Railway Station, some miscreants boarded the train, and started looting the passengers at gun point.

Naik Ram Singh, a true soldier could not tolerate this and challenged these five/six individuals to prevent his fellow passengers from being looted. He grappled with the dacoits bravely, with total disregard to his personal safety.

Inspite of being outnumbered, he fought single handedly when other co-passengers stood as mute spectators without extending any help. He was shot twice by the miscreants and inspite of being severely wounded, he continued to fight. Seeing his daring act, the Ticket Examiner, gathered courage and also tried to fight the dacoits. Together they were successful in forcing the dacoits out of the train at Eklakhi Railway Station. Naik Ram Singh was evacuated to the Hospital where he succumbed to the gunshot wounds on 16 March 1998.

Naik Ram Singh displayed raw courage and gave his life to safeguard the lives of co-passengers.

<u>हवलदार वीरेन्द्र सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद एटा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13688382, हवलदार वीरेन्द्र सिंह का जन्म 10 मई 1966 को जनपद एटा के गांव पुथा में श्रीमती सरस्वती देवी और श्री बचन सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की और 30 अगस्त 1986 को भारतीय सेना की गार्ड्स रेजिमेण्ट में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 9 गार्ड्स रेजिमेंट में हुई। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 21 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

15 अक्टूबर 2003 को हवलदार वीरेंद्र सिंह उत्तरी सेक्टर के एक इलाके में खोजी गश्ती दल का हिस्सा थे। लगभग 19:10 बजे नागरिकों के वेष में दो आतंकवादियों ने खोजी गश्ती दल पर अचानक गोलियां चला दीं। जिससे हवलदार वीरेंद्र सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने तत्काल वहां से जाने से इनकार कर दिया और अंधेरे में गश्त का नेतृत्व करना जारी रखा। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, वह फायरिंग की दिशा में दौड़ पड़े और अकेले ही दो आतंकवादियों को मार गिराया। हवलदार वीरेंद्र सिंह के साहस के इस तात्कालिक निर्णय के परिणामस्वरूप गश्ती दल के अन्य सदस्यों की जान बच गई। ऑपरेशन के परिणामस्वरूप तीन ए के 47 राइफल, एक डिस्पोजेबल रॉकेट लॉन्चर, तीन ग्रेनेड, एक अंडर बैरल ग्रेनेड लॉन्चर, एक रेडियो सेट और अन्य यौध्दिक सामान बरामद हुआ। गंभीर रूप से घायल होने के कारण हवलदार वीरेन्द्र सिंह वहीं पर ही शहीद हो गये।

हवलदार वीरेंद्र सिंह ने वीरता और असाधारण साहस का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी वीरता, साहस और निडरता के लिए उन्हें 15 अक्टूबर 2003 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती किरन देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 15 October 2003, Havildar Virendra Singh was part of a seek encounter patrol in an area in Northern Sector. At approximately 1910 hours, two terrorists disguised as civilians suddenly opened effective fire on the patrol. Havildar Virendra Singh was seriously wounded in the first volley of fire. He refused immediate evacuation and continued to lead the patrol in pitch darkness. Unmindful of personal safety, he rushed into the direction of fire and killed two terrorists single-handedly. This instantaneous act of raw courage of Havildar Virendra Singh resulted in saving lives of other members of the patrol. The operation resulted in recovery of three AK 47 rifles, one disposable Rocket Launcher, three grenades, one Under Barrel Grenade Launcher, one radio set and other war like stores. However, Havildar Virendra Singh succumbed to his injuries.

Havildar Virendra Singh displayed outstanding act of gallantry, extraordinary courage, raw guts and offensive spirit beyond the call of duty and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

<u>हवलदार जसकरन सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद एटा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2669395 एफ, हवलदार जसकरन सिंह का जन्म 15 अगस्त 1958 को जनपद एटा के गांव नगला सरदार में श्रीमती बतोली देवी और श्री भूपाल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की और 09 सितम्बर 1977 को भारतीय सेना की ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट में भर्ती हो गये। प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 9 ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट में हुई।

जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले के फिरोजपोरा में 27 सितंबर 1996 को हवलदार जसकरन सिंह धान के खेतों में छुपे आतंवादियों को खोजने के लिए एक घेराव दल के सदस्य थे। दो आतंकवादी कमांडर, जो फिरोजपोरा में पकड़े गए थे, रात के दौरान धान के खेतों में छुप गये। वह इस उम्मीद में थे कि लंबी और घनी फसलें उन्हें भागने में मदद करेंगी।

खेतों की तलाशी लेते देख आतंकी ने हवलदार जसकरन सिंह पर फायरिंग शुरू कर दी। आतंकी ने शुरूआती फायर में ही उनके ऊपर सटीक निशाना लगा दिया। अपनी चोट की परवाह किए बिना हवलदार जसकरन सिंह ने तेजी से स्थिति बदली और प्रभावी रूप से आतंकवादियों को भागने से रोका और प्रमुख आतंकवादी को मार गिराया।

आतंकवादी ने हवलदार जसकरन सिंह पर प्वाइंट ब्लैंक रेंज से भीषण फायर कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गये और आतंकवादी वहां से निकलने के प्रयास में मेंड़ के पीछे कूद गया। हवलदार जसकरन सिंह एक सर्वोच्च प्रयास के साथ मेंड़ के ऊपर आ गये और आसानी के साथ भागते हुए आतंकवादी को मार गिराया जो कि मोस्ट वांटेड आतंकवादी था।

हवलदार जसकरन सिंह ने अकेले ही आतंकी संगठन को बड़ा नुकसान पहुँचाया। बाद में 27 सितम्बर 1996 को वह शहीद हो गये।

हवलदार जसकरन सिंह ने अदम्य साहस, समर्पण और असाधारण वीरता का परिचय दिया। उनकी इस शूरवीरता के लिए उन्हें 27 सितम्बर 1996 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती सुभद्रा कुमारी

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 27 September 96, Havildar Jaskaran Singh was responsible to hold the most vulnerable part of the cordon in the paddy fields in Ferozpora in Baramulla District, Jammu and Kashmir. Two terrorist commanders, who were holed up in Ferozpora, slipped into the paddy fields during the night with the hope to use the dense growth to their advantage to get away.

On seeing the fields being searched, the terrorist chargedfiring at Havildar Jaskaran Singh hitting him with the initial volley. Unmindful of his injury, Havildar Jaskaran Singh swiftly changed position effectively cutting off escape of the terrorists and killed the leading terrorist.

The terrorist fired a second volley at point blank range at Havildar Jaskaran Singh injuring him critically and dropped behind a bund in a bid to get through. Hav Jaskaran, with a supreme effort pulled himself up onto the bund and with calm composure shot dead the fleeing terrorist who was the most wanted terrorist.

Havildar Jaskaran Singh single handedly decaipated the terrorist organisation. He however later succumbed to his injuries on 27.09.1996.

Havildar Jaskaran Singh thus, displayed extra ordinary individual courage, dedication and indomitable sprit at the cost of his own life.

<u>कैप्टन अमितेन्द्र कुमार सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन ब्लैक टोर्नेडो, जनपद फतेहपुर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 63425, कैप्टन अमितेन्द्र कुमार सिंह का जन्म 01 सितम्बर 1979 को जनपद रायबरेली में श्रीमती अमरावती देवी तथा नायब सूबेदार छत्र धारी के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय वीरपुर, देहरादून तथा मैट्रिक केन्द्रीय विद्यालय नं 1, लखनऊ से पूरी की। ए पी एस, लखनऊ से इण्टरमीडिएट तथा शिया पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, लखनऊ से बी एस सी की डिग्री हासिल की। 13 दिसम्बर 2003 को इन्होंने भारतीय सेना के तोपखाना में कमीशन लिया और 22 मीडिएम रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 51 स्पेशल एक्शन ग्रुप में हुई।

27 नवंबर 2008 को कैप्टन अमितेंद्र कुमार सिंह को होटल ओबेरॉय (मुंबई) में आतंकवादियों का पता लगाने और उन्हें खत्म करने का काम सौंपा गया था, जहां आतंकवादी पहले ही लगभग 34 नागरिकों को मार चुके थे।

कैप्टन अमितेंद्र कुमार सिंह ने अपनी टीम का नेतृत्व किया, जिसमें कुल 39 विदेशी और भारतीय नागरिकों को बचाया। संदिग्ध कमरे में घुसने का प्रयास करते हुए उनकी टीम ने आतंकियों की ओर से भीषण फायरिंग का सामना किया। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए वह लक्ष्य कक्ष के प्रवेश द्वार की ओर बढ़ते रहे।

उन्होंने तुरंत अपनी टीम को सभी भागने के रास्तों को बंद करने के लिए तैनात किया और आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ शुरू कर दी। उन्हें अपनी ओर बढ़ते देख आतंकियों ने ग्रेनेड फेंक दिया और उनकी टीम पर अंधाधुंध फायरिंग करने लगे। कैप्टन अमितेंद्र कुमार सिंह “फायर और मूव” के रणकौशल का उपयोग करते हुए आगे बढ़ते रहे। इसी बीच ग्रेनेड का एक टुकड़ा उनकी बायीं आंख में आ लगा। गंभीर चोट के बावजूद अधिकारी ने आतंकवादियों पर प्रभावी रूप से नियन्त्रण पाना जारी रखा और बेहोश होने तक अपनी टीम का नेतृत्व किया।

कैप्टन अमितेन्द्र कुमार सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में असाधारण नेतृत्व, अदम्य साहस, वीरता और कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया। इनकी असाधारण वीरता और साहस के लिए इन्हें 27 नवम्बर 2008 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन अमितेन्द्र कुमार सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 27 November 2008, Captain Amitendra Kumar Singh, was tasked to locate and eliminate terrorists from Hotel Oberoi, Mumbai, where terrorists had already killed approximately 34 civilians.

The officer led his team, which rescued 39 foreign and Indian nationals, in the hour of total darkness. While carrying out Intervention in the suspected room, his team drew fierce fire from the terrorists. With utter disregard to personal safety, he kept moving towards the entrance of the target room.

He immediately deployed his team to plug all the escape routes and started closing in with the terrorists. Seeing him advance towards them, the terrorists lobbed grenades and kept firing at his team. Undeterred the officer kept moving forward using fire and move tactics till he was hit by a splinter of the grenade, injuring his left eye. Despite the grievous injury, the officer continued to bring down effective fire on the terrorists and led his team till he became unconscious.

Captain Amitendra Kumar Singh displayed exceptional leadership, indomitable spirit, conspicuous bravery and dedication towards duty in fighting the terrorists.

<u>लेफ्टीनेंट मनीष सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद फतेहपुर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 74882 एफ, लेफ्टीनेंट मनीष सिंह का जन्म 29 फरवरी 1988 को जनपद फतेहपुर में श्रीमती सुनीता सिंह और श्री लायक सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा कुंदन विद्या मंदिर, लुधियाना से पूरी की। 11 दिसम्बर 2010 को भारतीय सेना की पैरा रेजिमेंट में कमीशन लिया और 09 पैरा विशेष बल में पदस्थ हुए।

25 सितम्बर 2012 को लेफ्टिनेंट मनीष सिंह के दल को जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के एक क्षेत्र में आतंकवादियों का पता लगाने का कार्य सौंपा गया। तलाशी अभियान के दौरान एक आतंकवादी ने अचानक अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें लेफ्टिनेंट मनीष सिंह घायल हो गये। अपनी चोटों की परवाह किए बिना वह रेंगते हुए आगे बढ़े और उस पर नियंत्रण पा लिया। मुठभेड़ के दौरान गंभीर चोटों और तेजी से होते रक्तस्राव के बावजूद उन्होंने सुरक्षित स्थान पर जाने से मना कर दिया तथा अपनी स्थिति को संभाले रखा। अंत में जैसे ही आतंकवादी ने इन पर हमला किया इन्होंने बिल्कुल निकट से उस पर गोली चलाकर उसे मार गिराया। इस साहसपूर्ण कार्यवाही में इन्होंने अपने साथी सैनिकों की सुरक्षा सुनिश्चित की और नागरिकों के घरों का नुकसान होने से बचाया।

लेफ्टिनेंट मनीष सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अनुकरणीय साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उनके इस साहस और नेतृत्व के लिए उन्हें 25 सितम्बर 2021 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए
लेफ्टिनेंट मनीष सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 25 September 2012, Lieutenant Manish Singh's squad was tasked to track escaping terrorists in general area of Kupwara district in Jammu and Kashmir. During the search, a terrorist suddenly opened indiscriminate fire injuring Lieutenant Manish Singh. Despite injuries, he crawled forward and kept the terrorist pinned down.

During the encounter, the officer displayed leadership of the highest order in refusing to be evacuated and notwithstanding his grievous injuries and blood loss, held on to his position. Finally as the terrorist charged upon him, he shot him dead at near point blank range. His courageous action ensured the safety of his men and ruled out collateral damage to civilian houses.

Lieutenant Manish Singh displayed courage of exemplary order, conspicuous gallantry and outstanding leadership in fighting the terrorist.

हवलदार रक्षपाल सिंह
शौर्य चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2974046, हवलदार रक्षपाल सिंह का जन्म 28 दिसम्बर 1958 को जनपद मैनपुरी के गांव नगलाधीर में श्रीमती श्यामा देवी और श्री वीरेन्द्र सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा एस पी जी इन्टर कालेज एका मैनपुरी से पूरी की। यह 26 अगस्त 1972 को भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के उपरान्त 27 राजपूत रेजिमेंट मे तैनात हुए।

20 नवंबर 92 को 27 राजपूत ने जम्मू कश्मीर के ग्राम मिनीपुरा करिंकशिवन की घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया। घर-घर तलाशी के दौरान चार्ली कंपनी के हवलदार रक्षपाल सिंह अपने तीन अन्य साथी सैनिकों के साथ तलाशी के लिए एक घर में घुस गए। इसी दौरान एक खूंखार आतंकवादी ने तलाशी दल पर छिपे ठिकाने से गोलियां चला दीं। हवलदार रक्षपाल सिंह को उग्रवादी की ए के - 56 असॉल्ट राइफल के पहले फायर से गोली लग गयी। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद हवलदार रक्षपाल सिंह ने जवाबी फायरिंग की और उग्रवादी को घायल कर दिया। घायल आतंकवादी ने खुद को घेरा हुआ पाकर तलाशी दल पर ग्रेनेड फेंकने का इरादा किया, जो सिर्फ 15 मीटर दूर था। हवलदार रक्षपाल सिंह आतंकवादी को ग्रेनेड से पिन निकालते हुए देख रहे थे। बिजली की गति के साथ अन्य सदस्यों को सुरक्षा के लिए धकेल दिया, हथगोले के विस्फोट से पहले उन्होंने आड़ ले लिया। उनके साहसिक, त्वरित और समय पर कार्रवाई ने उनके साथियों की जान बचाई।

हवलदार रक्षपाल सिंह घायल होने के बावजूद उग्रवादी की ओर से आ रहे फायर का लगातार जबाब दे रहे थे। एक वीरतापूर्ण मुठभेड़ में हवलदार रक्षपाल सिंह ने आतंकवादी को मार गिराया। गंभीर हालत में उन्हें 92 बेस अस्पताल ले जाया गया, जहां वह शहीद हो गये।

उल्लेखनीय वीरता, दृढ़ संकल्प और कर्तव्य के प्रति समर्पण के लिए हवलदार रक्षपाल सिंह को 20 नवम्बर 1992 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से अलंकृत किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती शकुन्तला देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 20 November 92, 27 RAJPUT carried out a cordon and search operation of village Minipura Karinkshivan (Jammu and Kashmir). During house to house search Havildar Raksh Pal Singh of Charlie Company entered a house with three other ranks for search. At this time one dreaded militant opened fire from well concealed hideout on the search party. Havildar Raksh Pal Singh suffered a gun shot wound on his stomach from the first burst of the militant AK-56 assault rifle fire. Despite being seriously injured Havildar Raksh Pal Singh returned the fire and wounded the militant. The injured militant on finding himself cornered intended to throw a hand grenade on the search party which was just 15 metres away. Havildar Raksh Pal Singh was observing the militant pulling out the pin from the grenade. With lightening speed be pushed the other members to safety, he simultaneously occupied a safe place before the grenade exploded. His daring, quick and timely action saved the lives of his comrades.

Despite being injured Havildar Raksh Pal Singh continued to return the fire which was coming on him from the militant. In a gallantry fought encounter Havildar Raksh Pal Singh killed the militant. He was than evacuated to 92 Base Hospital in a serious condition, where, he succumbed to his injuries.

For displaying conspicuous bravery, determination and devotion to duty Havildar Raksh Pal Singh was awarded Shaurya Chakra (Posthumous).

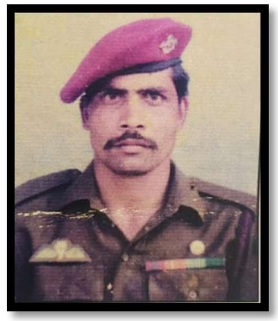

<u>हवलदार राजवीर सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13615366 एम, हवलदार राजवीर सिंह का जन्म 10 जनवरी 1964 को जनपद फिरोजाबाद के गांव जौधरी में श्रीमती उर्मिला देवी और श्री सूरजपाल सिंह के यहां हुआ था। वह 30 नवम्बर 1983 को भारतीय सेना की पैरा रेजिमेट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के उपरान्त 9 पैरा विशेष बल में तैनात हुए।

हवलदार राजबीर सिंह को 19 नवंबर 1997 को जम्मू और कश्मीर के पुंछ जिले में एक दल का नेतृत्व सौंपा गया। गुप्त सूचना के आधार पर यह दल चार दस्तों में सोकी की दोमेल क्षेत्र में एक मिशन पर चल पड़ा। हवलदार राजवीर सिंह ने अपने दस्ते को आतंकवादियों को देखते ही तुरंत गोली चलाने का आदेश दिया। एकाएक सैनिकों द्वारा घेरे जाने पर आतंकवादी स्तब्ध रह गए। इसी बीच हवलदार राजबीर सिंह ने एक आतंकवादी को मार गिराया। दोनों ओर से भीषण गोलीबारी होने लगी और इसी बीच उनकी बांह में एक गोली आकर लग गयी। अपने दल के नुकसान को बचाने के लिए हवलदार राजवीर सिंह हैंड ग्रेनेड फेंकते हुए आगे बढ़े और एक आतंकवादी को ढेर कर दिया। आतंकवादियों द्वारा की गई गोलीबारी और फेंके गये हैंड ग्रेनेड के फटने से वह और घायल हो गए। घायल होने के बाद भी वह अपने दल को फायर आदेश देते रहे। उनकी इस साहसिक कार्यवाही से घबराकर आतंकवादी भाग निकले। बाद में वहां से तीन ए के - 47 राइफल और एक विमानभेदी मिसाइल बरामद की गयी।

इस कार्यवाही में हवलदार राजवीर सिंह ने साहस, नेतृत्व और रणनीतिक कौशल का प्रदर्शन किया। जिससे दो आतंकवादियों का सफाया हो सका। उनके इस साहस और नेतृत्व के लिए उन्हें 09 नवम्बर 1997 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए हवलदार राजवीर सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 19th November 1997, Havildar Rajbir Singh was assigned commander of a team operating in Poonch district (Jammu and Kashmir). Based on self generated intelligence the team moved in four columns on a mission in the area of Sauki – Ki-domel.

Havildar Rajbir Singh who was leading one of the column saw three to four militants and immediately ordered his squad to open fire. Realising that the militants would escape into the forest he decided to charge at the militants. The militants were surprised and shocked by this ferocious charge. Havildar Rajbir Singh in the process killed one of the militant with a head shot.

The militant thereafter took advantage of the steep cutting and forest cover and started bringing down heavy fire. The first burst of bullet hit Havildar Rajbir Singh in his arm. He and his squad exposed and drew intense fire. Havildar Rajbir Singh realising that drastic action was required to prevent his squad from being decimated rose to the occasion undaunted by his injury and the hails of bullets. He in an act of conspicuous gallantry moved ahead lobbying grenades and killing one more militant. He again suffered serious multiple shrapnel injuries due to militant grenade. Despite bleeding profusely he continue to give instructions to his squad to put down effective fire. His act of daredevilry made the remaining militant flee. The overall operation resulted in killing of three top ranking foreign militants and serious injured to another. In addition three AK-47 rifles and one shoulder fired anti aircraft missiles SAM-7 were also recovered.

Havildar Rajbir thus displayed gallantry and indomitable courage far beyond the call of duty in fighting the militants.

<u>नायब सूबेदार विजय कुमार यादव</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश)

जे सी 461439 एच, नायब सूबेदार विजय कुमार यादव का जन्म 01 जनवरी 1978 को जनपद फिरोजाबाद के गांव नगला गुलाल में श्रीमती उर्मिला देवी तथा श्री राधेश्याम यादव के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव से पूरी की। 26 अप्रैल 1996 को भारतीय सेना की मराठा लाइट इंफेन्ट्री रेजिमेंट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के उपरान्त 15 मराठा लाइट इंफेन्ट्री रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

15 मराठा लाइट इन्फैंट्री के नायब सूबेदार विजय कुमार यादव नियंत्रण रेखा पर फॉरवर्ड पोस्ट पर तैनात कंपनी क्विक रिएक्शन टीम का हिस्सा और पोस्ट कमांडर के रूप में तैनात थे।

फरवरी 2018 में अपनी नजदीकी चौकी पर दुश्मन द्वारा कार्यवाही प्रारंभ होने का पता लगने पर नायब सूबेदार विजय कुमार यादव तुरंत हरकत में आ गये और लक्षित चौकी पर आपसी सहायता उपलब्ध कराने के लिए गोलीबारी करने लगे। इन्होंने देखा कि दुश्मन सैनिक छिप कर मोर्चा संभाल रहे थे। अपनी नजदीकी चौकी पर खतरे को भांपते हुए व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, त्वरित कार्यवाही बल का नेतृत्व करते हुए, दुश्मनों की भारी गोलीबारी के बीच घटना स्थल की और बढ़ते गए। निडरतापूर्वक अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए शीघ्रता से दुश्मन की बार्डर एक्शन टीम और आतंकवादियों की घेराबंदी की। नायब सूबेदार विजय कुमार यादव रेंगते हुए आगे बढ़े और बिल्कुल नजदीक पहुंचकर एक आतंकवादी को मार गिराया। इसके बाद वे झपट कर आगे बढ़े और दूसरे आतंकवादी, जो कि मारे गये आतकवादी को ले जाने का प्रयास कर रहा था, उसे गोली मार दी। इस साहसिक कार्यवाही को देखकर शत्रु अचंभित हो गया और भागने को मजबूर हुआ। मारे गये आतंकवादी के शव के महत्व को समझते हुए उन्होंने उसके शव को अपने कब्जे में ले लिया। उनके निडर, युक्तिपरक, साहसिक कार्यवाही ने बार्डर एक्शन टीम द्वारा हमले की योजना को विफल कर दिया।

नायब सूबेदार विजय कुमार यादव ने सराहनीय वीरता, अनुकरणीय नेतृत्व और निडरता का परिचय दिया। उनके इस साहसिक कृत्य के लिए उन्हें 18 फरवरी 2018 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए नायब सूबेदार विजय कुमार यादव

प्रशंसात्मक उल्लेख

Naib Subedar Vijay Kumar Yadav of 15 Maratha Light Infantry was part of Company Quick Reaction Team and Post Commander deployed on forward post on line of control.

In February 2018, upon realising that enemy actions has been initiated onto own neighbouring post Nb Sub Vijay quickly sprung into action and provided mutual support fire to the targeted post. However, soon he discovered that enemy was taking cover in defiladed positions. Realising danger to own neighbouring post, with complete disregard to personal safety he led the Quick Reaction Team and rushed towards the incident site under heavy enemy fire. Fearlessly leading his team swiftly cordoned off the enemy Border Action Team and terrorists.

Nb Sub Vijay Kumar Yadav crawled ahead and killed one terrorist at close range. He then pounced ahead and shot another terrorist trying to retrieve the dead terrorist which led the enemy to seek immediate disengagement and flee. Realising the importance he held onto the dead terrorist retrieving his body. His fearless yet tactically sound act led to foiling of planned attack by Border Action Team.

Naib Subedar Vijay Kumar Yadav displayed commendable bravery, exemplary leadership, grit determination, selflessness and fearless spirit.

सेकेन्ड लेफ्टीनेंट विपिन भाटिया

शौर्य चक्र

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 52877, सेकेन्ड लेफ्टीनेंट विपिन भाटिया का जन्म 16 जनवरी 1973 को जनपद गौतमबुध्द नगर में श्रीमती मधु भाटिया और लेफ्टीनेंट कर्नल एस पी भाटिया के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय नं 2, जयपुर से पूरी की। 11 जून 1994 को भारतीय सेना की आर्डिनेंस कोर में कमीशन लिया और 27 राजपूत रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

28 जुलाई 1994 को विशिष्ट सूचना के आधार पर 27 राजपूत रेजिमेंट ने रेबन गांव में घेराबंदी कर तलाशी अभियान चलाया। लगभग 14:15 बजे, जब कमांडिंग ऑफिसर की त्वरित प्रतिक्रिया टीम और एक कंपनी रेबन गाँव के पास पहुँची, आतंकवादियों ने उन पर भारी मात्रा में यूनिवर्सल मशीन गन और ए के राइफल से फायर शुरू कर दिया ।

सेकेन्ड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने फायरिंग करने वाले उग्रवादियों को चकमा देने के लिए तुरंत अपनी प्लाटून को संगठित किया। अपनी प्लाटून का आगे बढ़कर नेतृत्व करते हुए और एक व्यक्तिगत उदाहरण स्थापित करते हुए, सेकेन्ड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने व्यक्तिगत सुरक्षा की पूरी तरह से अवहेलना करते हुए और आतंकवादियों द्वारा लगातार भारी मात्रा में गोलाबारी के बावजूद वह आगे बढ़ते हुए, आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गये। सेकेन्ड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने अनुकरणीय नेतृत्व और बहादुरी का परिचय देते हुए एक कुख्यात आतंकवादी को मार गिराया, जो एम जे एफ का कंपनी कमांडर भी था और मारे गए आतंकवादी के पास से एक ए के - 56 राइफल बरामद की गयी। गोलाबारी में सेकेन्ड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया को उनकी दोनों जांघों पर गोली लग गयी। उन्होंने घायल होने के बावजूद आगे बढ़ना जारी रखा और एक और खूंखार पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकवादी को मार गिराया और मृत आतंकवादी के पास से एक ए के - 56 राइफल बरामद किया। उस दिन के ऑपरेशन में एक बटालियन कमांडर और आतंकवादी संगठन एम जे एफ के एक कंपनी कमांडर सहित छह आतंकवादी मारे गए और बड़ी मात्रा में हथियार और गोला बारूद बरामद किया गया।

सेकेन्ड लेफ्टिनेंट विपिन भाटिया ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना विशिष्ट बहादुरी, प्रेरक नेतृत्व और साहस का प्रदर्शन किया। उनके इस साहस और नेतृत्व के लिए उन्हें 28 जुलाई 1994 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 28 July 1994 based on specific information, 27 Rajput carried out cordon and search operation in village Reban. At about 1415 hours, while Commanding Officer's Quick Reaction Team and one company approached village Reban, militants opened heavy volume of universal Machine Gun and AK fire on the troops.

Second Lieutenant Vipin Bhatia immediately organised his platoon to outmanoeuvre the firing militants. Leading his platoon from the front and setting a personal example, Second Lieutenant Vipin Bhatia closed in with the militants despite continuous and heavy volume of fire by them totally disregarding personal safety. Second Lieutenant Vipin Bhatia showing exemplary leadership qualities and bravery, personally shot dead one of the notorious militants who was also a company commander of MJF and recovered one Rifle AK 56 from the slain militant. In the fire fight Second Lieutenant Vipin Bhatia sustained bullet injuries on both his thighs. Undeterred by the injury sustained, he continued to advance and killed another dreaded Pakistan trained militant and recovered one Rifle AK 56 from the dead militant. In the operation that day, six militants were killed including a battalion commander and a company commander of the militant outfit MJF and large quantities of arms and ammunition were recovered.

Second Lieutenant Vipin Bhatia, thus, displayed conspicuous bravery and leadership qualities with utter disregard to his personal safety.

<u>कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन आर्चिड, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 49135, कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी का जन्म 19 अगस्त 1967 को जनपद पिथौरागढ़, उत्तराखंड में श्रीमती लक्ष्मी भण्डारी और नायब सूबेदार सोहन सिंह भण्डारी के यहां हुआ था। इन्होंने जूनियर हाईस्कूल से इन्टरमीडिएट तक की शिक्षा मिलिट्री स्कूल धौलपुर, राजस्थान से पूरी की। 16 दिसम्बर 1989 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में कमीशन लिया और 19 राजपूताना राइफल्स में पदस्थ हुए।

कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी अपनी यूनिट की तैनाती वाली जगह में हो रही विद्रोही गतिविधियों से परिचित थे। उन्होंने 07 अप्रैल 1998 को कई साहसिक कार्यवाहियों का नेतृत्व किया। त्वरित कार्यवाही दल में एक सदस्य के रूप में एक मकान पर छापा मारा और वहां से गोला बारूद और आपत्तिजनक कागजात बरामद किया। उसी दिन संदिग्ध विद्रोहियों को पकड़ने के लिए कई कार्यवाहियां की गयीं जिसमें कुल 14 संदिग्ध विद्रोहियों को पकड़ा गया। 08 अप्रैल 1998 को इन्होंने 04 कट्टर विद्रोहियों को पकड़ा। कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी ने पकड़े गये विद्रोहियों से मिली सूचना के आधार पर 10 अप्रैल 1988 को मुश्किल रास्तों से जाकर नागालैंड के भीतरी इलाकों से 04 कट्टर विद्रोहियों को पकड़ लिया।

15 अप्रैल 1998 की रात में मोकोकचंग में विद्रोहियों के छिपे होने की बात का पता लगा लिया और तुरंत एक त्वरित कार्यवाही दल को लेकर संदिग्ध मकान में घुस गये। सैनिकों को घर के अन्दर देखकर एक विद्रोही ने अपनी राइफल उठानी चाही तब कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी ने उसे दबोच लिया। इस कार्यवाही में और चार विद्रोहियों को पकड़ लिया गया।

इस तरह कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी ने विभिन्न कार्यवाहियों में तत्परता, बुध्दिमत्ता, साहस और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता का परिचय दिया। उनकी इस तत्परता, बुध्दिमत्ता और साहस को सम्मानित करते हुए उन्हें 15 अप्रैल 1998 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन गणेश सिंह भण्डारी

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 07 April 1998, Captain Ganesh Singh Bhandari being familiar with the area and the insurgent activities led many daring operations in Nagaland. As part of the Quick Reaction Team, he raided a house and recovered ammunition and incriminating documents of intelligence value. On the same day, multiple another search operations were launched by units of the formation which led to apprehension of fourteen insurgent. Again on 08 April 1998, he personally apprehended four hardcore insurgents. On 10 April 1998 without respite, he pursued lead after lead provided by the captured insurgents, apprehending four hardcore insurgents in a stealth operation through unprotected routes in remote areas.

On night of 15 April 1998, he tracked the presence of armed underground insurgent in Mokokchung. He immediately led Quick Reaction Team entry into a suspected house. Even as one of the insurgent tried to reach out for his loaded weapon, Captain Ganesh Singh Bhandari pounced on him and physically overpowered him. In this operation he captured four hardcore insurgents.

Captain Ganesh Singh Bhandari, thus, displayed flinching bravery, professionaliam, immense contributions beyond the call of duty.

<u>सूबेदार जय सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

जे सी 488513, सूबेदार जय सिंह का जन्म 15 सितम्बर 1958 को जनपद गौतम बुध्द नगर के ग्राम बीरपुर में श्रीमती श्यामो देवी और श्री कृपाल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव से पूरी की। 14 सितम्बर 1977 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 7 जाट रेजिमेंट में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 45 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

सूबेदार जय सिंह राष्ट्रीय राइफल्स यूनिट में प्लाटून कमांडर के रूप में तैनात थे। 31 अक्टूबर 2003 को उन्हें जम्मू कश्मीर के पुंछ जिले के एक गांव में संदिग्ध घरों के चारों ओर आंतरिक घेराबंदी करने के लिए तैनात किया गया था। खुद को घिरा हुआ देखकर आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से फायर खोल दिया जिसके परिणामस्वरूप भीषण गोलाबारी हुई। सूबेदार जय सिंह ने प्रभावी ढंग से अपने घेरे को फिर से समायोजित किया और बड़ी चतुराई से लक्ष्य मकान पर फायर करने लगे। खिड़की से भागते हुए एक आतंकवादी को उन्होंने गोली मार दी। दो अन्य आतंकवादी सूबेदार जय सिंह की स्टॉप पार्टी पर हमला करते हुए घर से बाहर भागे, उनमें से एक के पैर में इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस बंधा हुआ देखा गया। आसन्न मौत के सामने विशिष्ट बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए, अपने साथी सैनिकों को बचाने के लिए सूबेदार जय सिंह, अपने साथियों से बाहर निकल कर आतंकवादी को मार गिराया। वह घातक रूप से घायल हो गए थे फिर भी आगे बढ़ना जारी रखा। हैंड ग्रेनेड फेंककर उन्होंने तीसरे आतंकवादी को भी समाप्त कर दिया। घातक रूप से घायल होने के कारण वह वीरगति को प्राप्त हो गये।

सूबेदार जय सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में अदम्य साहस, संकल्प और वीरता का परिचय दिया तथा अपने साथियों को बचाने के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके अदम्य साहस और कर्तव्यनिष्ठा के लिए 31 अक्तूबर 2003 को उन्हें मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती सुखबीरी देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

Subedar Jai Singh has been serving with a Rashtriya Rifles Unit as Platoon Commander. On 31 October 2003 when he was deployed to lay inner cordon around suspect houses at a village in Poonch District in Jammu and Kashmir, terrorist opened up with automatics resulting in fierce firefight. Subedar Jai Singh readjusted his cordon despite being engaged effectively and set ablaze target house with great ingenuity. One terrorist found escaping from window was shot dead by him. Two other terrorists ran out of house charging at Subedar Jai Singh's stop party, one of them was observed with Improvised Explosive Device strapped on leg. Displaying most conspicuous bravery in the face of imminent death, to save his subordinate, Subedar Jai Singh rushed out from his stop, blazing his automatic, intercepted the terrorist and killed him. He was mortally injured, yet continued further, eliminated third terrorist by lobbying hand grenade before succumbing to injuries.

Subedar Jai Singh displayed indomitable resolve, raw courage and audacious action in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice to save his comrades.

<u>कैप्टन शकुल त्यागी</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

22533 एफ (पी), कैप्टन शकुल त्यागी का जन्म 09 मार्च 1972 को दिल्ली में श्रीमती दीपा त्यागी और श्री सुरेन्द्र कुमार त्यागी के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा विशप काटन स्कूल, शिमला से पूरी की और 21 जून 1993 को भारतीय वायु सेना में पायलट के रूप में कमीशन लिया और 152 हेलीकाप्टर यूनिट मे पदस्थ हुए।

08 अप्रैल 2011 को गढ़ चिरौली से लगभग 170 किलोमीटर दूर कंडोली के घने जंगलों में महाराष्ट्र पुलिस के सी - 60 स्पेशल टास्क फोर्स द्वारा गहन नक्सल विरोधी अभियान चलाया जा रहा था। पवन हंस हेलीकॉप्टर्स लिमिटेड के साथ काम करने वाले कैप्टन शकुल त्यागी को नक्सल विरोधी अभियानों के लिए झारखंड, छत्तीसगढ़ और गढ़ चिरौली (महाराष्ट्र) में तैनात बी एस एफ के हेलीकॉप्टर ध्रुव को उड़ाने का काम सौंपा गया था।

कैप्टन त्यागी को संदेश मिला कि कंडोली के घने जंगलों में चल रहे ऑपरेशन में तीन कमांडो को गोली लगी है। हताहत एक नाले के बगल में घने जंगलों वाले क्षेत्र में थे। सूर्यास्त नजदीक होने और नक्सल प्रभावित क्षेत्र में हताहतों को ले जाने में शामिल खतरे को देखते हुए, उन्हें पास के किसी भी हेलीपैड पर ले जाना संभव नहीं था। इस प्रकार चल रहे आपरेशन में सीमित क्षेत्र में घने जंगलों के बीच हेलीकॉप्टर को उतारने की आवश्यकता थी।

कैप्टन त्यागी 17:25 बजे गढ़ चिरौली से एक डॉक्टर और एक मेडिकल असिस्टेंट के साथ विमान में सवार हुए और करीब 35 मिनट की उड़ान के बाद मौके पर पहुंचे। उन्होंने एक रणनीति बनाई और पेड़ के ऊपर ऊंचाई पर रहकर सैनिकों की तलाश करने लगे। 05 मिनट के बाद जमीन पर मौजूद कमांडो ने महसूस किया कि जिस स्थान पर हेलीकॉप्टर को उतरने का मौका था, वह धारा के बगल में था। वे घायलों को लेकर धारा के लिए निकले और हेलीकॉप्टर की ओर टार्च से रोशनी फेंकी। फिर कैप्टन त्यागी ने पार्टी को देखा और हेलीकॉप्टर को सुरक्षित रूप से उतारने के लिए पर्याप्त निकासी के साथ स्ट्रीम बेड के बगल में उतरे। वह चलते रोटर के साथ हेलिकॉप्टर से बाहर निकले और घायलों को हेलीकॉप्टर में चढ़ने में मदद की।

इसी बीच पास के इलाके से गोलियां चलने लगीं और उन्होंने जमीन पर मौजूद कमांडो के संकेतों को देखा कि वे तुरंत इलाके को खाली कर दें। कैप्टन त्यागी ने अपने शांत और पेशेवर तरीके से हेलीकॉप्टर की सुरक्षा से समझौता किए बिना एक त्वरित निर्णय को अंजाम दिया, जिससे कमांडो को बचाने और सुरक्षित उड़ान भरने का दृढ़ संकल्प दिखाया गया।

कैप्टन शकुल त्यागी ने कीमती जिंदगियों और हेलीकॉप्टर को बचाने के लिए उच्च स्तर के साहस, कुशाग्रता और सूझबूझ का परिचय दिया। कैप्टन शकुल त्यागी द्वारा दिखाये गये साहस, बुध्दिमत्ता और सूझबूझ के लिए उन्हें 08 अप्रैल 2011 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया। कैप्टन शकुल त्यागी बाद में पदोन्नत होकर विंग कमाण्डर बने और 30 जून 2009 को वायु सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 08 April, 2011, intense anti-naxal operation was being carried out by C 60 Special Task Force of Maharashtra Police in the thick jungles of Kandoli about 170 Kms away from Gadchiroli. Captain Shakul Tyagi, working with Pawan Hans Helicopters Ltd, was assigned to fly BSF helicopter (DHRUV) deployed in Jharkhand, Chhattisgarh and Gadchiroli (Maharashtra) for anti naxal operations.

Captain Tyagi received a message that three commandos, had sustained bullet injuries in the ongoing operations in the thick jungles of Kandoli. The casualties were in a confined area next to a rivulet. Considering the approaching sunset and the danger involved in moving the casualties in an area infested with naxals, it was not possible to move them to any nearby helipad. Thus, there was a need to land the helicopter amidst thick vegetation in confined area right in the center of ongoing operations.

Captain Tyagi got airborne at 1725 hrs with one doctor and one medical assistant on board from Gadchiroli and after about 35 minutes of flying reached the spot. He chalked out a strategy and descended to tree top level and set up an orbit to look up for troops. After 5 minutes the Commandos on ground realized that the only place where helicopter had a chance to land was next to the stream, they came out to the stream carrying the injured and showed torches towards the helicopter. He then sighted the party and landed next to the stream bed with just enough clearance available to safely land the helicopter. He walked out of the helicopter with rotors running and assisted the injured into the helicopter. In the mean time gun shot started from the nearby area and he noticed the frantic signals from the commandos on ground to immediately vacate the area. Capt Tyagi keeping his cool and in a professional manner executed a quick gateway without compromising the safety helicopter thereby showing a steel resolve to save the commandos and safe flying.

Captain Shakul Tyagi displayed a high degree of courage, sharp acumen and presence of mind in emergent hostile situation to save precious lives and Helicopter.

<u>विंग कमान्डर निखिल नायडू</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन राहत, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

23986ए एफ (पी), विंग कमान्डर निखिल नायडू का जन्म 03 जून 1974 को भोपाल, मध्य प्रदेश में श्रीमती निहारिका नायडू और लेफ्टीनेंट जनरल एम एल नायडू के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय नं 3, दिल्ली से पूरी की। 29 जून 1996 को इन्होंने भारतीय वायु सेना में पायलट के रूप मे कमीशन लिया और 30 स्क्वाड्रन एयरफोर्स में पदस्थ हुए।

विंग कमांडर निखिल नायडू बचाव कार्यों के लिए पहले कुछ उत्तरदाताओं में से थे और उन्हें विशेष रूप से उनके विशाल अनुभव के कारण कार्य करने के लिए चुना गया था। उन्होंने 5200 किलोग्राम से अधिक राहत सामग्री का हवाई परिवहन किया और 'आपरेशन राहत' के दौरान उनके द्वारा उड़ाई गई लगभग 56 उड़ानों में 626 लोगों को बचाया है। उन्होंने कम से कम तीन अलग - अलग मौकों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसमें उन्होंने अपने विमान और अपनी टीम की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए विशिष्ट साहसी मिशनों को अंजाम दिया। 20 जून 2013 को विंग कमांडर निखिल नायडू ने अपेक्षित बचाव प्रयासों की महत्ता और फंसे हुए तीर्थ यात्रियों तक पहुंचने में होने वाली कठिनाई का सही मूल्यांकन किया। उन्होंने अद्भुत उड़ान कौशल और यथार्थता की मांग वाले अत्यंत कठिन बचाव मिशनों में से एक मिशन के लिए स्वेच्छा से तैयार हो गये। `जंगल चट्टी` के पास एक दुर्गम स्थान पर फंसे हुए तीर्थयात्रियों को तत्काल बचाने की आवश्यकता थी लेकिन वहां उतरने के लिए कोई जगह उपलब्ध नहीं थी। एक छोटे लैंडिंग स्थान के महत्व को समझते हुए विंग कमांडर नायडू ने दो नागरिक पर्वतारोहियों को 'जंगल चट्टी' के पास उच्च अवरोधों और अति क्षमता वाले बिजली के केबल से घिरी एक छोटी सी जगह पर उतार दिया। इसके बाद उन्होंने एक अस्थायी हेलीपैड तैयार करने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण उपकरणों से लैस भारत तिब्बत सीमा पुलिस के 10 अन्य जवानों को भी नीचे उतार दिया। इस साहसी और कुशल ऑपरेशन ने अन्य हेलीकॉप्टरों के लिए जंगल चट्टी के किनारे पर उतरने का मार्ग प्रशस्त किया और अंततः 700 से अधिक फंसे हुए तीर्थयात्रियों को निकाला गया।

25 जून 2013 को ऑपरेशन के दौरान भारतीय वायुसेना का एक हेलीकॉप्टर लापता हो गया जिसको खोजने के मिशन के लिए विंग कमांडर नायडू स्वेच्छा से तैयार हो गये और दुर्घटनास्थल का पता लगाने में कामयाब रहे। दुर्घटनास्थल तक पहुँचने की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बेहद खराब मौसम में लगभग 10,000 फीट पर चार गरुड़ कमांडो को उतारकर एक बार फिर विशिष्ट साहस और असाधारण उड़ान कौशल का प्रदर्शन किया। अपने विशाल अनुभव और पेशेवर कौशल का उपयोग करते हुए इस साहसी अधिकारी ने अत्यंत प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों में सच्ची वायु योद्धा भावना का प्रदर्शन किया और सुनिश्चित किया कि विशेष बल दुर्घटना स्थान तक जल्द से जल्द पहुंचने में सक्षम हो सकें।

11 जुलाई 2013 को जब उनका हेलीकॉप्टर रात में गौचर में एक भारत तिब्बत सीमा पुलिस के हेलीपैड पर खड़ा था, तब एक आसन्न भूस्खलन की चेतावनी जारी की गई। उन्होंने रात के मध्य में पूरी तरह से अंधेरा होने के बावजूद तेजी से और अद्भुत तत्परता के साथ काम किया। उन्होंने तुरंत सभी आवश्यक मंजूरी प्राप्त की तथा अपनी कार्य योजना में सुधार किया और इसमें शामिल जबरदस्त जोखिम से पूरी तरह अवगत होने के बावजूद पहाड़ियों में एक चांदनी रात में सुरक्षित रूप से हेलीकॉप्टर को दूसरे सुरक्षित स्थान पर उड़ाया। पहाड़ी इलाकों में अँधेरी रात का ऑपरेशन बेहद जोखिम भरा होता है और इस तरह का मुश्किल मिशन पहली बार भारतीय वायुसेना में उड़ाया गया। अपने जीवन के लिए गंभीर व्यक्तिगत जोखिमों का सामना करने के लिए उनके साहसी कार्यों के परिणामस्वरूप एक बहुमूल्य राष्ट्रीय संपत्ति की बचत हुई। उपरोक्त सभी उदाहरणों में अधिकारी ने इस गंभीर राष्ट्रीय आपदा के समय अत्यंत महत्वपूर्ण मिशनों को अंजाम देते हुए एक असाधारण वीरता और व्यावसायिकता का प्रदर्शन किया।

विंग कमान्डर निखिल नायडू को उनके असाधारण साहस, वीरता और उत्कृष्ट व्यावसायिक क्षमता के लिए 11 जुलाई 2013 को "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए विंग कमान्डर निखिल नायडू

प्रशंसात्मक उल्लेख

Wing Commander Nikhil Naidu was among the first few respondents to the rescue operations and was specially chosen to undertake the task due to his vast experience. He has air transported more than 5200 kg of relief material and saved 626 people in about 56 sorties flown by him during 'Op Rahat'. He has played a pivotal role on at least three different occasions wherein he undertook conspicuously daring missions while ensuring the safety of his aircraft and his team. On 20 Jun 13, Wg Cdr Naidu, correctly assessed the magnitude of the rescue effort required and difficulty in accessing stranded pilgrims. He volunteered for one of the most difficult rescue missions demanding tremendous courage, flying skills and precision. At a remote and inaccessible location near Jungle Chatti, there was an urgent need to rescue stranded pilgrims, even though there was no site available to land.

Realising the importance of creating a small landing site, Wg Cdr Naidu winched down two civilian mountaineers on a small ledge surrounded by high obstructions & high tension cable near 'Jungle Chatti'. Subsequently, he also winched down another 10 ITBP personnel equipped with critical equipment required to prepare a makeshift helipad. This courageous and skillful operation paved the way for other helicopters to land at the Jungle Chatti ledge and eventually resulted in evacuating more than 700 stranded pilgrims.

On 25 Jun 13, after an IAF helicopter went missing during the operations, Wg Cdr Naidu volunteered for the search mission and managed to locate the crash site. Mindful of the need to access the crash site he winched down four Garud Commandos at almost 10,000 ft, under extremely inclement weather, once again demonstrating conspicuous courage and exceptional flying skills. Using his considerable professional acumen backed by his vast experience on the ALH platform, this courageous officer, under extremely adverse environmental conditions of weather, terrain, aircraft limits, displayed true air warrior spirit and ensured that the Special Forces were able to reach the crash location at the earliest.

On 11 Jul 13, while his helicopter was parked at night at an ITBP helipad at Gauchar when an impending landslide alert was issued, he acted swiftly and with amazing alacrity despite being totally dark in the middle of the night. He promptly obtained all the requisite clearances, improvised his action plan and despite being fully aware of the tremendous risk involved, flew the helicopter safely in darkness on a moonless night in hills to another safe location. Dark night operations in the hills under marginal weather conditions are extremely risky and such a difficult and demanding mission has been flown for the first time in the IAF. His courageous actions in the face of grave personal risks to his life resulted in saving a precious national asset which would have perished, if left unattended. In all the above instances, the officer has displayed distinct gallantry and professionalism of an exceptional order while undertaking extremely critical missions in response to this grave national disaster.

सेकेन्ड लेफ्टीनेंट यशवन्त कुमार सिंह
शौर्य चक्र
(जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

एस एस 31538 (आई सी 45235 वाई), सेकेन्ड लेफ्टीनेंट यशवन्त कुमार सिंह का जन्म 06 जुलाई 1961 को बोधगया में श्रीमती ललिता सिन्हा और जस्टिस के बी सिन्हा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी इण्टरमीडिएट की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, दानापुर तथा स्नातक की शिक्षा किरोड़ीमल कालेज, दिल्ली से पूरी की। 27 अगस्त 1983 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 18 कुमाऊं रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

कुमाऊं रेजीमेंट के सेकेंड लेफ्टिनेंट यशवंत कुमार सिंह अग्रिम क्षेत्र में खुफिया अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। नियंत्रण रेखा के पास दुश्मन की बढ़ती गतिविधि और संभावित घुसपैठ की जानकारी दी गई। स्थिति की तात्कालिकता को समझते हुए उन्होंने 05 जून 1985 को जाने के लिए एक गश्ती दल तैयार किया। प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों, अपर्याप्त व्यवस्था और बर्फीले क्षेत्रों में काम आने वाले उपकरण की कमी के बावजूद सेकंड लेफ्टिनेंट यशवंत कुमार सिंह ने अपने सैनिकों को रिज लाइन पर दृढ़ता से नेतृत्व करते हुए स्थापित किया। दुश्मन की तोपखाने की गोलाबारी का सामना करते हुए वह अपने स्थिति पर डटे रहे और अपने वीरतापूर्ण उदाहरण से अपने सैनिकों की उच्च भावना को बनाए रखा। ऐसा करने में उन्होंने अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहुंच मार्गों में से एक को अवरोधित कर दिया, जो कि विरोधी द्वारा कब्जा करने की स्थिति में क्षेत्र का नुकसान होता और उरडोलेप ग्लेशियर के दक्षिण और पश्चिम में तैनात अपने स्वयं के सैनिकों को भी खतरे में डाल देता।

सेकेंड लेफ्टिनेंट यशवंत कुमार सिंह ने इस प्रकार साहस, वीरता, नेतृत्व, भारी बाधाओं का सामना करने के लिए दृढ़ संकल्प और कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया। उनके इस साहसिक पहल के लिए उन्हें 05 जून 1985 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

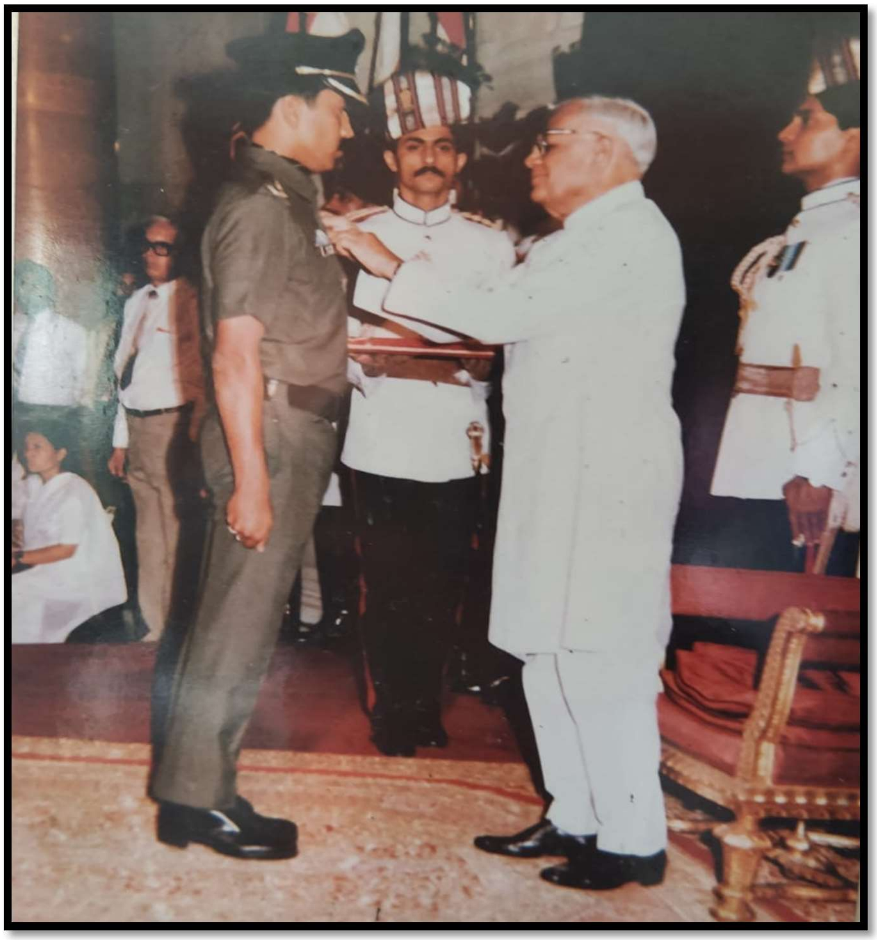

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर वेंकटरमण से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
सेकेंड लेफ्टिनेंट यशवंत कुमार सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

Second Lieutenant Yashwant Kumar Singh of Kumaon Regiment serving as an Intelligence Officer in a forward area was informed of the increased activity of the adversary near the Line of Control and possible infiltration. Appreciating the urgency of the situation he prepared a patrol to move on 5th June, 1985. Inspite of the adverse climatic conditions, inadequate administrative backing and insufficient snow equipment, Second Lieutenant Yashwant Kumar Singh led his men resolutely on to the ridge line and established the post. He stuck to his position and maintained the post in the face of adversary's artillery shelling, keeping his men in high spirit by his own gallant example.

In doing so he denied the adversary one of the vital access routes into own territory which in the event of its capture by the adversary would have resulted in loss of territory and also endangered own troops deployed further to the South and West of Urdolep Glacier.

Second Lieutenant Yashwant Kumar Singh thus displayed courage, gallant leadership, determination in the face of heavy odds and dedication beyond the call of duty.

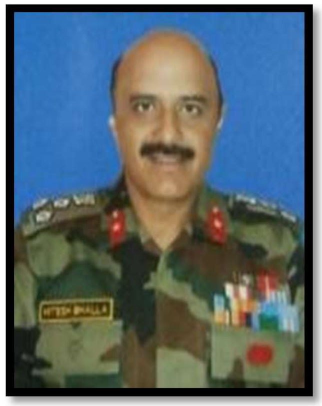

<u>**मेजर हितेष भल्ला, सेना मेडल**</u>

<u>**शौर्य चक्र**</u>

(ऑपरेशन गणपति, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 49510 वाई, मेजर हितेष भल्ला का जन्म 30 अक्टूबर 1969 को गोरखपुर में श्रीमती सरोज भल्ला और ब्रिगेडियर जे एस भल्ला के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, टैगोर गार्डेन, नई दिल्ली से पूरी की। 09 जून 1990 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 11 मराठा लाइट इंफेन्ट्री में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 21 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

05 जनवरी 1996 को 21 राष्ट्रीय राइफल्स के कैप्टन हितेश भल्ला जम्मू कश्मीर के जिला कुपवाड़ा के कंडी क्षेत्र में ऑपरेशन गणपति के तहत तलाशी अभियान चला रहे थे।

तलाशी के दौरान तलाशी लेने वाली पार्टी के ऊपर विदेशी आतंकवादियों ने एक छुपाव वाले ठिकाने से फायरिंग करना शुरू कर दिया जिसके परिणामस्वरूप दो गैर कमीशन अधिकारी घायल हो गए। कैप्टन हितेश भल्ला ने तुरंत ठिकाने की घेराबंदी करने का आदेश दिया और आतंकवादियों की भारी और प्रभावी स्वचालित गोलीबारी के तहत ठिकाने के अंदर रेंगते हुए दोनों हताहतों को वापस ले आये ।

इसके बाद अधिकारी ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना ठिकाने की ओर रेंगते हुए एक ग्रेनेड फेंका। इसके परिणामस्वरूप एक आतंकवादी घातक रूप से घायल हो गया और दूसरे को बाहर आने के लिए मजबूर कर दिया। अधिकारी ने आमने सामने की लड़ाई में दूसरे आतंकवादी को भी पास से मार गिराया।

कैप्टन हितेश भल्ला, सेना मेडल ने इस प्रकार, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण अवहेलना के साथ विशिष्ट साहस, दृढ़ संकल्प और कर्तव्य के प्रति समर्पण का प्रदर्शन किया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 05 जनवरी 1996 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन हितेश भल्ला

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 05 January, 1996 Captain Hitesh Bhalla, 21 Rashtriya Rifles was conducting search operation, Operation Ganpati, in area Kandi in district Kupwara in Jammu and Kashmir.

While conducting search, the party was fired by foreign mercenaries from a hideout resulting in two injuries to two Non-Commissioned Officers. Captain Hitesh Bhalla quickly ordered cordoning off of the hideout and under heavy and effective automatic fire of the terrorists crawled inside the hideout and retrieved both the casualties.

Thereafter, the officer with utter disregard to personal safety, crawled towards the hideout and lobbed a grenade inside. This resulted in fatal injuries to one terrorist and compelled the other to come near the trap door. In a face to face the officer then shot dead the other terrorist also from a close range.

Captain Hitesh Bhalla, SM. thus, displayed conspicuous courage, determination and dedication to duty, with utter disregard to his personal safety.

<u>मेजर गौरव शर्मा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गौतम बुध्द नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 52778 एन, मेजर गौरव शर्मा का जन्म 28 अगस्त 1972 को दिल्ली में श्रीमती बीना शर्मा और कर्नल शिव कुमार शर्मा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, मेरठ से पूरी की। 11 जून 1994 को भारतीय सेना की असम रेजिमेंट में कमीशन लिया और 10 असम रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

27 जून 1997 को जम्मू कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के रंगवार गली में मेजर गौरव शर्मा को आतंकवादियों की गतिविधि का पता चला। बेहद खराब मौसम में उन्होंने आतंकवादियों के खिलाफ घात का नेतृत्व किया।

अधिकारी ने उग्रवादियों का पीछा किया। भारी गोलाबारी की चपेट में आने के बावजूद, पार्टी ने दो उग्रवादियों का सफाया कर दिया जिनमें से एक को अधिकारी ने व्यक्तिगत रूप से मार गिराया।

बाद में 08:00 बजे तीन आतंकवादियों को एक बर्फ से ढकी सुरंग में प्रवेश करते देखा गया। तब तक मेजर गौरव शर्मा मौके पर पहुंच चुके थे और सैनिकों को बर्फ की सुरंग को घेरने का आदेश दिया।

ऑपरेशन शुरू होने के सातवें दिन मेजर गौरव शर्मा ने एक टीम बनायी जिसने छिपे हुए उग्रवादियों का पता लगाने और उन्हें बेअसर करने के लिए बर्फ की गुफा में प्रवेश किया और अंधेरे में बोल्डर और लॉग को कवर करते हुए आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त किया। दल आगे बढ़ ही रहा था कि आतंकवादियों ने फायरिंग शुरू कर दी। एक बोल्डर के पीछे दो आतंकवादियों को देखकर मेजर गौरव शर्मा ने अपने साथियों को कवर करने के लिए कहा और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना खुद अपनी ए के-47 राइफल से फायरिंग करने लगे।

इसी दौरान मेजर गौरव शर्मा के दाहिने पैर में गोली लग गई। चोट से बेपरवाह उन्होंने फायरिंग जारी रखी और दोनों आतंकवादियों को मार गिराया।

मेजर गौरव शर्मा ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंवादियों के सफाये के लिए नेतृत्व, पहल, साहस और वीरता का परिचय दिया। उनकी इस वीरता के लिए उन्हें 27 जून 1997 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर गौरव शर्मा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 27 June 1997 an ambush led by Major Gaurav Sharma at Rangwar Gali in Kupwara District of Jammu and Kashmir, under extremely inclement weather detected the move of militants.

The officer led the pursuit of militants. Despite having come under heavy fire, the party eliminated two militants, one of whom was personally killed by the officer.

At the post three militants were seen entering an ice tunnel at 0800 hours. By then Major Gaurav Sharma had reached the spot and ordered the troops to cordon off the ice tunnel.

On the seventh day of launching of operation Major Gaurav Sharma formed part of a team which entered the ice cave to locate and neutralise the holed up militants and led the way moving forward taking cover, of boulders and logs in pitch darkness. When the team came under fire, noticing two militants behind a boulder, Major Gaurav Sharma shouted for his team mates to take cover and with utter disregard to his personal safety, himself opened fire with his AK-47 Rifle. In the process, Major Gaurav Sharma was hit by a bullet on his right leg. Undeterred by the injury he continued to fire and killed both the militants.

Major Gaurav Sharma displayed extreme physical courage, with utter disregard to personal safety, initiative and motivation beyond the call of duty under inhospitable and hostile condition.

<u>स्क्वाड्रन लीडर शिवचरन सिंह तोमर</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश)

8059, स्क्वाड्रन लीडर शिवचरन सिंह तोमर का जन्म 23 जुलाई 1942 को जनपद मेरठ में श्रीमती बलजोरी देवी और श्री धर्म सिंह तोमर के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी इण्टरमीडिएट तक की स्कूली शिक्षा जाट हीरोज मेमोरियल स्कूल, बड़ौत तथा जाट वैदिक कालेज, बड़ौत, मेरठ से स्नातक की शिक्षा पूरी की और 21 दिसम्बर 1963 को भारतीय वायु सेना में कमीशन लिया।

स्क्वाड्रन लीडर शिवचरन सिंह तोमर सन 1976 में 23 इक्यूपमेंट डिपो, एयरफोर्स स्टेशन, अवाडी में पदस्थ थे। 24 और 25 नवंबर 1976 को असामान्य रूप से भारी बारिश के कारण मद्रास शहर के निचले इलाकों में पानी भर गया और बड़ी संख्या में नागरिक फंसे हुए थे। 25 नवंबर 1976 को स्क्वाड्रन लीडर शिवचरण सिंह तोमर को फंसे हुए लोगों को निकालने में नागरिक अधिकारियों की सहायता करने के लिए बुलाया गया। किसी अन्य संतोषजनक व्यवस्था के अभाव में उन्होंने कुछ डिंगियों को अस्थायी नावों के रूप में इस्तेमाल किया। इन डिंगियों की अत्यंत सीमित क्षमता, बाढ़ और लगातार बारिश के कारण कठिन परिस्थितियां और शाम के अंधेरे के कारण होने वाली बाधाओं ने स्क्वाड्रन लीडर तोमर को बचाव अभियान शुरू करने से रोक नहीं पायी। उन्होंने 25 और 26 नवंबर को पूरे दिन और रात में लगातार ऑपरेशन जारी रखा और तीन सौ साठ लोगों को बचाने में सफल रहे, जो एक बड़ी उपलब्धि है।

इस ऑपरेशन में स्क्वाड्रन लीडर शिवचरण सिंह तोमर ने पहल, कौशल, साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया। उनकी इस कर्तव्यपरायणता और साहस के लिए उन्हें "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया। बाद में यह पदोन्नत होकर विंग कमांडर बने और 06 अगस्त 1958 को वायु सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री फ़ख़रुद्दीन अली अहमद से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए स्क्वाड्रन लीडर शिवचरन सिंह तोमर

प्रशंसात्मक उल्लेख

Due to unusually heavy rains on 24th and 25 November 1976, low lying areas of Madras city were inundated and a large number of citizens were marooned. On the 25th November, 1976, Squadron Leader Shivacharan Singh Tomar of Air Force Station, Avadi, was called upon to assist the civil authorities in the evacuation of marooned people. In the absence of any other satisfactory arrangement, he used some dingies as make-shift boats. The extremely limited capacity of these dingies, the difficult conditions due to floods and incessant rains and the handicaps caused by darkness in the evening, did not deter Squadron Leader Tomar from undertaking the rescue operations. He ceaselessly continued the operations throughout day and night on the 25 and 26 November, 1976, and was able to rescue three hundred and sixty seven persons which is a great achievement.

In this operation, Squadron Leader Shivacharan Singh Tomar displayed great initiative, skill, courage and devotion to duty of a high order.

<u>मेजर विजयन्त चौहान</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश)

आई सी 65357 के, मेजर विजयन्त चौहान का जन्म 26 अक्टूबर 1979 को जनपद गाजियाबाद के राजनगर में श्रीमती रजनी चौहान तथा श्री चरन सिंह चौहान के यहां हुआ था। इन्होंने मैट्रिक तक की शिक्षा जवाहर नवोदय विद्‌यालय दादरी, इण्टरमीडिएट की शिक्षा दिल्ली पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद और स्नातक की परीक्षा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्‌यालय, अलीगढ़ से उत्तीर्ण की। मेजर विजयन्त चौहान ने भारतीय सेना की सेना सप्लाई कोर में 01 सितम्बर 2001 को कमीशन लिया और 12 असम रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी तैनाती 57 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

02 जून 2008 को जम्मू कश्मीर के एक गांव में दो कट्टर विदेशी आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी के आधार पर मेजर विजयन्त चौहान ने संदिग्ध घर के चारों ओर तीव्र गति से घेरा डाल दिया। घर की तलाशी के दौरान दीवार में छुपाव स्थल मिला। मेजर विजयन्त चौहान के दूसरे साथी ने ठिकाने के प्रवेश द्‌वार पर रखी पट्टी को हटाया तो उन्होंने देखा कि एक आतंकवादी तलाशी दल पर ग्रेनेड फेंकने के लिए तैयार है। मेजर चौहान ने ग्रेनेड फेंकने से पहले ही आतंकवादी को गोली मार दी और अपने सैनिकों का नुकसान होने से बचाया। दूसरे आतंकी ने सर्च पार्टी पर फायरिंग शुरू कर दी। मेजर चौहान ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादी के नजदीक जाकर उसे मार गिराया।

इस वीरतापूर्ण कार्यवाही में मेजर विजयन्त चौहान ने अतुलनीय साहस का परिचय देते हुए दो कट्टर विदेशी आतंकवादियों को मार गिराया। इस आपरेशन के दौरान उन्होंने चातुर्य और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता तथा युध्द कौशल का प्रदर्शन किया।

मेजर विजयन्त चौहान ने आतंकवादियों से लड़ने में अदम्य साहस और उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया जिसके लिए इन्हें 02 जून 2008 को “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर विजयन्त चौहान

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 02 June 2008 based on hard intelligence about presence of two hardcore foreign terrorists is a village in Jammu and Kashmir, Major Vijyant Chauhan laid a cordon with lightning speed around the suspected house. During the search of the house a hideout was located in wall. When the second buddy pair removed the planks at entry to hideout he saw one terrorist ready to lob a grenade on search party. The officer shot the terrorist before he could lob the grenade thereby preventing casualty to own troops. The second terrorist started firing on the search party. The officer without caring for his personal safety closed in to the terrorist and killed him too.

In an act beyond the call of duty, exhibiting rare courage, the officer set a personal example of daring act by killing two hardcore foreign terrorists in a daring act of bravery. In this operation officer has displayed tact of generating sound intelligence and professional execution of mission.

Major Vijyant Chauhan displayed indomitable courage and outstanding leadership in fighting the terrorists.

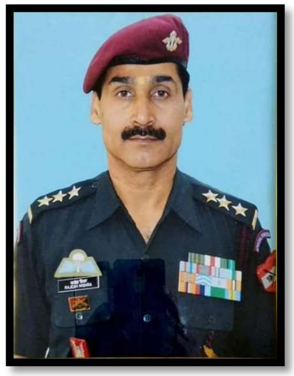

<u>नायक राजेश मिश्रा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13617161 डब्ल्यू, नायक राजेश मिश्रा का जन्म 01 जनवरी 1968 को जनपद गोरखपुर के गांव भरसी में श्रीमती भानमती मिश्रा तथा श्री रामदास मिश्रा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी हाईस्कूल की शिक्षा आनन्द विद्यापीठ इण्टर कालेज ककरही, गोरखपुर, इण्टरमीडिएट की शिक्षा नेशनल इन्टर कालेज बड़हलगंज, गोरखपुर से पूरी की। 26 फरवरी 1987 को भारतीय सेना में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 9 पैरा (स्पेशल फोर्स) में पदस्थ हुए। सेना में भर्ती होने के पश्चात स्नातक की शिक्षा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली से पूरी किया।

हफ्रूदा (रागीवार/ कुपवाड़ा) के जंगलों में 12 से 14 जुलाई 98 को कैप्टन अनिल कुमार मलिक के नेतृत्व में 9 पैरा (विशेष बल) द्वारा चलाए गये अभियान के दौरान नायक राजेश मिश्रा एक स्कवाड के स्कवाड कमांडर थे।

हफ्रुदा वन घने जंगलों से आच्छादित एक विशाल पहाड़ी क्षेत्र है। इस क्षेत्र में सेना को 72 घंटे के खोज और नष्ट करने का मिशन सौंपा गया था। इस क्षेत्र में लगातार 48 घंटे तक चलने के बाद नायक राजेश मिश्रा के दल ने एक उग्रवादी निशान देखा और निशान पर चलने का फैसला किया।

बाकी सैनिक एक आड़ के पास छिप गए और नायक राजेश मिश्रा अपने दस्ते के साथ चुपके से चलते हुए लगभग 14:00 बजे एक आतंकवादी ठिकाने के पास पहुंचे। कवरिंग फायर देने के लिए अपने दस्ते को आड़ के पास छोड़कर वह अपने साथी सैनिक लांस नायक राजेंद्र टिटियाल के साथ नजदीक से निगरानी करने के लिए चले गए। लगभग 17:00 बजे, आतंकवादियों ने, जो अभी भी नायक राजेश मिश्रा और उनके साथी सैनिक की उपस्थिति से अनजान थे, उन्होंने अपने ठिकाने को छोड़ने का फैसला किया।

यह देखकर कि उग्रवादी भाग जाएंगे, नायक राजेश ने ठिकाने पर गोलीबारी की और उग्रवादियों को पूरी तरह से चौंका दिया और उनमें से तीन उग्रवादियों को मार गिराया। वह इस प्रक्रिया में गंभीर रूप से घायल हो गये। लेकिन घायल होने के बाद भी वह अपने बाकी दल को यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देश देते रहे कि इनमें से कोई बचने न पाये।

नायक राजेश मिश्रा ने असाधारण साहस का प्रदर्शन करते हुए तीन विदेशी आतंकवादियों को अकेले ही खत्म कर दिया। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, उग्रवादियों का नजदीक से सफाया करने में दिखाई देने वाले दृढ़ साहस के इस कार्य के लिए नायक राजेश मिश्रा को 12 जुलाई 1998 को "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया। बाद में 04 जून 2004 को पदोन्नत होकर नायब सूबेदार, 06 जून 2009 को सूबेदार और 01 अप्रैल 2014 को सूबेदार मेजर बने। वह 15 अगस्त 2017 को आनरेरी लेफ्टीनेंट और 26 जनवरी 2018 को आनरेरी कैप्टन बने और 31 मार्च 2018 को सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए नायक राजेश मिश्रा

प्रशंसात्मक उल्लेख

Number 13617161W Naik Rajesh Mishra was the squad commander of troop lead by Capt Anil Kumar Mailk, of 9 PARA (SPECIAL FORCES) during operations conducted in Haphruda forests (Ragiwar/Kupwara) on 12-14 Jul 98.

Haphruda forest is a vast mountainous area covered with dense forests. The troop was tasked on a 72h search and destroy mission in this area. After 48h of continuous op in this area Naik Rajesh Mishra's squad picked up a militant trail and decided to follow on the trail.

The rest of the troop remained in a hide and Naik Rajesh Mishra with his squad, moving stealthily, closed in a militant hideout at around 1400h. Leaving his squad under cover to give covering fire he moved with his buddy Lance Naik Rajendra Titiyal to conduct close surveillance.

At around 1700h the militants who were still unaware of the presence of Naik Rajesh Mishra and his buddy decided to leave the hideout. Seeing that the militants would get away Naik Rajesh ferociously charged into the hideout firing and totally surprised the militants and killed three of them. He was grievously injured in the process but continued giving directions to the remainder of his squad to ensure all the militants were killed.

Nk Rajesh Mishra by his spontaneous charge and displaying extraordinary courage was responsible for single handedly eliminating three foreign mercenaries. For this act of raw courage with no concern for his own safety, tenacity and determination exhibited in closing in with the militants and eliminating them, Naik Rajesh Mishra is hereby awarded Shaurya Chakra.

<u>कैप्टन अनूप पाण्डेय</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 69343 एफ, कैप्टन अनूप पाण्डेय का जन्म 02 दिसम्बर 1983 को जनपद गोरखपुर में श्रीमती निर्मला पाण्डेय तथा श्री विजय कुमार पाण्डेय के यहां हुआ था। इन्होंने 09 जून 2007 को भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेंट में कमीशन लिया और 4 राजपूत रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में नियंत्रण रेखा के करीब एक संभावित घुसपैठ की सूचना मिली। इस स्थान की समुद्रतल से ऊंचाई लगभग 13000 फीट है। कैप्टन अनूप पाण्डेय त्वरित कार्यवाही दल का नेतृत्व कर रहे थे। वे अपने दल के साथ संभावित स्थान पर पहुंच गये। उनके इस दल में अन्य सात सैनिक थे।

22 अगस्त 2009 को 19:10 बजे, धुंधली रोशनी में आतंकवादियों की संदिग्ध गतिविधि देखी गई। उन्होंने बड़े संयम और सामरिक कौशल का प्रयोग करते हुए आतंकवादियों को अम्बुश के करीब तक आने दिया और हथियार की रेंज मे आते ही फायर खोल दिया जिसमें एक आतंकवादी घायल हो गया। घायल आतंकवादी ने प्रभावी आड़ लिया और अम्बुश टीम पर सटीक फायरिंग करने लगा। कैप्टन अनूप पाण्डेय ने साहस, नेतृत्व और युध्द कौशल का प्रदर्शन करते हुए एक आतंकवादी को मार गिराया।

दूसरा आतंकवादी हताश था लेकिन प्रभावी फायरिंग करके दल को आगे बढ़ने से रोक रहा था। स्थिति का आंकलन करते हुए और कवरिंग फायरिंग की आड़ में कैप्टन अनूप पांडेय ने आतंकवादी को घेर लिया, महज पांच मीटर की दूरी से ग्रेनेड फेंका और नजदीकी मुकाबले में उसे मौत के मुंह में धकेल दिया।

अपनी सुरक्षा को खतरे में डालकर कैप्टन अनूप पांडेय ने आतंकवादियों से लड़ते हुए साहस और वीरता का परिचय दिया। उनकी इस वीरता और साहस को सम्मानित करने के लिए उन्हें 22 अगस्त 2009 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Captain Anoop Pandey was the leader of the small quick reaction team with seven Other Ranks. On receipt of the information about a likely infiltration bid close to line of control in Kupwara District, Jammu & Kashmir, at an altitude of approx. 13000 feet, he launched his group for a possible contact.

At 1910 hrs on 22 August 2009, in the fading light suspicious movement of terrorists was noticed. Exercising great restraint and tactical acumen he allowed the terrorists to get close to the ambush and in the process injured one. The injured terrorist took effective cover and brought down accurate fire on own ambush. In an exhibition of great courage, leadership and battle craft he outmanoeuvred terrorist and eliminated him.

The other terrorist was desperate and was effectively blocking the progress. Assessing the situation and under cover of fire of his group Captain Anoop Pandey closed on to the terrorist, lobbed a grenade from just five Meters distance and the, in close combat eliminated him.

Captain Anoop Pandey displayed act of bravery and raw courage at the peril of his own safety in fighting the terrorists.

<u>सैपर अमरजीत सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 15347880 एक्स, सैपर अमरजीत सिंह का जन्म 02 नवम्बर 1986 को जनपद गोरखपुर के गांव गांगूपार में श्रीमती सियामती तथा श्री तिलक सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा टी डब्ल्यू ई आई हाईस्कूल, फगवाड़ा, पंजाब से पूरी की। 28 जुलाई 2003 को भारतीय सेना की इंजीनियर्स कोर में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के उपरान्त 62 इंजीनियर रेजिमेन्ट में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 42 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

05 अप्रैल 2011 को 42 राष्ट्रीय राइफल्स को एक सूचना मिली कि जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले के एक गाँव में आतंकवादी छुपे हुए हैं। 42 राष्ट्रीय राइफल्स ने गांव के उस छुपाव स्थल को खोजने का निर्णय लिया। सैपर अमरजीत सिंह इसी खोजी दल के सदस्य थे। छुपे हुए आतंकवादी ने फायरिंग शुरू कर दी। टीम कमांडर ने उसे उलझाये रखा और दल के लोगों को तलाशी जारी रखने को कहा। सैपर अमरजीत सिंह ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए, अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, आतंकवादी के ऊपर प्रभावी फायर करते रहे ताकि टीम को सुरक्षित स्थान पर ले जाया जा सके। इस साहसिक गोलाबारी में उन्होंने आतंकवादी को गंभीर रूप से घायल कर दिया और उसे उलझाना जारी रखा जिससे उनके साथियों की सुरक्षित आवाजाही हो सके। इस प्रक्रिया में उनके चेहरे पर गोली लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गये। अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए और आखिरी सांस तक आतंकवादियों से लड़ते हुए वह शहीद हो गये।

सैपर अमरजीत सिंह ने आतंकवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के सामने कर्तव्य के प्रति अटूट समर्पण और अदम्य साहस का परिचय दिया तथा राष्ट्र की सेवा में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी कर्तव्यपरायणता और साहस के लिए 05 अप्रैल 2011 को उन्हें मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती दीपमाला

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 05 April 2011, Sapper Amarjit Singh as part of the house clearing team at a village in Pulwama district of Jammu & Kashmir was clearing a suspected hide lodging a terrorist. The hiding terrorist opened fire. The team commander pinned him down and ordered his teammates to clear out. Sapper Amarjit Singh, gauging the gravity of the situation, disregarding his own safety engaged the terrorist with effective fire to facilitate the team's move to safety. In the ensuing fire fight he daringly inflicted grievous injuries to the terrorist and continued engaging him at point blank range thereby enabling safe movement of his teammates. In the process he sustained grievous gun shot wounds to his face and succumbed to his injuries.

Sapper Amarjit Singh displayed unflinching devotion to duty and indomitable courage in the face of terrorist's, fire and made the supreme sacrifice in the service of the Nation.

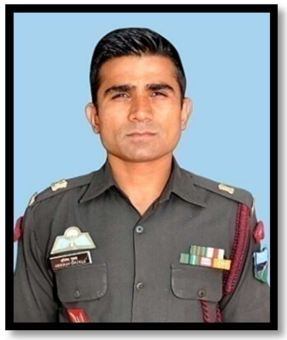

<u>कैप्टन अभिनव शुक्ला</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)

एस एस 44764 वाई, कैप्टन अभिनव शुक्ला का जन्म 17 सितम्बर 1987 को जनपद गोरखपुर में श्रीमती मीरा देवी शुक्ला तथा वारंट अफसर माधव प्रसाद शुक्ला के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय दिल्ली, बंग्लौर और बेलगांव से पूरी की। इन्होंने 17 सितम्बर 2011 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 2 पैरा विशेष बल में पदस्थ हुए ।

कैप्टन अभिनव शुक्ला जम्मू कश्मीर के बडगाम जिले में डी पी एस, श्रीनगर की इमारत को खाली कराने वाली टीम का हिस्सा थे, जहां केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल के काफिले पर हमला करने के बाद दो फिदायीन आतंकवादी छिपे हुए थे। नजदीकी रेकी के दौरान ग्रेनेड के टुकड़े लगने से कैप्टन अभिनव शुक्ला घायल हो गये। घायल होने के बावजूद उन्होंने स्वेच्छा से 450 कमरों वाले स्कूल भवन में अपने दस्ते का नेतृत्व किया। अनुकरणीय नेतृत्व और साहसिक कदम का प्रदर्शन करते हुए परिसर में चढ़ने वाले पहले व्यक्ति थे, जो फायरिंग के बीच लगभग 40 फीट की ऊंचाई पर चढ़े ।

कैप्टन अभिनव शुक्ला ने ऊपर की मंजिल की जांच करते हुए फिदायीन आतंकवादी पर दूर से ही सटीक फायरिंग कर दी जिससे वह घायल हो गया। अपनी चोट से होते दर्द से बेखबर वह फिदायीन पर सटीक फायर करते रहे। करीबी फायरिंग में कैप्टन शुक्ला ने व्यक्तिगत रूप से एक कट्टर फिदायीन आतंकवादी अबू हुरैरा को मार गिराया जो कि ए + श्रेणी का आतंकवादी था। कैप्टन अभिनव शुक्ला ने वहां से हटने से इनकार करते हुए और व्यक्तिगत चोटों से बेपरवाह होकर अपनी टीम का मार्गदर्शन करना जारी रखा और सटीक गोलाबारी करते रहे जिससे दूसरे आतंकवादी का सफाया हुआ।

कैप्टन अभिनव शुक्ला ने वीरता, अदम्य साहस और कुशल नेतृत्व का परिचय देते हुए एक अत्यंत जटिल और कठिन ऑपरेशन को सफलतापूर्वक समाप्त किया, जिसके लिए इन्हें 27 मार्च 2018 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन अभिनव शुक्ला

प्रशंसात्मक उल्लेख

Captain Abhinav Shukla was part of the team tasked to clear the DPS Srinagar building at Badgam district of Jammu and Kashmir where two fidayeen terrorists were hiding after attacking a CRPF convoy. During close recce the officer was injured with grenade splinters. Despite the injury the officer volunteered to lead his squad into the 450 roomed school building and in a daring feat while displaying exemplary leadership was the first to climb into the complex, covering an approximate height of 40 feet while firing on the move.

While clearing the top floor Captain Abhinav Shukla drew accurate fire from the fidayeen terrorist from a close distance, injuring him with a laceration. Unmindful of his injury and oblivious to the pain he continued to fire accurately on the fidayeen. In the resulting close quarter fire fight the officer personally eliminated one hardcore fidayeen terrorist Abu Huraira, Category A+. Refusing to be evacuated and unmindful of personal injuries Captain Abhinav Shukla continued to guide his men and provided accurate fire support which led to the successful elimination of the second terrorist.

Captain Abhinav Shukla displayed gallantry, indomitable courage and leadership resulted in successful termination of a highly complex and difficult operation.

<u>ग्रेनेडियर रणजीत</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद हापुड़, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2683379 पी, ग्रेनेडियर रणजीत का जन्म 24 दिसम्बर 1968 को जनपद हापुड़ के ग्राम सिकन्द्र पुर काकोडी में श्रीमती चमेली और श्री हरी सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा नवभारत इन्टर कालेज, शेखपुर से पूरी की। 17 सितम्बर 1988 को भारतीय सेना की ग्रेनेडियर रेजिमेन्ट में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात 2 ग्रेनेडियर रेजिमेन्ट में तैनात हुए।

ग्रेनेडियर रंजीत, 2 ग्रेनेडियर की डेल्टा कंपनी की त्वरित प्रतिक्रिया टीम के सदस्य थे, जिसने 22 जुलाई 1995 को जम्मू और कश्मीर के सोईबुग गांव में विदेशी भाड़े के आतंकवादियों के कब्जे वाले एक घर को घेर लिया था।

घर की घेराबंदी करने पर उग्रवादियों को आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी गई। कोई जवाब नहीं मिलने पर घर में धावा बोलने का निर्णय लिया गया। लगभग 12:15 बजे ग्रेनेडियर रंजीत ने एक अन्य साथी सैनिक के साथ स्वेच्छा से घर में धावा बोल दिया। घर में प्रवेश करने पर भूतल पर कोई आतंकवादी नहीं पाया गया। ग्रेनेडियर रंजीत अपने साथी सैनिक के साथ पहली मंजिल पर संकरी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ ही रहे थे कि वहां पर छुपकर बैठे आतंकवादियों ने भीषण गोलीबारी शुरू कर दी। इस गोलीबारी में आगे चल रहे सैनिक को कई गोलियां लगीं जिसके कारण वह घायल होकर गिर पड़े।

ग्रेनेडियर रंजीत बिना किसी हिचकिचाहट के अपने साथी को निकालने के लिए दौड़ पड़े। उन्होंने अलमारी के पीछे छुपे बैठे आतंकवादियों की तरफ से की जा रही फायरिंग की परवाह नहीं किया। उन्होंने एक आतंकवादी को मार गिराया। इसी बीच उनकी गर्दन, जांघ और हाथ में गोली लग गयी।

गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद ग्रेनेडियर रंजीत ने दूसरे आतंकवादी को भी मार गिराया। वह अपने साथी को नीचे ले आये। लेकिन गंभीर रूप से घायल होने के कारण वह घर के बाहर आते ही शहीद हो गये।

ग्रेनेडियर रंजीत ने अपने जीवन की कीमत पर अपने साथी के जीवन को बचाने में अनुकरणीय साहस और कर्तव्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण का प्रदर्शन किया। उनके अनुकरणीय साहस, वीरता और कर्तव्य के प्रति समर्पण भावना के लिए उन्हें 22 जुलाई 1995 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती बबीता

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Grenadier Ranjit, 2 Grenadier formed part of Delta Company quick reaction team which had cordoned a house occupied by a group of foreign mercenaries in village Sayibug, Jammu and Kashmir on 22 July 1995.

On cordoning the house, warning to surrender was given to the militants. When no response was received it was decided to storm the house. At about 1215 hours, Grenadier Ranjit alongwith another other rank volunteered to storm the house. On entering the house no terrorist was found on the ground floor thus storming the first floor through the narrow staircase was undertaken. His comrade who was in front came under heavy fire from two mercenaries and collapsed due to his injuries.

Grenadier Ranjit without any hesitation ran up to extricate his comrade in the process exposing himself to the fire of two other mercenaries who had positioned themselves behind the cupboard. Undeterred by the heavy volume of fire Grenadier Ranjit closed is on them and while shooting down the first mercenary sustained bullet wounds in the neck, thigh and arm. Despite grievous injuries Grenadier Ranjit killed the second mercenary and then shifted his attention back to his comrade who well carried back down the stairs. Grenadier Ranjit later succumbed to his injuries outside the house.

Grenadier Ranjit, thus, displayed exemplary courage and selfless devotion to duty in saving the life of his comrade at the cost of his own life.

<u>गनर सुरेश चन्द</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद हाथरस, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 14410918 एक्स, (अब जे सी 304272 डब्ल्यू), गनर सुरेश चन्द का जन्म 01 अक्टूबर 1974 को जनपद हाथरस के गांव नगला गरीवा में श्रीमती विद्या देवी तथा श्री स्वर्ण सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की तथा 20 जून 1994 को भारतीय सेना के वायु रक्षा तोपखाना में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के उपरान्त 156 लाइट ए डी मिसाइल रेजिमेंट में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 25 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

जम्मू और कश्मीर के पुंछ जिले के सूरनकोट में चलाए जा रहे एक आपरेशन में गनर (ड्राइवर मैकेनिकल ट्रांसपोर्ट) सुरेश चन्द अग्रणी स्काउट थे।

24 जनवरी 2000 को जम्मू कश्मीर के पट्टन गांव में छिपे आतंकवादियों को खत्म करने के लिए एक तलाशी अभियान शुरू किया गया था। जब सैनिकों का दल लक्ष्य क्षेत्र में पहुँचा तो उग्रवादियों ने सटीक गोलीबारी की, जिसमें गनर सुरेश चंद के सीने पर चोट लग गई। चोट के बावजूद वह आगे बढ़े और एक विदेशी आतंकवादी को मार गिराया। अंदर छिपे अन्य उग्रवादी अंधाधुंध फायरिंग करते हुए घर से बाहर भाग निकले। खून से लथपथ गनर सुरेश चंद ने निजी सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादियों का पीछा किया और एक और आतंकवादी को मार गिराया। इसके बाद भीषण मुठभेड़ हुई। घायल होने के कारण उनके साथी सैनिकों ने उन्हें वहां से हटाना चाहा। परन्तु उन्होंने वहां से हटने से इनकार करते हुए, चट्टानी सतह पर रेंगते हुए आगे बढ़े। जंगल के अंदर छिपे आतंकवादियों पर सटीक गोलियां चलाईं और एक और विदेशी आतंकवादी को मार गिराया। गनर सुरेश चंद की वीरतापूर्ण कार्रवाई के परिणामस्वरूप तीन शीर्ष आतंकवादी मारे गए।

इस प्रकार गनर सुरेश चंद ने अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और उच्च कोटि के कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया। इस वीरतापूर्ण कार्यवाही के लिए इन्हें 24 जनवरी 2000 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए गनर सुरेश चन्द

प्रशंसात्मक उल्लेख

Gunner (Driver Mechanical Transport) Sureah Chand was the leading scout in an operation Jammu and Kashmir at Surankote in Poonch District in Jammu and Kashmir.

On 24 January 2000 a search operation was launched to eliminate the militants hiding is village Pattan in J&K. When the troops reached the target area, Militants brought down accurate fire in which Gunnar Suresh Chand got injured on the chest. In spite of the injury he dashed forward and killed a foreign militant at point blank range. The other militants hiding inside ran out of the house firing indiscriminately. A bleeding Gunner Suresh Chand with utter disregard to personal safety chased and killed one more militant. A fierce encounter then took place. Refusing evacuation, he crawled on to a rocky surface and brought down precision fire on the militants hiding inside the jungle and killed one more foreign militant. The heroic action of Gunner Suresh Chand resulted in killing of three top militants.

Gunner Suresh Chand thus displayed indomitable courage, dogged determination and dedication to duty of a high order.

नायक गिरधारी लाल यादव
शौर्य चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन ब्लू स्टार, जनपद जौनपुर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 13608755, नायक गिरधारी लाल यादव का जन्म 25 नवम्बर 1951 को जनपद जौनपुर के गांव अभयचंद पट्टी में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती धर्मा देवी तथा पिता का नाम श्री मंगरू यादव था। इन्होंने जूनियर हाईस्कूल तक की शिक्षा जूनियर हाईस्कूल, कुल्हनमऊ तथा हाईस्कूल की परीक्षा बी आर पी इण्टर कालेज, जौनपुर से उत्तीर्ण की। नायक गिरधारी लाल यादव 24 दिसम्बर 1971 को भारतीय सेना में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के बाद 1 पैरा रेजिमेंट में तैनात हुए।

5 - 6 जून 1984 की रात को ऑपरेशन 'ब्लू स्टार' के दौरान नायक गिरधारी लाल यादव एक टीम के स्क्वाड कमांडर थे, जिन्हें एक इमारत को सुरक्षित करने का काम दिया गया था। इस इमारत परिसर पर आतंकवादियों द्वारा दृढ़ता से कब्जा कर लिया गया था और भारी किलेबंदी की गयी थी। उन्होंने जैसे ही इमारत में प्रवेश किया, पूरी टीम मशीनगन की भारी फायरिंग की चपेट में आ गयी। जिससे टीम का आगे बढ़ना मुश्किल हो गया। नायक गिरधारी लाल यादव ने अपने साथी सैनिकों को पुर्नगठित किया और आगे बढ़ने के लिए व्यक्तिगत रूप से टीम का नेतृत्व संभाला। उन्होंने जैसे ही आगे बढ़ना शुरू किया आतंकवादियों ने उनके ऊपर मशीनगन से ब्रस्ट फायर झोंक दिया। अपनी चोट की परवाह न करते हुए वह गन पोस्ट की ओर दौड़ पड़े और गन पोस्ट के अन्दर एक हैंड ग्रेनेड डाल दिया। जिससे गन पोस्ट बरबाद हो गयी। इस कार्यवाही के बीच में ही आतंकवादियों ने उनके ऊपर मशीनगन से दूसरा ब्रस्ट फायर कर दिया, जिसके कारण भारत मां का यह अमर सपूत मौके पर ही शहीद हो गया।

इस वीरतापूर्ण कार्यवाही में नायक गिरधारी लाल यादव ने अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प, वीरता, नेतृत्व और उच्च कोटि के कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया तथा सेना की सर्वोच्च परंपरा का निर्वहन करते हुए मातृभूमि की रक्षा में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। उनकी इस वीरतापूर्ण कार्यवाही के लिए उन्हें 05 जून 1984 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती किशनू देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the night of the 5th/6th June, 1984, during operation 'Blue Star', Naik Girdhari Lal Yadav was a Squad Commander of a Team Group which was given the task of securing a building. The building complex had been heavily fortified and was strongly held by highly motivated terrorists. As soon as they entered the building the entire Team Group came under heavy machine gun fire which made further advance difficult. Naik Girdhari Lal Yadav rallied his man together and personally led the advance. He was hit by a brust of machine gun on his left arm. Unmindful of his injury he rushed to the gun post and lobbed a hand grenade thereby successfully silencing it. In the process he was hit in the face by another brust of machine gun fire due to which he died on the spot.

In this action Naik Girdhari Lal Yadav displayed indomitable courage, determination, valour, leadership, devotion to duty of a very high order and laid down his life in the highest tradition of the Army.

<u>**कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह**</u>

<u>**शौर्य चक्र, मरणोपरान्त**</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद झांसी, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 8024997 डब्ल्यू, कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह का जन्म 06 जनवरी 1958 को जनपद झांसी के गांव मौरानी पुर में श्रीमती राम कुआर तथा श्री दुर्जन सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की तथा 30 सितम्बर 1977 को भारतीय सेना की पायनियर रेजिमेंट में भर्ती हो गये।

कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह 1816 पायनियर कंपनी के एक सुरक्षा दल के प्रभारी थे। इनके इस सुरक्षा दल में पांच जवान शामिल थे। इस दल को दक्षिण त्रिपुरा में "परियोजना सेतुक" के क्रियान्वयन के लिए तैनात किया गया था। यह क्षेत्र आतंकवादियों से काफी ग्रसित था।

11 अगस्त 1995 को सुरक्षा दल पर जलाया में घात लगाकर हमला किया गया। इस समय इनके दल की गाड़ी दो पहाड़ियों के बीच एक खड़ी चढ़ाई पर चढ़ रही थी। पहाड़ी की चोटियों के दोनों ओर से सुरक्षा दल पर स्वचालित हथियारों से जबरदस्त फायरिंग की गयी। कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह ने फौरन अपनी यूनिट के युध्दघोष की गर्जना करते हुए सुरक्षा दल को बाहर कूदकर स्थिति संभालने और आतंकवादियों को निशाने पर लेने के लिए कहा। इसी बीच उनके पेट में बायीं ओर एक गोली आ लगी जिससे आंत खुल गई। अपनी चोट की परवाह किए बिना वह रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे और पोजीशन संभाली तथा अपनी अंतिम सांस तक उग्रवादियों से लड़ते रहे।

इस प्रकार कंपनी हवलदार मेजर रघुराज सिंह ने अपने दो साथियों के बहुमूल्य जीवन को बचाने में वीरता, निडरता, साहस, दिमाग की उपस्थिति, नेतृत्व, दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन करते हुए देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 11 अगस्त 1995 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई
वीरांगना श्रीमती सन्तोष कुमारी

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Company Havildar Major Raghuraj Singh of 1816 Pioneer Company (Army) was incharge of Protection party consisting of five Army Pioneers deployed under Project Setuk in South Tripura in an highly infested area.

On 11 Aug 95, the protection party was ambushed at Jalaya when their vehicle was negotiating a steep climb between the two hillocks. Bursts of automatic fire were sprayed on the protection party from both sides from the hill tops. Company Havildar Major Raghuraj Singh immediately shouted the battle cry for the protection party to jump out, take position and engage the extremists. In the process, he was hit by a bullet that pierced through the left side of his stomach tearing open the intestine. Unmindful of his injury he crawled, took up position and engaged the militants till his last breath.

Company Havildar Major Raghuraj Singh, Thus, demonstrated gallantary, dauntless courage, presence of mind, leadership, dogged determination and the made supreme sacrifice in saving the valuable lives of two of his comrades.

<u>लेफ्टीनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती, सेना मेडल</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद झांसी, उत्तर प्रदेश)

आई सी 34600 पी, लेफ्टीनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती, सेना मेडल का जन्म 13 जुलाई 1955 को झांसी में श्रीमती जयन्ती चक्रवर्ती और श्री सुशील कुमार चक्रवर्ती के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा क्रिस्ट द किंग हाईस्कूल, झांसी तथा स्नातक की शिक्षा विपिन बिहारी डिग्री कालेज, झांसी से पूरी की। 11 जून 1977 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और गढ़वाल राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 36 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

17 अक्टूबर 1995 को लेफ्टिनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती, सेना मेडल, 36 राष्ट्रीय राइफल्स, जम्मू और कश्मीर के बडगाम जिले के वागम गांव में एक घेरा और तलाशी अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। 08:00 बजे खोजी दल पर एक घर से भारी स्वचालित हथियारों से गोलाबारी की गयी।

लेफ़्टिनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती निडर होकर गोलीबारी के बीच से आगे बढ़े और घर को तीन तरफ से घेरने के लिए कॉर्डन को ठीक किया और पीछे से दो सैनिकों के साथ घर के पास पहुंचे। एक बड़े कमरे की तीन खिड़कियों से आतंकवादियों की गोलीबारी को देखते हुए उन्होंने अपने साथी सैनिकों को बाहर से कवर करने का निर्देश दिया और दृढ़ निश्चय के साथ आधे खुले दरवाजे से पीछे के कमरे में प्रवेश किया।

अत्यंत पेशेवर तरीके से आतंकवादियों को आश्चर्य में डालते हुए उन्होंने दूसरे कमरे में एक हथगोला फेंका और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना, अपनी स्वचालित राइफल से फायरिंग करने लगे। भीषण मुठभेड़ में लेफ्टिनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती ने तहरीक उल मुजाहिदीन के जिला प्रशासक सहित 4 हार्ड कोर आतंकवादियों को मार गिराया और 03 ए के - 47 राइफल, 07 ए के मैगजीन, 81 राउंड ए के गोला बारूद और 08 हथगोले बरामद किए।

लेफ्टिनेंट कर्नल समीर कुमार चक्रवर्ती ने शानदार नेतृत्व, पहल, कर्तव्य के प्रति समर्पण और असाधारण साहस का प्रदर्शन किया। 17 अक्टूबर 1995 को उनके साहस और वीरता को सम्मानित करते हुए उन्हें "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया। बाद में वह पदोन्नत होकर मेजर जनरल बने और 31 जुलाई 2013 को सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 17 October 1995 Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty, Sena Medal, 36 Rashtriya Rifles was leading a cordon and search operation at Wagam Village in Badgam District of Jammu and Kashmir. At 0800 hours the search party drew heavy automatic fire from a house.

Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty, fearlessly moving under fire immediately readjusted the cordon to cover three sides of the house and approached the house alongwith two ranks from the rear. On observing the militants fire from three windows of a large room he directed the men to cover his movements from outside and with dogged determination, entered the rear room through a half opened door.

Having achieved total surprise with his extremely professional manoeuvre, he lobbed a hand grenade into the other room and with utter disregard to his personal safety, charged into it firing from his automatic rifle. In the ensuing fierce encounter, Lt Col Samir Kumar Chakrvorty, shot dead 4 hard core militants including the District Administrator of the Tehreek-ul-Mujahideen and recovered 3 AK 47 rifles, 7 AK magazines, 81 rounds of AK ammunition and 8 hand grenades.

Lieutenant Colonel Samir Kumar Chakravorty. Thus, displayed superb leadership qualities, initiative, devotion to duty and exceptional courage.

<u>कैप्टन अजी एन्थोनी</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद झांसी, उत्तर प्रदेश)

आई सी 62781 एफ, कैप्टन अजी एन्थोनी का जन्म 25 दिसम्बर 1978 को बंग्लौर में श्रीमती ए थोमस तथा श्री पी सी एन्थोनी के यहां हुआ था। इन्होंने इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, पुणे तथा गुरू हर किशन कालेज, झांसी से स्नातक की शिक्षा पूरी की। 10 दिसम्बर 2002 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में कमीशन लिया और 4 राजपूताना राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 57 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

03 सितंबर 2006 को जम्मू और कश्मीर के बांदीपुर के एक गाँव में एक घर के चारों ओर एक घेरा स्थापित किया गया। कैप्टन अजी एंथोनी इस दल का नेतृत्व कर रहे थे। इस घर में कुछ आतंकवादी छुपे होने की सूचना मिली थी। लगभग 18:00 बजे, घर की तलाशी के दौरान कैप्टन अजी एंथोनी की पार्टी भारी फायरिंग की चपेट में आ गई और दो भागों में विभाजित हो गई। यह देखकर कि उनकी दूसरी पार्टी भारी फायरिंग की चपेट में आ गयी है, उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने साथी सैनिक के साथ आतंकवादियों को घेरने के लिए घर की ओर दौड़ पड़े। कैप्टन अजी एंथोनी और आतंकवादियों के बीच भीषण गोलीबारी हुई। करीबी लड़ाई के दौरान कैप्टन अजी एन्थोनी गंभीर रूप से घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वह डटे रहे और एक आतंकवादी को मार गिराया। प्राणघातक चोटों के कारण वह लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हो गये।

कैप्टन अजी एंथोनी ने कर्तव्य के प्रति समर्पण, बहादुरी, साहस और आतंकवादियों से लड़ने में सर्वोच्च कोटि की पहल का परिचय दिया। उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें 03 सितम्बर 2006 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

<u>स्मृति शेष</u>: कैप्टन अजी एंथोनी की याद में झांसी के खाटी बाबा निर्मला कान्वेंट स्कूल के पास एक तोरण द्वार तथा शहीद स्मारक का निर्माण करवाया गया है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 03 September 2006, Captain Aji Anthony was commanding a party which established a cordon around a house in a village in Bandipur, Jammu & Kashmir. At about 1800 hours, while searching one of the houses, Captain Aji Anthony's Party came under heavy fire and got split into two. On seeing that his other party was caught in the fire, with utter disregard to his personal safety, the officer along with his buddy rushed in towards the house to engage the terrorists. Intense exchange of fire took place between Captain Aji Anthony and the terrorists. During the ensuing close quarter fight Captain Aji Anthony was critically injured. In spite of being grievously injured, the brave officer killed one terrorist before succumbing to his injuries.

Captain Aji Anthony displayed dedication to duty bravery courage and initiative of highest order in fighting the terrorists.

मेजर संदीप यादव

शौर्य चक्र

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद झांसी, उत्तर प्रदेश)

आई सी 71516 एम, मेजर संदीप यादव का जन्म 01 जुलाई 1984 को जनपद झांसी में श्रीमती जितेन्द्र यादव तथा श्री प्रताप यादव के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा रानी लक्ष्मीबाई पब्लिक स्कूल, झांसी तथा आर्मी पब्लिक स्कूल, बबीना से पूरी की। इन्होंने 13 जून 2009 को भारतीय सेना की आर्मर्ड रेजिमेंट में कमीशन लिया और 52 आर्मर्ड रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 55 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

मेजर संदीप जुलाई 2013 से पुलवामा में यौध्दिक संक्रियाओं में काम कर रहे थे और खुफिया जानकारी और यौध्दिक संचालन के लिए उनकी क्षमता अनुकरणीय थी ।

10 अगस्त को जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले के रतनपुर गांव में आतंकियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी। मेजर संदीप ने तेजी से चलते समय धान के एक खेत में एक संदिग्ध हलचल देखी। धान के एक खेत में छुपे आतंकवादियों में से दो आतंकियों ने तुरंत उन पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी। मेजर संदीप ने जवाबी फायरिंग की जिसमें उन्होंने आतंकवादियों को ढेर कर दिया। भारी गोलाबारी के बीच असाधारण सूझबूझ का परिचय देते हुए उन्होंने अपनी टीम को फिर से तैनात किया और आतंकवादियों को भागने न देने में सफल रहे।

11 अगस्त को अठारह घंटे की भीषण गोलाबारी के बाद, मेजर संदीप ने बिना किसी आड़ का सहारा लिए हुए खुले में रेंगकर आतंकवादियों के नजदीक जाने का फैसला लिया। जब वह रेंगते हुए आगे बढ़ ही रहे थे तभी आतंकवादियों ने उनके ऊपर भीषण गोलीबारी कर दी। गंभीर खतरे से बेखबर और व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना भारी गोलाबारी के बीच साहस दिखाते हुए, वह रेंगते हुए उनके पास तक गये और दोनों आतंकवादियों का सफाया कर दिया। इस साहसिक कार्यवाही में बिना किसी नुकसान के लश्कर तंजीम के दो आतंकवादियों को मार गिराया।

मेजर संदीप यादव ने दो आतंकवादियों को मार गिराने में अनुकरणीय नेतृत्व, भारी गोलीबारी के सामने निडरता और वीरता का परिचय दिया। उनके इस अनुकरणीय नेतृत्व, निडरता और वीरता के लिए 10 अगस्त 2015 को उन्हें “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर संदीप यादव

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Sandip has been operating in Pulwama since Jul 2013 and his flair for generating intelligence and conduct of operations is exemplary.

On 10 August, information was received about presence of terrorists in village Ratanpur at Pulwama district of Jammu and Kashmir. Major Sandip while moving on cross country, noticed a suspicious movement in a paddy field. The two terrorists immediately opened indiscriminate fire at the officer. Major Sandip stood his ground and retaliated the fire which pinned down the terrorists. Undeterred by heavy fire and showing exceptional presence of mind, the officer redeployed his team which prevented the escape of terrorists.

On 11 August, after a grueling eighteen hours of firefight, Major Sandip decided to crawl to the terrorists in an open area without any cover. As he was doing so, he came under heavy fire. Unmindful of the grave danger and showing raw courage under heavy fire with utter disregard to personal safety, he crawled close and eliminated both the terrorists. The bold action ensured elimination of two Laskar Tanzeem terrorists as well as no collateral damage.

Major Sandip Yadav displayed exemplary leadership, fearlessness in face of intense firing and gallantry in the elimination of two terrorists.

<u>मेजर बाबूराम कुशवाहा, सेना मेडल</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 42655 एन, मेजर बाबूराम कुशवाहा का जन्म 20 जुलाई 1957 को जनपद कानपुर के ग्राम नरवाल में श्रीमती चन्द्रा देवी और श्री वी पी कुशवाहा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा भास्करानन्द इन्टर कालेज, नरवाल से पूरी की। 20 दिसम्बर 1984 को भारतीय सेना की असम रेजिमेन्ट में कमीशन लिया और 6 असम रेजिमेन्ट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 2 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

असम रेजिमेंट के मेजर बाबू राम कुशवाहा, राष्ट्रीय राइफल्स की दूसरी बटालियन की चार्ली कंपनी के कंपनी कमान्डर के पद पर तैनात थे। विशिष्ट सूचना के आधार पर इन्होंने जम्मू कश्मीर के अनन्तनाग जिले के गांव इकिंगम में 11 जून 1995 को 21:00 बजे आतंकवादियों के एक गुप्त ठिकाने पर छापा मारा।

अपनी तीन प्लाटून के साथ उग्रवादियों के सभी भागने के मार्गों को सील करने के बाद उन्होंने अपनी कंपनी मुख्यालय समूह के साथ ठिकाने पर धावा बोल दिया और हिजबुल मुजाहिदीन के एक कंपनी कमांडर को तीन मंजिला इमारत की ऊपरी मंजिल से पकड़ लिया।

जैसे ही सैनिक बाहर निकलने के लिए घेरा को समायोजित कर रहे थे, कंपनी कमांडर की पार्टी के ऊपर गांव के बाहर से, पकड़े गए लोगों को भागने में मदद करने के लिए फायरिंग शुरू कर दी। मेजर बाबू राम कुशवाहा ने तुरंत गोलीबारी करने वाले उग्रवादियों का पीछा किया। अँधेरा, ऊंची नीची जमीन और कई नाले होने के बावजूद उन्होंने अकेले ही दो आतंकवादियों को मार गिराया और एक ए के 47 राइफल, 20 राऊड समेत एक मैगजीन और एक ग्रेनेड बरामद किया, और अपनी कमान के नियंत्रणाधीन सैनिकों की जान बचाई।

रात भर हिजबुल मुजाहिदीन के कंपनी कमांडर से निरंतर पूछताछ के परिणामस्वरूप 12 जून 1995 को एक ठिकाने से एक यूनिवर्सल मशीन गन बरामद हुई।

इस प्रकार मेजर बाबू राम कुशवाहा, सेना मेडल ने उग्रवादियों के सामने उत्कृष्ट नेतृत्व, अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया। उनके साहस, वीरता और नेतृत्व कौशल के लिए उन्हें 11 जून 1995 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया। बाद में वह पदोन्नत होकर कर्नल बने और सेवाकाल पूरा कर सेना से सेवानिवृत हो गये।

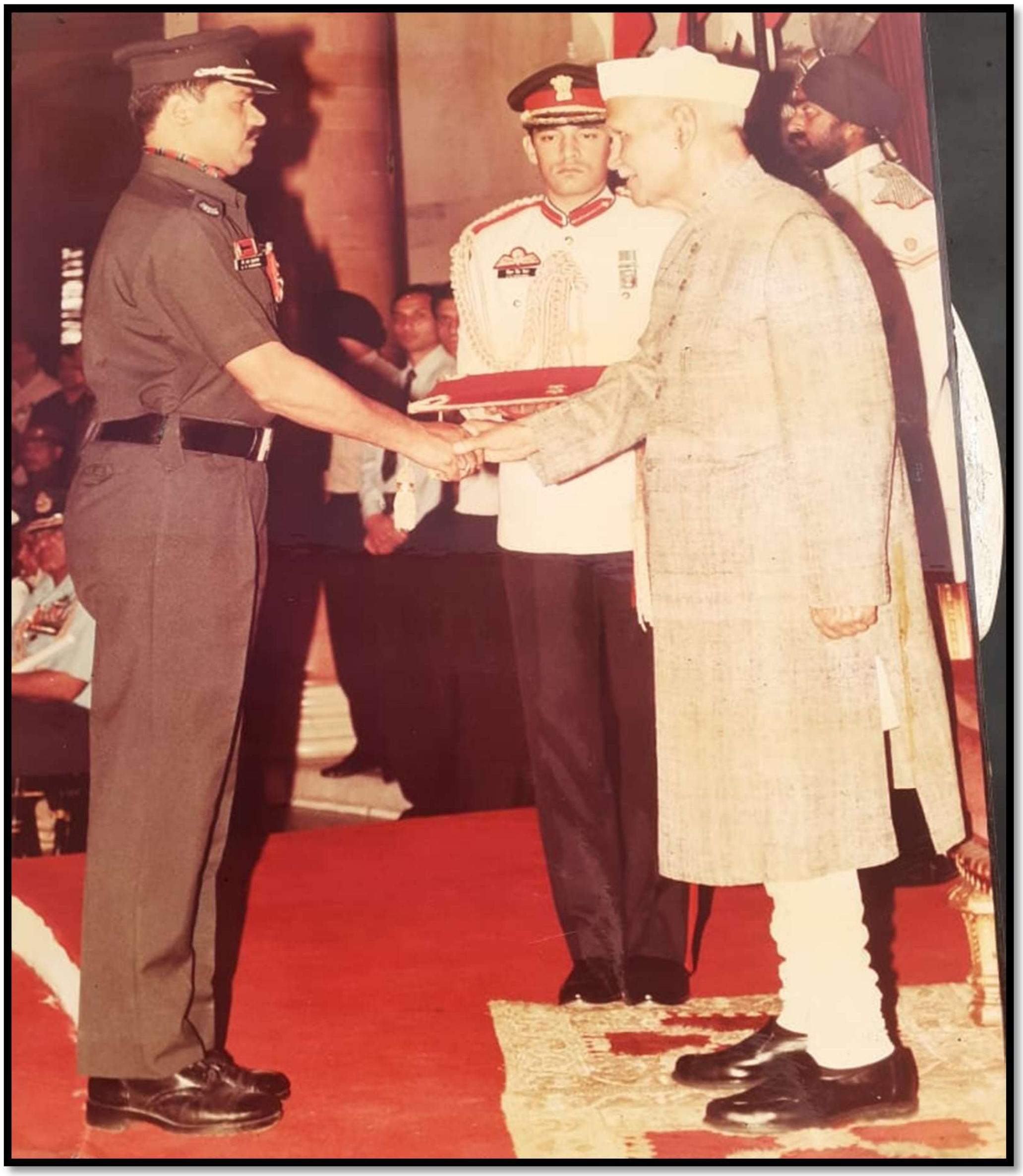

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर बाबू राम कुशवाहा

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Babu Ram Kushwaha, Assam Regiment has been performing the duties of Charlie Company Commander’s, 2nd Battalion Rashtriya Riffles. On 11 June 1995 based on a specific information obtained, he conducted a raid on a militant's hideout at 2100 hours at village Ekingam in Anantnag District of Jammu and Kashmir.

After sealing off all the escape routes with his three platoons he stormed the hideout with his company headquarters group and apprehended a Company Commander of Hizbul Mujahideen from the top floor of a three storey building.

As the troops were adjusting the cordon to pullout, the Company Commander's party was fired upon from, outside the village to assist the apprehended to escape. Major Babu Ram Kushwaha immediately chased the fleeing militants. Despite being pitch dark, undulating ground and a numbers of nullahs against him, he single handedly killed two militants and recovered one AK 47 rifle, one magazine with 20 rounds and one grenade thereby saving the lives of troops under his command. Sustained interrogation of the Hizbul Mujahideen Company Commander through out the night resulted in recovery of a Universal Machine Gun from a hide out on 12 June 1995.

Major Babu Ram Kushwaha, SM, thus displayed outstanding leadership qualities and exceptional courage in the face of militants.

<u>लीडिंग एयर क्राफ्टमैन अमर कुमार बाजपेई</u>

<u>शौर्य चक</u>

(जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 764609 एल, लीडिंग एयर क्राफ्टमैन अमर कुमार बाजपेयी का जन्म 31 अक्टूबर 1978 को जनपद कानपुर नगर के दबौली, गोविन्द नगर में श्रीमती कमला देवी बाजपेई और श्री नरेन्द्र कुमार बाजपेई के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी हाईस्कूल और इन्टरमीडिएट की शिक्षा गांधी स्मारक इन्टर कालेज, गोविन्द नगर से पूरी की। 18 जून 1998 को भारतीय वायु सेना में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात 2254 स्कवाड्रन में तैनात हुए।

लीडिंग एयर क्राफ्टमैन अमर कुमार बाजपेई 18 जून 2000 से भुज में एक स्क्वाड्रन में तैनात थे। 26 जनवरी 2001 को भुज में आए विनाशकारी भूकंप के बाद, लीडिंग एयर क्राफ्टमैन बाजपेई ने अपनी जान जोखिम में डालकर गिरी हुई इमारतों के मलबे के नीचे फंसे एयरमैन और नागरिकों सहित नौ लोगों की जान बचाई। भूकंप आते ही वह तुरंत भुज के शिवनगर इलाके में पहुंचे, जहां बहुमंजिला इमारतों में वायुसेना के कई जवान रहते थे। अलग - अलग मौकों पर कई बार अपनी जान जोखिम में डालते हुए वह कॉरपोरल डी पी सिंह, कॉर्पोरल मिश्रा और उनकी पत्नी, सार्जेंट के टी प्रसाद की पत्नी और अन्य नागरिकों को बचाने के लिए टूटी हुई इमारत और लटके ढांचे के अंदर गए, यहां तक कि झटके भी जारी रहे। उन्होंने न केवल बेजोड़ साहस और वीरता का परिचय दिया बल्कि बुद्धिमत्ता भी प्रदर्शित की। बिना किसी उपकरण के उन्होंने मानव जीवन को मलबे से बचाने के लिए नवीन तरीकों का इस्तेमाल किया। बिना हिम्मत और आशा खोए उन्होंने 05 दिनों तक लगातार दिन रात, बिना आराम किए, काम किया। उनके समय पर किए गए प्रयासों, निस्वार्थ भावना और जोशीले दृष्टिकोण ने दूसरों को इस आपदा में योगदान करने के लिए प्रेरित किया और इस प्रकार अधिक लोगों की जान बचाई।

लीडिंग एयर क्राफ्टमैन अमर कुमार बाजपेई ने मानव जीवन को बचाने में अनुकरणीय साहस, बहादुरी और निस्वार्थ प्रतिबद्धता का परिचय दिया। उनके साहस, बुद्धिमत्ता और निःस्वार्थ भावना के साथ मानव जीवन को बचाने के लिए “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया। बाद में वह पदोन्नत होकर जूनियर वारंट अफसर बने और 30 जून 2018 को वायु सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए लीडिंग एयर क्राफ्टमैन अमर कुमार बाजपेई

प्रशंसात्मक उल्लेख

Leading Aircraftsman Amar Kumar Bajpai is on the posted strength of a squadron at Bhuj, since 18 June 2000. In the aftermath of the devastating earthquake in Bhuj on 26 Jan 2001, at the risk to his own life, Leading Aircraftman Bajpai saved the lives of nine people, including airmen and civilians, who were trapped under the debris of fallen buildings. As soon as the earthquake struck, he immediately rushed to Shivnagar area of Bhuj, where number of Air Force personnel were staying in multistoried buildings. Risking his own life several times at different occasions, he went inside the broken building and hanging structures to rescue Corporal DP Singh, Corporal Mishra and his wife, wife of Sargent KT Prasad and other civilions who were trapped inside, even as the tremors continued. He not only displayed unmatched courage and valour but also sharp presence of mind and intelligence. With no tools and implement to work with he used innovative methods to save human lives from the debris. Efforts required were arduous without losing heart and hope, he worked continuously day and night for 5 days with little rest and care for himself. His timely efforts, selfless attitude and zealous approach motivated others to contribute in the operations thus saving more lives.

Leading Aircraftsman Amar Kumar Bajpai displayed exemplary bravery, courage and selfless commitment in saving human lives.

<u>मेजर सलमान अहमद खान</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 58686, मेजर सलमान अहमद खान का जन्म 22 अक्टूबर 1978 को जनपद कानपुर नगर के बाबू पुरवा में श्रीमती रशीदा बेगम और श्री मुश्ताक अहमद खान के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा द डॉन बास्को स्कूल, किदवई नगर तथा सैनिक स्कूल, लखनऊ से पूरी की। 22 जून 1999 को इन्होंने भारतीय सेना की सिख रेजिमेंट में कमीशन लिया और 4 सिख रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 6 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

05 मई 2005 को सुरक्षा बलों की इकाई को कुपवाड़ा जिले के एक गांव में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया सूत्रों से विश्वसनीय जानकारी मिली थी। स्थिति का विश्लेषण करने के बाद सुरक्षा बलों द्वारा आतंकवादियों को खदेड़ने के लिए एक अभियान शुरू करने का निर्णय लिया गया। नतीजतन 6 राष्ट्रीय राइफल्स के सैनिकों की टीम हरकत में आई और 05 मई 2005 को तड़के ऑपरेशन शुरू किया।

05 मई 2005 को मेजर सलमान अहमद खान ने सुनियोजित घात लगाई तथा एक आतंकवादी को मार गिराया किंतु दूसरा आतंकवादी भाग निकला। आतंकवादी के शव से मिले दस्तावेजों की सहायता से उन्होंने भाग निकले आतंकवादी का पीछा किया तथा पास के ही गांव में उसके मौजूद होने की सूचना मिली। मेजर सलमान खान ने अपने दल के साथ तुरंत उस घर को घेर लिया और आतंकवादी के सभी संभावित रास्तों को बंद कर दिया। आतंकवादियों ने मेजर सलमान खान पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी कर दी। उनके पैर और पेट में गोलियां लग गईं। अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद वे अपने व्यक्तिगत हथियार के साथ आतंकवादी पर टूट पड़े तथा उसे घायल कर दिया। आतंकवादी दौड़ कर एक घर में घुस गया।

अद्‌वितीय साहस तथा सूझबूझ का परिचय देते हुए मेजर खान ने उस घर पर दो हथगोले फेंक कर उस आतंकवादी को मार डाला, जिसकी बाद में उत्तरी कश्मीर के आतंकवादियों के डिवीजनल कमांडर के रूप में पहचान हुई। मेजर खान को निकट के फील्ड एम्बुलेंस में ले जाया गया जहां 07 मई 2005 को वह ज्यादा घायल होने के कारण वीरगति को प्राप्त हो गये।

मेजर सलमान अहमद खान ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उत्कृष्ट साहस और वीरता का प्रदर्शन कर दो आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया। 05 मई 2005 को उन्हें मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर सलमान अहमद खान के पिता श्री मुश्ताक अहमद खान

स्मृति शेष : मेजर सलमान अहमद खान की यादों को संजोने के लिए कानपुर के अन्तरराज्यीय बस स्टैंड का नामकरण उनके नाम पर किया गया है तथा कानपुर नगर पालिका द्‌वारा मोती झील में उनके नाम पर एक तोरण द्‌वार बनाया गया है। कानपुर कैण्ट में मेजर सलमान अहमद खान के नाम पर एक पार्क का निर्माण किया गया है।

मेजर सलमान अहमद खान बस स्टैंड

मेजर सलमान द्वार

मेजर सलमान पार्क

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

05th May 2005, the security forces unit had received credible information from the intelligence sources about the presence of terrorists in a village of Kupwara district. After analyzing the situation a decision was taken by the security forces to launch an operation to flush out the terrorists. Consequently, the team of soldiers from 6 RR unit, swung into action and launched the operation in the wee hours of 05 May 2005.

The assault team reached the site and cordoned off the suspected area in that village. On being challenged the terrorists opened fire at the security troops and a fierce gun battle ensued thereafter. Maj Salman killed one militant in the gun-battle. Thereafter he saw another militant fleeing and chased him. During this time other militants hiding from a house targeted Maj Salman with automatic weapons. Maj Salman got seriously wounded but despite his injuries he lobbed the grenade at the second militant and killed him.

However he later succumbed to his injuries and attained martyrdom. Maj Salman was a gallant and committed soldier who laid down his life in the service of the nation, following the highest traditions of the Indian Army.

Maj Salman Ahmad Khan was given the gallantry award, “Shaurya Chakra” for his outstanding courage, unyielding fighting spirit, leadership and supreme sacrifice.

<u>कैप्टन सुनील यादव</u>

<u>शौर्य चक</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

एस एस 40823, कैप्टन सुनील यादव का जन्म कानपुर नगर में श्रीमती शिवकली और श्री डी एन यादव के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, कोटा, राजस्थान से पूरी की और 17 सितंबर 2004 को भारतीय सेना की सिग्नल्स कोर में कमीशन लिया। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 26 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

18 सितंबर 2006 को कैप्टन सुनील यादव के नेतृत्व में एक ऑपरेशनल कॉलम को जिला डोडा (जम्मू कश्मीर) के एक गाँव में मक्का के खेत में छिपे आतंकवादियों की तलाशी और उन्हें नष्ट करने के लिए आदेशित किया गया।

कैप्टन सुनील यादव धीरे से आतंकवादियों के नजदीक गये और पार्टियों को मक्के के खेतों में छिपा दिया, जो लगभग सोलह घंटे तक छिपी रहीं। पास के मक्का के खेत में आतंकवादियों की मौजूदगी की पुष्टि होने पर एक पार्टी ने अपनी उपस्थिति दिखाने का प्रयास किया। आतंकवादियों ने खुद को घिरा हुआ देखकर अंधाधुंध गोलियां चलाईं और मक्का के खेत से बाहर भाग गए। कैप्टन सुनील यादव ने असाधारण पहल करते हुए अपनी स्थिति को फिर से समायोजित किया, चट्टान के पीछे कवर लिया और अपनी एके - 47 से भारी मात्रा में गोलाबारी की और दो आतंकवादियों को मार गिराया। तीसरा आतंकी मक्का के खेत के अंदर वापस भाग गया। कैप्टन सुनील यादव ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए मक्के के खेत में आतंकी का पीछा किया और अकेले ही उसे मार गिराया।

कैप्टन सुनील यादव ने आतंकवादियों से लड़ने में भारतीय सेना की सर्वश्रेष्ठ परंपरा में असाधारण बहादुरी, साहस और वीरता का परिचय दिया। उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें 18 सितम्बर 2006 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए कैप्टन सुनील यादव

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 18 September 2006 an operational column under Captain Sunil Yadav was launched to search and destroy terrorists hiding in maize field a village in district Doda (J&K).

Captain Sunil Yadav quietly closed in and hid the parties in the maize fields which remained undetected for nearly sixteen hours. On confirm regarding presence of terrorists in the nearby maize field one of parties asked to show its presence the terrorists finding themselves besieged suddenly firing indiscriminately and ran out of the maize field. Captain Sunil Yadav showing exceptional initiative readjusted his position, took cover behind rock and brought down heavy volume of fire from his AK-47 and shot dead two terrorists. The third terrorist ran back inside the maize field. Captain Sunil Yadav disregarded his personal safety and chased the terrorist inside the maize field and single handedly shot him.

Captain Sunil Yadav displayed conspicuous bravery, raw courage, personal valour of an exceptional order in the best tradition of the Indian Army in fighting the terrorists.

लेफ्टीनेंट अभिनव त्रिपाठी
शौर्य चक
(जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 72578, लेफ्टीनेंट अभिनव त्रिपाठी का जन्म 01 सितम्बर 1989 को जनपद कानपुर नगर में श्रीमती रीता त्रिपाठी तथा श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय नं 3, कानपुर से पूरी की। इन्होंने 12 जून 2010 को भारतीय सेना की डोगरा रेजिमेंट में कमीशन लिया और 15 डोगरा रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

लेफ्टिनेंट अभिनव त्रिपाठी एक एम्बुश पार्टी के प्रभारी थे, जो असम के कोकराझार जिले में संदिग्ध क्षेत्रों में घात लगाने के लिए तलाशी अभियान पर थी। 15 अक्टूबर 2010 को लेफ्टिनेंट अभिनव त्रिपाठी ने तुरंत जमीन की बनावट का जायजा लिया तथा अपनी पार्टी को जानकारी दी और एम्बुश लगा दिया। लगभग 22:30 बजे, दो व्यक्ति मोटरसाइकिल पर उस जगह पर पहुंचे। जब उन्हें एम्बुश पार्टी ने चुनौती दी तो वे पूरी तरह से हैरान रह गए। हड़बड़ाते हुए उन्होंने मोटरसाइकिल की रफ्तार तेज कर दी और एम्बुश पाटी की दिशा में गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। लेफ्टिनेंट अभिनव त्रिपाठी ने जवाबी फायरिंग करते हुए गोलियां चलाई, जिससे चालक गंभीर रूप से घायल हो गया और मोटरसाइकिल नीचे गिर गई। पीछे बैठे सवार ने संपर्क तोड़ने के लिए सभी दिशाओं में अंधाधुंध फायरिंग करते हुए सड़क के किनारे बांस के बाग की ओर दौड़ लगा दी। भीषण गोलीबारी से घबराए बिना लेफ्टिनेंट अभिनव त्रिपाठी भागते हुए आतंकवादी को पकड़ने के लिए आगे बढ़े और गुत्थम गुत्था की लड़ाई में उसे उसके हथियार से ही मार गिराया।

लेफ्टिनेंट अभिनव त्रिपाठी ने व्यक्तिगत सुरक्षा की अवहेलना करते हुए वीरता और साहस का प्रदर्शन करते हुए एक सफल ऑपरेशन को अंजाम दिया। उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें 15 अक्टूबर 2010 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए लेफ्टीनेंट अभिनव त्रिपाठी

प्रशंसात्मक उल्लेख

Lieutenant Abhinav Tripathi was incharge of one of the ambush party which was on search mission to lay ambushes in the suspected areas in Kokrajhar district of Assam. On 15 Oct 2010, he quickly appreciated the ground, briefed his party and laid the ambush. At about 2230 hours, two persons approached the site on a motor cycle. They were completely surprised when they were challenged by the stop. Impulsively, they accelerated the motorcycle and also started spraying bullets in the direction of the stop. Lieutenant Abhinav Tripathi retaliated by firing quick shots, which injured the driver fatally and the motorcycle fell down. The pillion rider sprinted towards the bamboo grove along the road, firing indiscriminately in all directions to break contact. Without getting unnerved under hostile fire. Lieutenant Abhinav Tripathi moved to outflank the fleeing terrorist and engaged him in close quarter combat killing him with a burst from his weapon.

Lieutenant Abhinav Tripathi displayed high standards of professionalism, sheer disregard to personal safety and executed a successful operation.

विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह

शौर्य चक

(जनपद कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश)

23172 एफ (पी), विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह का जन्म 28 दिसम्बर 1972 को जनपद कानपुर नगर के किदवई नगर में श्रीमती सुशीला सिंह तथा श्री सुरेश प्रताप सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी अपनी स्कूली शिक्षा सेठ आनन्दराम जयपुरिया पब्लिक स्कूल, कानपुर से पूरी की। 17 दिसम्बर 1994 को भारतीय वायु सेना में कमीशन लिया और 3 स्कवाड्रन एयरफोर्स में पदस्थ हुए।

30 अप्रैल 2013 को विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह को हलवारा के लिए मिग 21 बाइसन विमान पर रात में अभ्यास उड़ान के लिए अधिकृत किया गया था। हलवारा की ओर 60 किलोमीटर पर विमान के इलैक्ट्रिकल प्रणाली की असफलता को दर्शाने वाली बैटरी हैवी डिस्चार्ज लाइट मास्टर ब्लिंकर के साथ आई। इसके परिणाम स्वरूप काकपिट लाइटें धीरे धीरे धीमी हो गयी और इससे पायलट को उपकरणों को पढ़ने में कठिनाई महसूस हुई जो विमान के सुरक्षित प्रचालन के लिए अपेक्षित होते हैं। आत्मसंयम बनाए रखते हुए और आपात स्थिति की गंभीरता को समझते हुए विंग कमांडर आदित्य प्रकाश ने स्थिति को संभालने के लिए अवचक्र और फ्लैप्स कम कर दिया। शीघ्र ही हेड अप डिस्पले और बहुकार्य डिस्पले बंद हो गया और रेडियो टेलीफोनी प्रणाली पूरी तरह से धीमी हो गई। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए उन्होंने अपने मास्क को उतारने का निर्णय लिया और अपने उपस्करों को स्पष्टतः देखने के लिए मुँह से टार्च पकड़ी। इस तरीके से वह उपस्करों को देखने, आंशिक फ्लैप्स लैंडिंग और बिना किसी नुकसान के विमान को रिकवर करने में कामयाब हुए।

29 जुलाई 2013 की रात को पुनः विमान को पिछली सीट से उड़ाते हुए मिग 21 टी 69 प्रशिक्षक के कप्तान के रूप में विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह को भू स्तर से 150 मीटर की ऊंचाई पर एक चिड़िया के टकराने के बाद पूरी तरह से इंजन पावर खत्म हो जाने की स्थिति का सामना करना पड़ा।

इस ऊंचाई पर विमान न्यूनतम सुरक्षा ऊंचाई से नीचे होता है, यह कार्य सीमित दृश्यता और प्रतिबंधित गहनता बोध के कारण मिग 21 प्रशिक्षक की पिछली सीट से अत्यन्त संकटपूर्ण हो जाता है। इन सभी बाधाओं के बावजूद, विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह इंजन आफ ग्लाइड को सफलता पूर्वक स्थापित करने में सफल हो गए तथा बिना किसी नुकसान के विमान को सुरक्षित उतारा।

विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह ने नितांत आपात स्थिति में अपने आत्मसंयम को बनाए रखते हुए असाधारण साहस और अनुकरणीय व्यवसायिक दक्षता का प्रदर्शन किया। उनके असाधारण साहस, व्यावसायिक दक्षता को सम्मानित करने के लिए उन्हें 30 अप्रैल 2013 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए विंग कमांडर आदित्य प्रकाश सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 30 Apr 13, Wg Cdr AP Singh was authorized to fly a practice diversion sortie by night on a MiG-21 Bison aircraft to Halwara as a part of his syllabus. Approximately 60 Km inbound to Halwara, the battery heavy discharge light came on along with the Master Blinker indicating a failure of the electrical system of the aircraft. This resulted in all the cockpit lights slowly fading away and became difficult for the pilot to read the instruments, which are required for safe operation of the aircraft. Maintaining his composure and understanding the gravity of the emergency. Wg Cdr Aditya Prakash lowered the undercarriage and flaps to take off position as this would not be possible once the electrical system failed totally. He simultaneously switched off all non-essential electrics and announced the emergency. Soon the Head Up Display and Multi Function Display went off and the radio telephony system faded completely. The officer had only the pressure instruments and the global positioning system to help him execute the landing. At this stage, disregarding his personal safety, he took a decision to take off his mask and hold the torch in his mouth to illuminate the instruments. In this manner, he was able to view the instruments, execute a flawless partial flap landing and recover the aircraft without any damage

Again on the night of 29 Jul 13, as captain of MiG-21 T-69 trainer flying from the rear seat of the aircraft, the officer experienced a total loss of engine power after a bird hit at a height of 150 m above ground level during the landing phase. At this height, the aircraft is below the minimum safe ejection altitude and hence loss of engine power at this crucial stage during the flight of the aircraft requires prompt decision-making and extremely precise handling to ensure safe landing. This task becomes even more critical from the rear seat of the MiG-21 trainer due to the limited visibility and restricted depth perception. In spite of all these constraints Wg Cdr AP Singh was able to successfully establish an engine off glide and land the aircraft safely without any damage.

In this manner, Wing Commander Aditya Prakash Singh because of his ability to maintain his composure in a grave emergency situation, courage, creative thinking and professionalism has been able to successfully recover two aircraft at night in limited visibility conditions without any damage and has set an excellent professional example for others to emulate.

हवलदार (लिपिक) रुद्र नारायण दूबे

शौर्य चक

(जनपद कुशी नगर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 6355031 के, हवलदार रूद्र नारायण दूबे का जन्म 06 अक्टूबर 1942 को कुशी नगर के गांव परसाहवा में श्रीमती बुधना देवी और श्री हरिनारायण दूबे के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा जूनियर हाईस्कूल, भटहीं तथा बुध्दा हाईस्कूल, कुशी नगर से पूरी की और 10 जुलाई 1962 को भारतीय सेना की सप्लाई कोर में लिपिक के पद पर भर्ती हो गये।

हवलदार लिपिक रुद्र नारायण दूबे उत्तर प्रदेश में अपने पैतृक गांव परसाहवा में वार्षिक अवकाश पर थे। 4/ 5 मार्च 1970 की रात को डकैतों के एक गिरोह ने उनके पड़ोसी श्री सुखदेव दूबे के घर पर डकैती के इरादे से धावा बोल दिया। हवलदार दूबे ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अपने पड़ोसी के बचाव में जाकर डकैतों को ललकारा। हालांकि प्रतिरोध के क्रम में उनके दोनों पैरों में कई गोलियां लगीं, लेकिन वे डकैतों को डकैती करने से रोकने में सफल रहे। समय पर की गयी कार्यवाही और पहल से हवलदार रुद्र नारायण दूबे ने अपने पड़ोसी के जीवन और संपत्ति को बचाया।

इस कार्यवाही में हवलदार (लिपिक) रुद्र नारायण दूबे ने उच्च कोटि की वीरता और साहस का परिचय दिया। 04 मार्च 1970 को उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

Havildar Clerk Rudra Narain Dubey was on annual leave at his native village Parsahwa in Uttar Pradesh. On the night of 4th/5th March, 1970, a gang of dacoits raided the house of his neighbour. Shri Sukhdeo Dubey.

Unmindful of his personal safety, Havildar Dubey went to the rescue of his neighbour and challenged the dacoits. Although in the course of resistance, he received multiple bullet injuries in both legs, he succeeded in preventing the dacoits from committing the dacoits. By his timely action and initiative, he saved the life and property of his neighbour.

In this action, Havildar Clerk Rudra Narain Dubey displayed gallantry of a high order.

<u>राइफल मैन अनिरूध्द यादव</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद कुशी नगर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या जी/ 5004672 वाई, राइफल मैन अनिरूध्द यादव का जन्म 06 अगस्त 1982 को जनपद कुशी नगर के ग्राम पिडरा में श्रीमती केदली देवी तथा श्री भगवान यादव के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा लोहिया हाईस्कूल, सहवा से पूरी की। यह 03 मार्च 2005 को भारतीय सेना की असम राइफल्स में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 3 असम राइफल्स में हुई।

10 फरवरी 2010 को एक आतंकवादी ठिकाने के बारे में अपने सूत्रों से मिली जानकारी के आधार पर असम के उदलगिरी जिले में असम - अरुणाचल सीमा पर स्थित जंगल में एक खोजी अभियान दल भेजा गया। जब यह दल ठिकाने के पास पहुंच गया तब राइफल मैन अनिरुद्ध यादव स्वेच्छा से क्षेत्र की जांच करने और आतंकवादियों के बारे में अधिक खुफिया जानकारी एकत्र करने के लिए आगे बढ़े जिससे दल को आतंकवादियों पर कार्यवाही करने में आसानी हो। जैसे ही यह दल आगे बढा, उस पर भारी गोलीबारी हुई। राइफल मैन अनिरुद्ध यादव सूझ बूझ और हौसले का परिचय देते हुए फायरिंग करने वाले आतंकवादी के पास तेजी से गये। इस अचानक की गई कार्रवाई ने आतंकवादी को पूरी तरह से भौचक्का कर दिया और इससे पहले कि वह प्रतिक्रिया करता, उसे राइफल मैन अनिरुद्ध यादव ने मार गिराया। राइफल मैन अनिरुद्ध यादव ने घने जंगल की आड़ लेकर आतंकवादी की ओर धावा बोल दिया और नजदीकी मुकाबले में दूसरे आतंकवादी को भी मार गिराया।

राइफल मैन अनिरुद्ध यादव ने दो सशस्त्र आतंकवादियों का सफाया करने में उच्च स्तर की व्यावसायिकता कुशलता, साहस और वीरता का परिचय दिया। 10 फरवरी 2010 को उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए राइफल मैन अनिरुद्ध यादव

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 10 February 2010, when own sources tipped off about a terrorist hide out, search team was launched into the Assam Arunachal border jungle in Udalgiri district of Assam in their pursuit. Once the team reached near the hide out, Rifleman Aniruddh Yadav volunteered to probe the area to collect more intelligence about them terrorists to enable the commander to launch deliberate assault on the terrorist hideout. As the party moved forward, it came under heavy fire. Rifleman Aniruddh Yadav showing presence of mind and great determination dashed towards the firing terrorist. This sudden action totally unnerved the terrorist and before he could react, he was shot down by Rifleman Aniruddh Yadav. Without resting, Rifleman Aniruddh Yadav dashed towards the terrorist taking cover of thick vegetation and in a close combat neutralized the second terrorist also.

Rifleman Aniruddh Yadav displayed high standard of professionalism, raw courage and utter disregard to personal safety in eliminating two armed terrorists.

<u>स्क्वाड्रन लीडर संजीव मिश्रा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

14094 एफ (पी), स्क्वाड्रन लीडर संजीव मिश्रा का जन्म 06 मई 1954 को नैनीताल में श्रीमती सुशीला मिश्रा तथा श्री सतीश चन्द्र मिश्रा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट जेवियर स्कूल, दिल्ली से पूरी की। 11 जुलाई 1975 को भारतीय वायु सेना में कमीशन लिया और 14 स्कवाड्रन एयरफोर्स में पदस्थ हुए।

30 से 70 साल की उम्र के सात यूरोपीय ट्रेकर्स की एक टीम भूटान में 14500 फीट की ऊंचाई पर फंसी हुई थी। इनमें से एक की पहले ही मौत हो चुकी थी और बाकी की हालत नाजुक बनी हुई थी। उनके हाई एल्टीट्यूड पल्मोनरी एडिमा (HAPO) से पीड़ित होने की सूचना दी गई थी।

07 अक्टूबर 1988 को स्क्वाड्रन लीडर संजीव मिश्रा को बचाव मिशन के लिए तैनात किया गया। हालांकि उन्हें पता था कि निकासी का स्थान चेतक हेलीकॉप्टर की सामान्य परिचालन सीमा से काफी ऊपर स्थित था और वह भी एक अज्ञात क्षेत्र में है। स्क्वाड्रन लीडर मिश्रा ने बचाव मिशन के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया क्योंकि किसी भी देरी के परिणामस्वरूप अधिक मौतें हो सकती थीं। उन्होंने एक वरिष्ठ भूटानी अधिकारी के साथ उड़ान भरी और असाधारण कौशल दिखाते हुए उन्होंने उस स्थान को ढूंढ लिया और चार बचे हुए लोगों का पता लगा लिया। अत्यंत कठिन पहाड़ी इलाके के बावजूद, वह एक संकरी जगह पर हेलीकॉप्टर को नीचे उतारने में सफल रहे और दो यात्रियों को बाहर निकाला। उन्हें अब पता चला कि मृत विदेशी और अन्य दो जीवित बचे लोग 2/ 3 मील दूर एक जगह पर फंसे हुए थे और उनकी हालत और भी खराब थी।

स्क्वाड्रन लीडर मिश्रा दोनों हताहतों को थिम्पू ले आये। रोटर को चालू रखा और फिर पारो में त्वरित ईंधन भरने के बाद दूसरे स्थान के लिए उड़ान भर ली। चूंकि कोई स्पष्ट स्थान उपलब्ध नहीं था इसलिए काफी खोजबीन करने और अपने सभी अनुभव को लागू करने के बाद वह एक पहाड़ी धारा में एक छोटे से पैच पर हेलीकॉप्टर को उतारने में कामयाब रहे, जो कि विशाल शिलाखंडों से बिखरा हुआ था। उन्होंने वरिष्ठ अधिकारी को शव की रखवाली के लिए यहीं छोड़ दिया और दोनों हताहतों को थिम्पू ले गए। एक बार फिर त्वरित ईंधन भरने के बाद, वह पहले स्थान पर गये और शेष दो हताहतों को बाहर निकाला। इस समय तक मौसम खराब हो चुका था और वह पहले से ही 05 घंटे से अधिक समय से उड़ान भर रहे थे। लेकिन यह महसूस करते हुए कि शव की रखवाली करने वाला नागरिक अधिकारी खतरे में है और रात को नहीं बचेगा, वह एक बार फिर वापस गये और सिविलियन और शव को निकाल लाये।

इस पूरे मिशन के दौरान स्क्वाड्रन लीडर संजीव मिश्रा ने उच्च पेशेवर कौशल, असाधारण साहस और संयम का परिचय दिया। उनके इस असाधारण साहस और संयम के प्रदर्शन के लिए उन्हें 07 अक्टूबर 1988 को "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया। इसके अलाव उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए 26 जनवरी 2004 को उन्हें "विशिष्ट सेवा मेडल" प्रदान किया गया। बाद में वह पदोन्नत होकर एयर कमोडोर बने और अपनी सेवा पूरी कर 28 फरवरी 2010 को वायु सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामास्वामी वेंकटरमण से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए स्क्वाड्रन लीडर संजीव मिश्रा

प्रशंसात्मक उल्लेख

A team of seven European Trekkers between the ages of 30 to 70 years had been stranded at an altitude of 14500 feet in Bhutan. One of them had already died and the rest were in a critical condition. They were reported to be suffering from High Altitude Pulmonary Oedema (HAPO) and unless immediately evacuated would have met the same fate.

On the 7th October, 1988 Squadron Leader Sanjiv Misra was detailed for the casualty evacuation mission. Although he was aware that the place of evacuation was located well above the normal operating limits of the Chetak helicopter and that too in an uncharted territory, Sqn Ldr Misra decided to proceed with the mercy mission since any delay would have resulted in more fatalities. He took off with a senior Bhutanese official on board and showing exceptional skill quickly searched the area and located four survivors. In spite of the extremely difficult hilly terrain, he managed to put down the helicopter on a narrow ledge and evacuated two of the more serious casualties. He now learnt that the dead foreigner and the other two survivors were stranded at a place 2/3 miles away and their condition was even worse. Sqn Ldr Misra flew the two casualties to Thimpu, kept the rotor going and then after quick refueling at Paro proceeded to the second location. Since no clear place was available, after considerable search and bringing all his experience into play he managed to hold the helicopter on a small patch in a hilly stream which was strewn with huge boulders. He left the senior official at this site to guard the body and evacuated the two casualties to Thimpu. Once again, after quick refuelling, he went to the 1st location and flew out the remaining two casualties. By this time the weather had deteriorated and he had already been flying for over 5 hours. But realising that the civilian official guarding the dead body was in peril and would not survive the night, he went back once again and rescued the civilian along with the dead body.

Throughout this mission, Squadron Leader Sanjiv Misra showed high professional skill and exceptional courage.

<u>कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 51145 एन, कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह का जन्म लखनऊ में हुआ था। इनके पिता का नाम लेफ्टीनेंट कर्नल विजय सिंह था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा आर्मी पब्लिक स्कूल धौलाकुंआ, दिल्ली से पूरी की और भारतीय सेना की गढ़वाल राइफल्स में कमीशन लिया तथा 2 गढ़वाल राइफल्स में पदस्थ हुए।

22 - 23 मई 1994 की रात को जम्मू और कश्मीर के पल्हालन नाम के गांव में कैप्टन अरविंद विक्रम सिंह ने राष्ट्र विरोधी तत्वों को अंधेरे के दौरान आगे बढ़ने से रोकने के लिए एक घात का नेतृत्व किया ।

22 मई 1994 को 22:30 बजे गांव पल्हालन की दिशा से तीन व्यक्तियों की संदिग्ध गतिविधि देखी गई। अधिकारी ने राष्ट्र विरोधी तत्वों को घात के केंद्र में आने दिया और भीषण गोलाबारी में उनमें से एक को ढेर कर दिया। अन्य राष्ट्र विरोधी तत्वों ने सैनिकों को पास पहुँचने से रोकने के लिए भारी मात्रा में गोलाबारी की और हथगोले फेंके, लेकिन वह कैप्टन अरविंद विक्रम सिंह और उनकी पार्टी को नहीं रोक पाये। उन्होंने एक और राष्ट्र विरोधी तत्व को मार गिराया और दूसरे सशस्त्र राष्ट्र विरोधी तत्व को काबू कर लिया। दो ए के - 56 राइफल के साथ छह मैगजीन, एक ग्रेनेड और 147 राउंड बरामद किए गए।

07 जुलाई 1994 को लगभग 19:20 बजे गांव हयान में ऑपरेशन करने के बाद, तीन फीट चौड़े लकड़ी के एक पुल पर सिंधु नदी को पार करते समय राइफल मैन दिगंबर सिंह संतुलन खो बैठे और सिंधु नदी की तेज बहने वाली धारा में गिर गए। कैप्टन अरविंद विक्रम सिंह ने अपनी कंपनी के जवान को बचाने के लिए नदी की तेज धारा में छलांग लगा दी। उन्होंने राइफल मैन दिगंबर सिंह को कुछ दूरी पर पकड़ लिया और उन्हें बाहर लाने की कोशिश की, लेकिन वह खुद तेज धारा में बह गये।

कैप्टन अरविन्द विक्रम सिंह ने प्रेरक नेतृत्व, कर्तव्य के प्रति वीरता और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया। 22 मई 1994 को उनके प्रेरक नेतृत्व और आत्म बलिदान की भावना के लिए उन्हें मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 22 May 1994 at 2230 hours suspicious movement of three personnel was observed from the direction of Village Palhalan. The officer let the ANEs come up to the centre of the ambush and in the ensuing fierce fire fight killed one of them. The other ANEs directed heavy volume of fire and lobbed grenades to present troops from closing in but this did not deter Captain Arvind Vikram Singh and his party and with unflinching courage they shot dead one more ANE and overpowered the other armed ANE alive. Two Rifles AK 56 with six magazines, one grenade and 147 rounds were recovered.

After conducting operations at village Hayan at about 1920 hours on 07 July 94 while crossing the Indus river over an improvised three feet wide wooden bridge Rifleman Digamber Singh lost balance and fell into the fast flowing current of river Indus. Captain Arvind Vikram Singh jumped in the torrential current of the river to save his company Jawan, Negotiating through huge boulders, managed to grap hold Rifleman Digamber Singh and tried to bring him to the safety of mainland and but he himself got swept away and laid down his life.

Captain Arvind Vikram Singh thus, displayed inspiring leadership, bravery devotion to duty and spirit of self sacrifice.

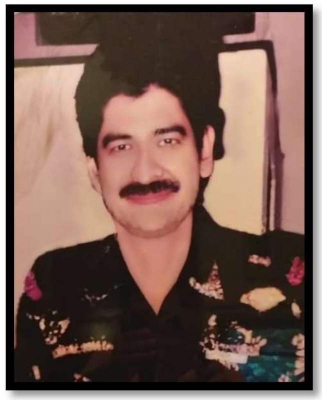

<u>मेजर कमल कालिया</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन राइनो, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 35555 ए, मेजर कमल कालिया का जन्म 05 जनवरी 1958 को जनपद लखनऊ में श्रीमती आशा कालिया तथा श्री ए एस राम कालिया के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सैनिक स्कूल, अमरावती से पूरी की। मेजर कमल कालिया ने 16 दिसम्बर 1978 को भारतीय सेना की मद्रास रेजिमेंट में कमीशन लिया और 11 मद्रास रेजिमेंट में पदस्थ हुए ।

मेजर कमल कालिया,11 मद्रास रेजिमेंट की `डी' कंपनी के कंपनी कमांडर थे और असम के तिनसुकिया और डिब्रूगढ़ जिलों में यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) के उग्रवादियों के खिलाफ ऑपरेशन राइनो में काम कर रहे थे। जहां उन्होंने एक उत्कृष्ट खुफिया नेटवर्क स्थापित कर लिया था। उल्फा के एक शीर्ष नेता प्रकाश दत्ता, जो कि तिनसुकिया जिले का उल्फा का वित्त सचिव था। उसके बारे में खुफिया जानकारी प्राप्त कर उन्होंने 05 अप्रैल 1992 को उसे पकड़ लिया। पकड़े गए उग्रवादी द्वारा दी गई सूचना के आधार पर उल्फा के गढ़ लखीपाथर पर छापा मारा गया। बाद में कमला मोरन, बोजसाकांतो मेक के नेतृत्व में 204 उल्फा कैडरों को आत्मसमर्पण करने के लिए राजी किया। लखी देवरी और उमेश मोरन ने भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद के साथ आत्मसमर्पण किया।

27 मार्च 1993 को मेजर कमल कालिया और उनकी टीम ने नाडांग में होने वाली उल्फा की बैठक को विफल करते हुए एक अन्य स्थान पर छापा मारा। छापेमारी में प्रचार सामग्री और स्मारक कटआउट के साथ नौ उग्रवादी पकड़े गए।

09 अप्रैल 1993 को सूत्रों ने मोरन- डिब्रूगढ़ रोड पर एक मारुति कार में उल्फा के एक अन्य शीर्ष आतंकवादी रंतु नियोग के जाने की सूचना दी। मेजर कमल कालिया ने तुरंत अपनी टीम को सक्रिय किया और पीछे लग गए। शीर्ष उग्रवादी को खोजते हुए मेजर कमल कालिया सिविल बस की चपेट में आ गये, जिससे मौके पर ही वह शहीद हो गये।

इस प्रकार मेजर कमल कालिया ने उल्फा उग्रवादियों से लड़ते हुए कर्तव्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण, नेतृत्व क्षमता, पहल और आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया। 27 मार्च 1993 को उन्हें मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती अर्चना कालिया

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Kamal Kalia, Company Commander `D' Company was operating in Operation Rhino against United Liberation Front of Assam (ULFA) militants in Districts of Tinsukia and Dibrugarh in Assam, where he had established an excellent intelligence network. On acquiring intelligence about a top ULFA leader Prakash Dutta, Finance Secretary of Tinsukia District, he apprehended him on 05 April 1992. On the basis of information supplied by the captured militant the ULFA strong-hold of Lakhipathar was raided. Later he was able to force 204 ULFA cadres led by Kamla Moran, Bojsakanto Mech. Lakhi Deori and Umesh Moran to surrender alongwith large quantity of arms and ammunition.

On 27 Mar 93 Major Kamal Kalia and his team raided another location thwarting an ULFA meeting scheduled to be held at Nadang. In the raid nine militants along with propaganda material and memorial cut-outs were captured.

On 09 Apr 93 his sources informed about move of another top ULFA militant Rantu Neog in a Maruti Car on road Moran-Dibrugarh. Major Kamal Kalia immediately activated his team and got into hot-pursuit. While tailing the top militant, Major Kamal Kalia was knocked fatlly by on coming civil bus.

Major Kamal Kalia, thus displayed selfless devotion to duty, dedication, tenacity and sprit of self sacrifice while fighting the ULFA militants.

<u>लेफ्टीनेंट कर्नल मुकेश चन्द्र शर्मा</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 36554 के, लेफ्टीनेंट कर्नल मुकेश चन्द्र शर्मा का जन्म 04 जनवरी 1953 को जनपद लखनऊ में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती रामा देवी शर्मा तथा पिता का नाम श्री दया शंकर शर्मा था। इनकी स्कूली शिक्षा डी ए वी कालेज, लखनऊ में हुई थी। इन्होंने 24 अगस्त 1975 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 8 राजपूताना राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 16 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

22 मई 1996 को लेफ्टिनेंट कर्नल मुकेश चंद्र शर्मा, कार्यवाहक कमांडिंग ऑफिसर,16 राष्ट्रीय राइफल्स आठ वाहनों के एक विशेष काफिले में वोखे (नागा लैंड) से गोलाघाट (असम) के लिए सड़क के रास्ते जा रहे थे। लेफ्टीनेंट कर्नल मुकेश चंद्र शर्मा जोंगा को चला रहे थे जो कि वाहनों के काफिले में चौथे नम्बर पर था। 12:15 बजे लगभग 20 से 30 नागा विद्रोहियों ने घात लगाकर काफिले पर भारी गोलीबारी करना शुरू कर दिया। विद्रोहियों ने सबसे पहला प्रहार जोंगा पर किया। परिणामस्वरूप लेफ्टिनेंट कर्नल मुकेश चंद्र शर्मा के सीने पर चोटें आईं।

हालांकि लेफ्टिनेंट कर्नल मुकेश चंद्र शर्मा घायल हो गए, उन्होंने तुरंत जोंगा को रोक दिया और साथ चल रहे अन्य लोगों को तुरन्त नीचे उतरकर जवाबी कार्यवाही करने का आदेश दिया। उन्होंने अपनी पिस्तौल निकाली और घात लगाए नागा विद्रोहियों पर फायर करने लगे।

खून काफी तेजी से बह रहा था लेकिन उन्होंने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए चिकित्सा सहायता लेना उचित नहीं समझा। लेफ़्टिनेंट कर्नल शर्मा ने जोंगा को बाएँ हाथ से चलाकर और दाएँ हाथ से फायरिंग करते हुए गोलियों के बीच से होते हुए आगे बढ़े और अपने जवानों को घात लगाये नागा विद्रोहियों पर गोली चलाने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। उन्होंने खडी हुई काफिले की पूरी गाड़ियों को पार किया और साथ-साथ अपने जवानों को प्रोत्साहित और प्रेरित करते रहे।

ऐसा करते हुए उन्हें तब तक और भी गोलियां लगीं। लगभग दो मीटर की दूरी से उनके सिर पर एक गंभीर ब्रस्ट लगा। अंततः लेफ्टिनेंट कर्नल शर्मा जोंगा के ऊपर ही शरीर पर लगी चोटों के कारण चिरनिद्रा में लीन हो गये लेकिन वह अपनी पिस्तौल को मजबूती से पकड़े हुए थे।

इस प्रकार लेफ्टिनेंट कर्नल मुकेश चंद्र शर्मा ने नागा विद्रोहियों के साथ मुठभेड़ में उच्च कोटि के साहस, वीरता और नेतृत्व का प्रदर्शन किया। उनके इसी साहस और वीरता को सम्मानित करते हुए उन्हें 22 मई 1996 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती कल्याणी शर्मा

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 22 May 1996, Lieutenant Colonel Mukesh Chandra Sharma, Officiating Commanding Officer 16 Rashtriya Rifles was moving in a special convoy of eight vehicles on road Wokhe (Nega Land) - Golaghat (Assam). Lieutenant Colonel Mukesh Chandra sharma was driving the Jonga which was fourth in the order of march. At 1215 hours the convoy was ambushed by Naga underground numbering approxmately twenty to thirty generating a very heavy volume of fire. The first volley of shots hit the Jonga. Frontally as a result Lieutenant Colonel Mukesh chandra Sharma sustained injuries on the chest.

Though wounded, he immediately halted the Jonga ordered other occupants to dismount and return the Fire. He himself took out his pistol and started firing towards the ambush.

Refusing medical aid despite bleeding profusely, Lieutenant Colonel Sharma drove the jonga forward through the hail of bullets driving with left hand and firing with right hand, all the while shouting and exhorting his men to fire at the ambush. He overtook the vehicle which had been immobilised and continued driving up along the length of the convoy exhorting and motivating his men. In doing so he received more bullet hits till. He was fatally hit on the head by a brust from a close range of two meters. Lieutenant Colonel Sharma finally succumbed to the injuries at the wheel of Jonga with the pistol still gripped in his hand.

Lieutenant Colonel Mukesh Chandra Sharma thus displayed raw courage and leadership qualities of the highest order in an encounter with Naga undergrounds

<u>मेजर सैय्यद अली उस्मान</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 46931 एच, मेजर सैय्यद अली उस्मान का जन्म 28 दिसम्बर 1969 को लखनऊ में श्रीमती रेहना अली अमीर तथा श्री सैय्यद मोहम्मद अली अमीर के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय, आगरा कैंट से पूरी की। 24 अगस्त 1991 को इन्होंने भारतीय सेना की असम राइफल्स में कमीशन लिया और 8 असम राइफल्स में पदस्थ हुए।

20 फरवरी 1999 को मेजर सैयद अली को असम में गोहपुर के उत्तर में बोडो बहुल क्षेत्र के कुवाड़ागुडी गांव में कुछ मकानों में आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना मिली थी। मिली सूचना के आधार पर मेजर सैयद अली उस्मान ने सर्वाधिक दुर्गम रास्ते से होते हुए वहाँ पहुँचने की योजना बनायी जिससे कि उनका दल वहाँ तक सुरक्षित पहुँच जाय तथा आतंकवादियों को इस बात की भनक भी न लगे। संदिग्ध मकानों के निकट पहुँचते ही मेजर उस्मान ने अपने दल को आदेश दिया कि वे शीघ्र सभी मकानों को घेर लें। जब घेराबंदी की जा रही थी तभी आतंकवादियों ने इनके दल पर गोलीबारी आरंभ कर दी और वहां से भागने का प्रयास करने लगे। आतंकवादियों को भागता देखकर मेजर उस्मान ने ए के - 47 राइफल से सही पोजीशन से निशाना लगाते हुए उनमें से एक को ढेर कर दिया। उसके बाद हुई कार्यवाही में एक अन्य दुर्दान्त आतंकवादी को भी ढेर कर दिया गया और भारी मात्रा में हथियार और गोला बारूद बरामद किया गया।

मेजर सैय्यद अली उस्मान ने इस कार्यवाही में साहस, वीरता और कुशल नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। 20 फरवरी 1999 को उन्हें उनके साहस और वीरता के लिए “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 20 February 1998, based on information about a hideout of houses in village Kuwariguri in Bodo dominated belt north of Gohpur in Assam, Major Syed Ali Usman planned a route along the most difficult approach to ensure cover, concealment and maximum surprise.

As his raid group closed in at the suspected group of houses, Major Syed Ali Usman ordered for a running corden to be laid. While the cordon was being established, the militan's opened fire at the column and tried to make their escape. Seeing the militants getting away, the officer with his AK-47 rifle in hip position killed one of them, Subsequent operations led to the elimination of another hardcore militant and recoveries of Arms and Ammunition.

Major Syed Ali Usman displayed unparalleled bravery exemplary courage and sterling leadership disregarding threat to his personal safety.

कैप्टन तपन कुमार पंत
शौर्य चक्र
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 54313 एम, कैप्टन तपन कुमार पंत का जन्म 15 जनवरी 1975 को जनपद लखनऊ में श्रीमती मुन्नी पंत तथा श्री देवकी नन्दन पंत के यहां हुआ था। इन्होंने इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा सेन्ट डोमनिक सेवियो कालेज, लखनऊ तथा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी से बी एस सी की शिक्षा पूरी की। मद्रास विश्वविद्यालय से एम एस सी तथा उस्मानिया विश्वविद्यालय से सैन्य विज्ञान में परास्नातक की डिग्री हासिल किया। इन्होंने 08 जून 1996 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 13 ग्रेनेडियर्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 17 असम राइफल्स में हुई।

कैप्टन तपन कुमार पंत को 29 जनवरी 2001 को लगभग 22:00 बजे इम्फाल के गांव नौरेमथांग तुरेन वांगमा में कुछ उग्रवादियों के ठिकाने के बारे में जानकारी मिली। कैप्टन पंत अब तक कई ऑपरेशनों का नेतृत्व कर चुके थे। 30 जनवरी 2001 को सुबह साढ़े चार बजे ठिकाने पर पहुंचते ही आतंकियों ने फायरिंग शुरू कर दी। कैप्टन पंत हो रही फायरिंग की दिशा की ओर बढ़ने लगे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना छोटी आड़ का उपयोग करते हुए, वह दो जवानों के साथ एक कीचड़ भरे क्षेत्र में रेंगते हुए आगे बढ़े। ठिकाने से 35 मीटर की दूरी पर पहुँचकर कैप्टन तपन कुमार पंत ने एक ग्रेनेड फेंका और एक जलमार्ग के पार भागते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया। इसके बाद कैप्टन तपन कुमार पंत ने तीसरे आतंकवादी पर हमला किया जो फायरिंग कर रहा था, और नजदीकी लड़ाई में उसे भी मार गिराया। इस ऑपरेशन के परिणामस्वरूप आठ आतंकवादी मारे गए और बड़ी संख्या में गोला बारूद बरामद किया गया।

कैप्टन तपन कुमार पंत ने उग्रवादियों से लड़ने में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूरी उपेक्षा करते हुए प्रेरक नेतृत्व, असाधारण साहस और अत्यंत वीरता का परिचय दिया। उनकी वीरता, साहस और नेतृत्व के लिए उन्हें 30 जनवरी 2001 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
कैप्टन तपन कुमार पंत

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 29 January 2001 at about 2200 hours Captain Tapan Kumar Pant led a series of operations which finally led to information about location of a hideout of some militants in Village Naoremthang Turen Wangma, Imphal. While reaching the hideout at 0430 hours on 30 January 2001 the militants started fire. Captain Pant started moving towards the direction of fire. With utter disregard to his personal safety making use of the little cover available, he crawled through a slushy area alongwith two jawans. Reaching 35 meters short of a hideout Captain Tapan Kumar Pant lobbed a grenade and rushed across a waterway and killed two militants at point blank range.

Thereafter, the officer pounced on the third militant, who was firing, and in a close quarter battle killed him too. The operation resulted in eight militants being killed and recovery of large number of ammunition.

Captain Tapan Kumar Pant displayed inspiring leadership, extraordinary courage and extremely rare gallantry with total disregard to his personal safety in fighting the militants.

लेफ्टीनेंट हरी सिंह विष्ट

शौर्य चक्र, मरणोपरान्त

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 59276 एन, लेफ्टीनेंट हरी सिंह विष्ट का जन्म 31 दिसम्बर 1974 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में श्रीमती शांति विष्ट तथा आनरेरी कैप्टन पूरन सिंह विष्ट के यहां हुआ था । इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय (तोपखाना), लखनऊ से पूरी की। 11 दिसम्बर 1999 को भारतीय सेना की गोरखा राइफल्स में कमीशन लिया और 3/11 गोरखा राइफल्स में पदस्थ हुए।

21 जुलाई 2000 को जम्मू कश्मीर के मझियारी गांव में आठ उग्रवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने पर तलाशी अभियान शुरू किया गया। लेफ्टिनेंट हरी सिंह बिष्ट घातक प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे। संदिग्ध घरों के पास पहुंचने पर उनके दल के ऊपर भारी फायरिंग होने लगी। उन्होंने अपने दल को दो समूहों – सपोर्ट ग्रुप और एसाल्ट ग्रुप में बांटकर तैनात किया और स्वयं एसाल्ट ग्रुप का नेतृत्व करने लगे। आतंकवादियों के ठिकाने के पास जाते समय उन्होंने एक आतंकवादी को मार गिराया और बाकी को उलझाये रखा। वह भारी गोलाबारी के बीच आतंकवादियों के ठिकाने की ओर बढ़ते रहे। एक आतंकवादी अचानक मक्का के खेतों से निकला और पिका मशीनगन से फायर कर लेफ्टिनेंट बिष्ट को घायल कर दिया। अत्यधिक खून बह रहा था लेकिन उन्होंने आगे बढ़ने के लिए अपने सैनिकों को प्रेरित और निर्देशित करना जारी रखा। आतंकवादियों के नजदीक पहुंचकर एक और को मार गिराया। गंभीर रूप से घायल होने और ज्यादा रक्तस्राव होने के कारण भारत मां का यह अमर सपूत सदा-सदा के लिए चिर निद्रा में लीन हो गया।

लेफ्टीनेंट हरी सिंह विष्ट ने आतंकवादियों से लड़ने में अदम्य साहस, अद्‌वितीय वीरता और साहसिक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनकी इस वीरता को सम्मानित करने के लिए 21 जुलाई 2000 को उन्हें मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई उनकी मां श्रीमती शांति विष्ट

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Lieutenant Hari Singh Bist was commanding a Ghatak platoon which launched operation in village Majhiari in Jammu and Kashmir. On receipt of information regarding presence of eight militants, search and destroy operation was launched on 21 July, 2000. While approaching a group of suspected houses, they came under heavy fire. Lieutenant Bist immediately positioned support group and courageously led assault group. While closing in with the hideout, he killed one militant and continued to engage the rest. He moved towards the hideout under heavy fire. One militant suddenly appeared from maize fields and fired with PIKA MACHINE GUN injuring Lt Bist. Bleeding profusely he continued to inspire and direct troops to close in and charged at the militant killing him instantly. He however, succumbed to his injuries.

Lieutenant Hari Singh Bist display indomitable raw courage, unparalleled valour and bold leadership in fighting the militants and made the supreme sacrifice.

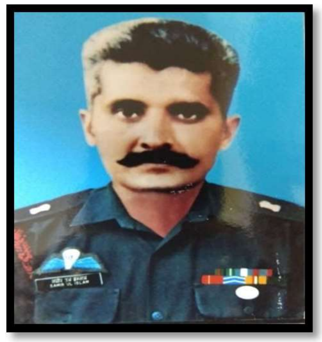

मेजर समीर उल इस्लाम

शौर्य चक्र, मरणोपरान्त

(ऑपरेशन राइनो, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 46703 ए, मेजर समीर उल इस्लाम का जन्म 01 अक्टूबर 1964 को जनपद लखनऊ में श्रीमती जाकिया इस्लाम तथा श्री जमीरूल इस्लाम के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा सेंट जोसेफ कालेज इलाहाबाद, निर्मला कान्वेंट स्कूल, रेनूकोट तथा इण्टरमीडिएट की पढ़ाई अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से पूरी की। स्नातक की शिक्षा उस्मानिया विश्वविद्यालय से ग्रहण किया। 25 अगस्त 1990 को भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेन्ट में कमीशन लिया और 17 पैरा फील्ड रेजिमेंट में पदस्थ हुए ।

02 जुलाई 2001 को मेजर समीर उल इस्लाम असम के कछार जिले में जिरी नदी के पास शगथी गांव में शरण लेने वाले कुछ यूनाइटेड नेशन लिबरेशन फ्रंट के कार्यकर्ताओं की संभावित उपस्थिति की जांच के लिए एक गश्ती दल का नेतृत्व कर रहे थे।

03 जुलाई 2001 को 03:00 बजे, मेजर समीर उल इस्लाम ने रास्ते में अपने मुखबिर को साथ लिया और गांव में पहुंचे। मुखबिर ने चार संदिग्ध मकान दिखाए। इसके बाद मेजर समीर उल इस्लाम ने घरों के चारों ओर कड़ी घेराबंदी कर दी। दो घरों की जांच करने के बाद जब मुखबिर ने तीसरे घर पर दस्तक दी, तो अंदर कुछ हलचल हुई और महिलाओं तथा बच्चों की चीख पुकार सुनाई दी। मेजर समीर उल इस्लाम ने आतंकवादियों को महिलाओं और बच्चों को छोड़कर बाहर आने के लिए कहा। कोई प्रतिक्रिया न मिलने पर अधिकारी ने घर को खाली कराने का काम अपने ऊपर ले लिया और अपने एक साथी सैनिक के साथ घर में जबरन प्रवेश किया। हथियारबंद आतंकवादी ने अपनी पिस्तौल से उनके साथी सैनिक पर फायर कर दिया। साथी सैनिक को कवर कर रहे मेजर समीर उल इस्लाम ने उन्हें आड़ लेने के लिए कहा और खुद पर गोली चलाने वाले आतंकवादी पर फायर कर दिया। इसी बीच आतंकवादी की एक गोली आ लगी। गोली लगने के साथ ही उन्होंने आतंकवादी के ऊपर ब्रस्ट फायर कर दिया।

मरने से पहले आतंकवादी ने एक ग्रेनेड निकाला और सेफ्टी पिन निकालने ही वाला था, गंभीर रूप से घायल मेजर समीर उल इस्लाम ने आतंकवादी की मंशा को भांप लिया और उसके सिर के बीच में अपनी ए के - 47 से एक और ब्रस्ट फायर झोंक दिया, जिससे वह आतंकवादी मारा गया। हालांकि उनके साथी सैनिक सतर्क थे। मेजर समीर उल इस्लाम ने अपने साहस और तत्परता के बल पर बंधक नागरिकों और साथी सैनिकों की प्राण रक्षा की। लेकिन ज्यादा घायल होने के कारण मेजर समीर उल इस्लाम शहीद हो गये।

मेजर समीर उल इस्लाम ने व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता किए बिना महिलाओं और बच्चों के जीवन की रक्षा के लिए साहस, दृढ़ संकल्प, वीरता और साहस का अनुकरणीय प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। मेजर समीर उल इस्लाम को उनके साहस और वीरता के लिए 03 जुलाई 2001 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती फौजिया इस्लाम

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 02 Jul 2001, Major Samir Ul Islam was leading a patrol to investigate the likely presence of some UNLF cadres taking shelter in village Shagthi near Jiri River in Cachar District in Assam.

Maj Samir Ul Islam picked up his source enroute and approached the village at 0300 hours on 03 July 2001. After being shown four suspect houses, the officer placed a tight cordon around the houses. After clearing two houses when the source knocked on the third house, there was some movement inside and wild shrieks of women and children were heard. Major Samir Ul Islam yelled out to the terrorist to let the ladies and children come out. Observing no response the officer took it upon himself the task of clearing the house and the officer along with a baddy pair made a forced entry into the house. The armed terrorist aimed his pistol to fire upon one of the buddy pair. Maj Samir Ul Islam who was covering the buddy pair yelled out to them to take cover and charged towards the terrorist drawing fire on himself. In the ensuing gunfight, the officer was hit. However with a long burst from his weapon he hit the terrorist bringing him down to the ground before collapsing himself. In a dying effort, the terrorist took out a grenade and was about to release the safety pin. Alerted by the buddy pair and though grievously injured Maj Samir Ul Islam fired another volley from his AK-47 through the terrorist's head and killed him instantaneously, thereby saving the lives of civilian hostages and his subordinates.

Maj Samir Ul Islam, thus, displayed cold courage, dogged determination in utter disregard of personal safety in having any lives and made the supreme sacrifice.

<u>कैप्टन तुषार धस्माना</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 63809 एच, कैप्टन तुषार धस्माना का जन्म 30 नवम्बर 1982 को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में श्रीमती मुक्ता धस्माना तथा ब्रिगेडियर जितेन्द्र धस्माना के यहां हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा आर्मी पब्लिक स्कूल, नेहरू रोड, लखनऊ में हुई। इन्होंने 12 जून 2004 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 6 पैरा बटालियन में पदस्थ हुए।

जम्मू कश्मीर के बांदीपुर जिले के एक क्षेत्र में कुछ आतंकवादियों के बारे में खुफिया जानकारी मिली। आतंकवादियों के ऊपर प्रभावी कार्यवाही करने के लिए कैप्टन तुषार धस्माना ने अपनी टुकड़ी के साथ एम्बुश लगाया।

07 अगस्त 2009 को 18:30 बजे, कैप्टन तुषार धस्माना ने पास के नाले में आतंकवादियों की गतिविधियों को करीब से देखा। उन्होंने आंकलन किया कि घात लगाकर बैठे दल को सचेत करने से ऑपरेशन खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए वह अपने साथी के साथ अपने स्थान से हट गए और आतंकवादियों को आश्चर्यचकित कर दिया। आतंकियों ने तुरंत फायरिंग की और भागने का प्रयास किया।

कैप्टन तुषार धस्माना ने आतंकवादियों की मंशा को भांप लिया और तेजी से जवाबी फायरिंग करते हुए एक आतंकवादी को मार गिराया। बाकी आतंकवादी नीचे की ओर भागे। समय की आवश्यकता को भांपते हुए कैप्टन धस्माना ने अपनी स्थिति से छलांग लगा दी और निर्भयतापूर्वक अपने साथी सैनिक के साथ भागे हुए आतंकवादियों को मारने के लिए आगे बढ़े। अनुकरणीय साहस और दृढ़ता का परिचय देते हुए उन्होंने आतंकवादियों से मुकाबला किया और दूसरे आतंकवादी को बेहद करीब से मार गिराया। ठीक उसी समय तीसरे आतंकवादी ने कैप्टन धस्माना को पीछे से निशाना बनाने का प्रयास किया।

चमकती हुई बिजली की तेजी के साथ अधिकारी ने छिपे हुए आतंकवादी पर एक ग्रेनेड फेंका और उसके बाद गोलियों की बौछार कर दी जिसके परिणामस्वरूप तीसरा आतंकवादी भी ढेर हो गया।

कैप्टन तुषार धस्माना ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अदम्य साहस और उच्च कोटि की वीरता का परिचय दिया। 07 अगस्त 2009 को इन्हें इस वीरता और साहसपूर्ण कार्यवाही के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन तुषार धस्माना

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Based on intelligence Captain Tushar Dhasmana laid an ambush in general area in Bandipore district, Jammu & Kashmir.

At 1830 hours on 07 August 2009 the officer noticed movement of terrorists in the Nala at close range. He assessed that alerting the ambush parties would jeopardize the operation so he and his buddy sidestepped from their location and surprised the terrorists. The terrorists immediately opened fire and attempted to escape. The officer held on to his nerve and expeditiously returned fire instantly killing one terrorist. The remaining terrorists ran downstream.

The officer sensing the need, jumped out from his position and fearlessly moved with his buddy to cut off the escaping terrorists. Displaying exemplary calmness and steely grit he closed in with the terrorists and shot dead the second terrorist at extreme close range. Just at that moment the third terrorist attempted to target the officer from his rear. With lightning reflexes the officer lobbed a grenade onto the hiding terrorist and followed it by a volley of fire resulting in his elimination.

Captain Tushar Dhasmana displayed act of conspicuous bravery and indomitable courage of high order while fighting the terrorists.

<u>मेजर अमित मोहिन्द्रा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 58687 ए, मेजर अमित मोहिन्द्रा का जन्म 28 नवम्बर 1976 को इलाहाबाद में श्रीमती ऊषा मोहिन्द्रा तथा श्री एच एस मोहिन्द्रा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट मैरी स्कूल तथा लॉ मार्टिनियर स्कूल, लखनऊ से पूरी की और भारतीय सेना की जम्मू एण्ड कश्मीर राइफल्स में कमीशन लिया और 4 जम्मू एण्ड कश्मीर राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी पदस्थापना सेना एविएशन कोर में हुई।

23 मई 2012 को 11:00 बजे मेजर अमित मोहिंद्रा ने जम्मू और कश्मीर के लेह जिले में सियाचिन ग्लेशियर की जमी हुई सीमाओं में 18,000 फीट पर बनाए गए पोस्ट पर तैनात सैन्य दल की सहायता के लिए कप्तान के रूप में उड़ान भरी। उन्होंने चीता हेलीकॉप्टर को पूरी तरह से नियंत्रित करते हुए प्रतिकूल वातावरण में अत्यधिक बार चक्कर लगाते हुए तथा शरीर के शिथिल पड़ जाने के बावजूद भी पोस्ट पर आवश्यक रसद आपूर्ति को सफलतापूर्वक वितरित किया।

मेजर अमित मोहिन्द्रा, दृढ संकल्प के साथ राष्ट्रीय सरहद की सुरक्षा में तैनात सैन्य दलों की सहायता करने एवं सफलतापूर्वक मिशन को पूरा करने के बाद, वापसी के समय हेलिकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण गंभीर चोटें आईं। ऐसा करते हुए उन्होंने अत्यधिक बहादुरी, हिम्मत, साहस, वीरता, व्यावसायिकता और कुशलतम उड़ान क्षमताओं का प्रदर्शन किया, जिसमें उन्होंने सर्वाधिक कठिन तथा असुविधाजनक क्षेत्र में व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह नहीं की, इस तरह उन्होंने व्यक्ति तथा मशीन और मौसम की विषमताओं की सभी सीमाओं को पार कर दिया।

मेजर अमित मोहिंद्रा ने सबसे कठिन और दुर्गम इलाके में व्यक्तिगत सुरक्षा की पूरी अवहेलना के साथ अत्यंत बहादुरी, अत्यधिक व्यावसायिकता और कुशल उड़ान दक्षता का परिचय दिया। उनके इस अभूतपूर्व शौर्य, कर्तव्यनिष्ठा और उड़ान दक्षता के लिए उन्हें 23 मई 2012 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर अमित मोहिंद्रा

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 23 May 2012 at 1100 hrs Major Amit Mohindra took off as Captain for an air maintenance mission in support of ground troops deployed at a totally air maintained post at 18,000 feet in the frozen frontiers of Siachen Glacier in Leh district of Jammu & Kashmir. He successfully delivered the essential logistic supplies at the post while flying the Cheetah helicopter on total manual controls at the extremities of its flight envelope in the rarified atmosphere with no reserve of power.

The officer suffered severe injuries, due to accident of the helicopter, while returning back after successful mission accomplishment in support of the troops on ground enabling them to guard the national frontiers with resoluteness. In doing so, he displayed utmost bravery, boldless, courage, supreme valour, extreme professionalism and finest flying skills. With total disregard to personal safety in the most difficult and inhospitable terrain, thus surpassing all limitations of man and machine and vagaries of weather.

Major Amit Mohindra displayed exemplary act of utmost bravery, extreme professionalism and finest flying skills, with total disregard to personal safety in the most difficult and inhospitable terrain.

<u>कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय, युध्द सेवा मेडल</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 55822 एक्स, कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय का जन्म 26 नवम्बर 1975 को कलिम्पोंग (पश्चिमी बंगाल) में श्रीमती शिव दुलारी राय तथा श्री नागेन्द्र प्रसाद राय के यहाँ हुआ था। इनका परिवार मूल रूप से जनपद गाजीपुर के गांव देरहगवा का रहने वाला है। इनके पिता श्री नागेन्द्र प्रसाद राय गवर्नमेंट हाईस्कूल, कलिम्पोंग में प्रधानाध्यापक थे। इन्होंने अपनी इन्टरमीडिएट तक की शिक्षा सेंट अगस्टिन स्कूल, कलिम्पोंग तथा स्नातक की शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूरी की। 05 सितम्बर 1997 को इन्होंने भारतीय सेना की गोरखा राइफल्स में कमीशन लिया और 2/9 गोरखा राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी पदस्थापना 42 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय जम्मू और कश्मीर के पुलवामा जिले में त्राल गांव में तैनात अपनी बटालियन की कमान संभाल रहे थे। उन्होंने बड़ी संख्या में आतंकवादियों को निष्क्रिय करने में अनुकरणीय प्रतिबद्धता और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

27 जनवरी 2015 को संदिग्ध मकान में खतरनाक आंतकवादी की उपस्थिति के बारे में सूचना प्राप्त होने पर इन्होंने तुरंत त्वरित प्रतिक्रिया दल के साथ उस संदिग्ध घर को घेर लिया। इसी दौरान आतंकवादी का पिता बाहर आया और निवेदन किया कि आतंकवादी द्वारा आत्मसमर्पण किया जाएगा। जब यह वार्तालाप चल ही रहा था उसी समय दो आतंकवादी अचानक बाहर आए और उन्होंने कमाडिंग अफसर की पार्टी पर नजदीक से अंधाधुंध गोलीबारी करना प्रारंभ कर दिया। अधिकारी ने गोलीबारी की बौछारों में फंसने और गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद अदम्य साहस और वीरता दिखाते हुए भीषण गोलीबारी करते हुए एक खतरनाक ए + श्रेणी के आतंकवादी को मार गिराया। इसका अहसास होते ही कि उसका साथी मारा गया दूसरा आतंकवादी अन्धाधुंध गोलीबारी करते हुए बच निकलने का प्रयास करने लगा।

अपनी गहरी चोटों की परवाह न करते हुए कर्नल राय डटे रहे और अपनी सैन्य टुकड़ी के पास पहुंच गए। उनकी टीम द्वारा जब तक दूसरे आतंकवादी का सफाया नहीं किया गया तब तक उसके बचने के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए प्रभावी रूप से लगातार गोलीबारी करते रहे।

कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय ने कर्तव्य परायणता से ऊपर उठकर अभूतपूर्व नेतृत्व, साहस और वीरता का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय के अनुकरणीय साहस, नेतृत्व और वीरता के लिए 27 जनवरी 2015 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती प्रियंका राय

<u>स्मृति शेष</u> : कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय की वीरता को सम्मानित करते हुए उनके पैतृक गांव देरहगवा तथा 39 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र वाराणसी में उनकी प्रतिमा लगायी गयी है।

कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय के पैतृक गांव में प्रतिमा

39 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र वाराणसी में कर्नल मुनीन्द्र नाथ राय की प्रतिमा

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Colonel Munindra Nath Rai had been commanding his battalion deployed in Tral village in Pulwama district of Jammu and Kashmir displaying commitment and exemplary leadership leading to neutralisation of a number of terrorists.

On 27 January 2015, on receiving information about presence of dreaded terrorist in Hunder, he rushed and cordoned the suspected house with his Quick Reaction Team. At this, father of terrorist came out and pleaded that the terrorist would surrender. While negotiations were going on, the two terrorist suddenly rushed out firing indiscriminately at close quarters on commanding officer's party. Caught in a hail of bullets and grievously wounded, the officer in an act of incomparable gallantry and superhuman effort closed in and killed one dreaded category A+ terrorist in a fierce gunfight. Realising that the second terrorist was trying to escape by firing indiscriminately, he undeterred and unmindful of his grievous injuries, resited his troops and continued to fire effectively to block the terrorist's escape route till the time second terrorist was also eliminated by his team.

Colonel Munindra Nath Rai displayed unprecedented leadership courage and valour, well beyond the call of duty and made supreme sacrifice while fighting with the terrorists.

<u>कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 80045 एल, कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी का जन्म 19 जुलाई 1992 को जनपद लखनऊ के नीलमथ्था में श्रीमती सरस्वती चौधरी तथा नायब सूबेदार नागेन्द्र नारायण चौधरी (सेना मेडल) के यहां हुआ था। इनकी स्कूली शिक्षा आर्मी पब्लिक स्कूल, सरदार पटेल मार्ग, लखनऊ से हुई। इन्होंने 13 दिसम्बर 2014 को भारतीय सेना की सिगन्ल्स रेजिमेंट में कमीशन लिया और 33 आर्मड डिवीजन सिगनल रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 21 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी 24 फरवरी 2018 से 21 राष्ट्रीय राइफल्स (गार्ड्स) में सेवारत थे ।

07 अगस्त 2018 को 21 राष्ट्रीय राइफल्स (गार्ड्स) और 9 पैराशूट रेजिमेंट की ऑपरेशनल टीमों को एक क्षेत्र की घेराबंदी और निगरानी करने की जिम्मेदारी दी गयी। 08 अगस्त 2018 को 09:50 बजे पांच आतंकवादियों की गतिविधि के बारे में कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी सतर्क थे। खराब मौसम और कम दृश्यता का लाभ उठाते हुए और सामरिक कौशल और नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए, आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए दोनों टीमों को जल्दी से समायोजित किया। आतंकवादियों की सही तरह पुष्टि और सकारात्मक पहचान करने के बाद, कैप्टन अभिनव कुमार और उनके दल ने आतंकवादियों पर भारी मात्रा में गोलियां चलाईं। इस गोलाबारी में अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना और साहस दिखाते हुए वह बोल्डर के पीछे छिपे हुए आतंकवादियों के नजदीक गये और एक अज्ञात विदेशी आतंकवादी को ढेर कर दिया। इसके बाद कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी ने प्रभावी कमान और नियंत्रण बनाए रखा और आतंकवादियों के ऊपर प्रभावी तथा कारगर फायर किया जिससे सभी पांच विदेशी आतंकवादियों को खत्म करने में मदद मिली।

कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी ने पांच आतंकवादियों को मार गिराने में असाधारण साहस और वीरता का परिचय दिया। इसके लिए 07 अगस्त 2018 को उन्हें "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
कैप्टन अभिनव कुमार चौधरी

प्रशंसात्मक उल्लेख

Captain Abhinav Kumar Choudhary is serving with 21 Rashtriya Rifles (GUARDS) since 24 February 2018.

On 07 August 2018, operational teams of 21 Rashtriya Rifles (GUARDS) and 9 Parachute Regiment were inducted for close cordon and surveillance of an area. At 0950 hours on 08 August 2018, on being alerted regarding move of five terrorists, he displayed tactical acumen and leadership and taking advantage of inclement weather and low visibility quickly readjusted both teams to prevent escape of terrorists. After visually confirming and positively identifying the terrorists, the officer and his buddy opened heavy volume of fire on terrorists. In the ensuing firefight, the officer displayed nerve of steel and unmindful of his personal safety, closed in with the terrorists which were hiding behind a boulder and eliminated one unidentified foreign terrorist on his own. The officer thereafter exercised effective command and control and ensured strict fire discipline which facilitated elimination of all five foreign terrorists subsequently.

Captain Abhinav Kumar Choudhary displayed exceptional courage, grit and valour in elimination of five terrorists.

<u>मेजर भरत सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 23436, मेजर भरत सिंह का जन्म 24 जुलाई 1943 को ग्राम बड़सरी जागीर में श्रीमती मालो देवी और श्री दत्तू सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सिटी ए वी स्कूल और के पी कालेज इलाहाबाद से पूरी की। 15 जून 1969 को इन्होंने भारतीय सेना की बिहार रेजिमेंट में कमीशन लिया और 5 बिहार रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

20 जनवरी 1981 को सूचना प्राप्त हुई कि शत्रुओं का एक सशस्त्र गिरोह घुसपैठ कर घने जंगल क्षेत्र में एक बेस स्थापित कर सैनिकों और वाहनों पर हमला करने की योजना बना रहा था। मेजर भरत सिंह को तीन कॉलम में से एक की कमान सौंपी गई, जिसे उनकी बटालियन ने दुश्मन के बेस को खोजने और नष्ट करने के लिए निर्धारित किया था। सूचना की आवश्यक आवश्यकता को देखते हुए खराब मौसम और मूसलाधार बारिश में तलाशी अभियान चलाना पड़ा।

दुश्मन का बेस अन्य दो कॉलम में से एक के पास स्थित था और एक कॉलम और ठिकाने में स्थित शत्रुओं के बीच गोलीबारी की आवाज सुनकर, मेजर भरत सिंह ने जल्दी से अपने निकटतम दो कॉलम को एक साथ इकट्ठा किया और अपने बाकी हिस्सों को एक संदेश भेजने के बाद वह उस स्थान पर पहुंचे जिसे उन्होंने अपने उत्तर पूर्व में लगभग 800 मीटर की दूरी पर आंका था। शत्रुओं ने सैनिकों को जैसे ही देखा तुरंत स्वचालित हथियारों से गोलियां चलाने लगे। मेजर भरत सिंह ने तुरंत अपने एक सेक्शन को कवरिंग फायर प्रदान करने के लिए तैनात किया और दूसरे सेक्शन को शत्रुओं पर कार्यवाही करने को कहा। इस मुठभेड़ में छह भूमिगत तत्वों को पकड़ लिया गया। शत्रुओं ने भागने का प्रयास किया, लेकिन इस समय तक तीसरा कॉलम जो मुठभेड़ स्थल से दूर था उसने उनके भागने को रोक दिया। पूरे ऑपरेशन के परिणामस्वरूप पंद्रह भूमिगत शत्रुओं और गोलाबारूद का एक बड़ा भंडार पकड़ा गया।

मेजर भरत सिंह ने इस प्रकार वीरता, दृढ़ता, कर्तव्य के प्रति समर्पण और प्रेरक नेतृत्व का परिचय दिया। उनकी इस वीरता और कर्तव्य के प्रति समर्पण की भावना के लिए उन्हें 20 जनवरी 1981 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया। बाद में वह पदोन्नत होकर कर्नल बने और 01 अगस्त 1995 को अपने सेवाकाल को पूरा कर सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर भरत सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 20th January 1981, information was received that an armed gang of hostiles having infiltrated and established a base in a dense jungle area were planning to ambush troops and vehicles. Major Bharat Singh was placed in command of one of the three columns, earmarked by his Battalion to search and destroy the hostiles' base. The search had to be carried out in torrential rains.

The hostiles base was located by one of the other two columns and on hearing the exchange of fire between that column and the hostiles in, the hideout, Major Bharat Singh quickly collected together his nearest two sections and after despatching a message to the rest of his men, rushed to the spot which he judged to be approximately 800 metres to his north east. The hostiles spotted this body of troops and opened fire with automatic weapons. Major Bharat Singh quickly deployed one of his sections to provide covering fire and personally led the other section to charge on the hostile positions. The ensuing encounter led to the capture of six underground elements.

Realising the futility of further battle, the hostiles attempted to flee, but by this time the third column, which also moved to the scene of encounter prevented their escape. The entire operation resulted in capturing of fifteen underground hostiles, and a sizeable store of ammunition besides revealing documents.

Major Bharat Singh thus displayed gallantry, perseverance, dedication to duty and inspiring leadership.

<u>सूबेदार सत्य प्रकाश</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मैनपुरी, उत्तर प्रदेश)

जे सी 538291 एक्स, सूबेदार सत्य प्रकाश का जन्म 15 जून 1956 को जनपद मैनपुरी के ग्राम प्रहलाद पुर में श्रीमती मशीला देवी और श्री जयवीर सिंह यादव के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा गिरधारी इन्टर कालेज, सिरसागंज, फिरोजाबाद से पूरी की। 04 दिसम्बर 1975 को यह भारतीय सेना की कुमाऊँ रेजिमेंट में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण पूरा होने के पश्चात 18 कुमांऊँ रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 26 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

18 अक्टूबर 2001 को सुदृढ़ीकरण सैन्य बल के कमांडर के रूप में जम्मू और कश्मीर के डोडा जिले की गंडोह तहसील में चलाए गये एक ऑपरेशन में सूबेदार सत्य प्रकाश और उनकी पार्टी ने गांव से भागे हुए आतंकवादियों को खत्म करने के लिए काको नाला में तलाश शुरू की।

14:45 बजे आतंकवादियों द्वारा तलाशी दल पर स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की गयी। सूबेदार सत्य प्रकाश के माथे पर चोट लगी। जख्मी होने के बावजूद, वह रेंगते हुए एक प्रभावी फायरिंग पोजीशन तक पहुंचे और अपनी पार्टी को तैनात कर दिया। उन्होंने फायरिंग करने वाले आतंकवादियों पर दृढ़ संकल्प और साहस का उपयोग करते हुए, ग्रेनेड फेंके और अपनी ए के - 47 से फायरिंग का करारा जबाब दिया और खूंखार आतंकवादियों को करीब से मार गिराया। चोट गहरी होने और ज्यादा रक्तस्राव के कारण वह लड़ते हुए शहीद हो गए।

सूबेदार सत्य प्रकाश ने अनुकरणीय साहस, व्यक्तिगत वीरता और सर्वोत्कृष्ट युध्द क्षेत्र नेतृत्व का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया। 18 अक्टूबर 2001 को उनके अनुकरणीय साहस और वीरता के लिए उन्हें मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती नारायन श्री

<u>स्मृति शेष</u>: सूबेदार सत्य प्रकाश की वीरांगना श्रीमती नारायन श्री ने अपने पति की याद में अपने गांव मे एक प्रतिमा लगवायी है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 18 Oct 2001 as Commander of the reinforcement, in an operation in Gandoh, Doda, Jammu and Kashmir Subedar Satya Prakash and his party commenced search of KAKO NALA to flush out and eliminate the terrorists who had escaped from the village.

At 1445 hours barrage of automatic fire was aimed at the search party by the terrorists. Subedar Satya Prakash was hit on the forehead. Despite wound, he crawled up to an effecting firing position and deployed his party. Mustering up all his determination, courage and energy, he threw grenades and charged at the terrorists firing his AK 47. He shot dead dreaded terrorists at close quarters in this daring move. The gallant Junior Commissioned Officer thereafter succumbed to his injury and attained martyrdom.

Subedar Satya Prakash displayed exemplary battlefield leadership, ensuring safety of his command, personal valour and bravery and made the supreme sacrifice while fighting the terrorist.

<u>कैप्टन राकेश शर्मा</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 48774 ए, कैप्टन राकेश शर्मा का जन्म 25 मई 1966 को जनपद मथुरा में श्रीमती संतोष शर्मा तथा श्री हरिहर शर्मा के यहां हुआ था। इन्होंने इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा मिलिट्री स्कूल, धौलपुर तथा अहमद नगर कालेज से स्नातक की शिक्षा पूरी की। उन्होंने 26 जून 1989 को भारतीय सेना की मैकानाइज्ड इन्फेन्ट्री में कमीशन लिया और 17 मैकानाइज्ड इन्फेन्ट्री में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 11 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

जम्मू और कश्मीर के डोडा जिले के भद्रवाह नामक स्थान पर 11 राष्ट्रीय राइफल्स द्वारा चलाए जा रहे आपरेशन "स्नो मैन" का नेतृत्व कैप्टन राकेश शर्मा कर रहे थे।

04 मार्च 1995 को जनरल एरिया कोएन्डरू में एक भीषण मुठभेड़ हुई जिसमें कैप्टन राकेश शर्मा के नेतृत्व में एक खूंखार उग्रवादी अहमद शाह मसूद को मार गिराया गया। उनके दल ने भागे हुए बाकी उग्रवादियों का पीछा किया। इसी बीच एक दो मंजिला इमारत से भारी मात्रा में गोलाबारी होने लगी। कैप्टन राकेश शर्मा ने तुरंत फायर बेस स्थापित किया और अवरोधक स्थापित किया। उन्होंने उग्रवादियों को मार भगाने की कोशिश की और इस प्रक्रिया में कैप्टन राकेश शर्मा के बाएं कंधे पर गोली लग गई। घायल होने के कारण उनके साथी सैनिकों ने उन्हें इलाज के लिए वहां से हटाना चाहा परन्तु उन्होंने वहां से हटने से मना कर दिया और आतंकवादियों को हतप्रभ करते हुए घर पर धावा बोल दिया। नजदीकी लड़ाई में उन्होंने अपने दल को आतंकवादियों के फायर से होने वाले नुकसान से बचा लिया लेकिन उनका दल उन्हें फायर सहायता प्रदान नहीं कर सका। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने आतंकवादियों के फायरिंग स्थल पर धावा बोल दिया और एक अफगान आतंकवादी को मौके पर ही मार गिराया। इससे पहले कि वह बचे हुए उग्रवादियों से निपट पाते दूसरे कमरे में छुपे आतंकवादियों ने ए के - 56 से उनके ऊपर ब्रस्ट फायर कर दिया। कैप्टन राकेश शर्मा ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना दूसरे कमरे में छुपे आतंकवादियों पर भीषण फायरिंग कर दी और एक अन्य विदेशी आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया।

दोनों तरफ से हो रही गोलीबारी मे उनकी गर्दन के बायीं ओर घातक चोट लग गयी। इस घातक चोट के कारण 16:00 बजे वह शहीद हो गये। इस ऑपरेशन में तीन आतंकवादी मारे गए। तीन ए के 56 राइफल और चार मैगजीन बरामद हुईं।

इस आपरेशन में कैप्टन राकेश शर्मा ने अदम्य साहस, वीरता और कर्तव्य के प्रति समर्पण की भावना का परिचय दिया। उनकी वीरता और साहस के लिए उन्हें 04 मार्च 1995 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती इन्दु शर्मा

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Captain Rakesh Sharma, 11 Rashtriya Rifles was leading a column during `Snow Man’ in the region of Bhadarwah, Doda district in Jammu & Kashmir.

On 04 March 1995 in General Area Koenderu a fierce encounter ensured wherein the column under Captain Rakesh Sharma shot dead a dreaded militant, Ahmed Shah Masud. His column also chased the rest of the fleeing militants when a heavy volume of fire came from a double storey building. Captain Rakesh Sharma immediately established a fire base and placed stops. He tried to flush out the militants and in the process Captain Rakesh Sharma received a bullet injury on his left shoulder.

He refused evacuation and he stormed the house under covering them, bewildering the militants. In the close quarter battle that ensued, the officer's location saved his team from militant fire but they could not provide him close fire support. Unmindful of personal safety be stormed the militants gun position and killed an Afghan mercenary on the spot. Before he could disengage and tackle the remaining militants, he was hit by a burst of AK 56 from the next room. Captain Rakesh with utter disregard to his personal safety charged into the room spraying bullets and killed another foreign mercenary but he received a fatal injury on the left of his neck. The brave officer later succumbed to his injuries at 1600 hrs. This operation resulted in killing of three militants and recovery of three AK 56 Rifles and four magazines.

Captain Rakesh Sharma, thus displayed unflinching devotion to duty and exemplary courage at the cost of his own life.

राइफल मैन रविन्द्रा सिंह

शौर्य चक्र

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2886537 एन, राइफल मैन रविन्द्रा सिंह का जन्म 01 जुलाई 1970 को जनपद मथुरा के ग्राम मानागढ़ी में श्रीमती प्रकाशी देवी तथा श्री रोशन सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा अपने गांव के स्कूल से पूरी की। 20 फरवरी 1989 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात इनकी तैनाती 13 राजपूताना राइफल्स में हुई।

21 दिसंबर 1995 को लगभग 11:25 बजे राजपूताना राइफल्स की 13वीं बटालियन की 'बी' कंपनी जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले के दुर गांव में गश्त कर रही थी। कंपनी कमांडर ने एक घर में संदिग्ध हरकत देखी। राइफल मैन रविन्द्रा सिंह आगे बढ़े और घर के मुख्य द्वार को बंद कर दिया। जब वह स्थिति लेने के लिए आगे बढ़े तब आतंकवादियों ने फायरिंग शुरू कर दी।

आमने सामने की लड़ाई में युध्द कौशल का प्रदर्शन करते हुए राइफल मैन रविन्द्रा सिंह ने एक आतंकवादी की राइफल छीन ली और उसे मार डाला। तत्पश्चात, अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए, उन्होंने घर के अन्दर से भाग रहे एक अन्य आतंकवादी का पीछा किया और उसे भी मार डाला।

इस प्रकार राइफल मैन रविन्द्रा सिंह ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना साहस, दृढ़ संकल्प और कर्तव्य के प्रति समर्पण भावना का परिचय दिया और दो आतंकवादियों को मार गिराया। उनके इस साहसिक और वीरतापूर्ण कार्य के लिए उन्हें 21 दिसम्बर 1995 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 21 December 1995 at approximately 1125 hours `B' Company of 13th Battalion of Rajputana Rifles was patrolling in Village Dur, District Baramulla in Jammu and Kashmir. When the Company Commander observed a suspicious movement in a house. Riflemen Ravendra Singh moved and covered the main entrance to the house. When he moved to take position, the terrorist started firing.

In a face to face encounter with a terrorist Rifleman Ravendra Singh displayed unarmed combat skill, snatched the terrorist's rifle and killed him. Thereafter, with utter disregard to his personal safety, he chased another terrorist escaping from the house and killed him too.

Rifleman Ravendra Singh, thus, displayed courage, determination and dedication to duty with utter disregard to his personal safety.

<u>ग्रेनेडियर यशपाल सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2692200 एक्स, ग्रेनेडियर यशपाल सिंह का जन्म 01 जनवरी 1978 को जनपद मथुरा के गांव किलौनी में हुआ था। इनकी माता का नाम श्रीमती महावीरी देवी तथा पिता का नाम श्री राजन लाल था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला, किलौनी तथा माध्यमिक शिक्षा सिकरवार इन्टर कालेज, सैदपुर, मथुरा से पूरी की। 30 जुलाई 1998 को भारतीय सेना की ग्रेनेडियर में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 18 ग्रेनेडियर में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 29 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

22 अप्रैल 2003 को उत्तरी सेक्टर के एक गांव में घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। एक एक घर की तलाशी चल रही थी। जब ग्रेनेडियर यशपाल सिंह और उनका एक साथी एक घर की तलाशी के लिए आगे बढ़े, तो एक आतंकवादी ग्रेनेडियर यशपाल सिंह पर अंधाधुंध फायरिंग करते हुए भागने लगा। बुलेट प्रूफ जैकेट ने ज्यादातर गोलियों को रोक लिया। एक गोली प्लेट के ऊपरी किनारे से टकराती हुई छाती में जा लगी। ग्रेनेडियर यशपाल सिंह गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो चुके थे, लेकिन उन्होंने आतंकवादी का पीछा किया और उसे मार गिराया। दूसरा आतंवादी गायों के बाड़े से बाहर निकला और ग्रेनेडियर यशपाल सिंह पर पीछे से गोली चला दी जिससे वह घायल हो गये। वह घायल होने के बाद भी विचलित नहीं हुए। ग्रेनेडियर यशपाल सिंह पीछे मुड़े और आतंकवादी पर धावा बोल दिया और देखते ही देखते आतंकवादी को मौत की नींद सुला दिया। गंभीर रूप से घायल होने के कारण ग्रेनेडियर यशपाल सिंह मां भारती की गोद में सो गये।

ग्रेनेडियर यशपाल सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में अतुलनीय वीरता और साहस का प्रदर्शन किया। उनकी इस वीरता के लिए उन्हें 22 अप्रैल 2003 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती राजेश देवी

<u>**स्मृति शेष**</u> **:** ग्रेनेडियर यशपाल सिंह के गांव किलौनी में उनके परिवार ने उनकी प्रतिमा बनवायी है।

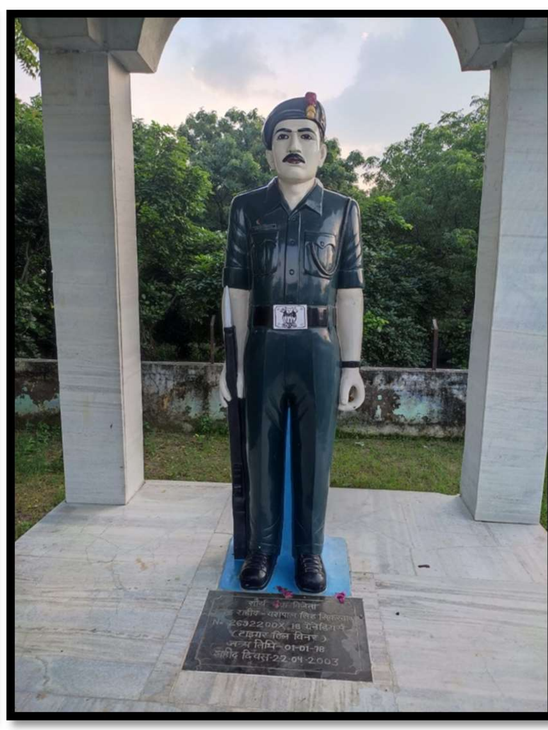

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 22 April 2003, a cordon and search operation was being conducted in a village in northern sector. House to house search was on When Grenadier Yashpal Singh and his buddy moved forwards to a search a particular house, a terrorist rushed out from a Cowshed firing indiscriminately at Grenadier Yashpal Singh from point blank range and tried to escape. While the Bullet Proof Jacket stopped most of the burst, one bullet entered the upper chest on getting deflected from the top edge of the plate. Grenadier Yashpal Singh though wounded grievously chased him staggeringly and shot him. Second terrorist also rushed out from the cow shed and he fired shots and Grenadier Yashpal Singh from behind and injured him. Grenadier Yaspal Singh turned around and charged at terrorist and killed him.

Due to his serious injury Grenadier Yashpal Singh he gave the ultimate and supreme sacrifice of his life for the nation.

मेजर पवन कुमार गौतम
शौर्य चक्र
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मथुरा, उत्तर प्रदेश)

आई सी 76179 एम, मेजर पवन कुमार गौतम का जन्म 28 जून 1990 को जनपद मथुरा में श्रीमती कमलेश गौतम और श्री टोडर मल के यहां हुआ था। भारतीय सेना की इंजीनियर्स रेजिमेंट में कमीशन लिया और 16 इंजीनियर्स रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 44 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

मेजर पवन कुमार गौतम अत्यंत साहसी और समर्पित अधिकारी हैं। उन्होंने जम्मू एवं कश्मीर में अपने दायित्व वाले क्षेत्र में प्रभावी सूचना नेटवर्क सृजित किया। अपनी प्रवीणता और अथक प्रयास से प्रमुख कार्यकर्ताओं के नेटवर्क को ध्वस्त करके उक्त अधिकारी ने विशिष्ट सूचना सृजित की जिसके परिणामस्वरूप सात आतंकवादियों का सफाया करने में सफलता हासिल हुई।

31 मार्च 2018 को आतंकवादियों के उपस्थित होने की सूचना प्राप्त होते ही मेजर पवन कुमार गौतम ने उच्च कोटि की रणनीतिक कुशाग्रता का प्रदर्शन करते हुए योजना तैयार की और चुपके से तथा शीघ्र पूर्ण सुरक्षित घेराबंदी को अंजाम दे दिया। उन्होंने अपने साथी राईफल मैन मोहम्मद मारूफ के साथ लक्षित मकान की ओर आगे बढ़ने का निर्णय लिया परन्तु अचानक ही उक्त मकान की ओर से होने वाली भारी गोलीबारी के बीच में फंस गए। घेराबंदी को तोड़ने के लिए दो आतंकवादी अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए मकान से बाहर निकले और उनके ऊपर ग्रेनेड फेंक दिया, जिससे मोहम्मद मारूफ जख्मी हो गए। भीषण गोलीबारी के बीच मेजर पवन गौतम ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए जवाबी कार्रवाई की और एक आतंकवादी को मार गिराया तथा अपने घायल साथी को सुरक्षित बचा लिया। साथ ही घर में मौजूद अन्य आतंकियों ने भी अफसर और उनकी पार्टी पर फायरिंग कर दी। व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण अवहेलना करते हुए अंधाधुंध आतंकवादी गोलाबारी के बीच वह रेंगते हुए छिपे हुए आतंकवादी की ओर बढ़े और उसे बहुत करीब से ढेर कर दिया और अन्य आतंकवादियों को घायल कर दिया।

मेजर पवन गौतम ने दो आतंकियों को ढेर कर दिया, इसके अलावा इस ऑपरेशन के दौरान पांच और आतंकियों को मारा गया।

मेजर पवन कुमार गौतम ने असाधारण नेतृत्व, अदम्य साहस और अतुलनीय वीरता का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप कुल सात आतंकवादियों को मार गिराने में सफलता मिली। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 31 मार्च 2018 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
मेजर पवन कुमार गौतम

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Major Pawan Gautam is a highly daring and dedicated officer. He created effective intelligence network in his area of responsibility in Jammu and Kashmir. With his ingenuity and relentless effort and by breaking into network of Over Ground Workers, the officer generated specific intelligence resulting in elimination of seven hardcore terrorists.

On 31 March 2018, on receipt of input about presence of terrorists, Maj Pawan Gautam displaying tactical acumen of highest order, meticulously planned and established a foolproof cordon with stealth and surprise. He alongwith his buddy Rifleman Mohd Maroof tactically approached the target house but suddenly came under heavy volume of terrorist fire from the house. Two terrorists came out firing indiscriminately trying to break the cordon and also lobbed hand grenades on them, thus injuring Rfn Mohd Maroof. Maj Pawan Gautam displaying raw courage under heavy fire, retaliated and neutralised one terrorist and rescued his injured buddy.

The second terrorist took position and brought down heavy volume of fire on the officer and lobbed hand grenades on him. Simultaneously, other terrorists in the house also opened fire on officer and his party. With total disregard to personal safety, displaying nerves of steel under heavy indiscriminate terrorist fire, the officer crawled towards the hiding terrorist and neutralised him from very close range and caused injuries to other terrorists. Two terrorists were neutralised by the officer, in addition five more terrorists were neutralised during this operation.

Major Pawan Gautam displayed exemplary leadership, raw courage and gallantry beyond call of duty resulting in elimination of a total of seven hardcore terrorists.

सिपाही देवेन्द्र कुमार
शौर्य चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 3179896 एच, सिपाही देवेन्द कुमार का जन्म 02 जनवरी 1968 को जनपद मेरठ के ग्राम सकोती टांडा में श्रीमती करतारी देवी और श्री राज सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा हितकारी इन्टर कालेज, टांडा सकोती से पूरी की। 05 अगस्त 1986 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण पूरा होने के पश्चात 3 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 1 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

16 नवंबर 1993 को वह त्वरित कार्यवाही बल के सदस्य के रूप में कमांडिंग ऑफिसर की गाड़ी में यात्रा कर रहे थे। कमांडिंग अफसर की गाड़ी के साथ अन्य दो वाहनों भी चल रहे थे। यह तीनों गाड़ी अपनी जिम्मेदारी के इलाके की नियमित जांच के लिए गयी थीं। ग्राम पजलपुर (गुंड नासिर) के बाहरी छोर पर पहुंचने पर तीन हथियारबंद आतंकवादियों ने गोलियां चलाईं और गांव में भाग गए। गाड़ी के चलते - चलते सिपाही देवेंद्र कुमार बाहर कूद गए और भागते हुए आतंकवादियों के पीछे तेज गति से दौड़ पडे.। सिपाही निशान सिंह पहले ही उनके पीछे भाग रहे थे। सिपाही देवेंद्र कुमार ने एक दीवार के पास दो आतंकवादियों को घेर लिया, जिसे वे फांद नहीं सकते थे। आतंकवादियों ने हताशा में उन पर लगभग 10 गज की दूरी से भारी मात्रा में गोलियां चलाईं। सिपाही देवेंद्र कुमार को सीने और पेट में बंदूक की गोलियां लगीं। घातक रूप से घायल होने के बाद भी इस निडर, बहादुर सिपाही ने अपनी पूरी मैगजीन को खाली कर दिया जिससे बाद में गनशॉट घाव से उनमें से एक की मौत हो गई ।

इस पूरी कार्रवाई में तीन से चार मिनट लगे। सिपाही देवेंद्र कुमार को रेजिमेंटल मेडिकल ऑफिसर ने देखा और उन्हें इलाज के लिए 92 बेस अस्पताल ले जाया गया जहां उन्होंने आपरेशन टेबल पर अंतिम सांस ली। यात्रा के दौरान वे होश में थे और वे लगातार कहते रहे कि “उन्हें मत छोड़ना”।

सिपाही देवेंद्र कुमार एक निडर सैनिक थे। उन्होंने अदम्य साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए राष्ट्र के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके साहस और वीरता के लिए उन्हें 16 नवम्बर 1993 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 16 November 1993, he was travelling in Commanding Officer's Jonga followed by other two vehicles for routine area domination. On reaching the out skirts of village Pazalpur (Gund Nasir) GR008782. Three armed militants opened fire and ran into the village. No sooner Jonga stopped. No 3179096 Sep Devendra Kumar jumped out and ran like a panther after the prey. No 13748823N Sep Nishan Singh was on his heels. Sep Devendra Kumar cornered two militants against a wall which they could not scale and desperation opened heavy volume of fire on him from approximately 10 yard's distance. Sepoy Devendra Kumar received Gun Shot wounds in chest and abdomen. This fearless brave soldier though mortally wounded emptied his magazine hitting one of them who subsequently died of Gunshot wound. This entire action took three to four minutes Number 317989 Sepoy Devendra Kumar was attended by Regimental Medical Officer and was taken to 92 Base Hosp where he breathed his last of operating table. Throughout the journey he was conscious and kept on chanting do not leave them, you must get them

Number 3179096H, Sepoy Devendra Kumar was fearless soldier who displayed lightening reflexes indomitable courage, unparallel dedication and devotion beyond the call of duty. He gave the ultimate and supreme sacrifice of his life for the nation.

<u>लेफ्टिनेंट गौरव सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 61800 पी, लेफ्टिनेंट गौरव सिंह का जन्म 01 जनवरी 1980 को जनपद मेरठ के बसंत विहार में श्रीमती कमलेश सिंह तथा श्री देवेन्द्र सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट थोमस इंगलिश मीडियम स्कूल मेरठ, इलेक्ट्रा विद्यापीठ मेरठ तथा मेरठ कालेज, मेरठ से पूरी की और 08 दिसम्बर 2001 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 4 कुमाऊं रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

भरोसेमंद सूचना के आधार पर जम्मू कश्मीर में उधमपुर जिले के एरिया नख्स में 31 जुलाई 2002 की रात को घेराबंदी तथा तलाशी ऑपरेशन की योजना बनाई गई थी।

दुश्मन को आश्चर्य में रखने के लिए लेफ्टिनेंट गौरव सिंह ने बड़े घेरे से जाकर दुश्मन के आगे पहुंचने के अभियान के दौरान रात में अपनी पार्टी का नेतृत्व किया। इसके लिए इन्होंने बस्तियों से सावधानीपूर्वक बचकर लगभग 3400 मीटर की ऊंचाई पर दुर्गम ऊंचाई वाले पर्वतीय इलाके में से रात को आठ घंटे से अधिक समय तक कठिन मार्च किया। 06:30 बजे लेफ्टिनेंट गौरव सिंह के नेतृत्व में आगे चल रहे सैनिकों पर आतंकवादियों द्वारा गोलीबारी की गई। एक आतंकवादी गोलियों की बौछार करके एक ढोक के पीछे छुप गया। लेफ्टिनेंट गौरव सिंह रेंगकर पत्थरों के एक ढ़ेर के पीछे पहुंचे तथा गोलीबारी का जवाब दिया जिससे आतंकवादी घायल हो गया। अधिकारी ने तब ढोक को घेर लिया और पाया कि आतंकवादी अभी भी जीवित है और उन पर गोली चलाने की कोशिश कर रहा है। लेफ्टिनेंट गौरव सिंह ने तुरंत गोली चलाकर उसे मार गिराया। उन्होंने यह अनुमान लगाया कि अन्य ढोकों में भी आतंकवादी मौजूद हो सकते हैं, वह अन्य दूसरी ढोकों की ओर गये। उन्होंने दो और आतंकवादियों को देखा जो कि घेराव दल पर गोलीबारी कर रहे थे।

लेफ्टिनेंट गौरव सिंह ने तुरंत उन पर गोलियां चला दीं और चेहरे पर सटीक वार करके दूसरे आतंकवादी का सफाया कर दिया। अचानक लेफ्टिनेंट गौरव सिंह ने महसूस किया कि उनके हथियार में गोलिया खत्म हो गई हैं। वे बिजली की फुर्ती से आड़ में गये और मैगजीन को बदली किया। मैगजीन को बदली करते ही उन्होंने आतंकवादी के ऊपर गोलियों की बौछार कर दी जिससे तीसरा आतंकवादी घायल हो गया। इस कार्यवाही के दौरान उनकी बायीं कलाई घायल हो गयी। अपनी चोट की परवाह किए बिना लेफ्टिनेंट गौरव सिंह रेंगते हुए आगे बढ़े और आतंकवादी को मार गिराया।

लेफ्टिनेंट गौरव सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में असाधारण वीरता, अनुकरणीय पहल और नेतृत्व का परिचय दिया। उनकी इस वीरता के लिए उन्हें 01 अगस्त 2002 को "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया। 11 फरवरी 2008 को इसी तरह की एक और वीरतापूर्ण कार्यवाही के लिए इन्हें "सेना मेडल" तथा उल्लेखनीय सेवा के लिए 15 जनवरी 2010 को सेनाध्यक्ष प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए लेफ्टिनेंट गौरव सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

Based on reliable intelligence, cordon and search operation of Area Nakhs in District Udhampur, Jammu and Kashmir was planned for the night of 31 Jul 2002.

To maintain surprise Lt Gaurav Singh led his party at night through a wide out flanking move, carefully avoiding inhabitation involving an arduous march over eight hours traversing hazardous high altitude mountainous terrain at heights around 3400 meters. Leading elements under the officer were fired upon by the terrorists at 0630hrs. A terrorist fired a burst and hid behind a dhok. Lt Gaurav Singh crawled behind a stone heap and returned the fire in which the terrorist was injured. The officer then circumvented the dhok an found the terrorist still alive and trying to fire at him. Lt Gaurav Singh immediately opened fire and shot him dead. Realizing that more terrorists were present in other dhoks, he dashed towards the other dhoks and saw two more terrorists who were firing at the cordon party.

Lt Gaurav Singh immediately opened fire on them and eliminated the second terrorist by an accurate burst on the face. Suddenly the officer realized that his weapon was empty. In a split second he dived behind cover, changed the magazine and fired a burst injured his own left wrist. However, with utter disregard to his injury Lt Gaurav Singh crawled forward and engaged the terrorist and killed him.

Lt Gaurav Singh displayed extraordinary gallantry, exemplary initiative and qualities of leadership in fighting the terrorists.

नायक अनिल कुमार
शौर्य चक्र, मरणोपरान्त
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 3183694, नायक अनिल कुमार का जन्म 02 अगस्त 1969 को जनपद मेरठ के ग्राम परतापुर में श्रीमती ओमवती देवी और श्री चन्द्रपाल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा नवभारत विद्यापीठ इन्टर कालेज, परतापुर से पूरी की। 19 मार्च 1989 को भारतीय सेना की जाट रेजिमेंट में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण पूरा होने के पश्चात 16 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए।

नायक अनिल कुमार 23 अगस्त 2003 की रात को नियंत्रण रेखा के पास एक आतंकवादी को पकड़ने के लिए लगायी एम्बुश पार्टी का हिस्सा थे। 24 अगस्त 2003 को 06:00 बजे इस क्षेत्र की तलाशी लेने का निर्णय लिया गया। एम्बुश पार्टी को तीन उप समूहों में विभाजित किया गया। नायक अनिल कुमार एक उप समूह का हिस्सा थे। इलाके की तलाशी के दौरान अचानक ही आतंकी घनी झाड़ियों से निकला और ए के राइफल से फायरिंग कर ग्रेनेड फेंका। नायक अनिल कुमार सूझ बूझ, निस्वार्थता और अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए अपने साथियों के सामने आ खड़े हुए और उसी समय उन्होंने फायरिंग करना शुरू कर दिया, जिससे आतंकवादी गंभीर रूप से घायल हो गया। दोनों तरफ से हो रही भीषण गोलीबारी में नायक अनिल कुमार के सीने और हाथ में गोली आ लगी जिससे वह अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए मौके पर ही शहीद हो गये। उनके सर्वोच्च बलिदान ने साथी सैनिकों की जान बचाई।

नायक अनिल कुमार ने साहस, वीरता और कर्तव्यपरायणता का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया और अपने साथियों को बचाया। 24 अगस्त 2003 को नायक अनिल कुमार को उनके साहस और वीरता के लिए मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती सविता देवी

<u>स्मृति शेष</u>: नायक अनिल कुमार की याद में वीरांगना श्रीमती सविता देवी ने अपने गांव परतापुर में प्रतिमा की स्थापना की है तथा सन् 2004 - 2005 में उनके गांव परतापुर से मेहरौली तक सड़क का निर्माण किया गया है।

प्रशंसात्मक उल्लेख

Naik Anil Kumar was part of an ambush party led to trap a terrorist who had in filtered across Line of Control on the night of 23 August 2003. On 24 August 20034 at 0600hours, it was decided to search the area. The ambush party was divided into three sub groups. Naik Anil Kumar was part of a sub group. While searching the area suddenly the terrorist came out of the thick undergrowth and opened fire with AK Rifle and threw grenade. Naik Anil Kumar displaying presence of mind, selflessness and exemplary courage jumped infront of his comrades and took fire on himself at the same time firing back grievously injuring the terrorist. Naik Anil Kumar died on the spot due to gun shot wound on the chest and arm. His supreme sacrifice saved the life of fellow soldiers

Naik Anil Kumar displayed courage of the highest order, selflessness and saved his comrades while making the supreme sacrifice.

<u>कैप्टन राहुल सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 65732 के, कैप्टन राहुल सिंह का जन्म 15 अक्टूबर 1980 को जनपद मेरठ में श्रीमती राजेश सिंह और श्री विजय सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट जान सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मेरठ से पूरी की। 07 सितम्बर 2002 को भारतीय सेना की गढ़वाल राइफल्स में कमीशन लिया और 2 गढ़वाल राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 14 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

17 सितंबर 2007 की रात को कैप्टन राहुल सिंह ने उत्तरी सेक्टर के एक जंगली इलाके में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में विशिष्ट खुफिया जानकारी प्राप्त की। कठिन पहाड़ी मार्ग के माध्यम से एक छोटी सी टीम का नेतृत्व करते हुए उन्होंने आतंकवादियों के ठिकाने का पता लगाया। करीब साढ़े सात बजे जब दल आतंकवादियों के ठिकाने की तरफ प्रस्थान कर रहा था तब आतंकियों ने अंधाधुंध फायरिंग की। कैप्टन राहुल सिंह ने आतंकवादियों द्वारा की जा रही भीषण फायरिंग के बीच त्वरित सजगता का प्रदर्शन करते हुए जवाबी कार्रवाई की और एक आतंकवादी को मार गिराया। दूसरा आतंकवादी एक चट्टान के पीछे कूद गया। आतंकवादी ने एक हथगोला फेंका और कैप्टन राहुल सिंह पर गोलीबारी शुरू कर दी। उन्होंने आतंकवादी हमले का सामना करते हुए दृढ़ निश्चय के साथ और बिजली की गति से पत्थरों के पीछे छलांग लगा दी और आतंकवादी को घेर कर उसको मार गिराया। उन्होंने अपनी टीम को नजदीकी गोलाबारी सहायता प्रदान की जिसके परिणामस्वरूप तीसरा आतंकवादी भी मारा गया।

कैप्टन राहुल सिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपरा, अद्वितीय वीरता, साहस और कर्तव्य के प्रति समर्पण का परिचय दिया। जिससे तीन आतंकवादियों का सफाया हो सका। 18 सितम्बर 2007 को उन्हें उनके साहस और वीरता के लिए “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On the night of 17 September 2007, Captain Rahul Singh developed specific intelligence about presence of terrorists in a forested area in the Northern Sector. Leading a small team through an unsuspecting and arduous mountainous route, he located the hideout. At approximately 0715 hours, while closing in towards the hideout, terrorists opened indiscriminate fire. Captain Rahul Singh, despite the barrage of fire, displaying nerves of steel and quick reflexes retaliated and shot dead one terrorist. The second terrorist jumped behind a rock, lobbed a grenade and resumed firing at the officer. In the face of terrorist fire, displaying dogged determination the officer moved forward with lightning speed leapfrogging behind boulders, encircled the terrorist and eliminated him. The brave officer then provided close fire support to his team which resulted in elimination of the third terrorist.

Captain Rahul Singh displayed conspicuous gallantry, unparalleled courage under extreme danger, devotion to duty in the highest tradition of Indian Army in fighting the terrorists.

<u>कैप्टन ललित कंसल</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 64714 पी, कैप्टन ललित कंसल का जन्म 08 नवम्बर 1982 को मुजफ्फर नगर में श्रीमती पद्मा कंसल और श्री शंकर भगवान कंसल के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सेंट जान सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मेरठ कैन्ट से पूरी की। 10 दिसम्बर 2004 को भारतीय सेना की पैरा विशेष बल में कमीशन लिया और 2 पैरा विशेष बल में पदस्थ हुए।

23 अगस्त 2007 को जम्मू और कश्मीर के कुपवाड़ा जिले के एक क्षेत्र में घात लगाने के लिए कैप्टन ललित कंसल के नेतृत्व में एक दल को जिम्मेदारी दी गयी।

11: 30 बजे कैप्टन ललित कंसल के दल ने लगभग 150 - 200 मीटर की दूरी पर जंगल में कुछ गड़बड़ी देखी। उन्होंने तुरंत क्षेत्र की तलाशी लेने का निर्णय लिया। उन्होंने जैसे ही तलाशी अभियान शुरू किया वैसे ही आतंकवादियों ने उनके दल के ऊपर फायरिंग शुरू कर दी। अपने जवानों के लिए खतरे को भांपते हुए उन्होंने आतंकवादियों के नजदीक जाने की कोशिश की और आड़ लेते हुए आगे बढ़ना जारी रखा। इसी बीच वह एक आतंकवादी की नजरों में आ गये और उसके द्वारा फायर की गयी गोली उनके पेट के निचले हिस्से में लगी। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद कैप्टन ललित कंसल ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए आतंकवादी पर हमला कर दिया और उसे मार गिराया। उन्होंने फायरिंग जारी रखी और दूसरे आतंकवादी को घायल कर दिया। जिससे उनके साथियों को वहां से बाहर निकलने में आसानी हुई।

कैप्टन ललित कंसल ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अनुकरणीय नेतृत्व और विशिष्ट वीरता का परिचय दिया। उनके नेतृत्व, साहस और वीरता के लिए उन्हें 23 अगस्त 2007 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन ललित कंसल

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 23 August 2007 a troop under Captain Lalit Kansal was launched to establish ambushes in general area in Kupwara district (J&K).

At 1130 hours, Captain Lalit Kansal's squad saw some disturbance in the jungle at a distance of approximately 150-200 metres. The officer immediately took the decision to search the area. As they were searching, the first squad came under fire and was pinned down. The officer quickly appreciating the danger to his men continued to move forward from cover to cover while under fire in an attempt to establish contact with the terrorists. He soon made visual contact with a terrorist. However, he was hit by a bullet in his lower abdomen. Despite being grievously wounded, Captain Lalit Kansal, in a display of total disregard to own safety and raw courage charged the terrorist and eliminated him on the spot. He subsequently continued to fire on the second terrorist who was in the vicinity and wounded him enabling his men to extricate themselves.

Captain Lalit Kansal displayed exemplary leadership and conspicuous gallantry beyond the call of duty while fighting the terrorists.

<u>मेजर सौरभ दत्त खोलिया</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 62248 एम, मेजर सौरभ दत्त खोलिया का जन्म 14 सितम्बर 1979 को मेरठ में श्रीमती कल्पना खोलिया और श्री बी डी खोलिया के यहां हुआ था। इन्होंने 08 जून 2002 को भारतीय सेना की आार्मड कोर में कमीशन लिया। बाद में इनकी अस्थायी पदस्थापना 22 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

09 अक्टूबर 2008 को गाँव वारपुरा के एक घर में आतंकवादियों की मौजूदगी की विशेष जानकारी मिली। घर में छुपे आतंकवादियों को खोजने के लिए घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया। मेजर सौरभ दत्त खोलिया ने व्यक्तिगत रूप से अपनी पार्टी के साथ उस घर के चारों ओर घेराबंदी किया जिसमें आतंकवादियों के छुपे होने की सूचना मिली थी। आतंकवादियों को अपने घिरने की जैसे ही आशंका हुई उन्होंने सैनिकों पर गोलीबारी करना शुरू कर दिया। मेजर सौरभ दत्त खोलिया ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए रेंगते हुए लगातार तीन इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आई ई डी) रखे। उन्होंने नागरिकों और संपत्ति को क्षति से बचाने के लिए सूझबूझ पूर्वक काम किया।

मेजर सौरभ दत्त खोलिया ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अदम्य साहस, सूझबूझ से आतंकवादियों से लोहा लिया और व्यक्तिगत रूप से दो कट्टर पाकिस्तानी आतंकवादियों को मार गिराया। उनके अदम्य साहस, सूझबूझ और वीरतापूर्ण कार्यवाही के लिए उन्हें 09 अक्टूबर 2008 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 09 Oct 2008, based on specific information received about presence of terrorists in a house, a cordon and search operation was launched in a village in Jammu & Kashmir. Major Saurabh Dutt Kholia personally selected the site, placed effective cordon around the target house alongwith his party in which two terrorists were hiding. Very heavy effective fire was brought by terrorists. The officer unmindful of his personal safety crawled and placed three successive Improvised Explosive Devices. He acted in a deliberate manner and avoided civilian casualties and collateral damage. The officer with unflinching courage, engaged terrorists with effective fire and personally eliminated two hardcore terrorists, one of them the Chief Operations Commander, North Kashmir of a terrorist outfit.

Major Saurabh Dutt Kholia displayed indomitable courage, inspiring leadership in the face of heavy odds in fighting against the terrorists.

<u>मेजर आदित्य कुमार</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

आई सी 76811 वाई, मेजर आदित्य कुमार का जन्म 10 सितम्बर 1987 को मेरठ के बहादुरगढ़ में श्रीमती शशि और श्री कर्मवीर सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय मेरठ, इण्टरमीडिएट की शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय ऊधमपुर तथा स्नातक की शिक्षा मुम्बई विश्वविद्यालय से पूरी की। 09 जून 2012 को भारतीय सेना की गढ़वाल राइफल्स में इन्होंने कमीशन लिया और 10 गढ़वाल राइफल्स में पदस्थ हुए।

जम्मू और कश्मीर में तैनाती के बाद से मेजर आदित्य कुमार एक अत्यधिक प्रभावी खुफिया नेटवर्क स्थापित करने और वास्तविक समय की खुफिया जानकारी प्राप्त करने के लिए स्रोतों की खोज में शामिल रहे हैं।

नवंबर 2017 में एक गांव में चार आतंकवादियों के मौजूद होने की सूचना मिलने पर मेजर आदित्य कुमार ने अपनी टीम को कार्रवाई के लिए प्रेरित करने में उच्च स्तर के पेशेवर कौशल का प्रदर्शन किया। इलाके के अपने संपूर्ण ज्ञान का उपयोग करते हुए उन्होंने बिना किसी रूकावट के एक प्रारंभिक घेरा स्थापित किया। इस प्रारंभिक कार्यवाही से आतंकवादी घबराकर एक घर में इकट्ठे हो गये।

उन्होंने अपने दल से सभी हथियारों से एक साथ घर के ऊपर गोलीबारी करने को कहा जिससे अंदर के आतंकवादी घायल हो गए। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूरी तरह से अवहेलना करते हुए वह आतंकवादियों के करीब गये और विदेशी आतंकवादियों में से एक पर नजदीक से सटीक गोलाबारी कर मार गिराया। वह घर की खिड़की से फायर कर रहे एक और आतंकवादी के करीब गये और साहस और दिमाग की उत्कृष्ट उपस्थिति का परिचय देते हुए उसे भी ढेर कर दिया।

मेजर आदित्य कुमार ने आतंकवादियों के खिलाफ ऑपरेशन के दौरान साहस, वीरता और दिमाग की उत्कृष्ट उपस्थिति का परिचय दिया। 30 नवम्बर 2017 को उन्हें उनके साहस और वीरता के लिए “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर आदित्य कुमार

प्रशंसात्मक उल्लेख

Ever since deployment in Jammu and Kashmir, Major Aditya Kumar has been involved in establishing a highly effective intelligence network and cultivation of sources for obtaining real time intelligence.

In November 2017, on receipt of information about presence of four terrorists in a village, the officer displayed high degree of professional acumen in galvanizing his team into action. Using his thorough knowledge of the terrain, he established an initial cordon without loss of surprise. This initial action helped localise the terrorists move and restricted them to the target house.

During the ensuing gunfight, the officer coordinated firing of all weapons on the house to create a breach thereby injuring the terrorists inside. With utter disregard to his personal safety he moved closer to one such breach and brought down accurate fire on one of the foreign terrorists, neutralizing him from close quarters. The officer displayed raw courage and excellent presence of mind in moving close to another terrorist firing from window of the house and neutralizing him.

Major Aditya Kumar displayed meticulous planning and gallant action during the operation against terrorists.

<u>लांसनायक देशपाल सिंह</u>

<u>शौर्य चक, मरणोपरान्त</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 2885672 पी, लांसनायक देशपाल सिंह का जन्म 02 जून 1969 को मेरठ के बामनौली में श्रीमती चन्द्रकली और श्री अजब सिंह के यहां हुआ था। यह अपनी स्कूली शिक्षा के बाद 12 मार्च 1988 को भारतीय सेना की राजपूताना राइफल्स में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के पश्चात 7 राजपूताना राइफल्स राइफल्स में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 9 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

17 अगस्त 2003 को लांस नायक देशपाल सिंह अनंतनाग जिले के आरा गांव में घेराबंदी और तलाशी अभियान दल के सदस्य थे।

तलाशी अभियान दल द्वारा घिर जाने पर भागने के लिए तरीका खोज रहे तीन आतंकवादी गांव के अंदर से एक घर के बाहर गोलियां बरसा रहे थे और चारों तरफ ग्रेनेड फेंक रहे थे। लांस नायक देशपाल सिंह उस दल का हिस्सा थे जो आतंकवादियों द्वारा की जा रही फायरिंग की रेंज में आ गया था। उन्होंने अदम्य उत्साह का प्रदर्शन करते हुए तथा अपने साथियों को सुरक्षित रखने के लिए आतंकवादियों को अकेले ही उलझाने का निर्णय किया। आमने सामने की लड़ाई में लांस नायक देशपाल सिंह को उनके हाथ पर एक गोली लगी लेकिन गंभीर चोट लगने के बावजूद उन्होंने एक आतंकवादी को मौके पर ही मार गिराया। व्यक्तिगत सुरक्षा की अवहेलना करते हुए और अत्यधिक घायल होने के बावजूद वह बार बार अपनी स्थिति को बेनकाब करते रहे और आतंकवादियों को उलझाते रहे। लांस नायक देशपाल सिंह को दूसरी बार उनके चेहरे पर एक गोली लगी, लेकिन वह अडिग रहे। अब तक वह काफी घायल हो चुके थे फिर भी उन्होंने एक अन्य भागने वाले आतंकवादी को गोली मारकर घायल कर दिया। अत्याधिक चोटों के बावजूद उन्होंने अपने सहयोगियों की सुरक्षा सुनिश्चित की और घायल आतंकवादी को खत्म करने में मदद की।

लांसनायक देशपाल सिंह ने सेना की सर्वोच्च परंपरा को कायम रखते हुए तथा अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए, देश की एकता और अखंडता के लिर अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया। उनके साहस और वीरता के लिए 27 अगस्त 2003 को उन्हें मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से “शौर्य चक्र” ग्रहण करती हुई वीरांगना श्रीमती बबीता देवी

<u>स्मृति शेष</u>: लांसनायक देश पाल सिंह के गांव बामनौली में उनकी याद में एक स्मृति द्‌वार का निर्माण कराया गया है।

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 17 August 2003 Lance Naik Deshpal Singh was part of a stop in a cordon and search operation in village Arah in Anantnag District.

Three terrorists in a desperate bid to escape came charging out of a house from inside the village spraying bullets and throwing grenades in all direction. Lance Naik Deshpal Singh was part of a stop which came in the direct firing line of the Terrorists. Displaying indomitable spirit, he asked his comrades to get to safety which engage the terrorists single handedly. In a firce face to face fight Lance Naik Deshpal Singh was hit by a bullet on his arm, but despite the grave injury, he killed one terrorist on the spot. With utter disregard to personal safety and bleeding profusely, he repeatedly exposed himself and kept engaging the terrorists. Lance Naik Deshpal Singh was hit for a second time with a bullet on his face but the gallant soldier remained unperturbed and though rapidly sinking, shot and injured another fleeing terrorists forcing them to abort their escape attempt. The superhuman effort, despite mortal injuries ensured safety of his colleagues and later assisted in elimination of the injured terrorist.

LNk Deshpal Singh achieved martyrdom while carrying out his duty in the highest tradition of the Army.

कैप्टन संजीव सिरोही

शौर्य चक्र

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश)

एस एस 37277 डब्ल्यू (आई सी 55994 एम), कैप्टन संजीव सिरोही का जन्म 26 अगस्त 1972 को जनपद मुरादाबाद के गांव असगरीपुर में श्रीमती सरलेश सिरोही तथा श्री गज राज सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा स्कूली सेंट जोसेफ कालेज, नैनीताल तथा दयावती मोदी अकादमी, मेरठ से पूरी की। 07 मार्च 1998 को भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन लिया और 31 मीडियम रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 23 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

17 नवंबर 2001 को, जम्मू कश्मीर राज्य के राजौरी जिले के थानामंडी में कैप्टन संजीव सिरोही के नेतृत्व में चार टुकड़ियों को आंकवादियों के रास्ते में रूकावट खड़ी करने और इलाके की तलाशी लेने का काम सौंपा गया था।

लगभग 15:00 बजे कैप्टन संजीव सिरोही के नेतृत्व में आगे बढ़ रही टुकड़ियों पर एक नाले से भारी गोलाबारी हुई। उन्होंने आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए नाला क्षेत्र की तत्काल घेराबंदी की और नाले में रॉकेट लॉन्चर और ऑटोमेटिक्स हथियारों से भारी गोलाबारी की और ग्रेनेड का भी इस्तेमाल किया। नाले में स्पष्ट न दिखायी पड़ने के कारण वे कुछ लोगों को साथ लेकर रेंगते हुए आगे बढे और नाले में हैंड ग्रेनेड को लुढ़का दिया। इसके बाद कैप्टन सिरोही ने अपनी पार्टी की कवरिंग फायर का सहारा लेकर आतंकवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के बीच बोल्डर की आड़ का उपयोग करते हुए आतंकवादियों के करीब जाकर तीन आतंकवादियों को व्यक्तिगत रूप से मार गिराया।

कैप्टन संजीव सिरोही के साहस, शौर्य और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता को सम्मानित करने के लिए 17 नवम्बर 2001 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन संजीव सिरोही

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 17 November 2001 four column under Captain Sanjiv Sirohi were tasked to lay stops and to search area in Thanamandi, Rajouri, J&K.

At about 1500 hours the columns under Captain Sanjiv Sirohi came under heavy fire from a Nalla. He cordoned the immediate area of Nalla to prevent the terrorists from fleeing and brought down heavy fire of Rocket Launcher and automatics in the Nalla and also used grenades. Due to failing light, he finally led a small party and crawled forward and lobbed grenades into the Nalla. Subsequently, under the covering fire of his party, Captain Sirohi under terrorist fire and using the cover of boulders advanced close to the terrorists and killed three terrorists individually in close combat.

<u>कैप्टन वरूण कुमार सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश)

आई सी 73653 के, कैप्टन वरूण कुमार सिंह का जन्म 18 मई 1986 को मुरादाबाद में श्रीमती मंजू सिंह और श्री विनोद कुमार सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा दून कैम्ब्रिज स्कूल देहरादून, बिल्सोनिया कालेज मुरादाबाद, हिंदू कालेज मुरादाबाद तथा के जी के कालेज, मुरादाबाद से पूरी की। 18 सितम्बर 2008 को इन्होंने भारतीय सेना की राजपूत रेजिमेन्ट में कमीशन लिया और 16 राजपूत रेजिमेन्ट मे पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी पदस्थापना 44 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

14 जनवरी 2015 को 17:00 बजे कैप्टन वरुण कुमार सिंह, कंपनी कमांडर को जम्मू एवं कश्मीर के सोपियां जिले के कोहरोट गांव में चार और आतंकवादियों के साथ जैश ए मोहम्मद, तंजीम के जिला कमांडर की मौजूदगी के बारे में सूचना मिली। यह आतंकवादी मास्टरमाइंड था और 06 जून 2014 को पाखरपुरा में पुलिस चौकी से हथियार छीनने की घटना में शामिल था तथा युवाओं को आतंकवाद में शामिल होने के लिए प्रेरित करने में अग्रणी था। कैप्टन सिंह ने तत्काल कार्यवाही की और उच्चतुंगता वाले वन क्षेत्र के अंधकार में 07 घंटे की कष्टदायी पैदल यात्रा करने के पश्चात उस स्थान तक पहुंचे और 15 जनवरी को 04:30 बजे तक आकस्मिक आक्रमण करने की स्थिति बनाए रखते हुए कारगर घेराबंदी करने के लिए सैन्य टुकड़ियों की तैनाती कर दिया।

लगभग 07:30 बजे ढोक की तलाशी के दौरान आतंकवादियों ने अधाधुंध गोलाबारी शुरू कर दी और घेराबंदी को तोड़ने के लिए अलग - अलग दिशाओं में भागने लगे। कैप्टन वरूण सिंह ने भारी गोलाबारी के साथ तत्काल जवाबी कार्रवाई की जिससे आतंकवादी तीन समूहों में बिखर गए। दो आतंकवादियों का एक समूह निकट के नाले में छिप गया और एक शिलाखंड के पीछे छिप गया। कैप्टन वरूण कुमार सिंह ने अपने साथी सिपाही जगवीर सिंह के साथ अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए, घुटनों के बल रेंगते हुए शिलाखंड के बिल्कुल निकट पहुंचने में भीषण गोलाबारी का सामना किया।

उन्होंने युक्तियुक्त युध्द कौशल का परिचय देते हुए गोलाबारी की दिशा में शिलाखंड के ऊपर एक ग्रेनेड दागा जिसमें एक आतंकवादी घायल हो गया। जख्मी आतंकवादी ने भारी गोलाबारी के साथ जवाब दिया। निर्भीक कैप्टन वरूण सिंह ने सटीक निशाने के साथ गोलाबारी करके एक आतंकवादी को ढेर कर दिया जिसकी बाद में 'बी' श्रेणी के जैश ए मोहम्मद के आतंकवादी के रूप में पहचान हुई। शिलाखंड के नीचे मौजूद आतंकवादी ने मेजर वरूण को अपने नजदीक देखकर ग्रेनेड फेंका और अफसर के ऊपर अंधाधुंध गोलाबारी प्रारंभ कर दी। साहस का परिचय देते हुए कैप्टन वरुण ने शिलाखंड की दिशा में निकट के स्थान से सटीक गोलाबारी के साथ जवाब दिया और दूसरे आतंकवादी को भी धराशायी कर दिया जिसकी बाद में जैश ए मोहम्मद के 'ए 'श्रेणी के विदेशी आतंकवादी के रूप में पहचान की गई।

कैप्टन वरुण कुमार सिंह ने गोलाबारी के बीच अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, कर्तव्य परायणता तथा शौर्य का प्रदर्शन किया जिसके परिणामस्वरूप दो कट्टर आतंकवादियों का सफाया हुआ। उनकी वीरता और कर्तव्यपरायणता के लिए उन्हें 15 जनवरी 2015 को "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए
कैप्टन वरुण कुमार सिंह

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 14 January 2015 at 1700 hrs. Capt Varun Kumar Singh, company commander received information regarding the presence of district Commander of Jaish-e- Mohammad (JeM) Tanzeem with four more terrorists in Kohrot village of Shopian district of Jammu and Kashmir. The terrorist was the mastermind and involved in the weapon snatching incident from police picket at Pakharpura on 06 Jun 2014 and instrumental in motivating youth to join terrorism. Capt Varun acted swiftly and after a torrid 07 Hrs move on foot in high altitude forested area in hrs of darkness reached the location and deployed troops to lay an effective cordon while maintaining surprise on 15 Jan by 0430 Hrs.

At around 0730 hours while searching the dhoks, the terrorists resorted to indiscriminate fire and ran in opposite directions to break the cordon. Capt Varun immediately retaliated with heavy volume of fire resulting in the group splitting into three. One group of two terrorists slipped into the nearby nala and took cover under a boulder. Capt Varun Kumar Singh along with his buddy. Sepoy Jagveer Singh displaying raw courage while crawling to close proximity of the boulder, received a burst of fire. The officer using battle craft manoeuvred towards the direction of the fire, lobbed a grenade under the boulder injuring one terrorist. The injured terrorist retaliated with heavy volume of fire. Undeterred, Captain Varun with pin point accuracy fired to neutralize one terrorist later identified as Category 'B' JeM. On seeing the officer in close proximity, the second terrorist under the boulder, lobbed a grenade and opened indiscriminate fire on the officer. Displaying nerves of steel. Captain Varun charged towards the boulder, brought down accurate fire at close quarters to eliminate second terrorist later identified as a Category A foreign terrorist of JeM.

Captain Varun Kumar Singh displayed exemplary leadership, Courage beyond call of duty, gallantry under fire resulting in the elimination of two hardcore terrorists.

<u>सैपर शहजाद खान</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(जनपद मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 1573540ए, सैपर शहजाद खान का जन्म 02 जुलाई 1965 को मुजफ्फर नगर के हबीबपुर सीकरी में श्रीमती मुबाशरा बेगम तथा श्री मुस्तफा खान के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी पाठशाला, हबीबपुर सीकरी, जूनियर की शिक्षा जूनियर हाईस्कूल, हबीबपुर सीकरी तथा इन्टर की पढ़ाई भारत सेवक समाज इण्टर कालेज, लुहसाना से पूरी की। यह भारतीय सेना की इंजीनियर्स कोर में भर्ती हुए। बाद में इनकी अस्थायी पदस्थापना 111 सड़क निर्माण कंपनी में हुई।

सैपर शहजाद खान को 17,582 फीट की ऊंचाई पर स्थित तंगलांग ला के पास उपशी-सरचु रोड पर बर्फ हटाने के लिए डोजर पर तैनात किया गया था। प्रतिकूल मौसम में बर्फ हटाते समय डोजर पहाड़ी की ओर खिसकने लगा। सैपर शहजाद खान ने साहस और कौशल का परिचय देते हुए डोजर को नियंत्रण में कर लिया और इस तरह खुद के अलावा दो सहयोगियों को बचाने में सफल रहे।

उसी सड़क पर एक अन्य स्थान पर सैपर शहजाद खान को 40 फीट बर्फ जमी हुई दिखाई दी। यद्‌यपि वह सड़क के किनारे लटकी हुई बर्फ के कारण गंभीर जोखिम में थे, जो उन्हें गिरा सकती थी, घायल कर सकती थी या मार सकती थी, फिर भी वह घबराये नहीं। बर्फ हटाने के अपने कार्य को उन्होंने जारी रखा। डोजर जमी हुई बर्फ पर फिसलने लगा और वह गिरने लगा। हालांकि सैपर शहजाद खान के पास डोजर से बाहर निकलने का एक उचित मौका था, फिर भी उन्होंने मूल्यवान मशीन को बचाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ नियंत्रण नहीं छोड़ा। दुर्भाग्य से सैपर शहजाद खान डोजर से गिर गए और डोजर के नीचे दब कर अपने कर्तव्यों को पूरा करते हुए शहीद हो गये।

सैपर शहजाद खान को उनकी कर्तव्यपरायणता, दायित्व निर्वहन की सर्वोच्च भावना और वीरतापूर्ण कार्य के लिए 20 अप्रैल 1993 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई सैपर शहजात खान की मां श्रीमती मुबाशरा बेगम

प्रशंसात्मक उल्लेख

Sapper/Operator Excavating Machinery Shahzad Khan was deployed with his dozer on snow clearance task, in the difficult terrain near Tanglang La on Upshi-Sarchu road, at an altitude of 17,582 feet, in adverse weather conditions. While clearing snow, the dozer started slipping down the hill side, as the retaining wall underneath the dozer had given way, Shri Shahzad Khan, displaying courage and skill, brought the dozer under control, by manoeuvring it properly and was thus able to save himself, and his two colleagues, besides the dozer itself.

On the same road at another location, Shri Shahzad Khan happened to come across a 40 feet accululation of snow. Though he was under grave risk because of over hanging snow on the road side which could have fallen, injuring or killing him, he did not panic. While continuing with his task of snow clearance, the track of the dozer started sliding on the frozen ice, and it started to topple. Although he had a fair chance to bail out of the dozer, at this juncture he did not leave the controls, being determined to save the valuable machine. Because of his gallant efforts, unfortunately Shri Shazad Khan fell and was crushed under the dozer, and dying on the spot.

Sapper/Operator Excavating Machinery Shahzad Khan, displayed exceptional courage and dedication at the cost of his own life.

<u>सार्जेंट रमेश चंद</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य सं 661178 एन, सार्जेंट रमेश चन्द का जन्म 01 जुलाई 1959 को जनपद मुजफ्फर नगर के गांव कुतुबपुर दातान में श्रीमती कलावती शर्मा और श्री अभयराम शर्मा के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सीताशरण इण्टर कालेज खतौली, मुजफ्फर नगर से पूरी की। यह 25 मई 1978 को भारतीय वायु सेना में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के बाद 16 विंग एयरफोर्स हासिमआरा में तैनात हुए।

11 नवंबर 1992 को विंग कमांडर विमान कुमार अरोड़ा, कमांडिंग ऑफिसर, स्क्वाड्रन लीडर अनिल कुमार गुप्ता और सार्जेंट रमेश चंद, फ्लाइट गनर, तेल और प्राकृतिक गैस बॉम्बे हाई को रसद सहायता प्रदान करने के लिए हेलीकॉप्टर उड़ान पर थे।

वापसी की उड़ान में हेलीकाप्टर में एक समस्या आ गयी। इस समय हेलीकॉप्टर समुद्र के ऊपर उड़ रहा था। विंग कमांडर अरोड़ा ने निकटतम उपलब्ध प्लेटफॉर्म पर उतरने का फैसला किया। अचानक हेलीकाप्टर ने उड़ना बंद कर दिया और समुद्र में गिर गया। कॉकपिट में तुरंत पानी भर गया। विंग कमांडर अरोड़ा तेजी से डूब रहे हेलीकॉप्टर से बच निकलने में सफल रहे। उसके तुरंत बाद स्क्वाड्रन लीडर गुप्ता बाहर आए। इसी बीच सार्जेंट रमेश चंद ने यात्रियों को जल्दी से बाहर निकलने के लिए तैयार किया। जैसे ही हेलीकॉप्टर पानी से टकराया, उन्होंने डिंगी को बाहर फेंक दिया। लेकिन पानी ने उसे पीछे धकेल दिया। सार्जेंट रमेश चंद ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए सात से आठ यात्रियों को डूबते हेलीकॉप्टर से बाहर निकालने में मदद की। वह हेलीकॉप्टर में तब तक रूके रहे जब तक पानी उनके गले तक नहीं पहुंच गया।

इसी बीच विंग कमांडर अरोड़ा ने देखा कि एक यात्री अपने जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है। वह तैर कर उसकी मदद के लिए गये। दहशत की स्थिति में यात्री ने विंग कमांडर अरोड़ा को पानी के नीचे धकेलने की कोशिश की। इस प्रक्रिया में उन्हें चोटें भी आईं। विंग कमांडर अरोड़ा अपने प्रयासों में सफल रहे और यात्री को डूबने से बचा लिया। इसके बाद उन्होंने एक अन्य यात्री को अपनी जान के लिए संघर्ष करते हुए देखा और मदद के आने तक तैरने में उसका सहयोग करते रहे।

स्क्वाड्रन लीडर गुप्ता ने कॉकपिट से बाहर निकलने पर देखा कि एक यात्री मदद के लिए चिल्ला रहा है और स्वयं को बचाने की कोशिश कर रहा है। वह तैरकर उस यात्री के पास गये और उसको बचाने में सहायता किया। उन्होंने देखा कि फ्लाइट इंजीनियर और चालक दल का चौथा सदस्य घायल हो गया था और खतरे में था। अपनी सुरक्षा की चिन्ता किए बिना स्क्वाड्रन लीडर गुप्ता तैरकर फ़्लाइट इंजीनियर के पास गए और उसे तैरते रहने में मदद की।

विंग कमांडर विमान कुमार अरोड़ा, स्क्वाड्रन लीडर अनिल कुमार गुप्ता और सार्जेंट रमेश चंद ने अमूल्य मानव जीवन को बचाने में अनुकरणीय साहस और सूझबूझ का परिचय दिया। उनके इस अनुकरणीय साहस और सूझ बूझ के प्रदर्शन तथा अमूल्य मानव जीवन की सुरक्षा के लिए उन्हें 11 नवम्बर 1992 को शौर्य चक्र प्रदान किया गया। 30 जून 2016 को 38 वर्षों की उल्लेखनीय सेवा के बाद आनरेरी फ्लाइट लेफ्टीनेंट के पद से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए सार्जेंट रमेश चंद

प्रशंसात्मक उल्लेख

On the 11th November, 1992 Wing Commander Viman Kumar Arora, the Commanding Officer (CO), Squadron Leader Anil Kumar Gupta and Sergeant Ramesh Chand, Flight Gunner were on the Helicopter Flight entrusted with the task of providing logistics support to the Oil & Natural Gas Commission at Bombay High.

On the return flight, due to a serious emergency while the helicopter was still over the sea, Wing Commander Arora decided to land on the nearest available platform. Suddenly the helicopter experienced total loss of power and crashed into the sea. The cockpit was immediately flooded. Wing Commander Arora managed to make good his escape from the rapidly sinking helicopter. He was soon followed by Squadron Leader Gupta. In the mean while Sergeant Ramesh Chand had prepared the passengers for a quick exit on impact. He threw out the dinghy as soon as the helicopter hit the water, but it was pushed back. Sergeant Ramesh Chand, with total disregard to personal safety, assisted seven to eight passengers in getting out of the sinking helicopter. He abandoned the helicopter only when the water had reached upon his neck.

In the meanwhile Wing Commander Arora, saw a passenger struggling for his life. He swam across to help him. In a state of panic, the passenger struggled and tried to push Wing Commander Arora under the water, in this process causing injuries to him despite this, Wing Commander Arora persisted with his efforts, and was able to save the passenger from drowning. Thereafter he spotted another passenger struggling for survival, and swam across to support him till help arrived.

On emerging from the cockpit, Squadron Leader Gupta had noticed a passenger shouting help. Whilst trying to keep afloat. He swam across and provided the needed help, thus ensuring the passenger's survival. He then observed that the Flight Engineer, the fourth crew member was injured and in danger. Unmindful of his own safety. Squadron Leader Gupta swam across to the flight Engineer and assisted his to stay afloat.

Wing Commander Viman Kumar Arora, Squadron Leader Anil Kumar Gupta and Sergent Ramesh Chand, thus, displayed exemplary courage and presence of mind, in saving invaluable human lives.

<u>मेजर सुनीत सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद प्रयागराज, उत्तर प्रदेश)

आई सी 53629 एम, मेजर सुनीत सिंह का जन्म 10 जुलाई 1970 को जनपद इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के अल्ला पुर में श्रीमती शशि सिंह तथा कर्नल महेन्द्र सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय लखनऊ से पूरी की। 10 जून 1995 को भारतीय सेना की महार रेजिमेंट में कमीशन लिया और 5 महार रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी अस्थायी पदस्थापना 1 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

जम्मू और कश्मीर के पुलवामा में 30 दिसंबर 2001 को खुफिया जानकारी के आधार पर मेजर सुनीत सिंह ने गांव दुरपुरा को घेर लिया। गांव में छिपे हुए आतंकवादियों ने भारी मात्रा में गोलियां चलाईं, जिससे जिन घरों में आतंकवादी छिपे हुए थे उनकी पहचान करना मुश्किल हो गया। एक लक्ष्य की पहचान करते हुए जैसे ही मेजर सुनीत सिंह एक गली के पास पहुंचे, एक घर से भारी मात्रा में आतंकवादियों ने गोलीबारी करना शुरू कर दिया। मेजर सुनीत सिंह ने अपने दल को घर की घेराबंदी करने का निर्देश दिया। आतंकवादियों द्वारा की जा रही भीषण गोलीबारी के बीच मेजर सिंह अपने साथी सैनिक के साथ घर के पास तक रेंगते हुए पहुंच गये। उन्होंने घर के अंदर एक साथ दो ग्रेनेड दागे जिसमें दो आतंकवादी मारे गए। इसी बीच घर के अंदर से एक आतंकवादी ने ग्रेनेड फेंका जिससे मेजर सुनीत सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। अपनी चोट और तेजी से बहते खून की परवाह किए बिना मेजर सुनीत सिंह अपने दल को घर के अंदर छुपे आतंकवादियों पर प्रभावी फायर का आदेश देते रहे। घर से भागने की कोशिश में एक आतंकवादी खिड़की के पास आ गया। मेजर सुनीत सिंह ने त्वरित सजगता दिखाते हुए उसे ढेर कर दिया।

मेजर सुनीत सिंह ने साहस, वीरता और कुशल नेतृत्च का परिचय देते हुए विषम परिस्थितयों में आतंकवादियों का सफाया करने में व्यक्तिगत भूमिका निभायी। उनके इस साहस और वीरता के लिए उन्हें 30 दिसम्बर 2001 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

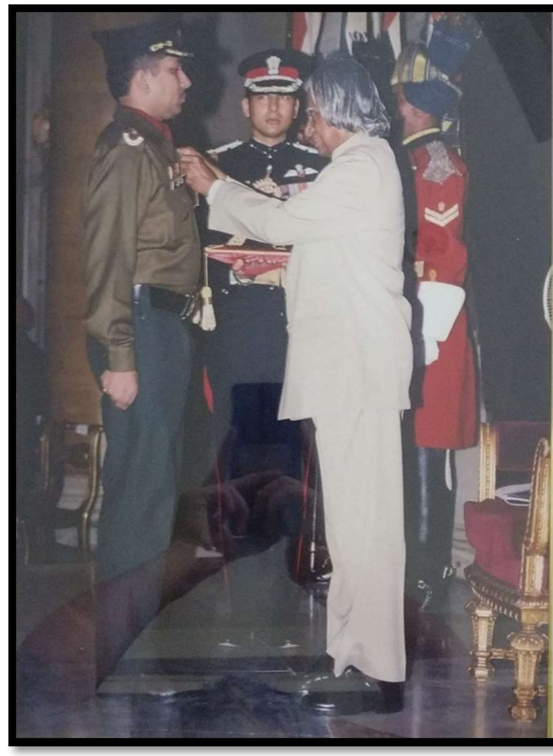

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर सुनीत सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 30 Dec 2001 based on intelligence, Major Sunit Singh, led his column to cordon village Durpura in Pulwama, Jammu and Kashmir. The terrorists holed up in the village opened heavy volume of fire, thereby making identification of target houses difficult. Identifying a void, as Major Sunit Singh approached a lane, heavy volume of terrorists fire came from one house. Directing the party to cordon the house. Maj Singh with his buddy crawled undetected under effective fire close to the house. He lobbed two grenades simultaneously inside the house which killed two terrorists. One terrorist lobbed a grenade, which injured Major Sunit Singh severely. Despite his injury and bleeding profusely, Major Sunit Singh directed his party to bring effective fire on the house. One terrorist in an attempt to jump came up to the window. Major Sunit Singh charged on him and displaying quick reflexes shot him down.

Maj Sunit Singh displayed conspicuous personal valour and bravery, exemplary leader and effective command and control in adverse situations.

मेजर विजित कुमार सिंह

शौर्य चक्र, मरणोपरान्त

(ऑपरेशन राइनो, जनपद प्रयागराज, उत्तर प्रदेश)

आई सी 36999 डब्ल्यू, मेजर विजित कुमार सिंह का जन्म 06 अगस्त 1976 को जनपद इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के राजरूप पुर में लेफ्टीनेंट कर्नल मुरली मोहन सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी इण्टर तक की स्कूली शिक्षा सेन्ट जोसेफ स्कूल इलाहाबाद, केन्द्रीय विद्यालय पुणे तथा वी एस सी की शिक्षा वाडिया कालेज, पुणे से पूरी की। 06 सितम्बर 1997 को भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेंट में कमीशन लिया और 17 पैरा फील्ड रेजिमेंट में तैनात हुए।

मेजर विजित कुमार सिंह आपरेशन राइनो में दक्षिण असम में तैनात थे। 04 अक्टूबर 2001 को मेजर विजित कुमार सिंह को असम के कचेर के नामदैलोंग गांव में 10 - 12 सशस्त्र आतंकवादियों के छिपे होने की जानकारी मिली थी। इन्हीं आतंकवादियों को खोजकर मार गिराने की जिम्मेदारी मेजर विजित कुमार सिंह को दी गयी। मेजर विजित कुमार सिंह पूरी तरह से जोखिम को जानते हुए भी अग्रणी स्काउट्स होने का फैसला किया। 04 अक्टूबर 2001 को लगभग 06:00 बजे एक लम्बी दूरी तय करने के बाद गश्ती दल गाँव के बाहरी इलाके में पहुँच गया। गांव में जाने के लिए एक बांस का पुल एकमात्र साधन था जो कि टूटा हुआ था। इस टूटे हुए पुल को उनके दल ने सावधानीपूर्वक पार किया। मेजर विजित कुमार सिंह अपने दल के साथ जैसे ही दूसरे किनारे पर पहुंचकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचने का प्रयास कर रहे थे तभी आतंकवादियों के एक समूह द्वारा पुल से 20 - 30 मीटर दूर धान के खेतों से अंधाधुंध गोलीबारी की गई। उन्होंने जवाबी फायरिंग की और आतंकियों की तरफ धावा बोला। आक्रमण की तीव्रता ने आतंकवादियों को धान के खेतों से एक नाले की ओर भागने के लिए मजबूर कर दिया। साहस का प्रदर्शन करते हुए मेजर विजित कुमार सिंह ने अपने साथी सैनिकों के साथ आतंकवादियों का पीछा करना शुरू कर दिया। उन्हें पास में देख आतंकवादियों ने उन्हें आगे बढ़ने से रोकने के लिए उन पर फायरिंग शुरू कर दी।

मेजर विजित कुमार सिंह ने सटीक निशाना लगाकर फायर कर दिया जिसके परिणामस्वरूप एक आतंकवादी धराशायी हो गया और दो अन्य अपना हथियार तथा गोलियों वाला थैला फेंककर नाले में कूद पड़े।

मेजर विजित कुमार सिंह यह जानते थे कि तीनों आतंकवादी घायल हो चुके हैं। अनुकरणीय साहस और वीरता का परिचय देते हुए वे नाले की तरफ दौड़ पड़े। इसी दौरान धान के खेत में गिरे हुए आतंकवादी ने हथियार उठाकर उनके साथी सैनिक के ऊपर फायरिंग शुरू कर दी। मेजर विजित कुमार सिंह आतंकवादी पर टूट पड़े। इस दौरान आतंकवादी द्वारा चलाई गई गोली से उनको घातक चोट लग गयी। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, अपने सटीक निशाने से उन्होंने एक आतंकी को मार गिराया। घातक चोट के कारण मेजर विजित कुमार सिंह मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गये लेकिन उससे पहले उन्होंने अपने साथी सैनिकों और अपने दल की जान बचा ली।

इस पूरी कार्यवाही में मेजर विजित कुमार सिंह ने कर्तव्य की बलिबेदी पर वीरता और साहस का परिचय देते हुए आतंकवादियों से लड़ने में सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके साहस, वीरता और कर्तव्यपरायणता के लिए उन्हें 04 अक्टूबर 2001 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए उनके पिता लेफ्टीनेंट कर्नल एम एम सिंह

स्मृति शेष: शौर्य चक्र ग्रहण कर वापस इलाहाबाद आने पर रेलवे स्टेशन पर लेफ्टीनेंट कर्नल एम एम सिंह को गार्ड आफ आनर दिया गया तथा वहां के नागरिकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इलाहाबाद के राजरूपपुर में मेजर विजित कुमार सिंह के नाम पर एक सड़क का नामकरण किया गया है।

प्रशंसात्मक उल्लेख

While deployed in OP RHINO in South Assam, on 04 Oct 2001 Maj Vijit Kumar Singh led a seek and destroy mission in village Namdailong in Cacher, Assam where 10-12 armed terrorists were reportedly taking shelter, Maj Vijit Kumar Singh knowing fully well the risk decided to be one of the leading scouts. At approx 0600 hrs on 04 Oct 2001 after a gruelling march the patrol reached the outskirts of the village. The entrance of the village was through a partially broken bamboo bridge which was negotiated carefully by the officer. As soon as the officer reached the far bank in an attempt to secure it, he was indiscriminately fired upon from the paddy fields 20-30 meters away from the bridge by a group of terrorists. He fired back and dashed towards the terrorists. The vehemence of the action forced the terrorists to flee through the paddy fields towards a nala. Exhibiting martial aggression Maj Vijit Kumar Singh alongwith his buddy started chasing the terrorists. Seeing them close in the terrorists started firing on them to holt their advance. The officer undeterred opened aimed fire at them. As a result one of the terrorist took to the ground while the other two shed their weapons and pouches and stumbled into the nala.

Maj Vijit Kumar Singh realizing that the three terrorists had been hit, showing exemplary courage and dogged determination, dashed towards the nala. During this the terrorist who had fallen in the paddy field raised his weapon and started firing at his buddy. Maj Vijit Kumar Singh charged towards the terrorist during which one of the shot fired by the terrorist hit the officer causing fatal injury. Despite being only grievously injured the officer in a dying effort fired at the terrorist and killed him. Maj Vijit Kumar Singh died on the spot but not before saving the lives of his buddy and his team.

In this act Maj Vijit Kumar Singh displayed an awesome aggressive sprit, camaraderie and courage beyond the call of duty and made the supreme sacrifice in fighting the terrorists.

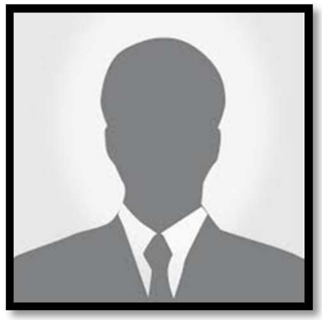

<u>पायनियर महाबीर यादव</u>

<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>

(भारत पाक युध्द- 1971, जनपद रायबरेली, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 9898, पायनियर महाबीर यादव का जन्म 12 फरवरी 1931 को जनपद रायबरेली के भुनेश्वर का पुरवा (जेतुआ) में श्रीमती शिवदुलारी और श्री साधू के यहां हुआ था। 13 मार्च 1961 को भारतीय सेना की पायनियर कोर में भर्ती हुए और 1610 पायनियर कम्पनी में पदस्थ हुए ।

पायनियर महाबीर यादव चालीस पायनियर सैनिकों की एक पार्टी का हिस्सा थे, जिसे 14 दिसंबर 1971 को राजस्थान सेक्टर के एक कब्जे वाले क्षेत्र में खोकरापुर रेलवे स्टेशन पर वैगनों से डक बोर्ड और गोला बारूद उतारने के लिए तैनात किया गया था। लगभग 17:40 बजे दुश्मन के चार बम वर्षक विमानों ने क्षेत्र के ऊपर से उड़ान भरी और रेलवे वैगनों पर बमबारी शुरू कर दी। पायनियर महाबीर यादव को छोड़कर सभी पायनियर सैनिक आड़ में जा छिपे। वह अकेले ही गोला बारूद उतारते रहे। इसी बीच एक बम सीधे उन्हें जा लगा और अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए पायनियर महाबीर यादव शहीद हो गये।

इस कार्यवाही में पायनियर महाबीर यादव ने सराहनीय साहस और कर्तव्य परायणता का परिचय दिया, जिसके लिए उन्हें 14 दिसम्बर 1971 को मरणोपरान्त “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

<u>स्मृति शेष</u> : महराजगंज रोड से उनके गांव भुनेश्वर का पुरवा तक 6 किलोमीटर लंबी सड़क का निर्माण करवाया गया है। इसके अलावा उच्च प्राथमिक विद्यालय, जेतुआ का नामकरण शहीद महावीर यादव के नाम पर किया गया है।

शहीद महावीर मार्ग

शहीद महावीर उच्च प्राथमिक विद्यालय, जेतुआ

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

Pioneer Mahabir Yadav was part of a party of forty pioneers which was detailed on the 14th December, 1971 to unload duck board and ammunition from the wagons at Khokrapur Railway Station in the occupied territory in the Rajasthan Sector. At about 1740 hours, four enemy bombers flew over the area and started bombing the railway wagons. All pioneers took cover except Pioneer Mahabir Yadav who continued to unload ammunition till he was hit directly by a bomb as a result of which he died.

In this action, Pioneer Mahabir Yadav displayed commend able courage and devotion to duty.

<u>गनर रंजीत सिंह</u>
<u>शौर्य चक्र, मरणोपरान्त</u>
(ऑपरेशन रक्षक, जनपद रामपुर, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 15146963 एम, गनर रंजीत सिंह का जन्म 01 जुलाई 1983 को जनपद रामपुर के गांव अलीपुरा में श्रीमती सुरेश देवी तथा श्री सत्यपाल सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी शिक्षा प्राथमिक विद्यालय, प्राचीन टांडा, रामपुर, कृष्णा बाल विद्या मंदिर मंगूपुरा, मुरादाबाद और गर्वनमेंट मुर्तजा हायर सेकन्डरी स्कूल, रामपुर से पूरी की और 13 जनवरी 2001 को भारतीय सेना के तोपखाना में भर्ती हो गये और प्रशिक्षण के पश्चात 204 साटा बैट्री में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 29 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

12 नवंबर 2005 को जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले के एक गांव के एक घर में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी। त्वरित प्रतिक्रिया दल के साथ गनर रंजीत सिंह ने तुरंत घर को घेर लिया। जैसे ही गनर रंजीत सिंह अपने साथी सैनिक और कंपनी कमांडर के साथ घर में घुसने ही वाले थे कि एक आतंकी घर से बाहर निकल आया और अंधाधुंध फायरिंग कर गनर रंजीत सिंह को घायल कर दिया। निडर होकर गनर रंजीत सिंह ने आतंकवादी का पीछा किया और उसे घायल कर दिया। आतंकवादी अचानक मुड़ा और गनर रंजीत सिंह पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गये और वह एक घर में घुस गया। अपनी चोटों से बेखबर गनर रंजीत सिंह रेंगते हुए आगे बढ़े, घर के अंदर ग्रेनेड फेंका और आतंकवादी को मार गिराया। अचानक दूसरे आतंकी ने ऊपर की मंजिल से ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। घायल होने के बावजूद गनर रंजीत सिंह ने फायरिंग जारी रखी तथा दूसरे आतंकवादी को घायल कर दिया। जिससे वह आतंकवादी घर में वापस भाग गया। इसी बीच गंभीर चोटों के कारण गनर रंजीत सिंह सदा सदा के लिए चिर निद्रा में लीन हो गये। गनर रंजीत सिंह ने न सिर्फ आतंकवादियों से लड़ने में हिम्मत दिखाई बल्कि अपने कंपनी कमांडर की जान भी बचाई। बाद में दूसरे आतंकवादी को मार गिराया गया।

गनर रंजीत सिंह ने गंभीर खतरे का सामना करते हुए, कर्तव्य से परे कार्य करते हुए, अदम्य साहस का प्रदर्शन किया और भारतीय सेना की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके शौर्य, साहस और वीरता को देखते हुए उन्हें 12 नवम्बर 2005 को मरणोपरान्त "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम से "शौर्य चक्र" ग्रहण करती हुई गनर रंजीत सिंह की मां श्रीमती सुरेश देवी

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 12 November 2005, Information was received about presence terrorists in a house in a village in district Baramulla in Jammu Kashmir. Gunner Ranjeet Singh as part of Quick Reaction Team immediately cordoned the house. As Gunner Ranjeet Singh, alongwith his buddy and company commander was about to enter the house, a terrorist rushed out of the house firing indiscriminately injuring Gunner Ranjeet Singh. Undeterred, he chased the terrorist and injured him. The terrorist suddenly turned and fired a burst at Gunner Ranjeet Singh injuring him seriously and entered a house. Unmindful of his Injuries Gunner Ranjeet Singh crawled forward, lobbed a grenade inside the house and shot dead the terrorist. Suddenly, another terrorist opened fine from the top floor. Gunner Ranjeet Singh, before falling down and succumbing to his injuries, let off a burst injuring the second terrorist, forcing him to get back into the house. He not only showed raw courage in fighting with the terrorists but also saved the life of his company commander. The second terrorist was subsequently neutralized.

Gunner Ranjeet Singh displayed raw courage, in the face of grave danger, acting for beyond call of duty and made the supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

<u>कैप्टन सुनील कुमार</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद सहारनपुर, उत्तर प्रदेश)

आई सी 41991 एन, कैप्टन सुनील कुमार का जन्म 07 जुलाई 1962 को सहारनपुर में श्रीमती कृष्णा देवी तथा श्री सूरज प्रकाश के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा कैप्टन मनोज पांडेय सैनिक स्कूल, लखनऊ से पूरी की। 09 जून 1984 को इन्होंने भारतीय सेना की गोरखा राइफल्स में कमीशन लिया और 5 गोरखा राइफल्स में पदस्थ हुए।

12 अगस्त 1991 की रात को 6/ 5 गोरखा राइफल्स (फ्रंटियर फोर्स) के दो कॉलम को जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले के गांव मुंडीग्राम में तलाशी और घेरा अभियान चलाने के लिए निर्देशित किया गया। कैप्टन सुनील कुमार को एक कॉलम के कंपनी अधिकारी के रूप में निर्देशित किया गया। जब कैप्टन सुनील कुमार एक घर की घेराबंदी कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि बगल का एक दरवाजा खुल रहा है और एक आदमी बाहर निकल रहा है। कैप्टन सुनील कुमार ने महसूस किया कि वह व्यक्ति गोला बारूद से लैस था। चूंकि घर की अभी अभी घेराबंदी की गई थी और उस आदमी के ज्यादा दूर चले जाने की संभावना नहीं थी। कैप्टन सुनील कुमार उस आदमी की तरफ चल पड़े। सेना के जवान को देखते ही उस व्यक्ति ने फायरिंग कर दी। व्यक्ति के करीब आए कैप्टन सुनील कुमार के दाहिने हाथ में गोली लग गई। घायल होने के बावजूद कैप्टन सुनील कुमार उस व्यक्ति पर झपट पड़े और राइफल छीन कर नीचे दबा दिया। कप्तान सुनील कुमार का खून तेजी से बह रहा था लेकिन जब तक उनके दो साथियों ने वहां पहुंचकर उसको दबोच नहीं लिया, तब तक उन्होंने उस राष्ट्र विरोधी तत्व को हिलने नहीं दिया।

कैप्टन सुनील कुमार के साहस के इस व्यक्तिगत उदाहरण ने उनकी टीम को प्रेरित किया जिससे उनके दल ने दो हथियारों, एक ग्रेनेड पर कब्जा कर लिया और 7 अन्य कट्टर राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ हिजबुल मुजाहिदीन के एक एरिया कमांडर को पकड़ लिया।

कैप्टन सुनील कुमार ने राष्ट्र विरोधी तत्वों के सामने विशिष्ट वीरता, साहस और नेतृत्व का परिचय दिया। 02 अगस्त 1991 को उन्हें उनके साहस और वीरता के लिए "शौर्य चक्र" प्रदान किया गया। कैप्टन सुनील कुमार बाद में पदोन्नत होकर कर्नल बने और 28 जून 2005 को अपनी सेवा पूरी कर सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए कैप्टन सुनील कुमार

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On the night of 1st/2nd August 1991 two columns of 6/5 Gorkha Rifles (Frontier Force) were detailed to carry out search and cordon operation in village Mundigram of Baramulla District in J & K. Captain Sunil Kumar was detailed to accompany a column as a Company Officer. As Captain Sunil Kumar was in the process of cordoning of a house, he noticed a door on the side opening and a man getting out. Captain Sunil Kumar realised that the man was armed the ammunition bell worn by him visible in the light. Since the house was still be cordoned off and the possibility of the man gelling away could not be miled out, he moved towards the man. On seeing the army personnel, the man opened fire. Captain Sunil Kumar, who had come close to the person, was hit in right arm by a bullet. Inspite of being hit, Captain Sunil Kumar ran and pounce upon the person, snatched his rifle and pinned him down. Captain Sunil Kumar was profusely bleeding by now but did not let the anti-national element move till two other ranks took over from him. The personal example set by Captain Sunil Kumar motivated his team which captured two weapons, one grenade and apprehended an area commander of Hizbul Mujahideen alongwith 7 other hardcore anti national elements.

Captain Sunil Kumar, thus, displayed conspicuous gallantry, courage and leadership in the face of anti national elements.

<u>लांसनायक अय्यूब अली</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद शामली, उत्तर प्रदेश)

सैन्य संख्या 16014704, लांसनायक अय्यूब अली का जन्म 02 फरवरी 1983 को जनपद सहारनपुर में हुआ था। अब इनका परिवार शामली के इदरीश बेग विहार में रहता है। इनकी माता का नाम श्रीमती शब्बीरी तथा पिता का नाम श्री हकीमुद्दीन है। इन्होंने प्राइमरी पाठशाला मूश्कीपुर से प्राथमिक शिक्षा, सती स्मारक इण्टर कालेज लुकादरी से हाईस्कूल तथा महाराणा प्रताप मेमोरियल इन्टर कालेज सिमलाना, सहारनपुर से इण्टरमीडिएट की शिक्षा पूरी की। यह 21 नवम्बर 2002 को भारतीय सेना में भर्ती हुए और प्रशिक्षण के बाद 6 राजपूताना राइफल्स में तैनात हुए। बाद में इनकी अस्थायी तैनाती 9 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

15 सितंबर 2018 को भारी हथियारों से लैस पांच आतंकवादियों के एक समूह को 9 राष्ट्रीय राइफल्स बटालियन द्वारा एक घर में घेर लिया गया। लांस नायक अय्यूब अली इसी घेराव दल में थे और आतंकवादियों द्वारा भागने के लिए अपनाये जाने वाले सबसे संभावित मार्ग को कवर कर रहे थे।

00:50 बजे, आतंकवादियों ने हथगोले और भारी मात्रा में गोलाबारी का उपयोग करके घेरा तोड़ने की कोशिश की। आतंकवादियों द्वारा की जा रही अंधाधुंध फायरिंग में हमारे दो जवान घायल हो गए। लांसनायक अय्यूब अली ने अपने साथियों पर प्रहार होता देख आड़ से बाहर आये और भागते हुए आतंकवादियों में से एक को निशाने पर ले लिया। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, उन्होंने आतंकवादी पर सटीक रूप से गोलाबारी की और उसे बहुत करीब से मार गिराया। इसके बाद शेष आतंकवादियों पर गोलीबारी जारी रखी और अपने घायल साथियों को सुरक्षित स्थान पर निकालकर ले गये।

इस पूरी कार्यवाही में लांस नायक अय्यूब अली ने अदम्य साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया, जिसके परिणामस्वरूप एक कट्टर आतंकवादी मारा गया और अपने दो घायल साथियों को सुरक्षित निकालने में कामयाब रहे। लांस नायक अय्यूब अली को उनके साहस और बहादुरी के लिए 15 सितम्बर 2018 को "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए लांसनायक अय्यूब अली

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 15 September 2018, a group of five heavily armed terrorists were cordoned in a house by 9 Rashtriya Rifles Battalion. Lance Naik Ayyub Ali was a part of the cordon, occupying a position covering the most likely escape route.

At 0050hrs, terrorists tried to break the cordon by using grenades and heavy volume of fire. Due to their indiscriminate firing two of our men were wounded. L/NK Ayyub Ali, on seeing his comrades hit, came out from cover and engaged one of the escaping terrorists.

With complete disregard to his own safety, he brought down withering accurate fire onto the terrorist and eliminated him at very close range. He thereafter continued to engage the remaining terrorists and enabled evacuation of wounded personnel to a safe location.

Lance Naik Ayyub Ali displayed unflinching bravery and indomitable spirit directly resulting in killing of a hardcore terrorist and the safe evacuation of two wounded.

<u>कैप्टन सौरभ धमीजा</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद शामली, उत्तर प्रदेश)

आई सी 69025 एक्स, कैप्टन सौरभ धमीजा का जन्म 05 दिसम्बर 1984 को जनपद शामली में श्रीमती प्रेमलता धमीजा और श्री राजेन्द्र प्रसाद धमीजा के यहां हुआ था। इन्होंने भारतीय सेना की 6 बिहार रेजिमेंट में कमीशन लिया और बाद में इनकी तैनाती 3 पैरा स्पेशल फोर्स में हुई।

16 सितम्बर 2010 को कैप्टन सौरभ धमीजा जम्मू कश्मीर के पुलवामा जिले के सामान्य क्षेत्र में खोजों और नष्ट करो मिशन पर स्काउट नं 02 के रूप में अपनी सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए तीन सशस्त्र आतंकवादियों के आमने सामने आ गए। उन्होंने तत्काल निर्णय क्षमता का परिचय देते हुए आतंकवादियों को आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा। गोलीबारी के दौरान उन्होंने हिप पोजीशन से गोली चलाकर एक आतंकवादी को मार गिराया। दूसरे आतंकवादी चट्टान के पीछे छिप गए। उन्हें चट्टान के पीछे से बाहर निकालने की कोशिश के दौरान कैप्टन सौरभ धमीजा पास की पहाड़ी से की जा रही स्वचालित भारी गोलीबारी की चपेट में आ गये। गोलीबारी की चिन्ता न करते हुए उन्होंने अपने स्क्वाड को फिर से तैनात कर दिया। पुनः तैनाती के बाद अपनी टुकड़ी की नजदीकी एवं समीपता को देखकर कैप्टन सौरभ ने महसूस किया कि आतंकवादी को घेरने में उनकी अपनी ही सैन्य टुकड़ी घायल हो सकती है, वह सरक कर चट्टान के पास गए। साहस दिखाते हुए वे एक आतंकवादी से भिड़ गये तथा उसका हथियार छीनकर उसका सफाया कर दिया। तीसरे आतंकवादी ने घेरा तोड़कर भागने की कोशिश की। कैप्टन धमीजा ने मार डाले गए आतंकवादी के हथियार का इस्तेमाल करते हुए भाग रहे आतंकवादी को घायल कर दिया जो बाद में निष्क्रिय हो गया।

कैप्टन सौरभ धमीजा के साहस वीरता और तत्काल निर्णय लेने की क्षमता को सम्मानित करते हुए उन्हें 16 सितम्बर 2010 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया।

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 16 September 2010, Captain Saurabh Dhamija while leading his troop as scout number 02 on search and destroy mission in general area in Pulwama district of Jammu & Kashmir, found himself face to face with three armed terrorists. Showing extreme presence of mind, the officer challenged the terrorists to surrender. During the firefight he fired from his hip and eliminated one terrorist. The other terrorists then hid behind a boulder. While trying to outflank them, the officer came under heavy automatic fire from a nearby height. Not loosing his nerves under fire, he redeployed his squads. Realising the proximity of own troops after redeployment, Capt Saurabh realized engaging the terrorist would have resulted in injury to own troops, he crawled up the boulder. Displaying raw courage the officer grappled with the terrorist and snatched his weapon and eliminated him. The third terrorist tried to break contact and flee. The officer using the slain terrorist's weapon injured the fleeing terrorist, who was later neutralised.

Capt Saurabh Dhamija displayed raw courage, grit and bravery much beyond the call of duty while fighting the terrorists.

<u>विंग कमांडर वत्सल कुमार सिंह</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(जनपद उन्नाव, उत्तर प्रदेश)

24223 (फ्लाइंग पायलट), विंग कमांडर वत्सल कुमार सिंह का जन्म 26 जून 1974 को जनपद उन्नाव के गांव अकवाबाद में श्रीमती सुशीला देवी तथा सूबेदार योगेन्द्र कुमार सिंह के यहां हुआ था। इन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय जबलपुर, सिल्चर, मेरठ और गोवा से पूरी की। 21 दिसम्बर 1996 को इन्होंने भारतीय वायु सेना में कमीशन लिया और 115 हेलीकाप्टर यूनिट में पदस्थ हुए।

19 दिसंबर 2011 को विंग कमांडर वत्सल कुमार सिंह को छत्तीसगढ़ के घने जंगल और अत्यधिक नक्सल प्रभावित क्षेत्र में एक मिशन के दौरान नंबर 3 हेलीकॉप्टर के मुख्य चालक के तौर पर 120 कोबरा कमांडों को इच्छित स्थल पर उतारने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। लैंडिंग स्थल पर लंबे पेड़ों से घिरे जंगल में एक छोटी सी खाली जगह उपलब्ध थी और यहां लैंडिंग वाली जगह काफी ऊबड़ खाबड़ था, जिससे कार्य और भी दुष्कर हो गया। जब वे सत्रह व्यक्तियों को लेकर तीसरी उड़ान भर रहे थे तब बाईं ओर से इनके हेलीकॉप्टर के निचले भाग में स्वचालित हथियारों से गोलीबारी की गई। गोली चलने की संभावित दिशा से तुरंत वापस मुड़ते हुए हेलीकॉप्टर को ऊंचाई पर ले गए। वायुयान के सभी पैरामीटरों का सामान्य होना सुनिश्चित कर लेने के बाद इन्होंने अपने संचालन स्थान पर वापस लौटने का फैसला किया। बाद में वायुयान में काफी तेज कंपन होने लगा और समूचे कार्गो उपकक्ष में जले हुए विस्फोटक की गंध भर गई। काफी तेज कंपन से यह सुनिश्चित करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो गया कि हेलीकॉप्टर नियंत्रण से बाहर न जाए।

विंग कमांडर वत्सल कुमार सिंह ने अपना धैर्य बनाए रखा और अपने श्रेष्ठ उड़ान कौशल के साथ हेलीकॉप्टर को नियंत्रित किया। इन्होंने इसकी गति कम की और कंपन को न्यूनतम स्तर पर पहुंचाया तथा इंजन के महत्वपूर्ण पैरामीटरों पर बारीकी से नजर रखी ।

चालीस मिनट के लंबे और कठिन समय के बाद बड़ी कुशलता से इन्होंने सत्रह व्यक्तियों और अपने हेलीकॉप्टर को सुरक्षित उतारा। उड़ान के बाद निरीक्षण में पता चला कि हेलीकॉप्टर के महत्वपूर्ण पुर्जों के आसपास से नौ गोलियां कई जगहों से घुसी और निकली हैं।

विंग कमांडर वत्सल कुमार सिंह ने प्रतिकूल परिस्थितियों में अदम्य साहस, प्रेरणापद नेतृत्व कौशल और धैर्य का असाधारण परिचय दिया। उनके इस अदम्य साहस, व्यावसायिक कुशलता और वीरता के लिए 19 दिसम्बर 2011 को “शौर्य चक्र” प्रदान किया गया। 22 अक्टूबर 2021 को अपनी सैन्य सेवा पूरी कर भारतीय वायु सेना से सेवानिवृत्त हो गये।

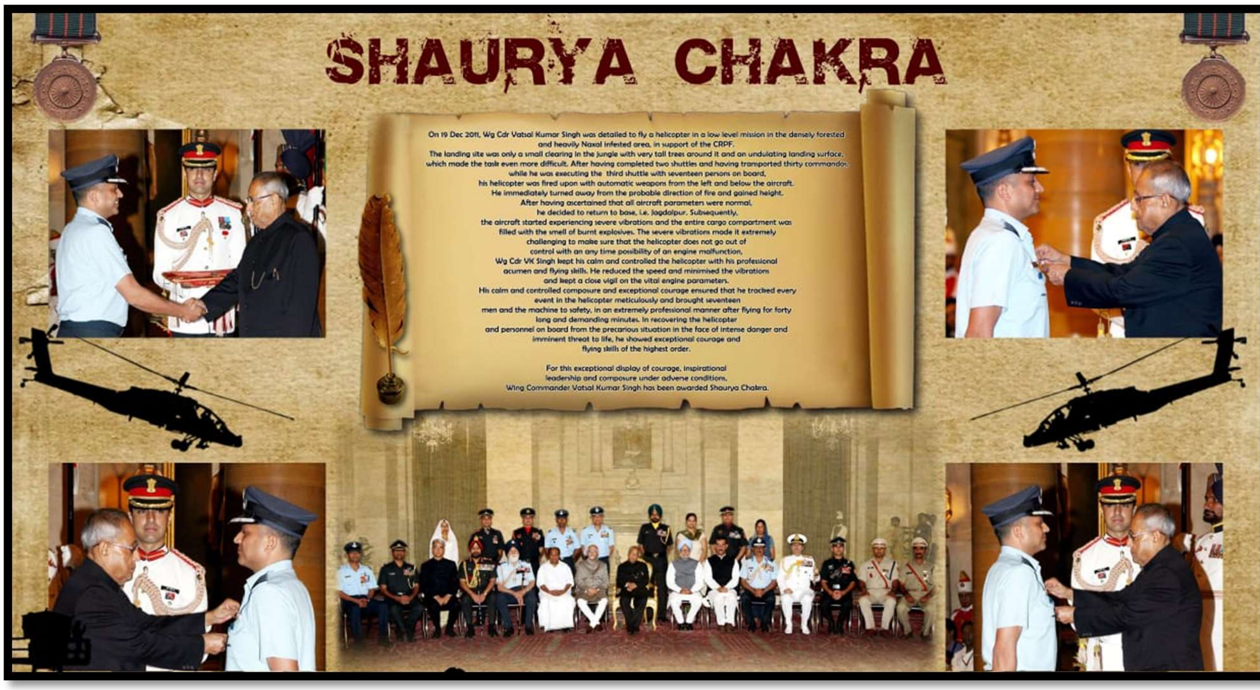

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए
विंग कमांडर वत्सल कुमार सिंह

<u>प्रशंसात्मक उल्लेख</u>

On 19 December 2011, Wing Commander Vatsal Kumar Singh was detailed to fly as the captain of the No. 3 helicopter in a low level mission in the densely forested and heavily Naxal infested area of Chhattisgarh, to induct 120 COBRA commandos. The landing site was only a small clearing in the jungle with very tall trees around it and an undulating landing surface, which made the task even more difficult. While he was executing the third shuttle with seventeen persons on board, his helicopter was fired upon with automatic weapons from the left and below the aircraft. He immediately turned away from the probable direction of fire and gained height.

After having ascertained that all aircraft parameters were normal, he decided to return to base. Subsequently, the aircraft started experiencing severe vibrations and the entire cargo compartment was filled with the smell of burnt explosive. The severe vibrations made it extremely challenging to make sure that the helicopter do not go out of control. Wg Cdr VK Singh kept his cool and controlled the helicopter with his superior flying skills. He reduced the speed and minimized the vibrations and kept a close vigil on the vital engine parameters and brought seventeen men and the machine to safety, in an extremely professional manner after flying for forty long and demanding minutes. Post flight inspection revealed nine bullet hits with multiple entry and exits in and around vital parts of the helicopter.

Wing Commander Vatsal Kumar Singh displayed exceptional courage, inspirational leadership and composure under adverse conditions.

<u>मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद वाराणसी, उत्तर प्रदेश)

एस0 सी0 70817 के, मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय का जन्म 02 जुलाई 1985 को जनपद वाराणसी के गांव बरथरा कलां में श्रीमती शारदा पाण्डेय और श्री देवेन्द्र कुमार पाण्डेय के यहां हुआ था। इन्होंने प्राथमिक शिक्षा हरमन माइनर स्कूल, डुबकिया और इण्टर तक की शिक्षा सैनिक स्कूल लखनऊ तथा स्नातक की शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय से पूरी की। मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय ने भारतीय सेना में 13 दिसम्बर 2008 को कमीशन लिया और 2 राजपूत रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में इनकी तैनाती 44 राष्ट्रीय राइफल्स में हुई।

मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय जो कि 2 राजपूत रेजिमेंट की एक कम्पनी के कम्पनी कमांडर थे। उनको 01 सितम्बर 2014 को 18:00 बजे सूचना मिली कि जम्मू और कश्मीर के पुलवामा जिले के एक गांव में जैश-ए-मोहम्मद का जिला कमाण्डर दो अन्य आतंकवादियों के साथ छुपा हुआ है। जैश-ए-मोहम्मद का वह जिला कमाण्डर 06 जून को पुलिस दल पर हुए हमले और हथियार की लूट की घटना का मुख्य आरोपी था। मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय ने शीघ्र ही आतंकवादियों के संभावित छुपाव वाले घर को घेर लिया और घर वालों को सुरक्षित बाहर निकाला।

02 सितम्बर 2014 को 07:30 बजे लगभग 13 घंटे चली गोलीबारी के बाद मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय अपने साथी सैनिक सैपर संजय काली के साथ अद्भुत साहस का परिचय देते हुए संभावित घर की तरफ रेंगते हुए आगे बढ़ ही रहे थे कि घर में छुपे हुए आतंकवादियों ने उन पर गोलियों की बौछार कर दी। मेजर पाण्डेय ने अपने युध्द कौशल का परिचय देते हुए खिड़की से घर में ग्रेनेड डालकर आतंकवादियों को घायल कर दिया। घायल आतंकवादी ने मेजर आशुतोष पान्डेय के ऊपर भीषण गोलीबारी कर दी। आतंकवादी के फायर की चिन्ता न करते हुए, आड़ लेकर रेंगते हुए मेजर पाण्डेय दूसरी खिड़की के पास पहुंचे और आतंकवादी के ऊपर सटीक फायर झोंक कर उसे ढेर कर दिया।

बाद में मारे गये आतंकवादी की पहचान जैश-ए-मोहम्मद तंजीम के “सी” ग्रुप के आतंकवादी के रूप में हुई। घर की दीवार के बगल में सेना को देखकर, दूसरे आतंकवादी ने जो कि दीवार की आड़ में दूसरे कमरे में छुपा था, ने मेजर पाण्डेय के ऊपर ग्रेनेड फेंक दिया और अंधाधुंध फायर करने लगा। मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय ने युध्द निपुणता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए आतंकवादी के ऊपर कारगर फायर किया जिससे दूसरा आतंकवादी वहीं ढेर हो गया। बाद में मारे गये इस आतंकवादी की पहचान जैश-ए-मोहम्मद तंजीम के “ए+++” ग्रुप के जिला कमांडर के रूप में हुई। हथियार छीनने में निपुण जैश-ए-मोहम्मद के जिला कमांडर के मारे जाने से जैश-ए-मोहम्मद तंजीम को गहरा धक्का लगा।

अनुकरणीय नेतृत्व अदम्य साहस तथा कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए मेजर आशुतोष पान्डेय ने जैश-ए-मोहम्मद के दो खूंखार आतंकवादियों को ढेर कर दिया। मेजर पाण्डेय को उनकी इस वीरता और साहस के लिए 02 सितम्बर 2014 को “शौर्य चक्र” से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से “शौर्य चक्र” ग्रहण करते हुए मेजर आशुतोष कुमार पाण्डेय

प्रशंसात्मक उल्लेख

On 01 September 2014 at 1800 hours, Major Ashutosh Kumar Pandey, Company Commander, received information about the presence of a District commander of Jaish-e-Mohammad with two more terrorists in a Village of Pulwama district of Jammu and Kashmir. The district Commander of Jaish-e-Mohammad was the mastermind behind targeting of police officials and weapon snatching on 06 June 2014. Major Ashutosh acted swiftly by deploying troops in an effective cordon and evacuated civilians from the target house.

On 02 September 2014 at 0730 hours, after a gruelling thirteen hours of Intermittent firing, Major Ashutosh along with his buddy Sapper Sanjay Kali displaying raw courage while crawling to close proximity of the target house to clear the house extension, received a burst of fire. The officer using battle craft manoeuvred towards the direction of the fire, using cover and showing presence of mind lobbed a grenade inside the window injuring the terrorist. The injured terrorist retaliated with heavy volume of fire. Undeterred by the terrorist fire, the officer crawled, took cover next to the window and with pin point accuracy fired to neutralise one terrorist.

The terrorist was later identified as a Category 'C' terrorist of Jaish-e-Mohammad Tanzeem. On seeing the army next to the house wall, the second terrorist from the adjacent room, lobbed a grenade and opened indiscriminate fire on the officer. Displaying utter professionalism, calm composure and nerves of steel, Major Ashutosh charged towards the window, brought down accurate fire at close quarters to eliminate the second terrorist instantaneously. The terrorist was later identified as district Commander and Category 'A++' terrorist of Jaish-e-Mohammad Tanzeem. The elimination of the district commander of Jaish-e-Mohammad, who was the mastermind in the weapon snatching incident dealt a body blow to the Jaish-e-Mohammad tanzeem.

For exemplary leadership, courage beyond call of duty, conspicuous gallantry under fire resulting in the elimination of two hardcore Jaish-e- Mohammad terrorists, Major Ashutosh Kumar Pandey was awarded "SHAURYA CHAKRA" on Republic Day 2015.

<u>मेजर अनुराग कुमार</u>

<u>शौर्य चक्र</u>

(ऑपरेशन रक्षक, जनपद वाराणसी, उत्तर प्रदेश)

आई सी 71155 वाई मेजर अनुराग कुमार का जन्म 02 नवम्बर 1986 को महाराष्ट्र के नासिक में हुआ था। इनका परिवार मूल रूप से जनपद वाराणसी की गौतम विहार कालोनी का रहने वाला है। इनकी माता का नाम श्रीमती पुष्पलता देवी तथा पिता का नाम सार्जेंट राजेश कुमार मौर्य है। अपनी स्कूली शिक्षा केन्द्रीय विद्यालय 39 जी टी सी से पूरी की। इन्होंने 13 दिसम्बर 2008 को भारतीय सेना में कमीशन लिया और 19 जाट रेजिमेंट में पदस्थ हुए। बाद में 9 पैरा स्पेशल फोर्स और 32 राष्ट्रीय राइफल्स में तैनात हुए।

जम्मू कश्मीर के बारामूला जिले के लिद्दर पंजाल में कुछ आतंकवादियों के देखे जाने की सूचना मिली थी। इस सूचना के आधार पर इन आतंकवादियों से निपटने की जिम्मेदारी 9 पैरा (विशेष बल) को दी गयी। 9 पैरा (विशेष बल) ने इसका नेतृत्व मेजर अनुराग कुमार को सौंप दिया। जहां आतंकवादियों को आखिरी बार देखा गया था वहां पहुँचने के बाद मेजर अनुराग अपने दस्ते को उस स्थान पर ले गये और आतंकवादियों को खोजना शुरू कर दिया। 26 अगस्त 2015 को 14:00 बजे, अधिकारी ने बोल्डर के पीछे संदिग्ध गतिविधि देखी। उन्होंने आतंकवादियों को चैलेंज करने से पहले अपने दल को तैनात किया। अपने दल के लिए आतंकवादियों से गंभीर खतरे को महसूस करते हुए, अधिकारी ने अपनी सुरक्षा को खतरे में डाल दिया और हवलदार वीरेंद्र सिंह और नायक जावेद अहमद चोपन की कवरिंग फायर के तहत आगे बढ़े और एक आतंकवादी को मार गिराया। मेजर अनुराग ने फिर शेष आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए एक घेरा स्थापित किया। 27 अगस्त 2015 को 11:00 बजे घेरा तोड़ने का प्रयास कर रहे एक आतंकवादी ने अंधाधुंध फायरिंग की। भीषण गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए और साहस का परिचय देते हुए मेजर अनुराग आगे बढ़े और एक आतंकवादी को निशाने पर लिया। नजदीक पहुँचकर उस आतंकवादी को मार गिराया। उन्होंने तीसरे आतंकवादी को निशाने पर लिया जिससे नायक जावेद अहमद चोपन आत्मसमर्पण के लिए बात कर रहे थे।

मेजर अनुराग कुमार को दो विदेशी आतंकवादियों का सफाया करने और तीसरे आतंकवादी को आत्मसमर्पण करने के लिए राजी करने के लिए उनके असाधारण सामरिक कौशल, प्रेरक नेतृत्व और साहस के लिए 26 अगस्त 2015 को "शौर्य चक्र" से सम्मानित किया गया।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी से "शौर्य चक्र" ग्रहण करते हुए मेजर अनुराग कुमार

प्रशंसात्मक उल्लेख

Major Anurag Kumar was leading a helicopter inserted 9 PARA (Special Forces) Team in Search and Destroy Operations in Lidder Panzal at Baramulla district of Jammu and Kashmir on 26/27 August 2015.

Post insertion, Major Anurag led his squads to the location where terrorists were last seen and organized the search. At 1400 hours on 26 August 2015, the officer observed suspicious movement behind boulders and deployed his squads before shouting a challenge which drew indiscriminate terrorist fire.

Realising grave threat to his men from the ricocheting bullets, the officer risked his safety and under covering fire of Havildar Virender Singh and Naik Javid Ahmad Chopan closed in with and eliminated one terrorist. Major Anurag then established a cordon to cut off escape of remaining terrorists. At 1100 hours on 27 August 2015 one terrorist attempting to break cordon rushed out firing indiscriminately. Unmindful of the heavy fire and displaying immense courage Major Anurag engaged and shot dead the terrorist at close quarters. He further engaged one trapped terrorist in a conversation thereby assisting Naik Chopan in his apprehension.

For his exceptional tactical acumen, selflessness, inspiring leadership and courage beyond compare while eliminating two foreign terrorists and assisting in the apprehension of the third terrorist, Major Anurag Kumar is awarded “SHAURYA CHAKRA”.

वीरता पदक विजेताओं की जिलेवार सूची

जिला	अशोक चक्र	कीर्ति चक्र	शौर्य चक्र	कुल वीरता पदक
आगरा	01	-	08	09
अलीगढ़	-	-	02	02
अंबेडकर नगर	-	-	-	-
अमेठी	-	-	01	01
अमरोहा	-	-	-	-
औरैया	-	-	-	-
अयोध्या	-	-	02	02
आजमगढ़	-	01	01	02
बदायूं	-	-	01	01
बागपत	-	02	03	05
बहराइच	-	-	01	01
बलिया	-	-	-	-
बलरामपुर	-	-	-	-
बांदा	-	-	-	-
बाराबंकी	-	-	01	01
बरेली	-	-	02	02
बस्ती	-	-	01	01
बिजनौर	-	01	-	01
बुलंदशहर	02	01	03	06
चंदौली	01	-	01	02
चित्रकूट	-	-	-	-
देवरिया	-	-	02	02
एटा	-	-	03	03
इटावा	-	-	-	-
फर्रुखाबाद	-	-	-	-
फतेहपुर	-	01	02	03
फिरोजाबाद	-	-	03	03
गौतम बुद्ध नगर	-	02	08	10
गाज़ियाबाद	01	01	02	04

जिला	अशोक चक्र	कीर्ति चक्र	शौर्य चक्र	कुल वीरता पदक
गाजीपुर	-	-	-	-
गोंडा	-	-	-	-
गोरखपुर	-	-	04	04
हमीरपुर	-	01	-	01
हापुड़	-	-	01	01
हरदोई	01	-	-	01
हाथरस	-	-	01	01
जालौन	-	-	-	-
जौनपुर	-	-	01	01
झांसी	-	-	04	04
कन्नौज	-	-	-	-
कानपुर देहात	-	-	-	-
कानपुर नगर	-	01	06	07
कासगंज	-	-	-	-
कौशांबी	-	-	-	-
कुशी नगर	-	-	02	02
लखीमपुर खीरी	-	-	-	-
ललितपुर	-	-	-	-
लखनऊ	-	03	13	16
महाराजगंज	-	-	-	-
महोबा	-	-	-	-
मैनपुरी	-	01	01	02
मथुरा	-	01	04	05
मऊ	-	-	-	-
मेरठ	-	03	08	11
मिर्जापुर	-	-	-	-
मुरादाबाद	-	-	02	02
मुजफ्फरनगर	-	-	02	02
पीलीभीत	-	-	-	-
प्रतापगढ़	-	-	-	-

जिला	अशोक चक्र	कीर्ति चक्र	शौर्य चक्र	कुल वीरता पदक
प्रयागराज	-	-	02	02
रायबरेली	-	-	01	01
रामपुर	-	-	01	01
सहारनपुर	-	-	01	01
संभल	-	-	-	-
संत कबीर नगर	-	-	-	-
संत रविदास नगर	-	-	-	-
शाहजहांपुर	-	-	-	-
शामली	-	-	02	02
श्रावस्ती	-	-	-	-
सिद्धार्थनगर	-	-	-	-
सीतापुर	-	-	-	-
सोनभद्र	-	-	-	-
सुल्तानपुर	-	-	-	-
उन्नाव	-	-	01	01
वाराणसी	-	01	02	03
	06	20	106	132

भारतीय सेना के अमर सपूत

जनरल बिपिन रावत, रक्षा प्रमुख
पी वी एस एम, यू वाई एस एम, ए वी एस एम, वाई एस एम
एस एम, वी एस एम, ए डी सी

ब्रिगेडियर
लखविंदर सिंह लिद्दर

ग्रुप कैप्टन
वरुण सिंह शौर्य चक्र

लेफ्टीनेंट कर्नल
हरजिंदर सिंह

विंग कमांडर
पृथ्वी सिंह चौहान

स्क्वाड्रन लीडर
कुलदीप सिंह

जूनियर वारंट अफसर
प्रदीप ए

जूनियर वारंट अफसर
राना प्रताप दास

हवलदार
सतपाल राय

नायक
गुरसेवक सिंह

नायक
जितेन्द्र कुमार

लांसनायक
बी साई तेजा

लांसनायक
विवेक कुमार

निदेशालय सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास, उत्तर प्रदेश

करियप्पा भवन, कैसरबाग, लखनऊ–226001
वेबसाइट : http://skpn.up.gov.in
ई–मेल : dirskpnlu-up@nic.in
सम्पर्क : 0522–2623909, 2611150, फैक्स : 0522–2625354